बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

वार्षिक रिपोर्ट
(डेयर)
2023-24

सत्यमेव जयते

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

वार्षिक रिपोर्ट

(डेयर)

2023-24

सत्यमेव जयते

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

डॉ. आर. रॉय बर्मन, परियोजना निदेशक (डीकेएमए), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान भवन, पूसा, नई दिल्ली 110 012 द्वारा प्रकाशित। लेजरटाइपसेट एवं मुद्रित मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिंटर्स, ए–89/1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेज–1, नई दिल्ली 110 028

प्राक्कथन

सरकार द्वारा देश में टिकाऊ कृषि उत्पादन के लिए अनुसंधान एवं विकास (R&D) पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE)/भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) अपने अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय कृषि को खाद्य में आत्मनिर्भरता से लाभप्रदता में बढ़ोतरी करने की दिशा में रूपांतरित करने के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध है।

संसद के केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम, 1992 (1992 की अधिनियम संख्या 40) जो कि 26 जनवरी, 1993 को लागू किया गया था, के अंतर्गत केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल की स्थापना सन् 1993 में की गई थी। यह एक आवासीय विश्वविद्यालय है जिसमें केवल असोम राज्य को छोड़कर इसके न्यायिक क्षेत्र के अंतर्गत सात पूर्वोत्तर राज्यों को शामिल करते हुए कुल 13 संघटक कॉलेज शामिल हैं। वर्ष 2022 में राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) द्वारा इस विश्वविद्यालय को कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में 29वां रैंक प्रदान किया गया था। भाकृअनुप सहकर्मी समीक्षा टीम की सिफारिशों पर, राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड, भाकृअनुप, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 28 मार्च, 2021 से 27 मार्च, 2026 की अवधि के लिए विश्वविद्यालय और इसके संघटक कॉलेजों को विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों (यूजी/पीजी/पीएच.डी.) के लिए प्रत्यायन प्रदान किया गया। संस्थागत विकास योजना (IDP) – एनएएचईपी के अंतर्गत, केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के मुख्यालय सहित सात परिसरों को सौर ऊर्जा से चालित नवीकरणीय ऊर्जा परिसरों में रूपांतरित किया गया है।

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (1970) तथा कृषि अनुसंधान संस्थान एवं कॉलेज, पूसा (1905) की अपनी विरासत के साथ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (DRPCAU), पूसा, समस्तीपुर, बिहार की स्थापना दिनांक 7 अक्तूबर, 2016 को की गई। दिनांक 28 फरवरी, 2023 को आयोजित अपने तीसरे दीक्षांत समारोह में श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, तत्कालीन केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में कुल 635 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदकों सहित उपाधियां प्रदान की गईं। सभी सामान्य सरकारी विश्वविद्यालयों के लिए एमडीआरए–इंडिया टुडे सर्वे 2023 की रैंकिंग में इस विश्वविद्यालय को दसवां स्थान दिया गया। विश्वविद्यालय में दिनांक 23 से 25 फरवरी, 2023 की अवधि में किसान मेला आयोजित किया गया। इस किसान मेले में 7,500 से भी अधिक किसानों ने नवीन प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारियां हासिल कीं। विश्वविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा वाली प्रतियोगिताओं को उत्तीर्ण और बड़ी संख्या में फेलोशिप अर्जित करके शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है। विश्वविद्यालय का एमबीए कार्यक्रमों के अंतर्गत, एसएबी एंड आरएम, डीआरपीसीएयू में 100 प्रतिशत रोजगार नियोजन का रिकॉर्ड है। अनुसंधान के मोर्चे पर, विश्वविद्यालय ने केन्द्रीय किस्मीय निर्मुक्ति समिति (CVRC) के माध्यम से फसलों की चार किस्मों यथा राजेन्द्र गन्ना–6, राजेन्द्र गन्ना–7, राजेन्द्र चना–2 तथा राजेन्द्र चना–3 और गन्ने की एक किस्म यथा राजेन्द्र गन्ना–5 को खेती प्रयोजन के लिए जारी किया। विश्वविद्यालय को कुल सात पेटेन्ट प्रदान किए गए।

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (RLBCAU), झांसी, देश का ऐसा पहला कृषि विश्वविद्यालय है जिसे दिनांक 5 मार्च, 2014 को संसद के एक अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व के एक संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था। दिनांक 11 मार्च, 2023 को आयोजित अपने द्वितीय दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, तत्कालीन केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री की गरिमामयी उपस्थिति में छात्र–छात्राओं को 16 स्वर्ण पदकों सहित कुल 229 उपाधियां अथवा डिग्री प्रदान की गईं।

विश्वविद्यालय ने बुनियादी सुविधा विकास सहित शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा में अपनी अधिदेशित गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रभावशीलता, बुनियादी सुविधा, अनुदेश सामग्री, प्रयोगशालाओं और मानव संसाधनों में सुधार लाकर लगातार प्रगति एवं गुणवत्ता परिणामों में तेजी लाने हेतु अनेक पहल की गई हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सेमिनार एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा 'बुंदेली कृषि विपणन' मोबाइल ऐप तथा एआई–डीआईएससी (Ai-DISC) मोबाइल ऐप विकसित किया गया और रिपोर्टाधीन वर्ष में एनआईबीपीपी मोबाइल ऐप – एनएएचईपी संघटक 2 के अंतर्गत भाकृअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के साथ सहयोग से जारी किया गया। विश्वविद्यालय ने दो संस्थानों के मध्य

ज्ञान, विशेषज्ञता तथा संसाधनों के आदान–प्रदान की सुविधा तथा अकादमिक एवं अनुसंधान गतिविधियों के लिए एक सक्षम वातावरण को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न संस्थानों/संगठनों के साथ समझौता ज्ञापनों (MoUs) पर हस्ताक्षर किए। रिपोर्टाधीन वर्ष में विश्वविद्यालय द्वारा कई प्रमुख कार्यक्रम/आउटरीच कार्यक्रम यथा अटल जय विज्ञान व्याख्यान माला, किसान मेला – 2023 तथा बुंदेलखण्ड एग्री एक्सपोर्ट प्रोमोशन समट – 2023 का आयोजन किया गया।

कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB) द्वारा भाकृअनुप और देशभर में फैले इसके अनुसंधान संस्थानों के लिए सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता वाले वैज्ञानिकों और अन्य प्रबंधन कार्मिकों का चयन करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है। इसके अलावा, मंडल द्वारा एआरएस वैज्ञानिकों के लिए कैरियर प्रोन्नयन योजना सहित मानव संसाधन को शामिल करने और इसका विकास करने से जुड़ी नीतियों को तैयार करने और उन्हें लागू करने में परिषद को सहायता एवं सलाह प्रदान की जाती है। कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल द्वारा प्रतिभा खोज रणनीतियों में सुधार लाने हेतु लगातार प्रयास किया जाता है ताकि राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली (NARES) की मौजूदा एवं उभर रहीं जरूरतों को पूरा किया जा सके। समय की जरूरत के अनुसार सर्वश्रेष्ठ प्रतिभावान मानव संसाधन का चयन करने के अपने प्रयास में, कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB) ने चयन प्रक्रिया में अनेक सुधार किए हैं। अनुसंधान प्रबंधन पदों (RMP) तथा गैर आरएमपी पदों पर चयन करने के लिए चयन मानदण्ड (स्कोर कार्ड) को कहीं अधिक उद्देश्यपरक और पारदर्शी बनाने के लिए समय–समय पर संशोधित किया गया है। आवेदकों द्वारा आवेदन तथा फीस को ऑनलाइन प्रस्तुत करने के लिए नवीनतम आईटी टूल्स का उपयोग किया गया है। एनईटी प्रमाण–पत्रों का वितरण किया गया है और उन्हें डिजी लॉकर में अपलोड किया गया है ताकि प्रमाण–पत्रों व अन्य दस्तावेजों की ऑनलाइन पहुंच बनाई जा सके। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, बोर्ड ने कुल 451 पदों के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया को सफलतापूर्वक आयोजित किया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, बोर्ड ने कुल 790 आरएमपी और गैर आरएमपी पदों पर सीधी भर्ती करने के लिए विज्ञापन प्रकाशित करवाए। इनमें शामिल पद थे : सहायक महानिदेशक, राष्ट्रीय संस्थानों के निदेशक, राष्ट्रीय संस्थानों के संयुक्त निदेशक, परियोजना समन्वयक, संभागाध्यक्ष/क्षेत्रीय केन्द्रों के अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक। कृषि अनुसंधान सेवा (मुख्य) परीक्षा का आयोजन दिनांक 28 नवम्बर, 2021 को तथा मौखिक (Viva-voce) परीक्षा का आयोजन दिनांक 9 से 20 दिसम्बर, 2022 के दौरान किया गया। कुल विज्ञापित 222 रिक्तियों के लिए रिपोर्टाधीन वर्ष में भाकृअनुप के अंतर्गत प्रविष्टि स्तरीय वैज्ञानिक पदों के लिए 47 विषयों में कुल 208 अभ्यर्थियों की संस्तुति की गई। बोर्ड की समय–सारणी के अनुसार समय सीमा के भीतर कैरियर उन्नयन योजना के अंतर्गत एआरएस वैज्ञानिकों की पदोन्नति की गईं।

एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn), भारत सरकार का एक उपक्रम है जिसे दिनांक 19 अक्तूबर, 2011 को कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 की संख्या1) के तहत कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के स्वामित्व में शामिल किया गया था। यह कम्पनी अनुसंधान संस्थानों और कृषि उद्योग जगत के मध्य एक प्रमुख इन्टरफेस के रूप में कार्य करती है तथा घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए लाइसेन्सिंग के माध्यम से प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण को बढ़ावा देती है। मानकीकृत प्रोटोकॉल के साथ, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn) ने वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान लगभग 123 प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण करते हुए भाकृअनुप के अनेक संस्थानों, उद्योग समूहों, किसानों और अंतिम हितधारकों की मदद की है। कम्पनी ने रिपोर्टाधीन अवधि में किए गए कार्यों से अपने सकल राजस्व में उल्लेखनीय बढ़ोतरी करते हुए रुपये 10.01 करोड़ (कर रहित एवं रुपये 43 लाख की रॉयल्टी सहित) का राजस्व अर्जित किया है।

यह वार्षिक प्रतिवेदन देश के किसानों के साथ–साथ समस्त नागरिकों के लाभ हेतु कृषि क्षेत्र में उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा किए गए समर्पित प्रयासों को दर्शाता है। मुझे आशा है कि यह प्रतिवेदन कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा से जुड़े सभी हितधारकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

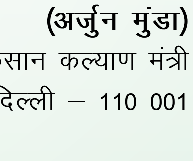

(अर्जुन मुंडा)
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
कृषि भवन, नई दिल्ली – 110 001

विषय-वस्तु

	प्राक्कथन	*iii*
1.	सिंहावलोकन : कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर)	1
2.	डेयर के अंतर्गत निकाय एवं उनकी गतिविधियां	7
	(i) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)	8
	(ii) केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (CAU), इम्फाल	29
	(iii) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (DRPCAU), समस्तीपुर, पूसा	33
	(iv) रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (RLBCAU), झांसी	39
	(v) कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB)	49
	(vi) एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn)	55
3.	डेयर की अंतर्राष्ट्रीय सहयोग गतिविधियां	57
4.	हिन्दी का प्रगामी प्रयोग	77
5.	विभागीय लेखांकन संगठन	79
6.	अनुसंलग्नक	91
7.	परिशिष्ट	119
	(i) डेयर को आवंटित विषय	120
	(ii) संगठन चार्ट	121
	(iii) कुल पद संख्या एवं प्रमुख पदाधिकारी	122
	(iv) डेयर/भाकृअनुप का बजट आवंटन	123
	(v) डेयर का बजट अनुमान एवं संशोधित अनुमान	124

01

सिंहावलोकन

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE)

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग की स्थापना कृषि मंत्रालय द्वारा दिसम्बर, 1973 में की गई थी। डेयर द्वारा देश में कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार को संचालित एवं प्रोत्साहित किया जाता है। इसके प्रशासनिक नियंत्रण में निम्नलिखित चार स्वायत्त निकाय हैं :

1. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली
2. केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (CAU), इम्फाल, मणिपुर
3. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (DRPCAU), पूसा, समस्तीपुर, बिहार
4. रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (RLBCAU), झांसी, उत्तर प्रदेश

डेयर द्वारा सम्पूर्ण देश में बागवानी, मात्स्यिकी तथा पशु विज्ञान सहित कृषि में अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार का संचालन, मार्गदर्शन और प्रबंधन करने के लिए राष्ट्र के अग्रणी अनुसंधान संगठन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के लिए जरूरी सरकारी सम्पर्क प्रदान किए जाते हैं।

इसके अलावा, इसके नियंत्रण में सम्बद्ध कार्यालय के रूप में कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल तथा भारत सरकार के एक उपक्रम के रूप में एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn) भी हैं।

01 अक्तूबर 2022 से 30 सितंबर 2023 की अवधि में दर्ज की गईं प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं :

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (भाकृअनुप) यह सुनिश्चित करता है कि महत्वपूर्ण खोजें और प्रौद्योगिकियां हमारे किसानों, उत्पादकों और उपभोक्ताओं तक पहुंचे। भाकृअनुप द्वारा शैक्षणिक एवं अन्य संगठनों; लघु व्यवसाय एवं उद्योग समूहों; सरकार की सभी स्तर की एजेन्सियों; तथा गैर सरकारी, सार्वजनिक एवं निजी संगठनों के साथ सहयोग करते हुए सामाजिक चुनौतियों का समाधान किया जाता है। भाकृअनुप ने कहीं अधिक प्रभावी एवं प्रतिस्पर्धी बनने, प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण को टिकाऊ बनाने, खाद्य आपूर्ति की निरन्तरता को बनाये रखने और पोषण में सुधार करने के लिए अन्य एजेन्सियों के साथ मजबूती से सहयोग को बनाये रखा है। भाकृअनुप द्वारा कृषि एवं ग्रामीण खुशहाली को सुनिश्चित करने के परिषद के रणनीतिपरक उद्देश्यों को पूरा करने और आत्मनिर्भर कृषि की दिशा में कार्य किया जा रहा है। भाकृअनुप ने कृषि अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है जिनमें शामिल हैं: खाद्य प्रणाली रूपान्तरण, खाद्य, पोषण एवं मानव स्वास्थ्य को प्रोत्साहन, जलवायु एवं ऊर्जा संबंधी जरूरतें; प्राकृतिक संसाधनों का टिकाऊ उपयोग; खाद्य सुरक्षा; लघु व्यवसाय नवाचार एवं उत्पाद विकास; कृषि शिक्षा एवं कार्यबल विकास। भाकृअनुप ने कृषि में उच्चतर शिक्षा में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने और सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालयों में कृषि शिक्षा का समन्वयन करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। परिषद द्वारा कृषि में डिजिटल प्लेटफार्म की सुविधा प्रदान करने और किसानों के सशक्तिकरण हेतु आईसीटी का प्रयोग करने की दिशा में मजबूती से कार्य किया गया है।

खाद्यान्न की 283 किस्मों और बागवानी फसलों की 99 किस्मों का विकास खाद्य सुरक्षा के प्रति भाकृअनुप की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। इनमें कुल 35 जैव–प्रबलित किस्में और सूखा, जल की कमी, बाढ़, जल–भराव, लवणता, सॉडीसिटी एवं कम तापमान आदि जैसे विभिन्न अजैविक दबावों का मुकाबला करने वाली 32 किस्में भी शामिल हैं। कृषि उत्पादन और संसाधन प्रबंधन को अनुकूल बनाकर ये प्रयास भारतीय कृषि में संधारणीयता और अनुकूलनता के युग में आगे बढ़ने का भरोसा उत्पन्न करते हैं। पोषण प्रबंधन में 24 फसलों के लिए उर्वरीकरण अनुसूची तैयार करना एक महत्वपूर्ण कदम है जो कि बढ़ी हुई फसल उत्पादकता के प्रति आशाजनक है। भाकृअनुप द्वारा कुल 28 नवीन उपकरणों और मशीनों का विकास करना कृषि पद्धतियों के यांत्रिकीकरण और आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसी प्रकार, नवीन मत्स्य प्रजातियों के लिए प्रजनन प्रोटोकॉल की स्थापना करना जलजीव पालन एवं मत्स्य उत्पादन क्षेत्र में एक उल्लेखनीय योगदान है। भाकृअनुप की प्रगतिशील सोच, एक टिकाऊ एवं सम्पन्न उद्योग को सुनिश्चित करते हुए मात्स्यिकी क्षेत्र को नई ऊचांइयों तक ले जाने का भरोसा उत्पन्न करती है। रोबोटिक्स अनुसंधान के क्षेत्र में भाकृअनुप का प्रवेश एक अग्रणी कदम है जो कृषि में क्रान्ति को प्रोत्साहित करता है। कृषि पद्धतियों में रोबोटिक्स की सीमाओं को दूर करके भाकृअनुप द्वारा न केवल नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है वरन् एक ऐसे भविष्य के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है जहां टिकाऊ कृषि में प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कुल 47,088 ऑन–फार्म परीक्षणों और 2.99 लाख अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन करना जमीनी स्तर पर भाकृअनुप की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इन पहलों से जहां वैज्ञानिक प्रगति और उनका खेत पर प्रयोग करने के मध्य अन्तराल कम होता है वहीं यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि देशभर में किसान नवोन्मेषी पद्धतियों को सुचारू रूप से अपना सकें।

केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (CAU), इम्फाल

संसद के केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम,

1992 (1992 की अधिनियम संख्या 40) जो 26 जनवरी, 1993 को लागू किया गया था, के अंतर्गत केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल की स्थापना सन् 1993 में की गई थी। दिनांक 13 सितम्बर, 1993 को अपने प्रथम कुलपति द्वारा कार्यभार ग्रहण करने के साथ ही इस विश्वविद्यालय ने कार्य करना प्रारंभ कर दिया था। विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र का विस्तार सात पूर्वोत्तर राज्यों यथा अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, सिक्किम, नगालैण्ड एवं त्रिपुरा तक किया गया है और इसका मुख्यालय इम्फाल, मणिपुर में स्थित है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, शैक्षणिक वर्ष 2023–24 में विभिन्न अंडर–ग्रेजुएट, मास्टर्स तथा पीएच.डी. कार्यक्रमों में क्रमशः 564, 232 एवं 55 छात्रों को प्रवेश दिया गया। इसी प्रकार इस अवधि के दौरान कुल 424 यूजी और 202 पीजी छात्रों ने अपना डिग्री कार्यक्रम पूर्ण किया और 28 छात्रों को पीएच.डी. डिग्री प्रदान की गई। विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया। इस विश्वविद्यालय का निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों, सरकारी उपक्रमों आदि में रोजगार हासिल करने का अच्छा रिकॉर्ड है। वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय के कुल 195 छात्रों को विभिन्न संगठनों में अलग–अलग क्षमताओं में रोजगार हासिल हुआ। वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय द्वारा 25 आन्तरिक वित्त पोषित अनुसंधान परियोजनाएं (IPRs) तथा 102 बाह्य वित्त पोषित परियोजनाएं चलाई गईं। पूर्वोत्तर राज्यों की जल धाराओं में कुल 303 दुर्लभ तथा स्वदेशी मत्स्य प्रजातियों का डेटाबेस तैयार किया गया, 182 मत्स्य प्रजातियों की बारकोडिंग की गई। दस किलोग्राम क्षमता वाली एक मिनी मत्स्य स्मोकिंग किल्न तथा सस्ती पाब्डा हेचरी का विकास किया गया। विश्वविद्यालय के विभिन्न संघटक कॉलेजों में कुल 465 प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, सेमिनार तथा ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। संकाय सदस्यों में, 41 सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं सेमिनार में, 44 को राष्ट्रीय सम्मेलन एवं सेमिनार में, 24 को कार्यशालाओं में, 13 को दीर्घावधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में और 30 को अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भेजा गया। विश्वविद्यालय के 19 संकाय सदस्यों को तथा दस कॉलेजों के कुल 62 छात्र–छात्राओं को प्रतिष्ठित विदेशी संस्थानों में प्रशिक्षण हेतु भेजा गया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (DRPCAU), पूसा, समस्तीपुर, बिहार

राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (1970) तथा कृषि अनुसंधान संस्थान एवं कॉलेज, पूसा (1905) की अपनी विरासत के साथ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (DRPCAU), पूसा, समस्तीपुर, बिहार की स्थापना दिनांक 7 अक्तूबर, 2016 को की गई।

दिनांक 28 फरवरी, 2023 को आयोजित अपने तीसरे दीक्षांत समारोह में कुल 242 यूजी, 371 पीजी तथा 22 पीएच.डी. छात्र–छात्राओं को उपाधियां प्रदान की गईं। इनमें विश्वविद्यालय टॉपर्स रहने वाले छात्रों को स्वर्ण पदक देना भी शामिल था। सभी सामान्य सरकारी विश्वविद्यालयों के लिए एमडीआरए–इंडिया टुडे सर्वे 2023 की रैंकिंग स्थिति में इस विश्वविद्यालय को दसवां स्थान दिया गया। विश्वविद्यालय में दिनांक 23 से 25 फरवरी, 2023 की अवधि में 'किसानों की खुशहाली के लिए प्राकृतिक खेती एवं पोषक अनाज की खेती' विषय पर किसान मेला आयोजित किया गया। इस किसान मेले में 7,500 से भी अधिक किसानों ने नवीन प्रौद्योगिकियों का लाभ अर्जित किया। विश्वविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा वाली प्रतियोगिताओं को उत्तीर्ण और बड़ी संख्या में फेलोशिप अर्जित करके शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है।

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (RLBCAU), झांसी

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (RLBCAU), झांसी, देश में ऐसा पहला कृषि विश्वविद्यालय है जिसे दिनांक 5 मार्च, 2014 को भारत सरकार द्वारा संसद में अधिनियम पारित करके राष्ट्रीय महत्व के एक संस्थान के रूप में स्थापित किया गया था।

विश्वविद्यालय ने बुनियादी सुविधा विकास सहित शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार शिक्षा में अपनी अधिदेशित गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। विश्वविद्यालय द्वारा प्रभावशीलता, बुनियादी सुविधा, अनुदेश सामग्री, प्रयोगशालाओं और मानव संसाधनों में सुधार लाकर लगातार प्रगति एवं गुणवत्ता परिणामों में तेजी लाने हेतु अनेक पहल की गई हैं। दिनांक 11 मार्च, 2023 को आयोजित अपने द्वितीय दीक्षांत समारोह में विश्वविद्यालय द्वारा कुल 213 छात्र–छात्राओं को उपाधियां अथवा डिग्री प्रदान की गईं। इसके साथ ही विभिन्न पाठ्यक्रम कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय टॉपर्स रहने वाले कुल 16 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदक दिए गए। रिपोर्टाधीन वर्ष में विश्वविद्यालय ने अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं, सेमिनार तथा संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया। विश्वविद्यालय द्वारा 'बुंदेली कृषि विपणन' मोबाइल ऐप तथा एआई–डीआईएससी (AI-DISC) एंड्रायड मोबाइल ऐप भी विकसित किया गया। इसके अतिरिक्त रिपोर्टाधीन वर्ष में एनआईबीपीपी मोबाइल ऐप– एनएएचईपी संघटक 2 के अंतर्गत भाकृअनुप–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान के साथ सहयोग करते

हुए जारी किया गया। विश्वविद्यालय ने भिन्न संस्थानों के मध्य ज्ञान, विशेषज्ञता तथा संसाधनों के आदान–प्रदान की सुविधा के साथ ही अकादमिक एवं अनुसंधान गतिविधियों के लिए एक सक्षम वातावरण को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न संस्थानों/संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन (MoUs) पर हस्ताक्षर किए। रिपोर्टाधीन वर्ष में विश्वविद्यालय द्वारा कई प्रमुख कार्यक्रम/आउटरिच कार्यक्रम यथा अटल जय विज्ञान व्याख्यान माला, किसान मेला – 2023 तथा बुंदेलखण्ड एग्री एक्सपोर्ट प्रोमोशन समिट – 2023 का आयोजन किया गया।

कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB)

गजेन्द्र गडकर समिति की सिफारिशों के अनुसरण में दिनांक 01 नवम्बर, 1973 को कैबिनेट के अनुमोदन से एक स्वतंत्र नियुक्ति एजेन्सी के रूप में कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB) की स्थापना की गई थी। दिनांक 01 अगस्त, 2018 को आयोजित केन्द्रीय मंत्रिपरिषद की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार भारत सरकार द्वारा मण्डल अथवा बोर्ड के पुनर्गठन को अनुमोदित किया गया । इस निर्णय को दिनांक 09 अगस्त, 2018 को भारत सरकार के राजपत्र में औपचारिक रूप से अधिसूचित किया गया।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, बोर्ड ने कुल 790 अनुसंधान प्रबंधन पदों (आरएमपी) एवं गैर–आरएमपी पदों के लिए विज्ञापन जारी किए। एआरएस (प्रारंभिक) परीक्षा के परिणामों के आधार पर, कुल 2,792 अभ्यर्थी एआरएस मुख्य परीक्षा के लिए पात्र बने जिनमें से वास्तव में केवल 2,437 अभ्यर्थियों ने एआरएस मुख्य परीक्षा में भाग लिया। कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB) द्वारा दिनांक 28 नवम्बर, 2021 को कृषि अनुसंधान सेवा (मुख्य) परीक्षा का तथा उसके उपरान्त दिनांक 9 से 20 दिसम्बर, 2022 की अवधि के दौरान मौखिक (Viva-voce) परीक्षा का आयोजन किया गया। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप 47 विषयों के कुल 208 अभ्यर्थियों की संस्तुति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत प्रविष्टि स्तरीय वैज्ञानिक पदों के लिए की गई। बोर्ड ने कुल 451 पदों के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया सफलतापूर्वक आयोजित की। इन पदों में शामिल थे : एक उप महानिदेशक, 19 सहायक महानिदेशक, 68 निदेशक, 2 परियोजना निदेशक, 18 संयुक्त निदेशक, 17 परियोजना समन्वयक, 280 संभागाध्यक्ष/क्षेत्रीय केन्द्र के अध्यक्ष तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के 38 वरिष्ठ वैज्ञानिक सह अध्यक्ष।

एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn)

भारत सरकार के एक उपक्रम, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn) को दिनांक 19 अक्तूबर, 2011 को कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 की संख्या 1) के अंतर्गत शामिल किया गया था और इसे कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE), कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के स्वामित्व में रखा गया। एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn), भारत सरकार का एक उपक्रम है तथा कृषि में नवाचारों को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने एवं 'नवोन्मेषी भागीदारी वाले विश्व' का निर्माण करने वाले अपने उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ रहा है। यह कम्पनी अनुसंधान संस्थानों और कृषि उद्योग जगत के मध्य एक प्रमुख इन्टरफेस के रूप में कार्य करती है तथा घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए लाइसेन्सिंग के माध्यम से प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण को बढ़ावा देती है। कम्पनी ने रिपोर्टाधीन अवधि में अपने कार्यों से अपने सकल राजस्व में उल्लेखनीय बढ़ोतरी करते हुए रुपये 10.01 करोड़ (कर रहित एवं रुपये 43 लाख की रॉयल्टी सहित) का राजस्व अर्जित किया है। ये प्रौद्योगिकियां फसल विज्ञान (12.49%), डेयरी तथा पशु चिकित्सा विज्ञान (64.27%), बागवानी (20.47%) तथा मात्स्यिकी (2.76%) से संबंधित हैं। एग्रीनोवेट टीम द्वारा कम्पनी के लिए व्यवसाय अवसरों का व्यापक प्रसार करने के परिणामस्वरूप एग्रीनोवेट के माध्यम से 59 संस्थानों तथा 4 विश्वविद्यालयों की 600 से भी अधिक प्रौद्योगिकियों को व्यावसायीकरण हेतु तैयार प्रौद्योगिकियों की सूची में शामिल किया गया है। मानकीकृत प्रोटोकॉल के साथ, एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड़ (AgIn) ने वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान लगभग 123 प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनेक संस्थानों, उद्योग समूहों, किसानों और अंतिम हितधारकों की मदद की है।

अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान पर परामर्शी समूह (CGIAR)

अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान पर परामर्शी समूह (सीजीआईएआर) एक वैश्विक भागीदारी है जो कि भावी खाद्य सुरक्षा के लिए अनुसंधान में संलग्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को आपस में जोड़ती है। इसके साथ यह ग्रामीण गरीबी को कम करने, खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने, मानव स्वास्थ्य एवं पोषण में सुधार लाने तथा प्राकृतिक संसाधनों का टिकाऊ प्रबंधन सुनिश्चित करने के प्रति या समर्पित है। अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान पर परामर्शी समूह (सीजीआईएआर) में भारत दशकों से एक प्रदाता सदस्य देश के रूप में शामिल है। इसके साथ ही यह सीजीआईएआर प्रणाली परिषद में एक स्थाई मतदाता सदस्य भी है जो दो वैकल्पिक भागीदार देशों यथा बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ परिषद के दक्षिण एशिया क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। अब, सीजीआईएआर एक रूपांतरण/बदलाव प्रक्रिया से गुजर रहा है और अनुसंधान को सीजीआईएआर के तहत भिन्न पहल में समूहीकृत किया जाएगा। नवीन पहल के अंतर्गत प्रासंगिक सीजी केन्द्रों तथा वैश्विक मांग, नवाचार तथा स्केलिंग भागीदारों को एकसाथ लाकर चिन्हित क्षेत्रों पर कार्य किया जाएगा।

प्रमुख गतिविधियां

कार्य योजना

- कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के विकास के लिए सघन सहयोगात्मक प्रयासों को विकसित करने, प्रोत्साहित करने और उनमें तेजी लाने हेतु सहयोग पर किए गए समझौता ज्ञापन के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) तथा इंटरनेशनल पोटेटो सेन्टर (CIP) के मध्य वर्ष 2022–2027 की अवधि के लिए दिनांक 13 दिसम्बर, 2022 को कार्य योजना पर हस्ताक्षर किए गए।
- जल प्रबंधन अनुसंधान के क्षेत्र में गहन सहयोगात्मक प्रयासों को विकसित करने, प्रोत्साहित करने और उनमें तेजी लाने के लिए सहयोग पर किए गए समझौता ज्ञापन के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) एवं अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (IWMI) के बीच वर्ष 2022–2026 की अवधि के लिए दिनांक 24 अप्रैल, 2023 को कार्य–योजना पर हस्ताक्षर किए गए।
- कृषि अनुसंधान के लिए गहन सम्पर्क एवं सहयोगात्मक प्रयासों को विकसित करने, प्रोत्साहित करने और उनमें तेजी लाने के लिए किए गए समझौता ज्ञापन के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (DARE) एवं शुष्क क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र (ICARDA) के मध्य वर्ष 2022–23 से 2026–27 की अवधि के लिए दिनांक 28 नवम्बर, 2022 को कार्य–योजना पर हस्ताक्षर किए गए।
- पशुधन अनुसंधान के क्षेत्र में गहन सहयोगात्मक प्रयासों को विकसित करने, प्रोत्साहित करने और उनमें तेजी लाने के लिए किए गए समझौता ज्ञापन के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) एवं अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान (ILRI) के मध्य वर्ष 2022–23 से 2026–27 की अवधि के लिए दिनांक 28 नवम्बर, 2022 को कार्य–योजना पर हस्ताक्षर किए गए।

भाकृअनुप संस्थानों के साथ सहयोग हेतु अनुमोदन के लिए आगे बढ़ाई गई परियोजनाएं

- तीन वर्ष की अवधि के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना शीर्षक ''दि साउथ एशिया एग्रीकल्वर एडैप्टेशन एटलस : इन्टरकनेक्शन्स बिटवीन क्लाइमेट रिस्क, प्रैक्टिस, टैक्नोलॉजीज, एंड पॉलीसिज (दक्षिण एशिया कृषि अनुकूलन एटलस : जलवायु जोखिम, रीतियों, प्रौद्योगिकियों तथा नीतियों के मध्य अंतर–संबंध)'' तीन वर्ष की अवधि के लिए अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं सुधार केन्द्र (CIMMYT), मैक्सिको के साथ सहयोग करते हुए भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना शीर्षक ''फिजियोलॉजिकल बेसिस ऑफ एमेलियोरेशन ऑफ हीट स्ट्रेस थ्रू नाइट्रोजन मैनेजमेन्ट इन व्हीट (गेहूं में नाइट्रोजन का प्रबंधन करके ताप दबाव के सुधार का शरीरक्रिया विज्ञान आधार)'' को प्रस्तुत किया गया।
- भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं सुधार केन्द्र नैरोबी, केन्या द्वारा वित्त पोषित की जाने वाली सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना शीर्षक ''मक्का में फॉल आर्मीवर्म *स्पोडोप्टेरा फ्रुजीपर्डा* संक्रमण का मुकाबला करने हेतु एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (IPM) माड्यूल्स का विकास एवं प्रमाणन'' को प्रस्तुत किया गया।

विदेशी दौरे

- डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप ने दिनांक 8 दिसम्बर, 2022 को ढ़ाका, बांग्लादेश में प्रमुख वक्ता के रूप में 38वें साउथ एशियन एसोसिएशन फॉर रीजनल कॉपरेशन (SAARC) चार्टर दिवस में भाग लिया।
- डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप ने दिनांक 21–23 अप्रैल, 2022 को को कोलम्बो, श्रीलंका में आयोजित भाकृअनुप – आईडब्ल्यूएमआई संचालन समिति की बैठक में भाग लिया।
- डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप ने दिनांक 10–12 मई, 2023 को वांशिगटन डीसी, संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित सीजीआईएआर प्रणाली परिषद बैठक में भाग लिया।

भाकृअनुप द्वारा पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन एवं नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके कृषि को टिकाऊ बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई गई जिससे राष्ट्र को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न, बागवानी फसल, दुग्ध, मत्स्य तथा अण्डा उत्पादन को बढ़ाने हासिल करने में मदद मिली। इससे न केवल हमारा राष्ट्र खाद्य एवं पोषण की दृष्टि से सुरक्षित बना वरन् इससे किसानों की आजीविका में भी सुधार हुआ।

(हिमांशु पाठक)
सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग एवं
महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद,
नई दिल्ली–110 001

02

डेयर के अंतर्गत निकाय एवं उनकी गतिविधियां

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान रणनीतिपरक उद्देश्यों, प्रमुख प्रदर्शन संकेतकों (KPIs) तथा आउट–पुट फ्रेमवर्क को हासिल करने की दिशा में हासिल की गईं उपलब्धियों एवं प्रगति को प्रस्तुत किया गया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि उल्लेखनीय खोज एवं प्रौद्योगिकियां हमारे किसानों, उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं तक पहुंचें। भाकृअनुप द्वारा अन्य भागीदारों जिनमें शैक्षणिक एवं विज्ञान संगठन; लघु व्यवसाय एवं उद्योग समूह; सरकार की सभी एजेन्सियां; तथा गैर सरकारी, सार्वजनिक एवं निजी संगठन शामिल हैं, के साथ सहयोग करते हुए सामाजिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत किया जाता है। परिषद ने कहीं अधिक प्रभावी एवं प्रतिस्पर्धी बनने, प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण को टिकाऊ बनाने और खाद्य आपूर्ति को टिकाऊ बनाने एवं पोषण में सुधार लाने हेतु अन्य एजेन्सियों के साथ मजबूत सहयोग बनाये रखा। परिषद द्वारा आत्मनिर्भर कृषि और कृषि एवं ग्रामीण खुशहाली को सुनिश्चित करने हेतु भाकृअनुप के रणनीतिपरक उद्देश्यों को पूरा करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। रिपोर्टाधीन अवधि में, भाकृअनुप द्वारा कृषि अनुसंधान के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया जैसे कि खाद्य प्रणाली रूपांतरण; खाद्य, पोषण एवं मानव स्वास्थ्य प्रोत्साहन; जलवायु एवं ऊर्जा जरूरतें; प्राकृतिक संसाधनों का टिकाऊ उपयोग; खाद्य सुरक्षा; लघु व्यवसाय नवाचार एवं उत्पाद विकास; कृषि शिक्षा एवं कार्यबल विकास। परिषद ने कृषि में उच्चतर शिक्षा में उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने और सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालयों में कृषि शिक्षा का समन्वयन करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है। परिषद द्वारा कृषि में डिजिटल प्लेटफार्म की सुविधा प्रदान करने और किसानों के सशक्तिकरण हेतु आईसीटी का प्रयोग करने की दिशा में मजबूती से कार्य किया गया है।

खाद्यान्न की 283 किस्मों और बागवानी फसलों की 99 किस्मों, जिनमें 35 जैव–प्रबलित किस्में भी शामिल हैं, का विकास खाद्य सुरक्षा के प्रति भाकृअनुप की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। कृषि उत्पादन एवं संसाधन प्रबंधन को अनुकूल बनाकर ये सार्थक प्रयास भारतीय कृषि में संधारणीयता एवं अनुकूलनता के युग की शुरूआत करने का भरोसा उत्पन्न करते हैं। पोषण प्रबंधन, आशाजनक रूप से बढ़ी हुई फसल उत्पादकता की दिशा में 24 फसलों के लिए उर्वरीकरण अनुसूची की स्थापना एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। परिषद द्वारा 28 नवीन उपकरणों और मशीनों का विकास किया जाना कृषि पद्धतियों के यांत्रिकीकरण एवं आधुनिकीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है। नवीन मत्स्य प्रजातियों के लिए प्रजनन प्रोटोकॉल की स्थापना करना जलजीव पालन एवं मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय योगदान है। भविष्य के बारे में सोच रखने वाला परिषद का दृष्टिकोण एक टिकाऊ तथा फलते–फूलते उद्योग को सुनिश्चित करते हुए मात्स्यिकी क्षेत्र को नई ऊंचाइयां प्रदान करने का भरोसा जगाता है। रोबोटिक्स अनुसंधान की दिशा में भाकृअनुप का प्रयास एक अग्रणी कदम है जो कृषि में क्रान्ति लाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कृषि रीतियों में रोबोटिक्स की सीमाओं को दूर करते हुए भाकृअनुप द्वारा न केवल नवाचारों को अपनाया जा रहा है वरन् एक ऐसे भविष्य जहां टिकाऊ कृषि में प्रौद्योगिकी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जाती है, के लिए भी मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है। कुल 47,088 ऑन–फार्म परीक्षणों और 2.99 लाख अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन करना जमीनी स्तर पर भाकृअनुप की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। ये पहल वैज्ञानिक प्रगति और खेत पर इनका प्रयोग करने के मध्य व्याप्त अन्तराल को पाटती हैं और साथ ही यह सुनिश्चित करती है कि देशभर के किसान सुचारू रूप से नवोन्मेषी रीतियों को अपना सकते हैं। वर्ष 2023–24 के दौरान परिषद की प्रमुख उपलब्धियों को नीचे प्रस्तुत किया गया है।

फसल सुधारः रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, कुल 283 फसल किस्मों/संकर किस्मों को व्यावसायिक खेती प्रयोजन के लिए अधिसूचित एवं जारी किया गया। इनमें कुल 35 जैव–प्रबलित किस्में और सूखा, जल की कमी, बाढ़, जल–भराव, लवणता, सॉडीसिटी एवं कम तापमान आदि जैसे विभिन्न अजैविक दबावों का मुकाबला करने वाली 32 किस्में शामिल हैं। प्रेसीजन प्रजनन टूल्स यथा मार्कर सहायतार्थ चयन का उपयोग करने से दस गुना विशिष्ट किस्मों के प्रजनन कार्य में मदद मिली। देश की विभिन्न कृषि पारिस्थितिकी परिस्थितियों में खेती के लिए अनाज की कुल 125 उच्च उपजशील किस्मों/संकर किस्मों को जारी किया गया। इनमें धान की 47, मक्का की 21, गेहूं की 24, ज्वार की 9, बाजरा की 4, कुटकी की 6, रागी की 5, चीना अथवा प्रोसो मिलेट की 3, कोदो और कंगनी प्रत्येक की दो–दो, ब्राउन टॉप मिलेट और बर्नयार्ड मिलेट प्रत्येक की एक–एक किस्म शामिल थी। देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए तिलहन की कुल 52 उच्च उपजशील किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया जिनमें भारतीय सरसों की 13, सोयाबीन की 10, अलसी की 7, मूंगफली की 8, तिल की 5, कुसुम की 3, सूरजमुखी व गोभी सरसों प्रत्येक की दो–दो तथा रामतिल और पीली सरसों प्रत्येक की एक–एक किस्म शामिल थी। इसी प्रकार, दलहन की कुल 59 उच्च उपजशील किस्मों को जारी किया गया जिनमें उड़द की 15, चना की 13, मूंग की 8, अरहर

एवं मटर प्रत्येक की 6, लोबिया व मसूर प्रत्येक की 4 तथा क्लस्टरबीन अथवा ग्वार की एक किस्म तथा राजमा की 2 किस्में सम्मिलित थीं। देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए कपास की 13, गन्ने की 11, जूट अथवा पटसन की 2 और सनई, मेस्टा अथवा रोजेल तथा मेस्टा अथवा केनॉफ प्रत्येक की एक–एक किस्म सहित व्यावसायिक फसलों की कुल 29 उच्च उपजशील किस्मों/संकर किस्मों को खेती के लिए जारी किया गया। इसी प्रकार, देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों में खेती करने के लिए चारा जई की 2, चारा बाजरा की 3, चारा ज्वार की 10 और चारा लोबिया, दीनानाथ घास और दाना चौलाई प्रत्येक की 1–1 किस्म सहित चारा व अन्य फसलों की कुल 18 उच्च उपजशील किस्मों/संकर किस्मों को जारी किया गया। जल की कमी वाली परिस्थितियों के अंतर्गत, मैलीक एंजाइम (ME)–पराजीनी वंशक्रमों में घटी हुई पत्ती मैलेट मात्रा और बढ़ा हुआ प्रकाश संश्लेषण प्रदर्शन देखने को मिला। पोषक तत्वों को ग्रहण करने और पर्यावरणीय दबाव को कम करने के लिए पौधे राइजोस्फेरिक माइक्रोबियोम पर आश्रित होते हैं। कोर माइक्रोबियोटा के नाम से ज्ञात राइजोस्फेरिक माइक्रोबियोम के लघु उप सेट में सूक्ष्मजीव समुदाय का एक विशेष सेट शामिल होता है जो लगातार पादप प्रजातियों से जुड़ा रहता है। मध्य आईजीपी में गेहूं राइजोस्फेयर के कोर माइक्रोबियोटा के रूप में कुल 186 टैक्सा की पहचान की गई और ट्रांस–आईजीपी में कोर माइक्रोबियोटा के रूप में कुल 163 टैक्सा की पहचान की गई।

बागवानी फसलों की कुल 99 किस्मों का विकास किया गया इनमें, फलदार एवं रोपण फसलों यथा एवोकैडो, शरीफा, बेल, इमली, नारियल, कोको तथा काजू की 12 नई किस्मों की पहचान की गई और इन्हें खेती के लिए जारी किया गया। सब्जी फसलों में, मिर्च, फाबाबीन, भिण्डी, परवल, विंग्ड बीन, जल पालक, पालक अथवा पालक चुकन्दर, मूली, बैंगन, टमाटर, चौलाई, तरबूज, ककड़ी, लौकी अथवा घिया, करेला, मटर, कण्टोला, सहजन, भारतीय बीन अथवा सेम,

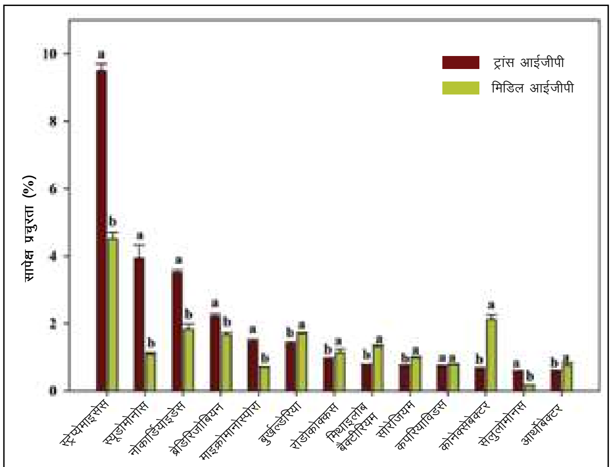

सिंधु–गंगा के मैदानी इलाकों में गेहूं की खेती का कोर राइजोस्फेयर माइक्रोबियोम

मिर्च का अर्का धृति एफ1 संकर

मिर्च का अर्का निहिरा एफ1 संकर

यार्ड लांग बीन, तोरई, आलू तथा कंदाकार फसलों की उच्च उपज क्षमता वाली और जैविक तथा अजैविक दबावों की सहिष्णु किस्मों को खेती करने के लिए जारी किया गया। मसाला फसलों में, काली मिर्च, अदरक, छोटी इलायची, डिल तथा स्टार एनाइज की किस्में विकसित की गईं। फूलों में नौ, औषधीय पौधों में एक तथा खुम्ब अथवा मशरूम में तीन उच्च उपजशील किस्मों की पहचान की गई।

पशुधन सुधारः भारत की पहली क्लोन्ड गाय (नामतः गंगा) का जन्म हुआ जिससे भारत में गोपशु में क्लोनिंग की संभावनाएं प्रदर्शित हुईं। गिर गोपशु को अपनी सहनशीलता और रोग प्रतिरोधिता के लिए विश्वभर में जाना जाता है। इस उपलब्धि ने भारत के डेयरी क्षेत्र के लिए नए मार्ग प्रशस्त किए हैं और उच्च गुणवत्ता वाले स्वदेशी डेयरी पशुओं को उत्पन्न करने में उन्नत प्रजनन प्रौद्योगिकियां प्रस्तुत की हैं। साहीवाल नस्ल की कुल 36,270 वीर्य खुराकों को हिमशीतित किया गया और 11,520 वीर्य खुराकों का उपयोग प्रजनन कार्य में किया गया। खेत संतति परीक्षण कार्यक्रम के माध्यम से हस्तक्षेप करते हुए अंगीकृत किए गए गांवों में औसत प्रथम दुग्धस्रवण उत्पादन 305 दिन पाई गई। हिसार, हरियाणा में भाकृअनुप–केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान द्वारा उत्कृष्ट डिम्ब अथवा अंडाणु पिक अप और *स्वः पात्रे* भ्रूण उत्पादन (ओपीयू–आईवीईपी) तकनीक का उपयोग करते हुए सफलतापूर्वक एक नर भैंस कटड़ा नामतः 'वीर गौरव' को जन्म दिया गया।

चार पीढ़ियों में परस्पर समागम वाले अविशान भेड़ के वृद्धि एवं बहु प्रसवता गुणों पर आंकड़ों का विश्लेषण करने

भाकृअनुप–केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार द्वारा ओपीयू–आईवीईपी तकनीक का उपयोग करते हुए एक नर भैंस कटड़ा नामतः 'वीर गौरव' का जन्म

पर पता चला कि चार पीढ़ियों में अविशान भेड़ में बहु प्रसवता की सीमा जन्म पर 1.66 से 1.81 के लिटर आकार के साथ 59.5 से 71.4 प्रतिशत के मध्य थी। रिपोर्टाधीन वर्ष में विभिन्न केन्द्रों से कुल 4,819 किसानों/लाभान्वितों को 5,85374 कुक्कुट जननद्रव्य का वितरण किया गया। कुक्कुट अथवा पोल्ट्री बीज परियोजना केन्द्रों ने अपने संबंधित क्षेत्रों/राज्यों में कुल 358588 उन्नत कुक्कुट पक्षियों का वितरण किया। एक इलुमिना प्लेटफार्म (150 युग्मीय एंड रीड्स) में 20x कवरेज के साथ गिनी फाउल पक्षी की कादम्बरी नस्ल के जीनोम का अनुक्रमण करने में अगली पीढ़ी अनुक्रमण तकनीक का उपयोग किया गया।

मत्स्य सुधारः दिसम्बर, 2022 के दूसरे सप्ताह में >2 वर्षों वाले परिपक्व नर एवं मादा मत्स्य में पिंजरा परिस्थितियों के अंतर्गत एक यूरीहैलाइन प्रजाति गोल्डलाइन्ड सीब्रीम (*रैब्डोसार्गस सर्बा*) में सफल उत्प्रेरित प्रजनन हासिल किया गया। एक स्वदेशी प्रायद्वीपीय कॉर्प, हिप्सेलोबार्बस कोलस की उत्प्रेरित प्रजनन एवं बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी का मानकीकरण किया गया। ब्लैक बार क्रॉमिस (*पिन्कोक्रॉमिस रिट्रोफेसियेटस*), सीरूलियन डैम्सल (*पोमासेन्ट्रस सीरूलियस*) तथा माल्दीव्स डैमसेल्फिस (*एमब्लिग्लाइफिडोडॉन इण्डिकस*) के ब्रूडस्टॉक विकास, प्रजनन एवं लार्वा पालन के प्रोटोकॉल सहित तीन समुद्री अलंकारिक मत्स्य की प्रजनन प्रौद्योगिकियां हासिल की गईं।

भाकृअनुप – केन्द्रीय मीठा जलजीव पालन संस्थान, भुबनेश्वर द्वारा कैटफिश ब्रूडस्टॉक प्रबंधन, उत्प्रेरित प्रजनन, हैचरी प्रबंधन, बीज उत्पादन और सजीव आहार संवर्धन विषयों पर देशभर के किसानों को व्यक्तिगत प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। प्रशिक्षण पाने के उपरान्त तीन मत्स्य किसानों ने सफलतापूर्वक कैटफिश हैचरी की स्थापना की और कैटफिश बीज उत्पन्न किए। भाकृअनुप – राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा स्वदेशी समुद्रीय अलंकारिक झींगा/मत्स्य का प्रवर्धन करने के लिए अगाती द्वीप पर एक समुद्रीय अलंकारिक जलीय जीव जननद्रव्य संसाधन केन्द्र स्थापित करके लक्षद्वीप की महिलाओं के लिए टिकाऊ आजीविका अवसर उत्पन्न किए गए। स्वयं सहायता समूह क्लस्टर्स को प्रशिक्षण प्रदान किया गया और अलंकारिक झींगा तथा मत्स्य पालन करने के लिए सामुदायिक जलजीव पालन इकाइयों को सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है।

मालदीव्स डैमसेल मत्स्य (*एमब्लिग्लाइफिडोडॉन इण्डिकस*)

सीरूलियन डैम्सल (*पोमासेन्ट्रस सीरूलियस*)

ब्लैक बार क्रॉमिस (*पिन्कोक्रॉमिस रिट्रोफेसियेटस*)

आनुवंशिक संसाधनः दीर्घावधि भण्डारण प्रयोजन के लिए राष्ट्रीय जीनबैंक में परम्परागत बीज प्रजातियों की कुल 4,246 प्राप्तियों को शामिल किया गया जिससे

राष्ट्रीय जीनबैंक में आधारीय संकलन 4,67,254 प्राप्तियों तक पहुंच गया। *स्वः पात्रे* जीनबैंक में फलों, कंदों, बल्ब तथा औषधीय पौधों की कुल 39 प्राप्तियों को शामिल किया गया जिससे 68 वंश तथा 167 प्रजातियों के ~40,000 *स्वः पात्रे* संवर्धन के रूप में प्राप्तियों का कुल संकलन 2,001 हो गया। क्रायो जीनबैंक में, विभिन्न फसल प्रजातियों के बीजों और पराग जीनोमिक संसाधनों की कुल 378 प्राप्तियों को सफलतापूर्वक हिम परिरक्षित किया गया और इस प्रकार 2,194 जीनोमिक संसाधनों के साथ–साथ 885 प्रजातियों से संबंधित कुल 12,858 प्राप्तियों का कुल संकलन हो गया। डा. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप) द्वारा दिनांक 14 अगस्त, 2023 को भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय जीनबैंक और *स्वः पात्रे* संवर्धन सुविधा का दौरा किया गया और वहां वैज्ञानिकों से परस्पर बातचीत की। विभिन्न कृषि बागवानी फसलों की कुल 29,706 प्राप्तियों का मूल्यांकन/लक्षणवर्णन विभिन्न गुणों के लिए किया गया। इनमें चना (5084), अलसी (2576), गेहूं (2534), मिर्च (1100), वन्य साइसर (513), तोरिया व सरसों (402), मक्का (244), यार्ड लांग बीन (210) तथा अन्य फसलें (572) शामिल थीं। कुल 259 प्राप्तियों को शामिल करते हुए अलसी में कोर सेट विकसित किया गया। अनूठी प्राप्तियों यथा मोमयुक्त मटर जननद्रव्य (आईसी 220286), प्रचुर मक्का प्राप्तियां (केजी/वीके/एसकेटी – 222), कटाई पूर्व अंकुरण सहिष्णु उड़द प्राप्तियां (आईसी 482425 एवं आईसी 250220), प्रति पुष्पक्रम 12 पुष्पों के साथ मिर्च प्राप्ति (ईसी 769427) की पहचान की गई। राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव संवर्धन संकलन (NAIMCC) में वर्तमान में कुल 7,866 सूक्ष्मजीव प्राप्तियों का संकलन है जिसमें कवक (4,339), जीवाणु तथा एक्टिनोमायसीज (3,161), एवं सायनोबैक्टीरिया (366) शामिल हैं। संवर्धन संकलन में कुल 14 नवीन सूक्ष्मजीव वंश प्राप्त हुए। भाकृअनुप–एनबीएआईआर म्यूजियम को पर्यावरण एवं वन तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा कृषि उपयोगी कीटों, कुटकी तथा मकड़ी के लिए जैविक विविधता अधिनियम, 2002 के अंतर्गत 'राष्ट्रीय रिपोजिट्री' के रूप में निर्धारित किया गया है। राष्ट्रीय कीट म्यूजियम में अभी कुल 4,786 कीट नमूनों को शामिल करते हुए लगभग 2.40 लाख नमूनों का संकलन है।

विभिन्न बागवानी फसलों जिनमें, फलदार फसलें (248), पुष्पीय एवं अन्य अलंकारिक पौधे (271), सब्जी (525) तथा औषधीय एवं सगंधीय पौधे (38) शामिल हैं, के कुल 1,053 जननद्रव्यों का संकलन किया गया। इसके अलावा, ओडिशा के सुन्दरगढ़ जिले से सब्जी जननद्रव्य की कुल 90 प्राप्तियों (*लुफ्फा* प्रजाति, *अबेलमॉस्कस* प्रजाति, *ट्राइकोसैन्थीज* प्रजाति तथा *कुकुमिस* उप प्रजाति के कृष्य तथा वन्य संजात) को संकलित किया गया। कृष्य अथवा खेती किए गए जननद्रव्य के अलावा, विभिन्न फसलों की 42 प्रजातियों से संबंधित सब्जियों का कुल 83 जननद्रव्य संकलित किया गया जिसमें वन्य संजात की 30 प्रजातियां भी सम्मिलित थीं। भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, पूसा, नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय कृष्य पादप वनस्पति संग्रहालय (एनएचसीपी) में वनस्पति नमूनों (20) को भी जमा करवाया गया। मशरूम अथवा खुम्ब स्ट्रेन के कुल 1081 स्थान विशिष्ट संकलनों को भी संकलित किया गया जिनमें से 333 नमूनों/संवर्धन को पासपोर्ट डेटा के साथ भाकृअनुप – खुम्ब अनुसंधान निदेशालय में जमा करवाया गया और 92 संवर्धन को प्राप्ति संख्या प्रदान की गई। फलों, सब्जियों, पुष्पों तथा औषधीय व सगंधीय पौधों में भिन्न अनूठे गुणों के लिए भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, पूसा, नई दिल्ली में कुल 15 जननद्रव्यों का पंजीकरण किया गया।

पशुधन की दस पंजीकृत नस्लों को राजपत्र अथवा गजट में अधिसूचित किया गया। इनमें शामिल हैं : कठानी (महाराष्ट्र), संचोरी (राजस्थान), मसिलम (मेघालय) गोपशु; पूर्णाथडी भैंस (महाराष्ट्र), सोजत (राजस्थान), करौली (राजस्थान) तथा गुजरी (राजस्थान) बकरी एवं बांदा (झारखण्ड), मणिपुर ब्लैक (मणिपुर), वाक चैम्बिल (मेघालय) शूकर। इन नस्लों को शामिल करने के उपरान्त अभी तक सरकार द्वारा कुल 212 स्वदेशी नस्लों (गोपशु की 53, भैंस की 20, बकरी की 37, भेड़ की 44, अश्व तथा टट्टू की 7, ऊंट की 9, शूकर की 13, गधे की 3, श्वान की 3, याक की 1, कुक्कुट की 19, बत्तख की 2 तथा गूज़ की 1) को अधिसूचित किया जा चुका है। अगस्त, 2021 में भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा संस्थान परियोजनाओं के माध्यम से विभिन्न राज्यों में नवीन समजात संख्या अथवा पॉपुलेशन की पहचान करने के लिए एक मिशन युक्ति की शुरूआत की गई और मिशन की गतिविधियां प्रारंभ करने के बाद से अभी तक कुल 40 नवीन क्षमताशील संख्या अथवा पॉपुलेशन की पहचान की जा चुकी है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, चार गोपशु नस्लों (मलनाड गिद्दा, हरियाना, गिर, गंगातिरी); तीन भैंस नस्लों (नीली रावी, मेहसाणा, सूरती); तथा दो बकरी नस्लों (उस्मानाबादी, संगमनेरी) की कुल 18,050 वीर्य खुराकों को हिम परिरक्षित किया गया। इसके साथ ही, कुल 19 देसी नस्लों यथा लद्दाखी, सिरी तथा साहीवाल गोपशु; छांगथांगी, भाकरवाली, गद्दी एवं टेरेसा बकरी; गुरेज, बोनपाला, करनाह एवं गद्दी भेड़; एगोण्डा गोअन, वाक चैम्बिल, नियांग मेघा, माली, बांदा एवं निकोबारी शूकर; मेवाती ऊंट तथा काठियावाड़ी अश्व के कुल 2,240 कायिक कोशिका वायल्स का हिम परिरक्षण दीर्घावधि संरक्षण के लिए किया गया। वर्तमान में, राष्ट्रीय जीन बैंक में वीर्य के रूप में पशुधन तथा कुक्कुट की 61 देसी नस्लों/संख्या की और कायिक कोशिकाओं के रूप में 47 देसी नस्लों/संख्या की रिपोजिट्री है। पुनः 5 देसी नस्लों के कुल 122 ऊसाइट्स (विट्रीफाइड) को भी हिम परिरक्षित किया गया।

भाकृअनुप – राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो द्वारा तमिलनाडु, केरल और लक्षद्वीप के तटों से

समुद्री जल में से नवीन मत्स्य एवं झींगा प्रजातियों की खोज की गई। खोजी गईं समुद्रीय मत्स्य प्रजातियां थीं: *जिम्नोथोरेक्स तमिलनाडुयेन्सिस, कोन्जर मिलानेप्टेरस, रिंकोकोन्जर बाइकलरैटस, ओफिक्थिस नाइग्रोवेन्ट्रालिस* तथा *मैक्रोसिफेनचिलस सुमोडी*। खोजे गए समुद्रीय झींगा थे : *कॉपीट्स पुरशोथामनी* तथा *एल्फियस सल्कीपॉमा*। मैन्ग्रोव रेड स्नैपर, *ल्यूटजैनस अर्जेन्टीमैकुलेटस*, आर्थिक एवं जलजीव पालन के महत्व वाला एक समुद्रीय खाद्य मत्स्य है जिसमें 32.5 Mb की N50 मीट्रिक के साथ 521 स्कॉफोल्ड को शामिल करते हुए 1.04 Gb लंबाई वाला जीनोम पाया गया। पुनः मैन्ग्रोव रेड स्नैपर जीनोम में 31,969 प्रोटीन कोडिंग जीनों के शामिल होने का पूर्वानुमान किया गया है। एक लोकप्रिय समुद्रीय खाद्य मत्स्य, इंडियन ऑयल सार्डिन (*सार्डीनेला लॉजीसेप्स*) के सम्पूर्ण जीनोम की डिकोडिंग की गई। डिकोड किया गया जीनोम आकार 1.077 Gb है और इसमें 46,316 प्रोटीन कोडिंग जीन शामिल हैं। आनुवंशिक तथा जीनोमिक जांच से पता चला है कि इंडियन ऑयल सार्डिन दो बेहद अलग भंडार में मौजूद हैं, एक भारतीय जल क्षेत्र में और दूसरा ओमान की खाड़ी में। भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थापित राष्ट्रीय मत्स्य म्यूजियम एवं रिपोजिट्री को दिनांक 14 अप्रैल, 2023 को राष्ट्र को समर्पित किया गया। नव विकसित म्यूजियम में अनुसंधान एवं शिक्षा के लिए मीठा जल, समुद्रीय तथा खारा जल वातावरण के पंखमीन एवं शल्कमीन वाउचर नमूनों को प्रदर्शित किया गया है। इस म्यूजियम में रेडियोग्राफिक सुविधा भी प्रदान की गई है ताकि मत्स्य आकृतिविज्ञान गुणों को व्यापक रूप में समझा जा सके। इस म्यूजियम में 81 कोशिका वंशक्रम प्राप्तियों के साथ मत्स्य कोशिका की राष्ट्रीय रिपोजिट्री भी स्थित है।

फसल प्रबंधनः अनाज फसलों के साथ फली फसलों को शामिल करना कहीं बेहतर पाया गया। सबसे कम ग्रीनहाउस गैस सघनता (जीएचजीआई) के साथ मक्का – गेहूं फसलचक्र प्रणालियों के संबंध में मक्का + उड़द (उठी हुई क्यारी) + सोयाबीन (कूड़) – चना (उठी हुई क्यारी) + गेहूं (कूड़) (3 : 2) – मूंग (उठी हुई क्यारी) + सूरजमुखी (कूड़) (5 : 1) को अस्थाई रूप से शामिल करना आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद पाया गया जिसमें उच्चतर उत्पादक प्रभावशीलता (175 प्रतिशत) दर्ज की गई। लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए सब्जी फसलों के पॉलीहाउस में खेती (टमाटर, शिमला मिर्च तथा खीरा की खेती के लिए 600 वर्ग मीटर क्षेत्रफल), खुम्ब उत्पादन (50 वर्ग मीटर क्षेत्रफल), कृषि बागवानी प्रणाली (1200 वर्ग मीटर क्षेत्रफल), मधुमक्खी पालन और 2,200 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में सब्जियों, पुष्पीय, अनाज, तिलहनी तथा दलहनी फसलों की खुले खेत में खेती करने को शामिल करते हुए एक आईएफएस मॉडल (एक एकड़ क्षेत्रफल) का विकास किया गया। यह आईएफएस मॉडल आर्थिक दृष्टि से प्रभावी और पर्यावरणीय दृष्टि से मजबूत है और इसमें

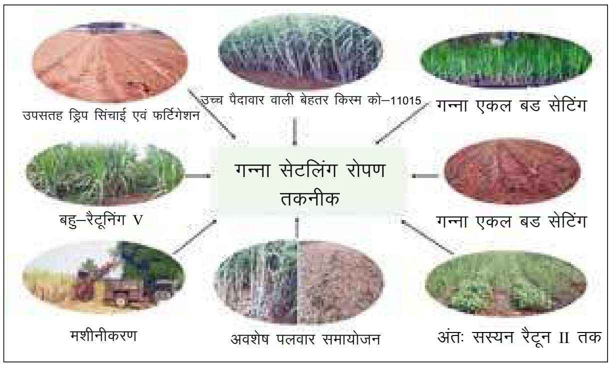

गन्ना सेटलिंग पौध रोपण

प्रति वर्ष रुपये 1,75,650 /– की शुद्ध आय उत्पन्न करने की क्षमता है। भाकृअनुप – गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर, तमिलनाडु में गन्ना सेटलिंग पौध रोपण प्रौद्योगिकी (एसटीटी) के नाम से नौ उन्नत गन्ना खेती रीतियों को सम्मिलित करते हुए एक गन्ना खेती मॉडल स्थापित किया गया।

भारत में विविध पर्यावास से हासिल की गई बीटी उप प्रजाति *थुरिन्जियेन्सिस* (ए 6) तथा बीटी पृथक्कों एसके 792, एसके 986 तथा एसके 851 से चार पूर्ण लंबाई वाले vip3 - टाइप जीनों यथा *vip3Aa44*, *vip3Aa67*, *vip3Aa69* एवं *vip3Aa70* (एनसीबीआई जीनबैंक प्राप्ति संख्या क्रमशः एचक्यू 650163, एमएन 120477, एमएन 120479 तथा एमएन 120481) को अलग किया गया। इन vip3Aa जीनों में लेपिडोप्टेरॉन नाशीजीव की रोकथाम करने की क्षमता है। कुल 373 कीटरोगजनक कवकीय पृथक्कों (EPFs) के एक पूल का मूल्यांकन पॉलीहाउस परिस्थितियों के अंतर्गत सफेद मक्खी (*बीमीजिया टैबेकी*) के विरूद्ध इनकी जैव प्रभावशीलता का पता लगाने के लिए किया गया। कुल मिलाकर, कीटरोगजनक कवकीय पृथक्क (EPF) स्ट्रेन *ब्यूवीरिया बैसिआना* (Bb)-4511, *कॉर्डीसेप्स जावानिका* (cz)-102, तथा *मेटाराइजियम एनीसॉप्लाई* (Ma)-1299 को रसायन तथा वानस्पतिकों की पूर्ण एवं आधी खुराक के साथ संगत पाया गया और इनमें अधिकतम निम्फ मृत्युदर (80 - 95%) देखने को मिली। दीर्घ काल तक जारी करने के लिए पौधों में स्मार्ट डिलीवरी करने हेतु लेपित नैनो फार्मुलेशन के रूप में एक प्रणालीबद्ध अर्जित प्रतिरोधिता (SAR) उत्प्रेरक अणु विकसित किया गया और गन्ना फसल में लाल सड़न, स्मट और मुरझान अथवा म्लानि रोगों के विरूद्ध खेत में इसकी पादप प्रतिरक्षा उत्प्रेरक विशेषता के लिए इसे जांचा गया। खेत प्रयोगों में, रोगजनक संरोपित कंट्रोल के मुकाबले में नैनो फार्मुलेशन का प्रयोग करने पर लाल सड़न, स्मट तथा मुरझान अथवा म्लानि प्रकोप में क्रमशः 79.4 प्रतिशत, 80.8 प्रतिशत एवं 75.8 प्रतिशत तक की उल्लेखनीय कमी देखने को मिली।

संघटक फसलों के रूप में ड्रैगन फल एवं अनन्नास के साथ आम आधारित फसलचक्र प्रणाली में भुबनेश्वर

की परिस्थितियों में कहीं उच्चतर उत्पादन प्रभावशीलता (85.21 किग्रा./दिवस/है.), आर्थिक प्रभावशीलता तथा टिकाऊ उपज सूचकांक प्रदर्शित हुआ। अनार की फसल में पुष्प/फल गिरने के लिए छिड़काव समय–सारणी का मानकीकरण किया गया। माल्टा की फसल में एक एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन समय–सारणी का मानकीकरण किया गया। चरागाह फसलों (कुम्बु नेपियर संकर + *डेसमैन्थस*), चारा वृक्षों (*सेस्बेनिया ग्रैण्डीफ्लोरा* + *ल्यूसीना ल्यूकोसिफेला* + *ग्लिरीसिडिया*) तथा बकरी की टेलीचेरी नस्ल का पालन करने के साथ नारियल फसल का एकीकरण करने पर 3.16 के लाभ : लागत अनुपात के साथ प्रति हैक्टर रुपये 2,54,206/– का शुद्ध लाभ दर्ज किया गया जबकि इसकी तुलना में नारियल की एकल फसल में 2.25 के लाभ : लागत अनुपात के साथ प्रति हैक्टर रुपये 1,51,312/– का शुद्ध लाभ ही हासिल किया जा सका। एक व्यापक टूल नामतः 'ओनियन क्रॉप एडवाइजर' का डिजाइन तैयार करके उसका विकास किया गया। गुलदाउदी के तीन जीनप्रारूपों यथा ओपीसीएच 12–7, ओपीसीएच डबल व्हाइट तथा डीएफआर सी–2 की पहचान अत्यधिक आकर्षक, फूलों से सराबोर तथा मधुमक्खियों के लिए लाभकारी जीनप्रारूपों के तौर पर की गई। इन जीनप्ररूपों का उपयोग परागकों के स्वास्थ्य और पर्यावास पुनः स्थापन में सुधार लाने के लिए पुष्पीय कैलेण्डर तैयार करने में किया जा सकता है। विटामिन डी से भरपूर *हिप्सीजायगस अल्मेरियस* (इल्म ओएस्टर) खुम्ब अथवा मशरूम के लिए तकनीक विकसित की गई।

मानवरहित वायु यान (यूएवी) का उपयोग करते हुए नारियल की फसल में राइनोसिरॉस भृंग संक्रमण की निगरानी करने हेतु 84.3 प्रतिशत की सटीकता के साथ वस्तु का पता लगाने वाली युक्ति के आधार पर एक एल्गोरिद्म का विकास किया गया। काजू पुष्पक्रमों पर कुल 67 नाशीजीव प्रजातियों को दस्तावेजी रूप दिया गया। नुकसान लक्षणों, मौसमी प्रकोप तथा विभिन्न नाशीजीवों के लिए प्राकृतिक शत्रुओं तथा नाशीजीवों पर मौसम कारकों के प्रभाव को भी दस्तावेजी रूप दिया गया। पुष्पक्रम नाशीजीवों के कारण होने वाले नुकसान से एनआरसीसी सेल–2 में 47.06 प्रतिशत तक गिरी स्थापना अथवा जमाव में कमी दर्ज की गई। कम जोखिम वाले कीटनाशकों के साथ पोलू भृंग का प्रबंधन करने के लिए प्रौद्योगिकी विकसित की गई। काली मिर्च में इस नाशीजीव का प्रबंधन करने में जुलाई से सितम्बर माह के दौरान 0.3 से 0.5 मि./लीटर जल मात्रा पर क्लोरैन्ट्रानिलिप्रोल 18.5 प्रतिशत SC के साथ तीन बार छिड़काव करना प्रभावी पाया गया। बीएसवी मुक्त (इपीसोमल बीएसएमवाईवी) ऊतक संवर्धन केला की व्यावसायिक किस्म पूवान में पता चला कि वायरसमुक्त ऊतक संवर्धित श्रेष्ठ पूवान क्लोन का उपयोग करने पर कनार्टक, केरल, ओडिशा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु तथा पश्चिम बंगाल में स्थानीय पूवान की तुलना में धारीदार रोग के प्रकोप में उल्लेखनीय रूप से कमी आई और उपज में बढ़ोतरी हुई। इसके अंतर्गत जहां रोग प्रकोप में 56 से 75 प्रतिशत तक की कमी आई वहीं 1.51 से 1.89 के लाभ : लागत अनुपात के साथ 23 से 28 प्रतिशत तक उपज बढ़ोतरी हुई। *स्वः पात्रे* संगतता विश्लेषण में प्रदर्शित हुआ कि *ट्राइकोडर्मा एफ्रोहार्जेनम*, एजॉक्सीस्ट्रोबिन, क्रीसॉक्सिम मिथाइल, मेपटिल्डीनोकैप, फ्लक्सापायरोक्सैड तथा पायराक्लोस्ट्रोबिन एवं सल्फर फार्मुलेशन के प्रति संगत अथवा अनुकूल था। अंगूर की फसल में चूर्णिल मिल्ड्यू रोग की रोकथाम करने के लिए पंजीकृत कवकनाशियों के साथ जैव नियंत्रण एजेन्टों की संगतता अथवा अनुकूलनता के लिए किए गए खेत मूल्यांकन में पता चला कि वैकल्पिक तौर पर एजॉक्सीस्ट्रोबिन, क्रीसॉक्सिम मिथाइल, मेपटिल्डीनोकैप फ्लक्सापायरोक्सैड + पायराक्लोस्ट्रोबिन एवं सल्फर के साथ *ट्राइकोडर्मा ऐस्पेरेलॉइड्स* का प्रयोग करना चूर्णिल मिल्ड्यू रोग के विरूद्ध प्रभावी था। जीरा फसल में अंगमारी रोग और एफिड की रोकथाम करने के लिए एक एकीकृत प्रबंधन समय–सारणी विकसित की गई। क्रीसॉक्सिम मिथाइल 44.3 SC @ 0.044% के तीन पर्णीय छिड़काव (पहला रोग लक्षण दिखाई देने पर और बाद में 15 दिनों के अन्तराल पर) तथा थियामिथॉक्सम 25WG @ 0.0084% के दो पर्णीय छिड़काव (पहला एफिड संक्रमण की शुरूआत पर और दूसरा 10 दिनों बाद) को जागुदान (गुजरात) की परिस्थितियों के तहत कम अंगमारी (पीडीआई – 16.06 प्रतिशत) और एफिड प्रकोप (एफिड सूचकांक – 0.96) के साथ उच्चतर उपज (677 किग्रा./है.) और आवधिक लाभ–लागत अनुपात (1.98) हासिल करने में प्रभावी पाया गया।

पशुधन प्रबंधनः विभिन्न एनएडीईएन इकाइयों तथा राज्य पशु पालन विभागों से प्राप्त कुल 74,582 सीरम नमूनों की जांच सीरो सर्विलांस हेतु प्रमुख पशुधन रोगों का पता लगाने के लिए की गई और राज्य सरकारों को सिफारिशें भेजी गईं। कुल 517 नमूनों का विश्लेषण एएमआर रोगजनकों (MRSA, ESBLs) के लिए किया गया और पशुधन, पर्यावरण और मानव से प्रति–सूक्ष्मजीवीय प्रतिरोधिता के प्रचलन को दस्तावेजी रूप दिया गया। एएमआर सर्विलांस के लिए जीवाण्विक (n=1458) पृथक्कों का सम्पूर्ण जीनोम अनुक्रमण (WGS) किया गया। विभिन्न इपी सेन्टरों में अक्तूबर, 2022 से अप्रैल, 2023 की अवधि के दौरान कुक्कुट, बत्तख, बटेर तथा वन्य पक्षियों से अलग किए गए 12 H5N1 अत्यधिक रोगजनकीय पक्षी इन्फ्लूएंजा (HPAI) वायरस (बिहार से 2, झारखण्ड से 1 तथा केरल से 7) के सम्पूर्ण जीनोम अनुक्रम का निर्धारण किया गया। खुरपका एवं मुंहपका रोग सीरो सर्विलांस के अंतर्गत, देशभर में संकलित किए गए कुल 72,308 गोजातीय सीरम नमूनों का विश्लेषण r3AB3 एनएसपी–एलाइजा (दिवा) का उपयोग करते हुए किया गया ताकि गोजातीय संख्या में एनएसपी–एण्टीबॉडी (NSP-Ab) की स्पष्ट व्यापकता का निर्धारण किया जा सके। टीकाकरण उपरांत सीरो निगरानी के लिए प्रतिरक्षाकरण

'सार्स–कोविड–2 न्यूक्लिक अम्ल पहचान एलएफए किट' को जारी करते हुए माननीय केन्द्रीय मत्स्य पालन, पशु पालन एवं डेयरी मंत्री और माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री तथा सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप)

की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए एनएडीसीपी के अंतर्गत सॉलिड फेज कम्पीटीटिव एलाइजा (एवपीसीई) का उपयोग करके कुल 92,306 सीरम नमूनों की जांच की गई। गोपशुओं में गोजातीय वायरल डायरिया (BVD) p80 एंटीबॉडीज का पता लगाने के लिए एक प्रतिस्पर्धी एलाइजा किट का विकास किया गया जिसका आशय गोपशुओं में गोजातीय वायरल डायरिया (बीवीडी) का सीरोलॉजिकल पता लगाना है। यह एक भारतीय BVDV-1 पृथक्क तथा एंटी–NS3 मोनोक्लोनल एंटीबॉडी के रिकाम्बीनेन्ट NS3 एंटीजन पर आधारित है। पॉर्सिन मूल के नमूनों में अफ्रीकन स्वाइन बुखार का तेजी से पता लगाने के लिए दो–चरणीय CRISPR/Csa 12a आधारित एक नैदानिकी जांच विकसित की गई। भाकृअनुप–केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार के साथ सहयोग करते हुए एक मूत्र आधारित गर्भावस्था नैदानिकी किट 'Preg-DM' तैयार की गई और उसका प्रमाणन किया गया। इस किट से उच्च जीवनपर्यन्त उत्पादकता हासिल करने हेतु प्रजनन के 30 से 35 दिनों पश्चात यथाशीघ्र गर्भावस्था का पता लगाने में मदद मिलती है। एक SARS-CoV-2 न्यूक्लिक अम्ल पहचान एलएफए किट विकसित की गई जिसे दिनांक 16 जुलाई, 2023 को भाकृअनुप स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय केन्द्रीय मत्स्य पालन, पशु पालन एवं डेयरी मंत्री एवं माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री तथा सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप द्वारा जारी किया गया।

परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (NABL) द्वारा आईएसओ/आईईसी 17025-2017 के अनुसार तीन प्रयोगशालाओं यथा मीट स्पीशीज आईडैन्टीफिकेशन (MSIL), फूड माइक्रोबॉयोलॉजी एंड मीट न्यूट्रियेन्ट तथा रेजिड्यूल एनालिटिकल लेब्रोरेट्री को प्रत्यायित किया गया। एग्रीनोवेट इंडिया लि. द्वारा भारत के पहले लम्पी त्वचा रोग टीके (Lumpi-ProindVacind) का व्यावसायीकरण चार प्रमुख टीका निर्माताओं यथा बायोवेट प्रा. लि., बेंगलुरू; इंडियन इम्यूनोलॉजिकल लि., हैदराबाद;

पीओपी कास्ट पॉजीटिव डाई को तैयार करना

एचडीपीई

विस्तारक रॉड की लंबाई का मूल्यांकन करने हेतु सामान्य अंग लंबाई का माप

डिजाइन किए गए अंग प्रोस्थेसिस का पार्श्वीय दृश्य

कपास एवं बैण्डेज के साथ स्टम्प की पैडिंग

दसवें दिन कृत्रिम अंग के साथ अनुकूलित पशु

बड़े पशुओं के लिए कृत्रिम अंग

हेस्टर बायोसाइन्सिज, अहमदाबाद; तथा इंस्टिट्यूट ऑफ वेटरनरी बायोलॉजिकल प्रोडक्ट्स, पुणे को किया गया। फ्रोजन वीर्य प्रौद्योगिकी तथा भ्रूण स्थानान्तरण प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए अश्व के नवजात राज हिमानी को जन्म दिया गया। दिनांक 4 अक्तूबर, 2023 को एक स्वस्थ मादा नवजात अश्व ने जन्म लिया। जन्म के समय नवजात अश्व का शरीर भार 35 किलोग्राम था। बड़े पशुओं के लिए कृत्रिम अंग अथवा लिम्ब का डिजाइन तैयार करके उनका विकास किया गया।

'भैंस शुक्राणु जीवनक्षमता में सुधार लाने के लिए प्रक्रिया' (पेटेन्ट संख्या 411766) के लिए पेटेन्ट प्रदान किया गया।

'गोपशुओं में गोजातीय ल्यूकोसाइट एडहेसन कमी वाहक का पता लगाने के लिए एक त्वरित उपभोक्ता एकल टयूब टेट्रा प्राइमर पीसीआर आधारित नैदानिकी आमाप का विकास' के लिए पेटेन्ट प्रदान किया गया। 'लेप्टोस्पाइरल–रोधी एण्टीबॉडीज का पता लगाने के लिए काइमेरिक प्रोटीन एवं इनकी विधियां' पर दिनांक 18 सितम्बर, 2023 को पेटेन्ट संख्या 452381 प्रदान किया गया। दिनांक 27 जनवरी, 2023 को 'ब्लूटंग के लिए फ्युजन प्रोटीन (rNS1-NS3) आधारित इम्यूनोडॉयग्नॉस्टिक आमाप के रूप में रिकॉम्बीनेन्ट नॉन–स्ट्रक्चरनल प्रोटीन 'NS1 तथा NS3'' (संख्या 419435) विषय पर पेटेन्ट प्रदान किया गया। एक उन्नत *ब्रूसेल्ला अबोर्टस टीका* विकसित किया गया (पेटेन्ट संख्या 401680)। पशुओं में फ्लूरोसिस का निदान करने के लिए हर्बल उत्पाद (पेटेन्ट संख्या 416413) विकसित किया गया। स्वदेशी गोपशु नस्ल का विकास एवं सुधार करने के लिए तिरूमाला तिरूपति देवस्थानम श्री वेंकटेश्वर गोसंरक्षण शाला ट्रस्ट, तिरूपति, आन्ध्र प्रदेश; भाकृअनुप – आईआईएसडब्ल्यूसी, देहरादून; भाकृअनुप – सीएसडब्ल्यूआरआई, अविकानगर; अन्नासाहेब शिन्दे फाउण्डेशन (एएसएफ), मुम्बई के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। 'गोपशु रोग निदान विशेषज्ञ प्रणाली–वेब ऐप्लीकेशन (CaDDES) तथा 'महामारी विज्ञान कैल्कुलेटर (EPI CAL) वेब एप्लीकेशन पर क्रमशः पंजीकरण संख्या एसडब्ल्यू 15961/2023 एवं एसडब्ल्यू 16034/2023 के साथ कॉपीराइट हासिल किया गया।

मात्स्यिकी प्रबंधनः भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CMFRI), कोच्चि द्वारा भारत की समुद्रीय मात्स्यिकी के स्वास्थ्य की दिशा में एक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की गई। कुल मिलाकर, उत्तर–पश्चिम, दक्षिण–पश्चिम, दक्षिण–पूर्व तथा लक्षद्वीप क्षेत्रों से कुल 1168 मत्स्य अवतरण केन्द्रों से समुद्री मत्स्य अवतरण और प्रजाति विशिष्ट जीवविज्ञान डेटा का उपयोग करके कुल 135 समुद्री पंखमीन और शल्कमीन स्टॉक का मूल्यांकन किया गया। अध्ययन से पता चला कि वर्ष 2022 में मूल्यांकन किए गए कुल 135 मत्स्य स्टॉक (उत्तर–पूर्व–16, उत्तर–पश्चिम–37, दक्षिण–पूर्व–39, दक्षिण–पश्चिम–41, लक्षद्वीप–2) में से 91.1 प्रतिशत स्वस्थ थे। इस रिपोर्ट में ऐसे प्रबंधन उपायों की भी पहचान की गई जिन्हें मत्स्य स्टॉक/प्रजातियों, जो क्षेत्रीय दृष्टिकोण से संबंधित हैं, में आजमाया जा सकता है और इससे इनकी संधारणीयता सुनिश्चित होगी। भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि तथा सीएसआईआर–केन्द्रीय लवण एवं समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (CSIR - CSMCRI) द्वारा देश के नौ तटवर्ती राज्यों और चार संघ शासित प्रदेशों में समुद्री खरपतवार की खेती करने के लिए क्षमताशील स्थानों की पहचान की गई है। पहचाने गए स्थानों (384) को विभिन्न जोन में वर्गीकृत किया गया यथा हरित जोन (CRZ-IA से > 1 किलोमीटर), कहरूवा अथवा अम्बर जोन (CRZ-IA से 1 किलोमीटर तक) तथा नीला जोन (सीआरजेडआईए तथा ईएसए के भीतर)। समुद्री खरपतवार की खेती के लिए कुल 24707 हैक्टर क्षेत्रफल की पहचान की गई। भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि द्वारा भारत में समुद्री खरपतवार की टिकाऊ खेती को बढ़ावा एवं सहयोग करने के लिए बेहतर प्रबंधन रीतियों पर एक दस्तावेज जारी किया गया।

सीवीड फार्मिंग

भाकृअनुप–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा व्यापक सर्वेक्षण करके कुछ प्रमुख नदियों से मछली पकड़ने और संबंधित जानकारी का अनुमान लगाया गया है। महानदी नदी में, प्रति मछुआरा प्रतिदिन 0.18 किलोग्राम तथा 18.88 किलोग्राम के मध्य कैच प्रति इकाई प्रयास (सीपीयूई) के साथ 15134 टन की वार्षिक कुल मत्स्य पकड़ का अनुमान लगाया गया। इस अध्ययन में खोजे गए 32 जीवाण्विक पृथक्क बैसिलासिये, बुरखोल्डेरियासिये, इण्टेरोबैक्टीरियासिये तथा ऐरोमोनाडासिये परिवार से; प्रजाति यथा *लाइसिनीबैसिलस फ्यूजीफॉर्मिस, एल. मैक्रोलॉइड्स, बैसिलस सबटिलिस, बी. सैफेन्सिस* तथा सिटोबैक्टर फ्रीन्डाई से थे, जिनमें अमोनिया को हटाने की क्षमता देखने को मिली।

भाकृअनुप – केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा प्राइमरी तथा सेकेण्डरी स्रोत से प्राप्त सूचना के आधार पर नदी जलीय पर्यावरण में नौसंचालन करने के लिए एक राष्ट्रीय वेब ऐप नामतः रीवरएक्वामैप (RiverAquaMap) विकसित किया गया है। बैकएंड जल गुणवत्ता डेटा में शामिल हैं : डीओ, बीओडी, जल तापमान, पीएच, विशिष्ट चालकता, नाइट्रेट तथा नाइट्राइट। वर्ष 2007 से 2020 की अवधि के लिए भारतीय नदी प्रणाली में फैले कुल 2667 स्थानों पर स्थानिक–अस्थाई स्तर पर सभी पैरामीटर नैविगेबल अथवा संचाल्य थे। जलीय जन्तु रोग के लिए राष्ट्रीय निगरानी कार्यक्रम (NSPAAD) के अंतर्गत, भाकृअनुप–राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ, द्वारा विकसित रिपोर्ट मत्स्य रोग (रिपोर्ट फिश डीजिज) ऐप को दिनांक 28 जून, 2023 को जारी किया गया। भाकृअनुप – केन्द्रीय मीठा जलजीव पालन संस्थान द्वारा मादा इंडियन मेजर कॉर्प और कैटफिश ब्रूडर्स का टीकाकरण करने के लिए एक टीका नामतः 'CIFAbrood-Vac' तैयार किया गया है ताकि रोग प्रतिरोधी अंडजनन के उत्पादन में 30 प्रतिशत

सौर ऊर्जा चालित मत्स्य आहार डिस्पेंसर

तक वृद्धि की जा सके। भाकृअनुप–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा 16 मीटर व्यास तथा 5 मीटर गहराई एवं 900 घन मीटर जल क्षेत्र वाले वृत्ताकार एचडीपीई पिंजरे तैयार किए गए। इन पिंजरों का उपयोग फरक्का में गंगा नदी में वयस्क हिल्सा *टेनुआलोजा इलिशा* तथा इंडियन मेजर कॉर्प का पालन करने में किया गया। एक सौर ऊर्जा चालित मत्स्य आहार डिस्पेंसर का डिजाइन तैयार किया गया और उसका निर्माण एक एकल बोर्ड सूक्ष्म कंट्रोलर का उपयोग करते हुए ताररहित डेटा संचरण के लिए रेडियो आवृति (आरएफ) मॉड्यूल के साथ इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) पर किया गया।

मृदा एवं जल उत्पादकता: मृदा की क्षमता के आधार पर कृषि भूमि उपयोग योजना से भूमि उत्पादकता बढ़ती है। स्थानिक मृदा सूचना के आधार पर, विश्लेषणात्मक पदानुक्रम प्रक्रिया (एएचपी) का उपयोग करते हुए प्रमुख फसलों की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया गया ताकि जैव भौतिक कारकों और उपलब्ध संसाधनों की सीमा के भीतर भूमि उत्पादकता में सुधार लाने हेतु एक फसल योजना तथा मृदा आधारित प्रबंधन उपायों का सुझाव दिया जा सके। प्रस्तावित फसलें राजस्थान के बीकानेर और चुरू जिलों के लिए मूंगफली/ग्वार अथवा क्लस्टरबीन/दलहन/बाजरा/ज्वार थीं। श्रीगंगानगर जिले के लिए सर्वाधिक उपयुक्त फसल संयोजन हैं : ग्वार अथवा क्लस्टरबीन/दलहन/बाजरा/ज्वार अथवा कपास/मूंगफली/ग्वार अथवा क्लस्टरबीन/दलहन । इसी प्रकार, उत्तरी तथा मध्य अंडमान जिले की कृषि योग्य भूमि को कवर करते हुए 1 : 10,000 स्केल पर भूमि संसाधन इनवेन्ट्री तैयार की गई। लगभग 2.5 प्रतिशत क्षेत्रफल कृषि भूमि के अंतर्गत है, 0.60 प्रतिशत में रोपण अथवा फलोद्यान तथा वृक्ष क्लैड हैं और लगभग 2 प्रतिशत क्षेत्रफल घरेलू कृषि के अंतर्गत है। मृदा उपयुक्तता मूल्यांकन से पता चला कि 65 प्रतिशत क्षेत्र का उपयोग सुपारी की खेती करने में किया जा सकता है जबकि 72.0 प्रतिशत क्षेत्र नारियल की खेती करने के लिए उपयुक्त है।

भारत का मृदा संतृप्त हाइड्रोलिक चालकता मानचित्र तैयार किया गया जो मृदा की शीर्ष 30 सें. मी. परत के Ks के संकेतक मान को दर्शाता है। भारत के लिए जरूरी डेटा का मूल्यांकन अंतर्राष्ट्रीय मृदा संदर्भ तथा सूचना केन्द्र (ISRIC) मृदा ग्रिड डेटा (ग्रिड आकार 250 m) से किया गया। मानचित्र में प्रति घंटा मिलीमीटर में संतृप्त हाइड्रोलिक चालकता की निर्धारित सीमा वाली कुल 6 श्रेणियों को प्रस्तुत किया गया है।

विश्लेषणात्मक पदानुक्रम प्रक्रिया (एएचपी) तथा जीआईएस का उपयोग बैतरणी नदी बेसिन के बाढ़ संवेदनशीलता का मानचित्र तैयार करने में किया गया। विश्लेषण में यह देखने को मिला कि लगभग 87 प्रतिशत नदी बेसिन क्षेत्र अंतर–मध्यस्थ बाढ़ जोखिम क्षेत्र के अंतर्गत आता है जबकि 10 प्रतिशत क्षेत्र उच्च बाढ़ जोखिम क्षेत्र के अंतर्गत है। बैतरणी नदी बेसिन में गंभीर बाढ़ के प्रभावों को जाजपुर जनपद के तीन ब्लॉक में, भद्रक जनपद के दो ब्लॉक में तथा ओडिशा के क्योंझर जिले में अनादापुर बलॉक में स्पष्ट तौर पर देखा गया है। समय के साथ कृषि भूमि में बाढ़ की घटना में वर्ष 1995 एवं 2020 के दौरान 8 प्रतिशत तक कमी आई है। इसलिए, यह जरूरी है कि बेसिन में बाढ़ के जोखिम को कम करने के लिए ऊपरी कैचमेन्ट क्षेत्रों में जलसंभर प्रबंधन युक्तियों के साथ एकीकृत बाढ़ प्रबंधन उपाय किए जाएं। खेत स्तर पर जल प्रबंधन करने के लिए *डिग्गी* एक स्वदेशी सूक्ष्म हाइड्रोलॉजिकल संरचना है। जैसलमेर में सिंचित फसलीय भूमि की सीमा, खेत तालाबों (*डिग्गी* संरचना) और वायु कटाव से प्रभावित क्षेत्र के लिए जीआईएस मानचित्र (3) और डेटाबेस सृजित करने में दस वर्ष के अन्तराल पर तीन वर्षों के रिमोट सेन्सिंग सेटेलाइट चित्रों का उपयोग किया गया। यह पाया गया कि वर्ष 2001 की तुलना में वर्ष 2021 में *डिग्गी* की संख्या में दस गुना की बढ़ोतरी हुई और सिंचित कृषि रकबा लगभग 4.5 गुना बढ़ा। वायु कटाव से प्रभावित क्षेत्र में 1,63,371 हैक्टर तक की कमी आई।

गुजरात के अर्ध शुष्क क्षेत्र में कृत्रिम भूजल पुनर्भरण के लिए किसानों के खेतों से जल अपवाह का संचयन करने के लिए रेत आधारित जल अपवाह फिल्टर विकसित किया गया जिसमें मोटी रेत, बजरी और कंकड़ शामिल हैं। इस हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप गांव में भूजल स्तर में 1.84 मीटर तक की बढ़ोतरी हुई और किसान अपनी *रबी* फसलों को पूरी सिंचाई देने में समर्थ बने।

कृत्रिम भूजल पुनर्भरण के लिए संशोधित रेत आधारित अपवाह फिल्टर्स

ट्रैक्टरचालित सम्पूर्ण गन्ना हार्वेस्टर

सॉडिक मृदा का सुधार करने के लिए गुणवत्ता जिप्सम की उपलब्धता का समाधान करने हेतु विभिन्न मृदा सॉडीसिटी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त सल्फर आधारित तीन फार्मुलेशन (आरएफएस) तैयार किए गए। ये फार्मुलेशन अत्यधिक क्रियाशील हैं और मृदा सूक्ष्मजीवों द्वारा एक फसल सीजन के भीतर ही ऑक्सीडाइज्ड हो जाते हैं जिससे मृदाओं में मौजूद क्षारीय लवण की अधिकता के कारण होने वाले दबाव को दूर करने में मदद मिलती है। हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश तथा जम्मू व कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के मैदानी भागों में लवण प्रभावित क्षेत्रों के लिए केन्द्रीय किस्मीय निर्मुक्ति समिति (सीवीआरसी) द्वारा जारी करने के उपरान्त एक लवण सहिष्णु भारतीय सरसों सीएस 64 किस्म को अधिसूचित किया गया।

यांत्रिकीकरण एवं ऊर्जा प्रबंधनः भारी मृदाओं के लिए उपयुक्त *स्वः स्थाने* फसल अपशिष्ट प्रबंधन तकनीक के लिए एक किफायती सीडर विकसित किया गया। यह एक साथ तीन कार्य करता है जैसे कि फसल अपशिष्ट को काटना, काटे गए अपशिष्ट की टिलिंग करना तथा उसे मिश्रित करना और बुआई करना। खेत में पूर्ण गन्ना को काटने और लपेटने के लिए लघु ट्रैक्टरचालित गन्ना बेस कटर विकसित किया गया। इस बेस कटर को V –बेल्ट ड्राइव के साथ लगी पुली के माध्यम से ट्रैक्टर पीटीओ द्वारा चलाया जाता है। एक ट्रैक्टरचालित पूर्ण गन्ना हार्वेस्टर का विकास भी किया गया जिसमें एक आधारीय कटर इकाई, फसल को इकट्ठा करने वाली इकाई, डि–टॉपर तथा गन्ना संकलन ट्रॉली लगी हुई है। इन सभी क्रियाविधियों को हाइड्रोलिक तरीके से चलाया जाता है और इसे ट्रैक्टर थ्री प्वाइंट लिंक्स पर रखा जा सकता है। इस इकाई की औसत खेत क्षमता प्रति घंटा 0.11 हैक्टर है और इसकी खेत प्रभावशीलता 0.70 प्रतिशत है। हाथ से कटाई करने की तुलना में इस उपकरण का उपयोग करने से लागत में 71 प्रतिशत की बचत होती है।

भिण्डी की तुड़ाई करने के लिए हस्तचालित एक कटाई उपकरण विकसित किया गया। यह उपकरण भिण्डी फली को हाथ से स्पर्श करने की संभावना को पूरी तरह से समाप्त कर देता है। एक लंबे हत्थे वाला अनन्नास पत्ती प्रूनर विकसित किया गया। इस प्रूनर की खेत क्षमता प्रति घंटा 0.005 हैक्टर है। पक्षियों की गणना करने के लिए एक कम्प्यूटर विजन आधारित पक्षी पहचान प्रणाली विकसित की गई और इसका उपयोग छितराये जाने वाले आहार की मात्रा की गणना करने में किया जा सकता है। पक्षियों का पता लगाने में कम्प्यूटर विजन युक्ति प्रभावी है और इसके माध्यम से कुक्कुट पक्षियों के लिए स्वचालित आहार डिस्पेन्सर में आहार का प्रभावी तरीके से एकीकरण किया जा सकता है। पॉलीहाउस के भीतर रसायनों का प्रयोग करने के लिए एक स्वचालित छिड़काव प्रणाली विकसित की गई। विकसित प्रणाली में दो इकाइयां हैं यथा स्वचालित छिड़काव इकाई (एएसयू) तथा डीसी मोटरचालित पंक्ति परिवर्तनशील इकाई (आरसीयू)।

पशुचालित एकल पंक्ति फीडिंग टाइप आलू रोपक सह उर्वरक एप्लीकेटर का विकास किया गया। यह एप्लीकेटर खांचों को खोलने और मेड़ बनाकर वहां बीज कंद को ढ़कने का कार्य करता है। इसकी वास्तविक खेत क्षमता 74 प्रतिशत खेत प्रभावशीलता के साथ प्रति घंटा 0.09 हैक्टर थी।

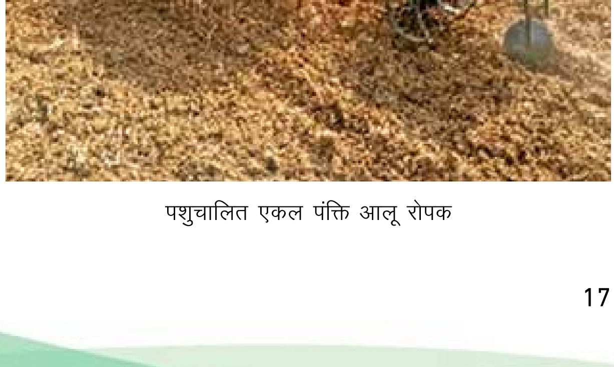

पशुचालित एकल पंक्ति आलू रोपक

एक साथ पूर्व अंकुरित धान बीजों की पंक्ति में बुआई करने और पूर्व–आविर्भाव शाकनाशियों का प्रयोग करने के लिए बैलचालित आठ पंक्ति वाला पूर्व अंकुरित धान सीडर सह शाकनाशी एप्लीकेटर का विकास किया गया। बैलचालित आठ पंक्ति वाले पूर्व अंकुरित धान सीडर सह शाकनाशी एप्लीकेटर की ऑपरेशन लागत प्रति हैक्टर 1,032 रुपये है। एक फ्लू उपचारित वर्जीनिया तम्बाकू पत्ती स्ट्रिंग मशीन का विकास किया गया। यह इकाई प्रति घंटा 730±100 किग्रा. विस्कोस सामग्री से बनी एक अंडाकार आकृति वाली सुई एवं यार्न की स्ट्रिंग क्षमता के साथ प्रति 20 सेकेण्ड में एक स्टिक (प्रति स्टिक 4 किलोग्राम ताजा तम्बाकू पत्ती की दर पर) तैयार कर सकती है। बल्क दूध चिलर (बीएमसी) अपशिष्ट का उपचार करने के लिए एक कृषि अपशिष्ट आधारित जैव सॉर्बेन्ट का विकास किया गया। इस जैव सार्बेन्ट को नियंत्रित वातावरण में कृषि अपशिष्ट के पायरोलाइसिस द्वारा तैयार किया गया। नरम स्टील, पीवीसी पाइप तथा एफआरपी शीट की मदद से झूलन टाइप प्लास्टिक फीडर तैयार किया गया। इस फीडर का डिजाइन इस प्रकार तैयार किया गया है कि जिसमें कोई भी आहार/भूसा/हरा चारा ट्रे के बाहर नहीं गिरेगा और इस प्रकार आहार/चारे में होने वाला नुकसान नगण्य सीमा तक कम हो जाएगा।

कटाई उपरांत प्रबंधन एवं मूल्यवर्धनः *हवाईजर*, उत्तर–पूर्व भारत का एक पारम्परिक किण्वित खाद्य है जिसे सोयाबीन से तैयार किया जाता है। *हवाईजर* तैयार करने वाली यांत्रिकीकृत प्रणाली विकसित की गई और यांत्रिकीकृत प्रणाली में इकाई द्वारा किए गए जाने वाले कार्यों में भिगोना, भाप देना तथा ऊष्मायन करना शामिल है। विकसित यांत्रिकीकृत बैच टाइप प्रणाली की डिजाइन क्षमता 10 किलोग्राम है। चने के प्रमुख भण्डारण कीट–नाशीजीवों की रोकथाम के लिए खुदरा पैकेटों के साथ साथ घरेलू स्तर के धातु ड्रम भण्डारण में इसका प्रयोग करने के लिए एक सस्ती रेडी टू यूज किट का डिजाइन तैयार करके उसका विकास किया गया। वर्णमिति के सिद्धान्तों के आधार पर लाख रंग सूचकांक विश्लेषण के लिए एक पोर्टेबल, इलेक्ट्रॉनिक तथा हाथ में पकड़ने वाले यंत्र का विकास किया गया।

भाकृअनुप–सिरकॉट, मुम्बई द्वारा पीपीपी आधार पर एक सुगठित तथा ऊर्जा प्रभावी प्रत्यक्ष हीटिंग टाइप 'कॉटन सीड ड्रायर' का डिजाइन तैयार करके उसका विकास किया गया। नवोन्मेषी खुलने और बंद होने वाली एमएस बेल्ट का उपयोग करके इसका डिजाइन तैयार किया गया है जो प्रत्येक कन्वेयर पर कपास के बीजों को दो बार (एक ऊपरी अथवा शीर्ष की ओर तथा दूसरी निचली ओर पर) गरम करने की अनुमति देता है जिससे ऊर्जा प्रभावी सुगठित शुष्कन प्रणाली का विकास करने में मदद मिलती है। उत्पादन में लगने वाले समय को कम करने हेतु पुदीना तेल से मिन्थॉल क्रिस्टल उत्पादन करने के लिए एक नवीन प्रक्रिया का विकास किया गया।

जलवायु अनुकूल कृषिः फाइटोट्रॉन के परिणामों के आधार पर 6 माह के जीवनकाल वाले एक जीवाण्विक फार्मुलेशन, पूसा संजीवनी का विकास किया गया और निक्रा के तहत अंगीकृत किए गए गांवों में किसानों के खेतों पर इसके खेत परीक्षण किए गए। इस फार्मुलेशन का मूल्यांकन किसानों के खेत में धान–गेहूं फसलचक्र प्रणाली में किया गया। कंसोर्शियम में चार जीवाणु कम नमी वाली परिस्थिति में बेहतर अंकुरण, शाकीय बढ़वार तथा बढ़ी हुई उपज में मदद करते हैं। सीसीएएफ–प्रशमन विकल्प टूल्स का उपयोग करते हुए निक्रा के तहत अंगीकृत किए गए गांवों के लिए धान, चना, गेहूं, सोयाबीन तथा मूंग हेतु अनेक जलवायु स्मार्ट हस्तक्षेपों की पहचान की गई।

डाइ–कोरियोनिक डाइ–एमनियोटिक (डीसीडीए) का प्रयोग करने पर पारम्परिक जुताई रीतियों के तहत उच्चतर तथा मध्यम कार्बन स्ट्रेटा के अंतर्गत जीडब्ल्यूपी (वैश्विक ऊष्मायन क्षमता) में क्रमशः 33.2 प्रतिशत तथा 4.9 प्रतिशत तक की कमी देखने को मिली। शून्य जुताई रीति के तहत

लाख रंग सूचकांक विश्लेषक (LaCilyser)

पूसा संजीवनी

उच्च कार्बन एवं मध्यम कार्बन स्ट्रेटा के अंतर्गत जीडब्ल्यूपी (वैश्विक ऊष्मायन क्षमता) में क्रमशः 25.0 तथा 9.7 प्रतिशत तक की कमी देखने को मिली। किसानों की आय में तथा टिकाऊ क्षमता में सुधार लाने और साथ ही जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का समाधान करने के लिए देश में एकीकृत कृषि प्रणालियों पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना और जैविक खेती पर अखिल भारतीय नेटवर्क कार्यक्रम के माध्यम से एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल स्थापित किए गए। अभी तक, कुल 71 प्रोटोटाइप एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल (आठ एकीकृत जैविक कृषि प्रणाली मॉडल सहित), 63 ऑन–फार्म किसान भागीदारी परिष्कृत कृषि प्रणालियां और 32 विश्वसनीय (bankable) मॉडल विकसित किए गए जो 26 राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों के लिए उपयुक्त हैं।

मानव संसाधन विकासः भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का शिक्षा प्रभाग अपनी प्रत्यायन प्रक्रिया के माध्यम से 74 कृषि विश्वविद्यालयों और निजी विश्वविद्यालयों के अनेक कृषि कॉलेजों में गुणवत्ता आश्वासन को सुनिश्चित करने में मदद करता है। कृषि शिक्षा प्रभाग के साथ–साथ राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी) तथा नार्म की योजना के तहत चलाए गए अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अनेक भावी क्षेत्रों में संकाय सदस्यों तथा छात्रों की क्षमताओं को बढ़ाने में मदद मिली और स्नातकोत्तर अनुसंधान की प्रकाशन प्रकृति में सुधार आया। कृषि विश्वविद्यालयों को छात्रों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करने और साथ ही कृषि व्यवसाय इनक्यूबेशन केन्द्रों को सीमित सहयोग देने के लिए सहायता प्रदान की गई। वर्ष 2023–24 में डिग्री कार्यक्रमों, कॉलेजों और कृषि विश्वविद्यालयों के प्रत्यायन के लिए कुल 42 नए आवेदन प्राप्त हुए। पूर्ववर्ती वर्ष के बैकलॉग सहित कुल दस कृषि विश्वविद्यालयों को प्रत्यायन प्रदान किया गया।

कुल 583 तथा 292 छात्रों को क्रमशः मास्टर एवं डॉक्टरेट अध्ययन के लिए क्रमशः भाकृअनुप पीजीएस तथा भाकृअनुप जेआरएफ/एसआरएफ प्रदान की गईं। कृषि एवं सम्बद्ध विज्ञान के क्षेत्र में मूल्यवान दस्तावेजों की एक डिजिटल रिपोजिट्री, कृषिकोश (https://krisikos.egranth.ac.in/) का सृजन किया गया और उसका सुदृढीकरण किया गया। वर्तमान में इस डिजिटल रिपोजिट्री में पुरानी पुस्तकों, पुरानी पत्रिकाओं, रिपोर्ट, कार्यवृत, रि–प्रिन्ट, अनुसंधान उपलब्धियों, प्रशिक्षण मैनुअल, ऐतिहासिक रिकॉर्ड जैसी 3,00,000 से भी अधिक डिजिटल सामग्री (वॉल्यूम) में डिजिटल प्रारूप में 50 मिलियन पृष्ठ हैं। जिनमें राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा प्रणाली के विभिन्न संस्थानों तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से 1,90,000 से भी अधिक थीसिस डिजिटल प्रारूप में विद्यमान हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, कृषिकोश रिपोजिट्री में उपलब्ध थीसिस शीर्षक के मेटाडेटा से भिन्न वर्षों में इसकी

कृषि विज्ञान केन्द्रों में कृषि विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राएं

आवृति के साथ साथ प्रमुख कीवर्ड निष्कर्षण के लिए एक टूल विकसित किया गया। राष्ट्रीय कृषि उच्चतर शिक्षा परियोजना के प्रमुख घटकों यथा प्रगत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र (CAAST), संस्थागत विकास योजना (IDP), तथा नवाचार अनुदान के माध्यम से कृषि विश्वविद्यालयों में बढ़े हुए उद्यमशीलता अवसरों और अन्य सुधारों में योगदान किया गया। राष्ट्रीय उच्चतर कृषि शिक्षा परियोजना (NAHEP) द्वारा भाकृअनुप – कृषि विश्वविद्यालय प्रणाली में कुल 76 संस्थानों को लाभ पहुंचाया जा रहा है जिसमें 65 राज्य स्तरीय कृषि विश्वविद्यालय, चार मानद विश्वविद्यालय, कृषि संकाय की सुविधा वाले चार केन्द्रीय विश्वविद्यालय और तीन केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय शामिल हैं।

सामाजिक विज्ञानः दलहन उत्पादन में हुई प्रगति को टिकाऊ बनाये रखने के लिए प्रौद्योगिकीय प्रगति और किसानों को कहीं अधिक उत्पादन करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए आयात को सीमित करने की जरूरत है। दलहन उत्पादन को बढ़ाने की रणनीति उपज अन्तराल को पाटने, तकनीकी प्रगति को प्रभावित करने और फसल तटस्थ मूल्य नीति अपनाने के अंतर्गत बनाई जानी चाहिए। कुछ प्रमुख टिकाऊ कृषि रीतियों का मेटा विश्लेषण करने पर प्रदर्शित हुआ कि ये हस्तक्षेप कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को उत्पन्न करते हैं और ऐसी गैर व्यापार योग्य सेवाओं का मौद्रिक मूल्य प्रति हैक्टर 3,742 रुपये से 15,142 रुपये तक होता है जो पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के कुल मूल्य का 34 से 77 प्रतिशत है।

एक कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित एंड्रॉइड मोबाइल ऐप नामतः AI-DISc (फसलों के लिए कृत्रिम मेधा आधारित रोग पहचान) का विकास किया गया जो कि स्पष्ट लक्षणों के साथ स्वचालित तरीके से पादप रोगों की पहचान कर सकता है। केसीसी–चक्षु (KCC-CHKAKSHU) (किसान कॉल सेन्टर–हाइपरटेक्स्ट यूजर इन्टरफेस का उपयोग करके संकलित ऐतिहासिक रूप से एकत्रित ज्ञान आधारित प्रणाली) का विकास किया गया है। कृषि को सहयोग करने

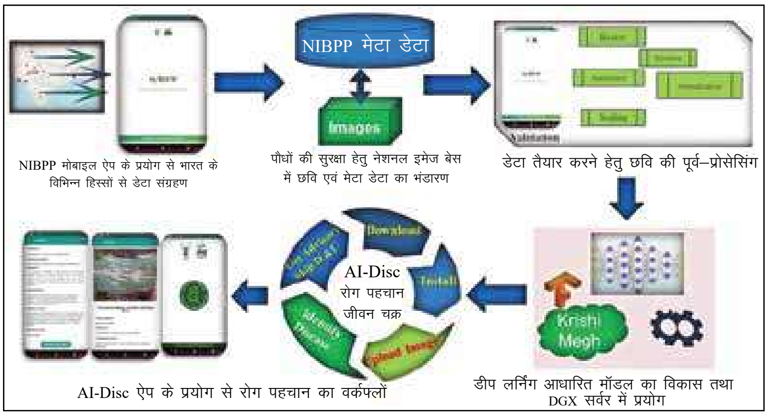

फसलों के लिए कृत्रिम मेधा आधारित रोग पहचान (AI-DISC) ऐप

के लिए एक मेधा ऑनलाइन प्लेटफार्म को लागू करने के लिए डिजिटल इंडिया कॉरपोरेशन, इलेक्ट्रॉनिक एवं संचार प्रौद्योगिकी (MeitY) मंत्रालय, भारत सरकार के साथ जुड़कर किसान सारथी को लागू और इसका सुदृढ़ीकरण किया गया। यह भारतीय किसानों के लिए ऑन कॉल परामर्शी सेवा है जहां कोई भी किसान अपनी जिज्ञासा का समाधान पाने के लिए अपने संबंधित कृषि विज्ञान केन्द्र अथवा अटारी को सीधे स्वचालित रूप से अपनी भाषा में कॉल कर सकता है अथवा उसे रिकॉर्ड कर सकता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र पोर्टल (कृषि विज्ञान केन्द्र ज्ञान नेटवर्क) को उपज अन्तराल सूचकांक पर जानकारी को शामिल करके और पोर्टल में राज्य तथा जिलावार रिपोर्ट को देखने के लिए नई कार्यशीलता को जोड़कर मजबूती प्रदान की गई है। स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए ई–कोर्स का विकास एवं प्रसार करके भारत में उच्चतर कृषि शिक्षा को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य के साथ ई–लर्निंग पोर्टल विकसित किया गया है। वर्तमान में, इस पोर्टल पर 70 स्नातकोत्तर तथा 141 स्नातक पाठ्यक्रमों के लिए ई–सामग्री उपलब्ध है। KRISHI (कृषि में नवाचार के लिए ज्ञान आधारित संसाधन सूचना प्रणाली हब) के प्रयोगात्मक डेटा रिपोजिट्री एवं इन्फोग्राफिक्स डैशबोर्ड को अधिक जानकारी प्रणालियों के साथ समृद्ध किया गया। भाकृअनुप के जिओ–पोर्टल को अद्यतन बनाया गया। क्षेत्रफल उत्पादन और उपज सूचना प्रणाली विकसित की गई। शीत, सूखा, ताप तथा लवण जैसे चार विशिष्ट अजैविक दबावों के साथ सम्बद्ध miRNAs का पूर्वानुमान लगाने के लिए एक मशीन लर्निंग आधारित कम्प्यूटेशनल मॉडल विकसित किया गया। एक ऑन–लाइन पूर्वानुमान सर्वर ASmiR (पौधों में अजैविक दबाव उत्तरदायी miRNA पूर्वानुमान) का विकास किया गया। कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए, भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुबनेश्वर द्वारा कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों में महिलाओं से जुड़े मुद्दों का समाधान करने हेतु अनेक अनुसंधान परियोजनाओं में सक्रिय रूप से कार्य किया जा रहा है। इन परियोजनाओं को कृषिरत महिलाओं पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाओं के रूप में 13 राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग करते हुए भारत के 12 राज्यों में चलाया जा रहा है। कृषिरत महिलाओं की गतिशीलता और सशक्तिकरण के लिए ओडिशा के पुरी जिले में मसाला प्रसंस्करण एवं खुम्ब अथवा मशरूम पर केन्द्रित दो कस्टम हायरिंग केन्द्र स्थापित किए गए। कृषि – कार्यकलापों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए, महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) आधारित कस्टम हायरिंग केन्द्र (सीएचसी) तथा किसान हित समूह (अनन्य महिला विकास समिति) स्थापित किए गए।

मौलिक एवं रणनीतिपरक अनुसंधानः रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान निधि (एनएएसएफ) ने नवीन पहलुओं पर कुल 12 नवीन परियोजनाओं को अनुमोदित किया है। सात रणनीतिपरक क्षेत्रों के अंतर्गत कॉल x के लिए नवीन अनुसंधान परियोजनाओं हेतु पूर्व–प्रस्तावों को आमंत्रित किया गया। इन रणनीतिपरक क्षेत्रों के तहत कुल 737 पूर्व–प्रस्ताव प्राप्त किए गए। चावल की किस्म एमटीयू 1010 में जिंक फिंगर ट्रांसक्रिप्शन कारक वाले डीएसटी (सूखा एवं लवण सहिष्णुता) जीन का उत्परिवर्ती विकसित करने के लिए CRISPR-Csa9 तकनीक के साथ जीन सम्पादन अथवा एडिटिंग को आजमाया गया। कृषि आकृतिविज्ञान तथा दबाव सहिष्णुता के लिए फिनोटाइपिंग डाटा का उपयोग करते हुए जीनोमवार सम्बद्धता अध्ययन (GWAS) से इन गुणों से संबंधित अनेक जीनों की पहचान की गई। फाइन मानचित्रण अध्ययन में गेहूं में प्रमुख वैकल्पिक बौनेपन लोकाई *Rht14* तथा *Rht18* की सटीक मानचित्र स्थिति उपलब्ध करवायी गई। व्याख्या करने के उपरांत एवं डोमेन खोज विश्लेषण करने पर पांच लिपेज और दो लिपॉक्सीगिनेज की पहचान की गई और उनकी क्लोनिंग की गई।

येलो मोज़ेक रोग प्रतिरोधिता की, नल कुनिट्ज ट्रिप्सिन निरोधक, नल *लिपॉक्सीगिनेज–2* जीन की मार्कर सहायतार्थ स्टैकिंग तथा सोयाबीन के आनुवंशिक आधार को व्यापक बनाने का कार्य किया गया। मक्का में फॉल आर्मीवर्म *एस. फ्रुजीपर्डा* की प्रतिरोधिता के लिए जीनोमिक क्षेत्रों की पहचान करने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया और कुल 531 अनुक्रम टैग्ड माइक्रोसेटेलाइट (एसटीएमएस) मार्करों का उपयोग करते हुए एक पैतृक बहुरूपिता की गई। गैर विध्वंसात्मक की प्रारंभिक अथवा अगेती अवस्था में पपड़ी प्रतिरोधी सेब जननद्रव्य की जांच करने के लिए वाष्पशील जैव मार्कर की पहचान की गई। नाशीजीव सफेद मक्खी, *बीमीजिया टैबेकी* का प्रबंधन करने के लिए, RNAi साइलेन्सिंग मध्यस्थ नियंत्रण को अपनाया गया। गैर सम्पर्क रीति में मृदा से नमी के अनुमान के लिए एक प्रोटोटाइप 'मेघ (MEGH) (मीजरिंग इसेन्शियल गुड हाइड्रेशन)' का विकास किया गया। धान

पुआल का *स्वः स्थाने* अपघटन करने अथवा उसे उसी स्थान पर सड़ाकर नष्ट करने के लिए सूक्ष्मजीव कंसोर्शियम पैकेज का मानकीकरण किया गया। धान अपशिष्ट का *स्वः स्थाने* प्रबंधन करने के लिए एक एकीकृत सीडर व सूक्ष्मजीव संरोप्य एप्लीकेटर मशीन का विकास किया गया। पशुओं के लिए इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड (eHRA) तथा इलेक्ट्रॉनिक पशु चिकित्सा मेडिकल रिकॉर्ड (eVMR) के प्रोटोटाइप सहित पशु स्वास्थ्य, रोगी देखभाल तथा प्रेसीजन पशुधन पालन के लिए कृत्रिम मेधा तथा आईओटी आधारित स्मार्ट पशु चिकित्सा पारिस्थितिकी प्रणाली विकसित की गई। साथ ही मेडिकल डेटा आर्किटेक्चर माड्यूल्स और डाटा पैनल भी विकसित किए गए।

सार्स–कोविड–2 (SARS-CoV-2) के ओमिक्रॉन तथा डेल्टा परिवर्त का पृथक्करण करके और आनुवंशिक लक्षणवर्णन करके ओमिक्रॉन एवं डेल्टा स्ट्रेनों के साथ एक कॉकटेल टीके का विकास किया गया। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में सुरक्षित शूकर मीट के लिए संभाव्य मूल्य श्रृंखला हेतु पशुओं के मुंह अथवा मुख के चित्र हासिल करने से संबंधित सभी विशेषताओं का मानकीकरण करने के उपरान्त एक प्रोटोकॉल तैयार किया गया। अति खोजने योग्य स्तर का पता लगाने की सीमा के साथ जल में क्रोमियम (Cr^{6+}) का पता लगाने के लिए एक संवेदनशील उपकरण (IMAGinE) का विकास किया गया। विकसित Cr^{6+} सेन्सिंग उपकरण IMAGine को एलओडी तथा एलओक्यू के क्रमशः 0.0037 पीपीएम एवं 0.0112 पीपीएम के अति कम मान के साथ सटीक और मजबूत पाया गया।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी: अधिकारियों की वार्षिक प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट (एपीएआर) को इलेक्ट्रॉनिक रूप से भरने के लिए एक ऑनलाइन प्रणाली, स्मार्ट परफार्मेन्स एप्रेजल रिपोर्ट रिकॉर्डिंग विन्डो (SPARROW) की शुरूआत की गई। वर्ष 2022–23 के लिए कुल 17,691 वार्षिक प्रदर्शन मूल्यांकन रिपोर्ट (एपीएआर) सृजित की गईं। अपनी उल्लेखनीय अनुसंधान उपलब्धियों को प्रस्तुत करने के लिए भाकृअनुप के सभी वैज्ञानिकों के लिए एक ऑनलाइन पोर्टल, कृषि अनुसंधान प्रबंधन प्रणाली (ARMS) विकसित की गई और उसे लागू किया गया। एनआईसी द्वारा विकसित आईसीएआर ई–ऑफिस सॉफ्टवेयर को 113 भाकृअनुप संस्थानों तथा उनके क्षेत्रीय केन्द्रों/उप–केन्द्रों में लागू किया गया है। आईसीएआर ई–ऑफिस, भाकृअनुप डेटा सेन्टर पर उपलब्ध है और इसे सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। विभिन्न हितधारकों के बीच बहुमार्गी एवं बहुभाषी संचार की उभर रहीं जरूरतों को पूरा करने के लिए भाकृअनुप के 93वें स्थापना दिवस के अवसर पर एक सूचना, संचार एवं प्रौद्योगिकी (आईसीटी) आधारित इन्टरफेस समाधान नामतः 'किसान सारथी' का शुभारम्भ किया गया। भाकृअनुप–डेटा सेन्टर, कृषि में ऑमिक्स जानकारी के लिए प्रगत सुपर कम्प्यूटिंग सुविधा (ASHOKA) तथा भाकृअनुप – आपदा डिजास्टर रिकवरी सेंटर केन्द्र (ICAR-DRC) को स्थापित किया गया है ताकि एकीकृत संचार प्रणाली का मूल्यांकन करने, ई–मेल सेवाओं, वेब ऐप/वेबसाइट होस्टिंग, ई–ऑफिस, आईसीएआर – ईआरपी, कृषि अनुसंधान प्रबंधन प्रणाली, विदेश दौरा प्रबंधन प्रणाली, कार्मिक प्रबंधन प्रणाली, ई–एचआरएमएस, स्पैरो, सुपर कम्प्यूटिंग सुविधा तथा अन्य अनेक डिजिटल ऐप तथा प्लेटफार्म का मूल्यांकन करने में सहयोग प्रदान किया जा सके। देशभर में परिषद के उपयोगकर्ताओं को सुचारू आईसीटी सपोर्ट उपलब्ध करवाने के लिए वेब ऐप के रूप में एक केन्द्रीकृत हेल्प डेस्क तैयार किया गया है और इन ऐप एवं सेवाओं का उपयोग करने से संबंधित मामलों व चिंताओं का समाधान करने के लिए लागू किया गया है। प्रेसीजन कृषि पर भाकृअनुप नेटवर्क कार्यक्रम (NePPA) का ध्यान प्रेसीजन स्मार्ट कृषि के लिए सेंसर, आईओटी, ड्रोन तथा आईसीटी, परिवर्तनीय दर प्रौद्योगिकियों (VRTs) से जुड़ी तकनीकों पर हालिया प्रगति वाले क्षमताशील ऐप की खोज करने पर केन्द्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य मृदा उर्वरता, फसल स्वास्थ्य, पशुधन पालन, कटाई उपरांत कार्यों, जलजीव पालन तथा किसानों के खेतों की अपस्केलिंग की निगरानी करने तथा प्रबंधन करने में परिशुद्धता लाना है ताकि इनपुट उपयोग प्रभावशीलता तथा अनुकूल उत्पादन प्रणाली में वृद्धि की जा सके।

SPARROW का मुख्य डैशबोर्ड 2022–23 का विवरण

प्रौद्योगिकी मूल्यांकन, प्रदर्शन एवं क्षमता निर्माण: कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसानों के खेतों में 33,128 परीक्षण लगाकर कुल 15,180 स्थानों पर विभिन्न फसलों में कुल 6,036 प्रौद्योगिकीय विकल्पों का मूल्यांकन किया गया जिसका उद्देश्य देशभर में पहचानी गईं समस्याओं के लिए प्रौद्योगिकीय विकल्प उपलब्ध

करवाना था। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कुल 6,771 परीक्षणों का आयोजन करके 3,633 स्थानों पर गाय, भैंस, भेड़, बकरी, कुक्कुट, शूकर तथा मत्स्य के उत्पादन एवं प्रबंधन संबंधी विभिन्न विषयी क्षेत्रों से जुड़े कुल 1,099 प्रौद्योगिकीय विकल्पों का मूल्यांकन किया गया। प्रौद्योगिकी मूल्यांकन के भाग के तौर पर, कृषिरत महिलाओं से जुड़ी 339 प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन 1,344 स्थानों पर 3,066 परीक्षण आयोजित करके किया गया जिसका प्रयोजन महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। कृषि विस्तार प्रभाग, भाकृअनुप, नई दिल्ली द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली के राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM) के अंतर्गत प्रमुख दलहनी एवं तिलहनी फसलों पर कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (CFLDs) कार्यक्रम कार्यान्वित किये गए। इनका प्रयोजन इन फसलों की विभिन्न प्रौद्योगिकियों की उत्पादन क्षमता का प्रदर्शन करना था। क्षमता निर्माण के अंतर्गत, कुल 23.16 लाख किसानों/कृषिरत महिलाओं, ग्रामीण युवाओं और प्रसार कार्मिकों को विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया और इसके प्रायोजित प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों सहित कुल 74,065 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन गतिविधियों के अलावा, प्राकृतिक खेती की आउट–स्केलिंग, क्लस्टर आधारित व्यावसायिक संगठनों (CBBOs) के रूप में किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) का गठन व प्रोत्साहन, किसान उत्पादक संगठनों के लिए प्रौद्योगिकीय समर्थन, कृषि ड्रोन के माध्यम से प्रदर्शन, फार्मर फर्स्ट, कृषि में युवाओं को आकर्षित करना एवं बनाए रखना (आर्या), दलहनी व तिलहनी फसलों के क्लस्टर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाना, दक्षिण एशिया के लिए अनाज प्रणाली पहल (CSISA), जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (NICRA), दलहन बीज हब, *मेरा गांव–मेरा गौरव* कार्यक्रम और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता लाने जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों पर गतिविधियां चलाई गईं ताकि कृषि में विभिन्न चुनौतियों का समाधान किया जा सके। रिपोर्टाधीन वर्ष में कृषि विज्ञान केन्द्रों ने भिन्न विधियों और रीतियों में कुल 6.19 लाख प्रसार कार्यक्रम आयोजित किए। इनमें शामिल थे : परामर्श सेवाएं, प्रमुख दिवसों का आयोजन, नैदानिकी एवं क्लीनिक सेवाएं, प्रदर्शनियां, अवसर दौरे, पूर्व प्रशिक्षु सम्मेलन, फार्म विज्ञान क्लब संयोजकों की बैठकें, किसान सेमिनार, कृषि विज्ञान केन्द्रों में किसानों के दौरे, प्रक्षेत्र दिवस, फिल्म शो, समूह बैठकें, किसान गोष्ठी, किसान मेले, संसाधन व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान प्रस्तुति, महिला मण्डल संयोजकों की बैठकें, विधि प्रदर्शन, पौधा/पशु स्वास्थ्य कैम्प, किसानों के खेतों में वैज्ञानिकों के दौरे, स्वयं सहायता समूह बैठकें, मृदा स्वास्थ्य कैम्प, मृदा जांच अभियान, कार्यशालाएं तथा अन्य विविध गतिविधियां। इनमें कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों से जुड़ी नवीनतम प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन 204.61 लाख प्रतिभागियों के सम्मुख किया गया जिनमें 200.58 लाख किसान और

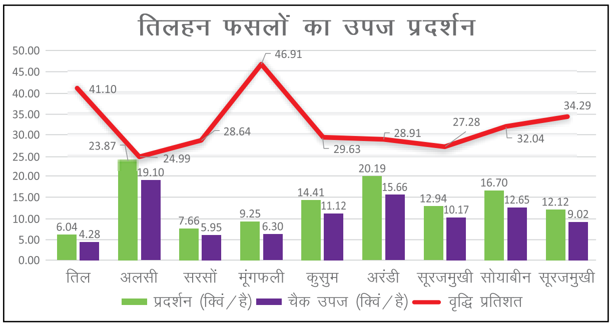

सीएफएलडी के अंतर्गत तिलहनी फसलों का उपज प्रदर्शन

4.54 लाख प्रसार कार्मिक शामिल थे। इसके अतिरिक्त, प्रौद्योगिकी प्रसार की व्यापक कवरेज के साथ इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट मीडिया का प्रभावी उपयोग करने के लिए केवीके अगुआ बने हुए हैं। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा उन्नत किस्मों व संकर किस्मों के बीजों एवं रोपण सामग्री, उपोत्पादों तथा पशुधन, कुक्कुट तथा मत्स्य की श्रेष्ठ प्रजातियों जैसे प्रौद्योगिकीय उत्पाद उत्पन्न किए जिनसे देश में 11.18 लाख किसान लाभान्वित हुए। कुल मिलाकर, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालयों में कुल 55 प्रसार शिक्षा निदेशालयों द्वारा देश के कृषि विज्ञान केन्द्रों को प्रौद्योगिकीय समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। कुल 594 कृषि विज्ञान केन्द्रों ने मोबाइल परामर्शी सेवाओं का उपयोग करते हुए किसान समुदाय को समय से एवं जरूरत आधारित जानकारियां उपलब्ध करवाई। मौसम पूर्वानुमान के आधार पर उपयुक्त खेत कार्यों पर किसानों को सचेत किया गया और उचित सलाह दी गई। जलवायु अनुकूल कृषि में राष्ट्रीय नवाचार (NICRA) के प्रौद्योगिकी प्रदर्शन संघटक (TDC) का उद्देश्य भारतीय कृषि की अनुकूलनता को बढ़ाना और जलवायु प्रतिकूलताओं के प्रति भारतीय किसानों को कहीं अधिक अनुकूलनीय बनाना है। इसे नवीनतम जोखिम वर्गीकरण के अनुसार देश की जलवायु की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील जिलों में 151 केवीके माध्यम से लागू किया गया है।

भाकृअनुप द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार से प्राप्त वित्तीय सहयोग से कृषि ड्रोन परियोजना को प्रारंभ किया गया है जिसका प्रयोजन किसानों और अन्य हितधारकों के बीच ड्रोन के बारे में जागरूकता का सृजन करना और किसानों के खेतों में कृषि कार्यों में ड्रोन के उपयोग का प्रदर्शन करना है। नवोन्मेषी पहल *'मेरा गांव–मेरा गौरव'* का उद्देश्य प्रयोगशाला से खेत (लैब टू लैण्ड) तक प्रक्रिया के बारे में झिझक को दूर करने के लिए किसानों के साथ वैज्ञानिकों की सीधी बातचीत को बढ़ावा देना है। इस योजना का उद्देश्य विशेषकर लघु एवं सीमान्त किसानों वाले गांवों को अंगीकृत करके नियमित आधार पर किसानों को वांछित सूचना, जानकारी और परामर्श उपलब्ध करवाना है। भाकृअनुप द्वारा प्रारंभ किया गया फार्मर फर्स्ट एक अग्रणी कार्यक्रम है जिसमें विभिन्न पहलुओं यथा उत्पादन एवं उत्पादकता से आगे बढ़ना, छोटी कृषिजोत वाले किसानों

को विशेषाधिकार देना, तथा किसानों व वैज्ञानिकों के मध्य परस्पर बातचीत को बढ़ाकर अधिकांश किसानों की जटिल, विविध एवं जोखिम के प्रति संवेदनशील वास्तविकताओं को शामिल किया गया है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान सभी मॉड्यूल्स में कुल 28,995 प्रदर्शन एवं 2,972 प्रसार कार्यक्रम आयोजित किए गए, 1,03,492 पशुओं (पशुधन एवं कुक्कुट) को लाभ मिला तथा इन कार्यक्रमों में 86,197 किसान परिवारों को शामिल किया गया। पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवाचार (NARI) कार्यक्रम एक अग्रणी कार्यक्रम है जिसे भाकृअनुप द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रारंभ किया गया है। पोषण के प्रति संवेदनशील कृषि में कुपोषण और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी पर काबू पाने के लिए पोषण से भरपूर खाद्य पदार्थ, आहार विविधता और खाद्य प्रबलीकरण को केन्द्र में रखा गया है।

लिलियम पुष्पों का खेत

बाजार के लिए तुड़ाई उपरांत पुष्प बंडल

जनजातीय एवं पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अनुसंधानः रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, 15 फसलों की जारी की गईं 49 किस्मों/अंतः प्रजात का कुल 17.453 टन प्रजनक बीज उत्पादन किया गया और 16.054 टन प्रजनक बीज की आपूर्ति बीज उत्पादन करने वाली विभिन्न एजेन्सियों को की गई ताकि उनके द्वारा आधारीय एवं प्रमाणित बीज के रूप में बीज गुणनीकरण किया जा सके। आनुवंशिक शुद्धता को बनाये रखने वाली मानक विधियों का अनुपालन करते हुए 15 फसलों की जारी की गईं 40 किस्मों का लगभग 1,433 किलोग्राम केन्द्रक बीज उत्पादन किया गया। इसके अलावा, सात फसलों की नौ किस्मों का 401 किलोग्राम विश्वसनीय लेबल्ड बीज उत्पादन किया गया और 258 किलोग्राम विश्वसनीय लेबल्ड बीज की आपूर्ति विभिन्न हितधारकों को की गई। केन्द्रीय किस्मों यथा वीएल कुकीज गेहूं, वीएल मंडुआ 400 रागी, वीएल सोया 99 सोयाबीन तथा वीएल उपहार तथा वीएल माधुरी मटर; तथा राज्य किस्मों यथा वीएल मसूर 150 मसूर एवं वीएल मटर 64 मटर को पूर्व–पश्चिम हिमालयी क्षेत्र में खेती के लिए जारी किया गया।

खेत तालाब, फलों, डेयरी, चारा फसलों, केन्द्रीय खेत तालाब, बत्तख पालन, घूरे की खाद (एफवाईएम) गड्ढा तथा वर्मी कम्पोस्टिंग इकाई के साथ अनाज, दलहन, तिलहन, सब्जी फसलों और संरक्षित संरचना पर लटकती सब्जियों वाले विभिन्न उद्यमों को शामिल करते हुए एक आईओएफएस मॉडल का डिजाइन तैयार किया गया और इसकी जांच दीर्घावधि आधार पर की गई। डेयरी इकाई तथा खेत से निकलने वाले ठोस अपशिष्ट का उपयोग घूरे की खाद और कम्पोस्ट बनाने में किया गया। इस मॉडल में 0.34 हैक्टर का कुल क्षेत्रफल और एक खेत तालाब (0.046 है.) शामिल है और इसका उपयोग जलजीव पालन एवं बत्तख पालन के लिए किया जा सकता है तथा जरूरत पड़ने पर जीवन रक्षा करने वाली सिंचाई से फसलों को सहयोग किया जा सकता है। इस मॉडल का प्रदर्शन तीन गांवों यथा मिनसैन, पिंथोर तथा उम्डेन उमबाथियांग में 330 परिवारों को किया गया और इसमें लगभग 300 हैक्टर क्षेत्रफल को कवर किया गया। मॉडल को अपनाने वाले लाभान्वितों से प्राप्त परिणामों में प्रदर्शित हुआ कि आईओएफएस पर मात्र 60,000 रुपये का निवेश करने पर किसानों ने धान की अकेली फसल अथवा उन्नत धान–सब्जी फसलचक्र प्रणाली की तुलना में प्रति वर्ष 65,000 रुपये की शुद्ध आय हासिल की। दिनांक 23 दिसम्बर, 2022 को उत्तराखण्ड के बागेश्वर जिले में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति गांव उडेरखानी में किसान दिवस आयोजित किया गया जिसमें कुल 75 किसानों ने भाग लिया। इस आयोजन का प्रयोजन पर्वतीय किसानों द्वारा महसूस की जा रहीं चुनौतियों और टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहित करने के बारे में उनके बीच जागरूकता का सृजन करना था। अधिकारियों ने किसानों को नवीन कृषि तकनीकों, बाजार रुझानों तथा सरकारी योजनाओं पर जानकारी उपलब्ध करवाई। दिनांक 18 अगस्त, 2022 को उडेरखानी गांव में *जल शक्ति अभियान* के अंतर्गत एक जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में जल संरक्षण, जल संसाधन प्रबंधन तथा वर्षा जल संचयन पर ध्यान केन्द्रित किया गया ताकि पर्वतीय इलाकों में जल की सुरक्षा और संधारणीयता को सुनिश्चित बनाया जा सके।

अंगीकृत गांवों में क्लस्टर युक्ति में आईओएफएस पद्धति

आईपी, संगठन एवं प्रबंधन

प्रशासन – रिपोर्टाधीन वर्ष में, पदोन्नति कोटा के अंतर्गत निम्नलिखित पदों को भरा गया : 4 निदेशक/सीएओ (वरिष्ठ ग्रेड), 2 निदेशक (वित्त)/लेखा नियंत्रक, 6 उप सचिव/सीएओ, 6 उप निदेशक (वित्त)/सीएफएओ, 4 अवर सचिव, 7 वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, 6 वरिष्ठ वित्त व लेखा अधिकारी, 1 विधि अधिकारी, 2 प्रधान निजी सचिव, 7 प्रशासनिक अधिकारी, 7 वित्त व लेखा अधिकारी, 5 अनुभाग अधिकारी (मुख्यालय), 16 सहायक (मुख्यालय) तथा 3 अवर श्रेणी लिपिक (मुख्यालय)। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, भाकृअनुप के 21 पात्र अधिकारियों एवं स्टाफ को संशोधित सुनिश्चित कैरियर प्रोन्नयन स्कीम के अंतर्गत भाकृअनुप मुख्यालय में वित्तीय उन्नयन के लाभ प्रदान किए गए।

वित्तः वर्ष 2022–23 के लिए डेयर/भाकृअनुप का संशोधित बजट अनुमान रुपये 8,658.89 करोड़ था। वर्ष 2022–23 के दौरान रुपये 355.13 करोड़ (ऋण एवं अग्रिम पर ब्याज, रिवॉल्विंग निधि स्कीमों से आय तथा अल्पावधि जमा पर ब्याज सहित) के आन्तरिक संसाधन सृजित किए गए। वर्ष 2023–24 के लिए कुल आवंटन बजट अनुमान रुपये 9,504.00 करोड़ है।

बौद्धिक सम्पदा सुरक्षाः रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, भारतीय पेटेन्ट कार्यालय में कृषि विज्ञान के विभिन्न विषय क्षेत्रों में कुल 88 नवीन पेटेन्ट आवेदन प्रस्तुत किए गए। भाकृअनुप में अब पेटेन्ट आवेदनों की संचयी संख्या बढ़कर 1,543 आवेदन हो गई है। भारतीय पेटेन्ट कार्यालय ने 81 पेटेन्ट प्रदान किए जिससे भाकृअनुप को प्रदान किए गए पेटेन्ट की संचयी संख्या बढ़कर 536 हो गई। पादप किस्मों की सुरक्षा करने के लिए, 23 किस्मों को पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPV & FRA), नई दिल्ली में जमा करवाया गया। चार आवेदन पहले प्रस्तुत किए गए थे, इस अवधि के दौरान 73 किस्मों को पंजीकरण प्रमाणपत्र प्रदान किए गए जिससे पंजीकृत किस्मों की संचयी संख्या बढ़कर 1,454 हो गई है। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 32 संस्थानों द्वारा कॉपीराइट के लिए कुल 141 आवेदन किए गए। भाकृअनुप के विभिन्न संस्थानों से दर्ज कराए गए कॉपीराइट की कुल संख्या 601 दर्ज की गई है। भाकृअनुप के नौ संस्थानों ने डिजाइन के लिए 18 आवेदन किए जिससे इनकी संचयी संख्या बढ़कर 105 हो गई। विभिन्न उत्पादों एवं प्रक्रियाओं के लिए भाकृअनुप के 18 संस्थानों ने 37 ट्रेडमार्क आवेदन प्रस्तुत किए। अभी तक, कुल 255 ट्रेडमार्क आवेदन दर्ज करवाए गए हैं। भाकृअनुप द्वारा वर्ष 2023 में विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन (WIPO) के विषय 'महिला एवं आईपी : नवाचार तथा सृजनात्मकता में तेजी लाना' के अनुसार दिनांक 26 अप्रैल, 2023 को ''विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस'' मनाया गया। विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस, परिषद के वैज्ञानिक समुदाय के बीच नवाचार और सृजनात्मकता को प्रोत्साहित करने के लिए बौद्धिक सम्पदा अधिकारों यथा पेटेन्ट, कॉपीराइट, डिजाइन, ट्रेडमार्क तथा पौधा किस्मों की महत्ता पर प्रकाश डालने का एक सुनहरा अवसर था। इस वर्ष, 463 सार्वजनिक एवं निजी संगठनों और किसानों/उद्यमियों के साथ ऐसे 691 भागीदारी समझौते किए गए। इस प्रक्रिया में, विभिन्न विषयगत प्रभागों से 64 भाकृअनुप संस्थान शामिल थे। विभिन्न विषयों यथा पशु उत्पादन प्रौद्योगिकियां; फसल उत्पादन प्रौद्योगिकियां; फार्म मशीनरी एवं उपकरण; मत्स्य पालन एवं प्रक्रियाएं; खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां; पादप सुरक्षा प्रौद्योगिकियां; बीज एवं रोपण सामग्री; टेक्सटाइल प्रक्रिया; तथा सम्बद्ध क्षेत्रों से चार प्रौद्योगिकियों में कुल 381 प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण किया गया।

परिषद के संस्थानों ने सार्वजनिक उपयोगिता और किसानों के लिए अनेक उपयोगी कार्यक्रमों का आयोजन हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में किया। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों से संबंधित कृषि विस्तार सहित

भाकृअनुप का एबीआईसी नेटवर्क कार्यक्रम

सभी गतिविधियों में हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग किया गया। परिषद तथा इसके संस्थानों ने समय–समय पर विभिन्न विषयों यथा कृषि विज्ञान, पशु एवं मत्स्य विज्ञान तथा बागवानी विज्ञान पर अनेक प्रकाशन हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में जारी किए। कृषि से जुड़ी अनेक प्रौद्योगिकियों के बारे में जानकारी प्रदान करवाने और इनका व्यापक प्रचार करने के प्रयोजन से मासिक हिन्दी पत्रिका *'खेती'* तथा द्विमासिक *फलफूल* पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से किया गया। इसी प्रकार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद मुख्यालय की घरेलू हिन्दी पत्रिका *'राजभाषा आलोक'* का प्रकाशन नियमित रूप से किया गया। इस पत्रिका में सरल हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक विषयों और सरकारी योजनाओं पर लेख सन्निहित होने के साथ–साथ इसमें परिषद और इसके संस्थानों द्वारा समय–समय पर आयोजित की जा रहीं विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों की रिपोर्ट भी शामिल रहती है। राजभाषा नियमावली, 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत परिषद के अधिसूचित अधीनस्थ कार्यालयों की संख्या बढ़कर 149 हो गई है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान परिषद की तकनीकी समन्वय इकाई द्वारा चलाई गईं विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं : कैबिनेट सचिव के लिए मासिक कैबिनेट सारांश तैयार करना; राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन/सेमिनार आदि का आयोजन करने तथा वैज्ञानिक पत्रिकाओं का प्रकाशन करने के लिए वैज्ञानिक सोसायटीज और शैक्षणिक संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना; निदेशकों का सम्मेलन आयोजित करना; भाकृअनुप क्षेत्रीय समिति की बैठकों का समन्वय करना; विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग, सीएसआईआर, आईसीएमआर, भारतीय मानक ब्यूरो आदि के साथ समन्वय एवं सहयोग बनाये रखना; प्रधानमंत्री कार्यालय, राष्ट्रपति सचिवालय, सांसद तथा अति विशिष्ट व्यक्तियों से प्राप्त संदर्भ को देखना; संसद में प्रस्तुत करने हेतु डेयर एवं भाकृअनुप वार्षिक प्रतिवेदन तथा ऑडिटेड लेखा के लिए मसौदा तैयार करना; अंतर–प्रभागीय प्रकृति वाले संसदीय प्रश्नों को देखना; डेयर/भाकृअनुप के लिए ई–समीक्षा पोर्टल के लिए नोडल प्वाइंट; भाकृअनुप पुरस्कारों के लिए राष्ट्रीय विज्ञापन देना तथा पुरस्कार विजेताओं का चयन करना; समय–समय पर पुरस्कारों के लिए दिशानिर्देशों में संशोधन करना; लाल बहादुर शास्त्री तथा नॉमर्न बोरलॉग पुरस्कार परियोजनाओं के लिए निधि जारी करना; स्वच्छता कार्य योजना (SAP) को देखना एवं प्रोत्साहित करना : निधि जारी करना, स्वच्छता कार्य योजना पोर्टल https://swachhatactionplan.gov.in/swachta/ पर अनुमोदित तिमाही रिपोर्ट को अपलोड करना; स्वच्छता पखवाड़ा दैनिक रिपोर्ट को संकलित करना तथा इसका समेकन एवं पोर्टल पर इसे अपलोड करना; स्वच्छ भारत मिशन को देखना : स्वच्छता पखवाड़ा/स्वच्छता ही सेवा का आयोजन करना; सभी भाकृअनुप संस्थानों को स्वच्छता पखवाड़े के लिए डेटावार कार्रवाई योजना तैयार करके उसका परिचालन करना, दैनिक पखवाड़ा रिपोर्ट तैयार करना, पोर्टल पर दैनिक अनुमोदित रिपोर्ट को अपलोड करना, स्वच्छता पखवाड़ा रैंकिंग का चयन करना आदि क्षेत्रीय परिषद बैठकों के लिए कार्यसूची का संकलन तथा समेकन करना और उसे गृह मंत्रालय को उपलब्ध करवाना; माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री की अध्यक्षता में भाकृअनुप संस्थानों की समीक्षा बैठकों का आयोजन करना; भारत सरकार के विभिन्न अभियान; अंतर–मंत्रालय एसाइनमेन्ट्स अथवा कार्य; केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं का समन्वयन तथा विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

भाकृअनुप का 95वां स्थापना एवं प्रौद्योगिकी दिवस समारोह दिनांक 16 से 18 जुलाई, 2023 को मनाया गया। इस अवसर पर, विषयगत प्रभागों के उत्पादों से संबंधित पांच नवीन प्रौद्योगिकियों के प्रमाणपत्रों और पुस्तकों को जारी किया गया। इसके साथ ही हैकथॉन विजेताओं को भी पुरस्कार प्रदान किए गए और सभी तीनों दिन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। परिषद के वरिष्ठ अधिकारियों के अलावा, लगभग 500 किसानों और 500 स्कूली बच्चों ने दिनांक 16 से 18 जुलाई, 2023 के दौरान आयोजित प्रदर्शनी का दौरा किया। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, तत्कालीन केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री एवं अध्यक्ष, भाकृअनुप सोसायटी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा विशिष्टजनों को बधाई दी।

प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माणः भाकृअनुप के 8 सक्षम संस्थानों द्वारा कुल 12 विशिष्टीकृत ऑनलाइन/ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए यथा भाकृअनुप के नवनियुक्त अनुसंधान प्रबंधकों के लिए कार्यकारी विकास कार्यक्रम; ज्ञान आधारित कृषि की दिशा में सिमुलेशन मॉडलिंग तथा जलवायु परिवर्तन अनुसंधान में प्रगति; पादप आनुवंशिक संसाधनों का प्रबंधन एवं उपयोगिता; एचआरडी नोडल अधिकारियों/सह–नोडल अधिकारियों द्वारा भाकृअनुप में प्रशिक्षण कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम; सतर्कता अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला; ऑटो–मोबाइल रखरखाव, सड़क सुरक्षा तथा व्यवहार कौशल; पेंशन एवं सेवानिवृति लाभ; राष्ट्रीय

पेंशन योजना; सीजेएससी सदस्यों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम; कृषि मौसम विज्ञान डेटा संकलन, विश्लेषण एवं प्रबंधन; फार्म प्रबंधन एवं सिद्धांत तथा सब्जी फसलों में संकर बीज की उत्पादन तकनीकें आदि। कार्यक्रम के अनुसार इनमें विभिन्न श्रेणियों के कुल 433 कर्मचारियों ने भाग लिया।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, वैज्ञानिकों (1137), तकनीकी (686), वित्त सहित प्रशासनिक (422) एवं कुशल सहायी स्टाफ (161) सहित कुल 2406 कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। वर्ष 2013–14 की तुलना में, वर्ष 2022–23 में प्रशिक्षण पाने वाले कर्मचारियों की संख्या में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला जो तकनीकी तथा कुशल सहायी स्टाफ के मामले में क्रमशः 85.4 प्रतिशत एवं 302.5 प्रतिशत था। वैज्ञानिकों, तकनीकी, वित्त सहित प्रशासनिक तथा कुशल सहायी स्टाफ के लिए क्रमशः 229, 50, 24 तथा 16 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए और इस प्रकार कुल 319 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा विभिन्न भाकृअनुप संस्थानों/भाकृअनुप से इतर अन्य संस्थानों द्वारा आयोजित किए गए प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रमों में विभिन्न श्रेणियों के कुल 548 कर्मचारियों को नामित किया गया जिनमें से 369 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। वर्ष 2020–21 के दौरान 90 भाकृअनुप संस्थानों में विभिन्न श्रेणियों के 2,171 कर्मचारियों द्वारा भाग लिए गए प्रशिक्षणों का प्रभाव मूल्यांकन डीओपीटी द्वारा तैयार किए गए प्रारूप के अनुसार किया गया। यह पता चला कि प्रशिक्षण के समग्र प्रभाव का मूल्यांकन प्रशिक्षुओं द्वारा 4.05/5.00 की औसत रेटिंग के साथ उल्लेखनीय – अति संतोषजनक के रूप में जबकि इनके रिपोर्टिंग अधिकारियों द्वारा 3.96/5.00 की औसत रेटिंग के साथ उल्लेखनीय – अति संतोषजनक के रूप में की गई।

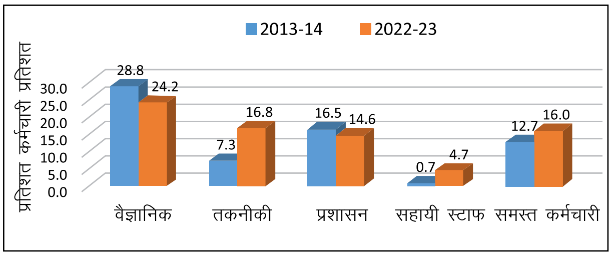

एचआरएम इकाई का सृजन होने पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कर्मियों का प्रतिशत

प्रकाशन, सोशल मीडिया एवं जनसम्पर्क: आईसीटी का उदय होने के साथ, अनुसंधान पत्रिकाओं को ऑन–लाइन (https://epubs.icar.org.in: Indian Agricultural Research Journals) उपलब्ध करवाया गया और ओपन एक्सेस में रखा गया। इस प्लेटफार्म को एनएआईपी के अंतर्गत विकसित किया गया है और अब इसमें भाकृअनुप द्वारा वित्त पोषित सोसायटीज से जुड़ी 53 पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। इसकी सुविधाओं में ऑनलाइन लेख प्रसंस्करण प्रणाली, संदर्भ प्रणाली एवं अर्काइव्स शामिल हैं। पोर्टल में *इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज* (280 अंक) तथा *इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइन्सिज* (292 अंक) से संबंधित वर्ष 1994 तक की अनुसंधान पत्रिकाओं के पिछले अंकों वाला अर्काइव्स उपलब्ध हैं जबकि इस पोर्टल में लोकप्रिय पत्रिकाएं नामतः *इंडियन फार्मिंग* (106 अंक) तथा *इंडियन हॉर्टीकल्चर* (60 अंक) भी उपलब्ध है। लगभग 37,000 लेख ओपन एक्सेस में विश्व स्तर पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं। पत्रिकाओं के लिए एक नया ओजेएस वर्जन 3.4.0–4 (https://epubs.icar.org.in) विकसित और लागू किया गया। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति वाली भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अग्रणी अनुसंधान पत्रिकाओं यथा *दि इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज* और *दि इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइन्सिज* का उपभोक्ता वर्ग बड़ा व्यापक है। रिपोर्टाधीन अवधि में इन पत्रिकाओं को कुल 3,697 (*दि इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज*) एवं 1,547 (*दि इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइन्सिज*) प्रस्तुतियां प्राप्त हुईं। इन प्रस्तुतियों में से, 285 लेख को *दि इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज* में तथा 280 लेख को *दि इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइन्सिज* में प्रकाशित किया गया। पत्रिकाओं के उपयोगकर्ताओं का आधार बढ़ रहा है जो कि *दि इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज* के मामले में 41,410 उपयोगकर्ताओं तथा *दि इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइन्सिज* के मामले में 22,610 उपयोगकर्ताओं अथवा यूजर्स तक बढ़ गया है। पत्रिका वेबसाइट को 143 देशों से जुड़े उपयोगकर्ताओं द्वारा लगभग 45,000 बार देखा गया। बहु–विषयी प्रकृति वाली होने के बावजूद इन पत्रिकाओं में उल्लेखनीय मीट्रिक्स पाए जाते हैं जैसे कि *दि इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज* के लिए 0.37 का प्रभाव कारक और 29 का एच. सूचकांक तथा *दि इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइन्सिज* के लिए 0.31 का प्रभाव कारक और 23 का एच. सूचकांक है।

इंडियन फॉर्मिंग तथा *इंडियन हॉर्टीकल्चर* में कुल प्रस्तुतियां अथवा प्रविष्टियां क्रमशः 380 एवं 148 थीं। *इंडियन फॉर्मिंग* में जहां पंजीकृत उपयोगकर्ता 5,610 थे वहीं *इंडियन हॉर्टीकल्चर* में इनकी संख्या 3,710 थी। *इंडियन फॉर्मिंग* तथा *इंडियन हॉर्टीकल्चर* में क्रमशः 180 एवं 76 लेख प्रकाशित हुए। रिच इन हेरिटेज, *इंटरनेशनल* ईअर ऑफ मिलेट्स 2023 तथा कृषि मुख्य वैज्ञानिकों की जी 20 बैठक के अवसर पर फुल ऑफ पोटेन्शियल जैसे विषयों पर *इंडियन फॉर्मिंग* के विशेषांक प्रकाशित किए गए। इसी प्रकार, वेजीटेबल क्रॉप्स, मेडीसिनल एंड एरोमैटिक प्लान्ट्स एवं हॉर्टीकल्चर इन नॉर्थ ईस्ट रीजन पर *इंडियन हॉर्टीकल्चर* के विशेषांक प्रकाशित किए गए।

रिपोर्टाधीन वर्ष में दोनों अनुसंधान पत्रिकाओं के लिए 5,000 से भी अधिक लेखों को डिजिटल ऑब्जेक्ट आईडैन्टीफायर (डीओआई) संख्या आवंटन करना जारी रखा

गया ताकि इससे लेखकों के साथ–साथ पत्रिकाओं को भी भरपूर लाभ मिल सके। अनुसंधान पत्रिकाओं के पाठकों को प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए साहित्यिक चोरी जांच सॉफ्टवेयर iThenticate में अंशदान किया गया। पुस्तकों की प्रकाशन सुविधा हेतु ई–बुक प्लेटफार्म विकसित किया गया। अंग्रेजी सम्पादन इकाई के पुस्तक प्रकाशन कार्यक्रम के अंतर्गत, सात नए शीर्षक प्रकाशित किए गए नामतः टेक्स्टबुक ऑफ वाटरशेड हाइड्रोलॉजी, टेक्स्टबुक ऑन चीज़ टैक्नोलॉजी, इम्पॉर्टेन्स ऑफ मिलेट्स एंड इम्प्रूव्ड प्रोडक्शन टैक्नोलॉजीज, फण्डामेन्टल्स ऑफ सॉयल साइन्स, फण्डामेन्टल्स ऑफ सॉयल एंड वॉटर कन्जरवेशन इंजीनियरिंग, टेक्स्टबुक ऑफ इण्टोमोलॉजी एंड टेक्स्टबुक ऑन वेटरनरी एक्सटेंशन। घरेलू प्रकाशन यथा *आईसीएआर रिपोर्टर* तथा *आईसीएआर न्यूज* भी व्यापक वैश्विक पहुंच के लिए भाकृअनुप की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इन्हें विश्वभर में लगभग 140 देशों में देखा गया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अग्रणी हिन्दी मासिक पत्रिका '*खेती*' एवं द्विमासिक बागवानी पत्रिका '*फल–फूल*' का प्रकाशन हिन्दी सम्पादन इकाई द्वारा नियमित रूप से समय पर किया गया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, *खेती* पत्रिका के चार विशेषांक प्रकाशित किए गए यथा '*पशु आहार विशेषांक*', 'दलहन पर *विशेष सामग्री*', '*मात्स्यिकी विशेषांक*', तथा '*सस्य विज्ञान कांग्रेस* विशेषांक'। इसी प्रकार '*फल फूल*' के तीन विशेषांक नामतः '*फल सब्जी प्रसंस्करण*', '*पौध नर्सरी*' तथा '*विदेशी* एवं *अल्पदोहित बागवानी फसल विशेषांक*' प्रकाशित किए गए। पत्रिकाओं के अलावा, एक पुस्तिका 'उल्लेखनीय उपलब्धियां (2014–2023) : अमृतकाल में विकसित भारत की आकांक्षा के साथ बढ़ते कदम' को भी प्रकाशित किया गया।

वास्तविक समय में सूचना का प्रसार करने के लिए, भाकृअनुप वेबसाइट को नियमित आधार पर अद्यतन किया जाता रहा और कुल 4,613 पृष्ठों को अद्यतन किया गया। 200 से अधिक देशों से कुल 41,89,432 पृष्ठों को देखा जाना दर्ज किया गया। ज्ञान के इच्छुक लोगों ने विश्वभर में वेबसाइट को देखा। वेबसाइट का दौरा करने वाले अथवा इसे देखने वाले पांच शीर्ष देशों में भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटिड किंग्डम, संयुक्त अरब अमीरात तथा नेपाल शामिल हैं। नई डिजाइन की गई और कहीं अधिक उपयोगकर्ता मित्रवत भाकृअनुप वेबसाइट तैयार की गई और इसमें 19,000 से भी अधिक पृष्ठों को रखा गया। नई वेबसाइट में एक प्रकाशन कार्ट है जिसके माध्यम से हितधारक भाकृअनुप प्रकाशनों को ऑनलाइन खरीद सकते हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, डेयर वेबसाइट (dare.gov.in) को एसटीक्यूसी से जीआईजीडब्ल्यू प्रमाणन के साथ प्रमाणित किया गया। भाकृअनुप फेसबुक पर, रिपोर्टाधीन वर्ष में कुल 519 पोस्ट्स प्रकाशित किए गए और इसके कुल 2,29,171 फॉलोअर्स हैं। भाकृअनुप ट्विटर हैण्डल में 2,28,458 से भी अधिक फॉलोअर्स हैं। औसतन, प्रति दिन तीन ट्वीट किए जाते हैं और रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान कुल 1,114 ट्वीट किए गए तथा ट्वीट्स ने कुल 2,161.29K इम्प्रेशन्स अर्जित किए। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के यूट्यूब चैनल में वीडियो फिल्में, एनीमेशन, विशिष्टजनों एवं प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के व्याख्यान/साक्षात्कार, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों के कार्यवृत आदि उपलब्ध हैं।

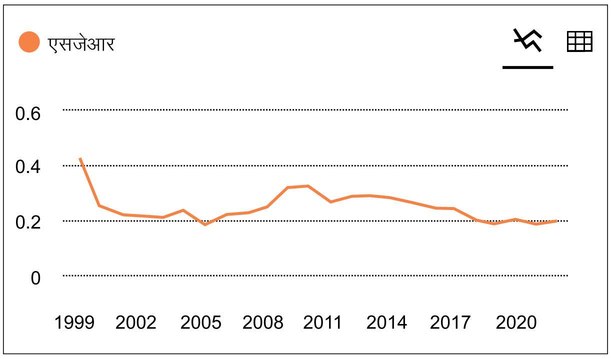

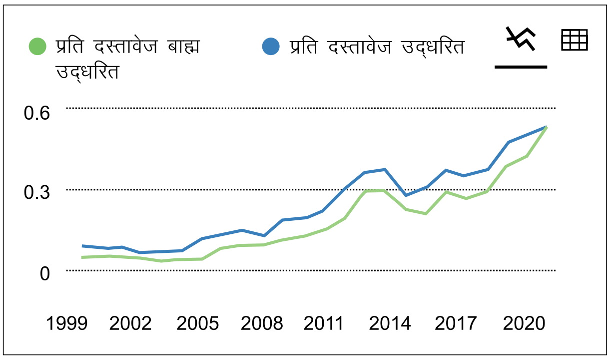

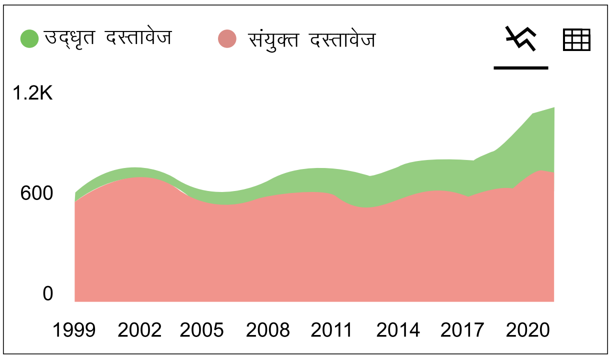

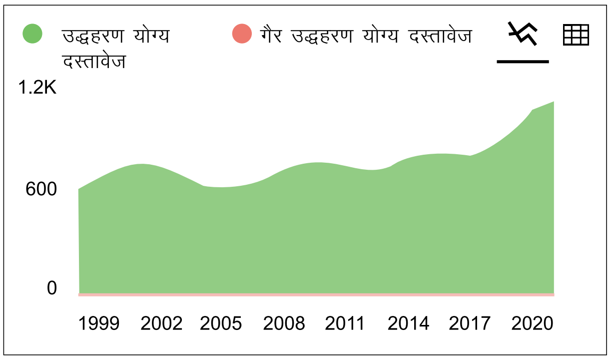

इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइन्सिज मैट्रिक्स

इसके कुल 72,700 अंशदानकर्ता अथवा सब्सक्राइबर्स हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के विषय पर अपनी झांकी के साथ तीसरी बार दिनांक 26 जनवरी, 2023 के गणतंत्र दिवस समारोह में अपनी भागीदारी दर्ज करवाई। परिषद ने भाकृअनुप स्थापना दिवस के दौरान प्रदर्शनी; नागपुर में भारतीय विज्ञान कांग्रेस; सिरोही में विजन राजस्थान; 19वां एग्रो ऑर्गेनिक वर्ल्ड एक्सपो आदि जैसी लगभग 51 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों में भाग लिया तथा इनका समन्वय किया। परिषद द्वारा किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप डेरी तथा मात्स्यिकी क्षेत्र में आई क्रान्तियों के दूरगामी परिणाम निहितार्थ हैं। आर्थिक प्रगति के साथ–साथ ये विकास देश की खाद्य, पोषण तथा आजीविका सुरक्षा में उल्लेखनीय योगदान करते हैं। भाकृअनुप का अनुसंधान न केवल आसन्न चुनौतियों का समाधान करता है वरन् एक अनुकूल एवं टिकाऊ भविष्य का निर्माण करने में भी सक्रिय रूप से योगदान करता है।

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (सीएयू), इम्फाल

केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (सीएयू), इम्फाल की स्थापना संसद के केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम 1992 (1992 की अधिनियम सं. 40) के तहत सन् 1993 में की गई थी। यह एक पूर्णतया आवासीय विश्वविद्यालय है जिसके अधिकार क्षेत्र के तहत असम विश्वविद्यालय को छोड़कर 7 उत्तर–पूर्वी पर्वतीय राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हुए 13 संघटक महाविद्यालय शामिल हैं।

अकादमिक गतिविधियां

इस केंद्रीय विश्वविद्यालय में 13 संघटक महाविद्यालयों के माध्यम से विभिन्न विषयों/पाठ्यक्रमों में 9 पूर्व–स्नातक, 47 मास्टर्स एवं 30 पीएच.डी. डिग्री कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एन आई आर एफ) द्वारा विश्वविद्यालय को वर्ष 2022 के लिए कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग स्थिति में 29वें स्थान पर रखा गया है। सहकर्मी समीक्षा टीम की सिफारिशों के आधार पर, राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड, भाकृअनुप, नई दिल्ली ने विभिन्न अकादमिक कार्यक्रमों (यूजी/ पीजी/ पीएच.डी.) के लिए केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल (मणिपुर) तथा इसके संघटक महाविद्यालयों को 28 मार्च 2021 से 27 मार्च 2026 तक प्रत्यायन की मंजूरी प्रदान की।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के लिए नया शैक्षणिक सत्र 2 जुलाई 2022 से शुरु किया गया, परंतु पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय में नया शैक्षणिक सत्र 4 अक्तूबर 2022 को शुरु किया गया। सभी महाविद्यालयों के लिए पीएच.डी. कार्यक्रमों को 2 अगस्त 2022 से शुरु किया गया। वर्ष के दौरान कुल 564, 232 और 55 छात्रों को क्रमशः विभिन्न पूर्व–स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएच.डी. कार्यक्रमों में प्रवेश/दाखिला दिया गया। इस अवधि के दौरान कुल 424 यूजी और 202 पीजी छात्रों ने अपनी डिग्री पूरी की और 28 छात्रों को पीएच.डी. उपाधियां प्रदान की गईं। विश्वविद्यालय में कुल 2,805 छात्रों में से, 459 छात्र सामान्य वर्ग से, 212 अनुसूचित जाति से, 1,364 अनुसूचित जनजाति से, 724 अन्य पिछड़ी जातियों और 46 ईडब्ल्यूएस/दिव्यांग/ अन्य वर्ग से संबंधित थे। विश्वविद्यालय के कुल छात्रों में से, 1,182 छात्र पुरुष और 1,623 महिलाएँ थी, जिसके परिणामस्वरूप पुरुषः महिला अनुपात 1:1.37 था।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन किया। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, 18 छात्रों ने जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) परीक्षा, 7 छात्रों ने भाकृअनुप एसआरएफ परीक्षा, 9 छात्रों ने गेट (GATE) परीक्षा और 1 छात्र ने कैट परीक्षा उत्तीर्ण की। छह छात्रों ने इस अवधि के दौरान यूजीसी नेट परीक्षा उत्तीर्ण की। तीन छात्रों ने एएसआरबी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित एआरएस परीक्षा उत्तीर्ण की। विश्वविद्यालय का कई निजी और सार्वजनिक क्षेत्र संगठनों और सरकारी उपक्रमों में प्लेसमेंट का एक बेहतरीन रिकॉर्ड है। इस अवधि के दौरान कुल 195 छात्रों को विभिन्न संगठनों में विभिन्न पदों पर नियुक्त किया गया।

अनुसंधान

विश्वविद्यालय के अनुसंधान का उद्देश्य कृषि प्रौद्योगिकियों/ विधियों/कृषि उपकरणों और यंत्रों को विकसित करने के लिए टिकाऊ और पर्यावरण–अनुकूल वैज्ञानिक एवं तकनीकी अभिगमों के माध्यम से आवश्यकता आधारित अनुसंधान परियोजनाएं संचालित करना है जो फसलों, पशुओं और मत्स्य उत्पादकता एवं लाभप्रदता प्राप्त करने और मूल्यवर्धन के लिए नए उत्पाद विकसित करने, आय अर्जन को बढ़ाने तथा उसके परिणामस्वरूप उत्तर–पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र के लोगों के सामाजिक–आर्थिक उत्थान में दूरगामी प्रभाव डाल सकते हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने 25 इंट्राम्यूरल अनुसंधान परियोजनाएं (आई आर पी एस) शुरु की और विश्वविद्यालय द्वारा वित्तपोषित अनुसंधान कार्यक्रमों के तहत सात परियोजनाएं पूर्ण कीं। 102 बाह्य सहायता प्राप्त वित्तपोषित अनुसंधान परियोजनाओं में से, 17 नई स्वीकृत परियोजनाएं हैं, 72 चालू परियोजनाएं हैं और 13 पूर्ण हो चुकी परियोजनाएं हैं। विश्वविद्यालय ने आकस्मिक अनुसंधान परियोजनाएं और केंद्र–विशेष अनुसंधान और परीक्षण भी समय–समय पर शुरु किए जो गहन चिंता के विषय हैं, इसलिए इस क्षेत्र की ओर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

जलमग्न कचालू के एक आशाजनक वंशक्रम (*कोलोकैसिया एस्कुलेंटा* किस्म *स्टोलोनिफेरम* सीएयूएसटी–2 (आईसी 645898) को भाकृअनुप–आरसी, एनईएच, बारापानी, मेघालय में आयोजित एआईसीआरपी (कंद फसल) की 22वीं वार्षिक समूह बैठक में मणिपुर में खेती हेतु विमोचित करने के लिए संस्तुत किया गया। धान की दो आशाजनक किस्मों, अर्थात सीएयूएस 105 (आईईटी 27496) और सीएयूएस 107 (आईईटी 28210) का प्रस्ताव राज्य उच्च उपजशील किस्म के रूप में विमोचित करने के लिए मेघालय की राज्य किस्म विमोचन समिति को प्रस्तुत किया गया है।

पूर्वोत्तर के जल निकायों में पाए जाने वाली 303 दुर्लभ और स्थानिक मत्स्य प्रजातियों में से, 182 मत्स्य प्रजातियां बार–कोडेड हैं। 10 कि.ग्रा. क्षमता का एक मिनी फिश स्मोकिंग किल्न और कम लागत वाली पाब्दा हैचरी विकसित की गई। डंकरहित मधुमक्खी *लेपिडो ट्रिगोना* (हाइमनोप्टेराः एपिडेः मेलिपोनिनी) की चार नई प्रजातियों को उत्तर–पूर्वी भारत में पहली बार पाया गया। प्रामाणिक घरेलू जैवनियंत्रण अभिकारक

आधारित जैविक–यौगिकों, यथा उमट्रिचो (*ट्राइकोडर्मा हर्जिएनम*), उमबिर (*ब्यूवेरिया बैसियाना*), उममेट (*मेटाराइजियम एनिसोप्लिए*) एवं उमलेक (*लेकेनिसिलियम लेकेनी*) और उमकॉम्ब (एक सम्मिश्रण युक्त यौगिक) का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया गया जिसके लिए मानकीकृत तरल किण्वन तकनीक का प्रयोग किया गया। तीन भिन्न प्रकंद अथवा रूटस्टॉक प्रजातियों का प्रयोग करके खासी मंडेरिन की माइक्रो शूट टिप ग्राफ्टिंग का मानकीकरण किया गया। उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय ऑर्किड की 20 प्रजातियां संग्रहित की गईं, जिनमें से पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश में 17 प्रजातियों में पुष्पण हुआ। पॉलीहाउस परिस्थिति के लिए आईओटी आधारित सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली विकसित की गई। बड़ी इलायची की स्पाइक से कैप्सूल/दाने को अलग करने के लिए एक हस्त–चालित उपकरण विकसित किया गया, जिसकी क्षमता 5 से 7 स्पाइक प्रति मिनट है, जबकि हस्त क्षमता 2–3 स्पाइक प्रति मिनट है। 99.21% की थ्रेशिंग दक्षता के साथ कुट्टू फसल के लिए छोटा पॉवर थ्रेशर विकसित किया गया। खेत स्थिति में पोर्सिन प्लुरोपनेमोनिया का त्वरित और विशेष रूप से पता लगाने के लिए एक समतापीय पॉलीमरेज चेन रिएक्शन (पीएसआर) तकनीक विकसित की गई। मिजोरम में घरेलू और अर्ध–घरेलू गोजातीय पशुओं को संक्रमित करने वाली टिक्स यानी कुटकियों की तीन प्रजातियों में से, *आर माइक्रोप्लस* को चीन के वियुक्तों (आइसोलेट्स) के करीब पाया गया, जो म्कोंमार से मिजोरम में गोपशुओं की सीमापार आवाजाही का संकेत है। मधुमक्खी पालन के लिए कुल मिलाकर 2 पेटेंट दाखिल किए गए, अर्थात हैंड ऑपरेटेड डिवाइस फॉर हार्वेस्टिंग फ्रूट्स एंड वेजिटेबल्स एंड फूड पोलन सब्स्टिट्यूट कम्पोजिशन एंड फॉर्म्यूलेशन फ्रॉम राइस बीन (*विग्ना अम्बेलाटा*)।

विस्तार शिक्षा

13 संघटक महाविद्यालयों, 6 कृषि विज्ञान केंद्रों और 6 बहु प्रौद्योगिकी परीक्षण एवं 6 व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से सात राज्यों के विभिन्न जिलों में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण गतिविधियों की योजना बनाई गई और उसमें समन्वयन किया गया।

विश्वविद्यालय ने 90 प्रतिभागियों के साथ कृषि विज्ञान केंद्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का भी आयोजन किया और एनईएच क्षेत्र के राष्ट्रीय/क्षेत्रीय स्तरीय पुरस्कार विजेता कृषि विज्ञान केंद्रों और विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्रों के पुरस्कार विजेता वैज्ञानिकों के साथ एक इंटरफेस बैठक का आयोजन किया, जिसमें कुल 124 प्रतिभागी शामिल थे।

विश्वविद्यालय ने डीआरआई, चित्रकूट, मध्य प्रदेश में 'एसडीजीएस पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के संबंध में प्रदर्शनी' में; आईएआरआई, नई दिल्ली में 'वैश्विक ऑर्गेनिक एक्सपो 2022' में; डीआरआई, चित्रकूट, मध्य प्रदेश में 'तीसरे ग्रामोदय मेला' में, और भाकृअनुप एनईएच क्षेत्र अनुसंधान केंद्र, उमियम, मेघालय में 'क्षेत्रीय कृषि मेला' में भी भाग लिया।

किसानों के उत्थान के लिए मेती (Meity) भारत सरकार के वित्तपोषण से मोबाइल आधारित कृषि सलाह आधारित अनेक ऐप विकसित किए गए जिन्हें डीआईसी, नई दिल्ली और सीएयू, इम्फाल द्वारा क्रियान्वित किया गया। इन ऐप में, मात्स्यिकी महाविद्यालय, त्रिपुरा का ऐप; पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, मिजोरम का ऐप; बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश का ऐप और कृषि महाविद्यालय, मणिपुर का ऐप; और कृषि विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेघालय के ऐप शामिल हैं।

सीएचएफ आर–एबीआई के तहत स्थापित किए गए चार सफल स्टार्टअप को उत्तर–पूर्व का प्रतिनिधित्व करने और अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए 15–18 अक्तूबर 2022 के दौरान आईएआरआई मेला ग्राउंड, पूसा, नई दिल्ली में आयोजित कृषि स्टार्टअप कॉन्क्लेव एवं किसान सम्मेलन 2022 में नामांकित किया गया।

डंकरहित मधुमक्खियों की नई प्रजातियां

पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश में ऑर्किड में पुष्पण

खासी मंडेरिन की शूट टिप ग्राफ्टिंग

मानव संसाधन विकास

विश्वविद्यालय में कुल कर्मचारियों की संख्या 1083 है, जिसमें 28 प्रशासनिक, 300 शिक्षण एवं 755 गैर–शिक्षण पद शामिल हैं। मुख्यालय में, प्रशासनिक पदों पर 11 कार्यपालक अधिकारी पदासीन हैं, जिन्हें 44 तकनीकी और 94 गैर–तकनीकी कर्मचारियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती है। विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों में 17 प्रशासनिक कर्मचारी, 300 शिक्षण और 617 गैर–शिक्षण कर्मचारी पदासीन हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान 6 स्थायी संकायाध्यक्ष (डीन) नवनियुक्त किए गए, और 2 प्रभारी डीन एवं 2 एमटीएस नियुक्त किए गए इसके अलावा 29 स्टाफ सदस्यों को स्थानांतरित किया गया और 27 कर्मचारी या तो सेवानिवृत्त हो गए थे या उन्होने त्यागपत्र दे दिया था या जिनका निधन हो गया था। विश्वविद्यालय के विभिन्न संघटक महाविद्यालयों में कुल 465 प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ, सम्मेलन, सेमिनार, ग्रीष्म कालीन स्कूल आदि आयोजित किए गए। संकाय सदस्यों में से, 41 को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और सेमिनार में भाग लेने के लिए, 44 को राष्ट्रीय सम्मेलन और सेमिनार में भाग लेने, 24 को कार्यशालाओं में भाग लेने और 13 संकाय सदस्यों को दीर्घकालिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए तथा 30 संकाय सदस्यों को अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया। विभिन्न प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं और अन्य कार्यक्रमों में संकाय सदस्यों द्वारा कुल 230 व्याख्यान, मुख्य भाषण और आमंत्रित वार्ताएं प्रस्तुत की गईं। विश्वविद्यालय के विभिन्न घटक महाविद्यालयों में अन्य संस्थानों के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा कुल 33 अतिथि व्याख्यान दिए गए। विश्वविद्यालय के कुल 44 संकाय सदस्यों को भी अनुसंधान और विकास कार्यों में उनकी उत्कृष्टता के लिए सम्मानित किया गया और शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधियों के क्षेत्रों में पारस्परिक सहायता कार्यक्रम के माध्यम से सहयोगात्मक संबंधों के लिए इस अवधि के दौरान प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ आठ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

भाकृअनुप द्वारा विश्वविद्यालय के लिए स्वीकृत आईडीपी–एनएएचईपी के तहत, मुख्यालय सहित विश्वविद्यालय के सात परिसरों को सौर ऊर्जा संचालित नवीकरणीय ऊर्जा परिसर में परिवर्तित किया गया है, जिससे बिजली बिल में सालाना 12–15 लाख रुपये की बचत हुई। इस परियोजना के तहत संचार कौशल से संबंधित कुल 104 वेबिनार/प्रशिक्षण आयोजित किए गए, जिनमें 29 व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, 10 तकनीकी प्रशिक्षण, 3 पर्यावरणीय स्थिरता कार्यक्रम, 2 भूतपूर्व छात्र वार्ता श्रृंखला, 4 कैरियर परामर्श सह रोजगार मेले, 8 प्रेरणात्मक वार्ताएं और सामाजिक मुद्दों पर 2 सेमिनार शामिल थे। इन कार्यक्रमों से 3,736 लाभार्थी लाभान्वित हुए जिनमें 1,750 महिलाएं थीं। आईडीपी–एनएएचईपी के तहत 6 इन्क्यूबेशन केंद्रों की स्थापना के उपरांत, विश्वविद्यालय के स्नातक पाठयक्रम के अंतिम वर्ष और प्रथम वर्ष में अध्ययन छात्रों के लिए उद्यमिता रुचि के प्रमुख क्षेत्रों में से एक रही है। प्रत्येक वर्ष छात्र विश्वविद्यालय से स्नातक डिग्री प्राप्त करने के बाद उद्यमिता को अंगीकृत कर रहे हैं। इस वर्ष (2022–23) भी विश्वविद्यालय में 2 सफल उद्यमी हैं, यानी श्री वाई नंदन सिंह बी. टेक (खाद्य प्रौद्योगिकी, और सुश्री आमीन कड्ु, बी.एससी. (सामुदायिक विज्ञान)।

विश्वविद्यालय के 10 महाविद्यालयों से कुल 62 छात्रों तथा विश्वविद्यालय के 19 संकाय सदस्यों ने प्रतिष्ठित संस्थानों में 2 सप्ताह से 3 महीने तक विदेश में प्रशिक्षण प्राप्त किया है। 11 संकायों के 59 छात्र विदेश में अभी भी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

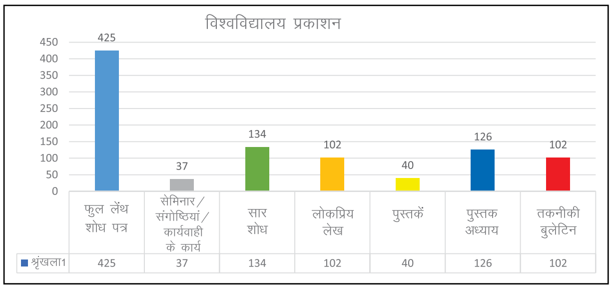

प्रमुख घटनाक्रम

मणिपुर के जैविक और स्वदेशी उत्पादों के लिए कृषि–बागवानी प्रदर्शनी के उद्घाटन कार्यक्रम में और क्रेता

सीएयू, इम्फाल का 30वां स्थापना दिवस

एवं विक्रेता बैठक में मणिपुर के माननीय मुख्यमंत्री श्री एन. बीरेन सिंह ने सहभागिता की, जिसे हप्ता कांजीबुंग, पैलेस कंपाउंड, इम्फाल में 28 से 30 अप्रैल 2023 के दौरान आयोजित किया गया था।

पर्यावरण के पुनरुत्थान एवं अनुकूल कृषि के लिए प्राकृतिक खेती पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन–एनएफ–आरईआरए 2023, को 17–19 मार्च 2023 के दौरान कृषि महाविद्यालय, इरोइसेम्बा, सीएयू, इम्फाल में आयोजित किया गया था।

श्री कामाख्या प्रसाद टासा, माननीय अध्यक्ष, एवं संसद सदस्य (राज्य सभा) ने माननीय कुलपति, सीएयू, इम्फाल डॉ. अनुपम मिश्रा और सीएयू के अन्य अधिकारियों के साथ 16 अप्रैल, 2023 को सीएयू केंद्रीय अनुसंधान फार्म, लाम्फेलपत, इम्फाल का दौरा किया।

उत्तरदायी जलीय कृषि एवं स्थायी मात्स्यिकी पारस्परिक–वार्ता (राशी–22) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मात्स्यिकी महाविद्यालय, सीएयू (आई), लेम्बुचेरा, त्रिपुरा में दिनांक 13–16 दिसंबर 2022 के दौरान आयोजित किया गया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार

पृष्ठभूमि

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की स्थापना 7 अक्तूबर 2016 को की गई थी, जिसे कृषि अनुसंधान संस्थान और महाविद्यालय, पूसा (1905) और राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा (1970) से विरासत प्राप्त हुई थी। यह विश्वविद्यालय कृषि और संबद्ध क्षेत्र में योग्य मानव संसाधनों का एक पूल सृजित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय विभिन्न कृषि–पारिस्थितिकी स्थितियों के तहत किसानों की विभिन्न श्रेणियों के लिए फसल किस्मों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने तथा खेतिहर समुदाय की बेहतर आजीविका हेतु प्रौद्योगिकियों को स्थानांतरित करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिससे देश की समग्र अर्थव्यवस्था में सुधार होगा। विश्वविद्यालय के अधिकार क्षेत्र शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा कार्यक्रम हैं, जिन्हें बिहार राज्य पर विशेष जोर देते हुए पूरे देश में विस्तारित किया गया है।

अकादमिक

विश्वविद्यालय फाउंडेशन कोर्स

दीक्षारम्भ–2023 देश में कृषि शिक्षा के क्षेत्र में यह अपनी तरह का पहला पाठ्यक्रम है जिसमें एनईपी–2020 के अनुरूप भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति, 'वाद–विवाद' और 'तर्कशास्त्र' (द्वंदवाद, औचित्य, और तार्किकता का दर्शनशास्त्र) का हवाला देते हुए गुरु–शिष्य परंपरा को पुनर्जीवित किया गया है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ईक्यू, आईक्यू, एसक्यू के सकारात्मक समावेश के माध्यम से छात्रों के समग्र विकास हेतु सुविधा प्रदान करना है जिससे उनकी बुद्धिमता विकसित हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर ध्यान केंद्रित करते हुए "आजादी का अमृत महोत्सव" में 'विकसित भारत' की ओर एक कदम और आगे बढ़ाया गया। इस कार्यक्रम के तहत संचालित की गई गतिविधियों में विभिन्न विषय वस्तुओं को शामिल किया गया, जैसे कि संगीत एवं गीत गायन, कला एवं शिल्प, नृत्य, साहित्य, नाटक और रंगमंच, खेल, योग और सॉफ्ट स्किल्स।

डीआरपीसीएयू का तीसरा दीक्षांत समारोहः इस समारोह का आयोजन 28 फरवरी, 2023 को गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर, डीआरपीसीएयू, पूसा में किया गया था। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि, भारत सरकार के तत्कालीन माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर थे। इस सुअवसर पर श्री कैलाश चौधरी, माननीय राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, (भाकृअनुप) भारत सरकार, उपस्थित थे। विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों यानी 242 स्नातक, 371 स्नातकोत्तर और 22 पीएच.डी. छात्रों को डिग्रियां तथा विश्वविद्यालय के टॉपर्स को स्वर्ण पदक के साथ डिग्री प्रदान की गई। इस शुभ दिन पर शैक्षणिक परिसर में "ध्वजारोहण समारोह" भी आयोजित किया गया।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा

विश्वविद्यालय ने प्राकृतिक कृषि को बढ़ावा देने की पहल की है और उसके लिए पाठ्यक्रम तैयार किया है जिसे भाकृअनुप के संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की सहायता से देशभर में लागू किया जाना है।

बुनियादी ढांचे का विकास

तिरंगा पार्क के शैक्षणिक परिसर में 106 फीट ऊंचे स्टील के खंबे पर राष्ट्रीय ध्वज स्थापित किया गया, जो दूर से दिखाई देता है और राष्ट्रीय गौरव और देशभक्ति की भावना को परिलक्षित करता है।

आरपीसीएयू में लहराता राष्ट्रीय ध्वज

अनुसंधान

13वीं अनुसंधान परिषद बैठक (रबी-2022): इस बैठक का आयोजन अनुसंधान निदेशालय द्वारा 21 से 23 नवंबर 2022 के दौरान किया गया। बैठक की अध्यक्षता कुलपति डॉ. पी. एस. पांडे ने विषय विशेषज्ञों की गरिमामय उपस्थिति में की।

बाह्य विशेषज्ञ:

- डॉ. ए. आर. पाठक, पूर्व कुलपति, *नवसारी* कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात
- डॉ. के. के. सत्पथी, पूर्व निदेशक, भाकृअनुप–निरजाफ्ट
- डॉ. एम. बी चेट्टी, पूर्व कुलपति, यूएएस, धारवाड़

विशेष आमंत्रित:

- डॉ. मदन पाल, सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, भाकृअनुप–आईएआरआई, नई दिल्ली
- डॉ. पी. के. सिंह, निदेशक अनुसंधान, बीएयू, सबौर

परिणाम:

- 17 बाह्य सहायता प्राप्त वित्तपोषित, 32 संस्थान द्वारा वित्तपोषित और 26 भाकृअनुप–एआईसीआरपी परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- गन्ने की दो किस्मों, राजेंद्र गन्ना–6 और राजेंद्र गन्ना–7 के साथ–साथ दो प्रौद्योगिकियों ''हल्दी फसल कटाई यंत्र'' और ''हल्दी फसल बुआई यंत्र'' के प्रस्तावों पर चर्चा की गई।

14वीं अनुसंधान परिषद की बैठक (खरीफ-2023) : निदेशालय द्वारा इस बैठक का आयोजन 3 से 5 जुलाई 2023 के दौरान किया गया। बैठक की अध्यक्षता कुलपति डॉ. पी. एस. पांडे ने प्रतिष्ठित विशेषज्ञों की उपस्थिति में की।

आमंत्रित विशेषज्ञ:

- डॉ. ए. आर. पाठक, पूर्व कुलपति, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, गुजरात
- डॉ. एम. बी. चेट्टी, कुलपति, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा एवं पूर्व कुलपति, यूएएस, धारवाड़
- डॉ. मीनू श्रीवास्तव, डीन, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, एमपीयूएटी, उदयपुर, राजस्थान
- डॉ. दिलीप कुमार, पूर्व निदेशक, सीआईएफई, मुंबई सलाहकार, बीएएसयू, पटना
- डॉ. बिकास दास, निदेशक, एनआरसी–लीची, मुजफ्फरपुर, बिहार

परिणाम:

- 11 बाह्य सहायता प्राप्त वित्तपोषित, 17 विश्वविद्यालय द्वारा वित्तपोषित, 17 भाकृअनुप–एआईसीआरपी परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण
- बिहार के जोन–1 के लिए जेडआरईएसी की प्रस्तुति
- एकल प्रौद्योगिकी–कचालू बुआई यंत्र का विमोचन किया गया
- 2023 में आठ उद्योग–अकादमिक इंटरफेस समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए।

भ्रूण स्थानांतरण प्रौद्योगिकी: दाता गाय का पहला भ्रूण 28 दिसंबर 2021 को निक्षालित किया गया और 21 कि.ग्रा. वजन के साथ स्वस्थ ईटी मादा बछड़े का जन्म 8 जनवरी 2023 को राष्ट्रीय गोकुल मिशन परियोजना के तहत हुआ। इस बछड़े की जैविक माँ 'साहीवाल टी–193' है और सरोगेट माँ 'गाय संख्या 62/14, है। जलवायु अनुकूल कृषि (सीआरए) परियोजना को 6,899 हैक्टर भूमि पर संचालित किया गया, जिससे 17,000 से अधिक किसानों को लाभ हुआ।

विस्तार

केवीके प्रशासन भवन का उद्घाटन

- केवीके–तुर्की, लादा, सुखेत एवं नरकटियागंज के प्रशासनिक भवन एवं किसान छात्रावास का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री नरेंद्र सिंह तोमर, तत्कालीन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री कैलाश चौधरी, माननीय कृषि राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण, भारत सरकार और डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) और महानिदेशक (भाकृअनुप) नई दिल्ली,

डॉ. पी. एस. पांडे, कुलपति, डीआरपीसीएयू, पूसा, डॉ. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा, कुलाधिपति, डीआरपीसीएयू, पूसा; श्री अजय निशाद, संसद सदस्य, मुजफ्फरपुर, श्रीमती वीना देवी, संसद सदस्य, वैशाली और श्री प्रिंस राज, संसद सदस्य, समस्तीपुर द्वारा किया गया।

- माननीय गणमान्य व्यक्तियों द्वारा संग्रहालय का भी उद्घाटन किया गया जो 200 से अधिक वर्षों से पूसा के समृद्ध इतिहास को दर्शाता है।

किसान मेला-2023

- "किसानों की समृद्धि के लिए प्राकृतिक खेती और पौषणिक–अनाज की खेती" पर डीआरपीसीएयू, पूसा परिसर में 23 से 25 फरवरी 2023 के दौरान विश्वविद्यालय किसान मेला आयोजित किया गया।
- इस किसान मेले में बिहार के विभिन्न हिस्सों से 7,500 से अधिक किसानों ने भाग लिया। सिक्किम, ओडिशा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों के पांच भाकृअनुप संस्थानों ने निजी संगठनों के साथ भाग लिया और किसानों, युवाओं एवं स्कूली विद्यार्थियों को शिक्षित करने के लिए अपनी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया।
- पिछले एक वर्ष के दौरान, डीआरपीसीएयू बीज इकाई द्वारा लगभग 8796.76 क्विंटल गुणवत्तापूर्ण बीजोत्पादन किया गया।
- आउटरीच कार्यक्रमः 77,518 लाभार्थियों के लिए कुल 2,685 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।
- कौशल विकासः दो भाकृअनुप प्रायोजित शीतकालीन स्कूलों का आयोजन किया गया।
- कौशल विकास कार्यक्रम में लगभग 470 अस्थायी जनशक्ति को प्रशिक्षण दिया गया।

महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

पेटेंट की मंजूरी

1 हस्तचालित उन्नत चक्की (2022)

2 भिंडी फसल कटाई के लिए कलेक्शन हॉपर के साथ हस्तचालित उपकरण (2022)

3 दानों की छिलका उतराई और छीलन के लिए विद्युत–चालित उपकरण (2023)

4 मशरूम सब्स्ट्रेट पास्चुराइजर (2023)

5 राजेंद्र पूसा मशरूम समोसा (2023)

6 बहु फसल बीज बुआई यंत्र (2023)

7 ऊर्जायुक्त पौष्टिक भोजन जिसमें संतुलित पोषण संघटन और उसे तैयार करने की प्रक्रिया–2023.

भौगोलिक संकेतक (जी आई)

पश्चिमी चम्पारण (बिहार) के 'मर्चा धान' को भौगोलिक संकेतक अर्थात जियोग्राफिकल इंडिकेशन का दर्जा प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय ने जिला प्रशासन, पश्चिम चम्पारण (बिहार) के समन्वय में 'मर्चा धान' के लिए भौगोलिक संकेतक का दर्जा प्राप्त करने में मर्चा धान उत्पादक प्रगतिशील समूह को सुविधा प्रदान की।

विश्वविद्यालय स्तरीय रैंकिंग/पुरस्कार

- सभी सरकारी सामान्य विश्वविद्यालयों के बीच एमडीआरए–इंडिया टुडे सर्वेक्षण 2023 में 10वां स्थान।
- कृषि और संबद्ध क्षेत्र में शीर्ष 40 विश्वविद्यालयों की इंडिया रैंकिंग 2023 में एनआईआरएफ द्वारा 33वां स्थान दिया गया।
- मशरूम में उत्कृष्ट योगदान के लिए उत्कृष्टता प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

छात्र उपलब्धियां

डीआरपीसीएयू के छात्रों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्रतियोगिताओं में सफलता हासिल करने के साथ खेल और शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए कई अध्येतावृत्तियां प्राप्त की हैं।

- 123 छात्र भाकृअनुप नेट/सीएसआईआर नेट और जेआरएफ में उत्तीर्ण हुए।
- भाकृअनुप–ए आई ई ई ई (पीजी)–2022 मात्स्यिकी; श्री विनीत आनंद–प्रथम रैंक; सुश्री यशवी–तीसरी रैंक।
- सुश्री अंशिका राय ने इंजीनियरिंग (गेट–2023) में स्नातक अभिक्षमता परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अंशिका राय

- सुश्री अश्विता ए.एस., एम.एससी. (कृषि), कृषि अर्थशास्त्र ने सीसीएस एचएयू, हिसार, हरियाणा में 20–24 फरवरी 2023 के दौरान आयोजित 21वीं अखिल भारतीय कृषि विश्वविद्यालय खेल और प्रतियोगिता 2022–23 में रजत एवं कांस्य पदक जीता।

अश्विता ए.स गौड़ा

- सुश्री कश्वी काजल, मात्स्यिकी विज्ञान स्नातक (2019–23) को यूएचआई–एसएएमएस, ओबन (स्कॉटलैंड, यूके), यूनिवर्सिटी ऑफ क्रीट (ग्रीस) और यूनिवर्सिटी ऑफ नैनटेस (फ्रांस) द्वारा वर्ष 2023–25 के लिए एक प्रतिष्ठित अध्येतावृत्ति ''इरेस्मस मनडस ज्वाइंट मास्टर इन एक्वाकल्चर, इन्वॉयरमेंट एंड सोसायटी'' प्रदान की गई।

कश्वी काजल

प्लेसमेंट रिकॉर्ड

एसएबी एवं आरएम, आरपीसीएयू : एमबीए कार्यक्रम में 100 प्रतिशत प्लेसमेंट दर्ज किया गया। एसएबीआरएम ने एमबीए ग्रामीण प्रबंधन और एमबीए कृषि व्यवसाय कार्यक्रम (बैच–2021–23) के लिए क्रमशः 9.50 लाख रुपये प्रति वर्ष और 8.30 लाख रुपये प्रति वर्ष के साथ छात्राओं ने उच्चतम सीटीसी के साथ 100 प्रतिशत प्लेसमेंट प्राप्त किया।

प्लेसमेंट रिकॉर्ड	
औसत पैकेज	4.99 लाख रुपये
सर्वाधिक पैकेज	9.50 लाख रुपये
न्यूनतम पैकेज	3.00 लाख रुपये
कंपनियों की संख्या	22
प्लेसमेंट के लिए इच्छुक कंपनियों की कुल संख्या	31
प्रतीक्षा सूची में छात्रों की संख्या	00
छात्रों की संख्या	94

संकाय उपलब्धि

- डीआरपीसीएयू के विभिन्न पदों यानी सहायक प्रोफेसर, संयुक्त प्रोफेसर और प्रोफेसर के 96 कर्मियों की सीएएस पदोन्नति।
- डॉ. बिष्णु देव प्रसाद, सहायक प्रोफेसर, कृषि जैव प्रौद्योगिकी एवं आणविक जीवविज्ञान विभाग, सीबीएस एवं एच, पूसा को जॉन इन्नेस सेंटा (जे आई सी), न्यूयॉर्क, जो पादप विज्ञान में एक अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय उद्यमशीलता केंद्र है, में जीन एडिटिंग के क्षेत्र में हाइ–एंड अनुसंधान हेतु वर्ष 2023–24 के लिए गौरवमयी एसईआरबी इंटरनेशनल रिसर्च एक्सपीरिएंस (एस आई आर ई) के लिए चयनित किया गया।

डा. बिष्णु देव प्रसाद

- श्री विकास कुमार राय, सहायक प्रोफेसर, मृदा विज्ञान को मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, ईस्ट लांसिंग, एमआई 48824, यूएसए में हाइड्रोलॉजी एवं कृषि प्रयोगशाला में सुदूर संवेदन में पीएच.डी. करने के लिए भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित नेताजी सुभाष भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति 2022–23 के लिए चयनित किया गया है।

श्री विकास कुमार राय

अन्य उपलब्धियां

संगोष्ठी/सम्मेलन/प्रशिक्षण

- भाकृअनुप प्रायोजित शीतकालीन स्कूल "प्राथमिक और द्वितीयक उपज (उपोत्पाद) में मूल्यवर्धन; द्वितीयक कृषि के माध्यम से ग्रामीण भारत में कृषि उद्यमों का निर्माण" को 10–30 नवंबर 2022 के दौरान आयोजित किया गया।
- कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान द्वारा भाकृअनुप प्रायोजित शीतकालीन स्कूल ''कृषि उद्यमिता

के लिए नवोन्मेषी दृष्टिकोणः कार्यान्वयन के लिए विचार–विमर्श'' का 7 से 27 जनवरी 2023 के दौरान आयोजन किया गया।

- ''जलवायु परिवर्तन और पादप रोग'' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और इंडियन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी की क्षेत्रीय बैठक (पूर्वी क्षेत्र) 23–24 जनवरी 2023 के दौरान ऑफलाइन/ ऑनलाइन माध्यम में आयोजित की गई, जिसमें 100 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

अनुसंधान प्रकाशन (एनएएएस रेटिंग > 15)

- नैन्सी ए एकार्ड्ट, एलिजाबेथ ए आयन्सवर्थ, राजीव एन बहुगुणा, मार्टिन आर ब्रॉडली, वोल्फगैंग बुश, निकोलस कार्पिटा, ग्रैनब्रियल कैस्ट्रिलो, जोआन चोरी ली आर देहान, कार्लोस एम डुआर्टे, अमीया एंड्रयू डीबी लीकी, जेम्स सी लियाओ, मॉरीन सी मैककेन, डैमरीज ए ओडेनी, जे डेमियोएन प्लैटन, इस्माइल रब्बी, एलेन यंगसू रिम, पामेला सी रोनाल्डो, डेविड ई साल्ट, अलेक्जेंड्रा एम शिगेनागा, एर्टाओ वांग, मार्निन वोल्फ, 07/10/2022 ''जलवायु परिवर्तन चुनौतियाँ, पादपः विज्ञान समाधान'' *प्लांट सेल* (एन ए ए एस रेटिंग 18.79)।

सीवीआरसी द्वारा गन्ना किस्म राजेंद्र गन्ना-5 का विमोचन

राजेंद्र गन्ना–5 (सीओपी 11438) को केंद्रीय फसल मानक एवं किस्म विमोचन बीज उपसमिति (सी वी आर सी) द्वारा विमोचित एवं अधिसूचित किया गया। यह एक अगेती परिपक्वता वाली किस्म है जिसकी औसत गन्ना उपज चार राज्यों अर्थात उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं असोम में 6 स्थानों पर 79.38 टन/हैक्टर पाई गई। इसमें औसत सुक्रोज 17.90% है।

13वीं एवं 14वीं अनुसंधान परिषद बैठक के दौरान किस्मों/प्रौद्योगिकी का विमोचन

किस्में

1. राजेंद्र गन्ना–6 (सीओपी 15437)
   परिपक्वता समूहः अगेती
   औसत उपजः 105.00 टन प्रति हैक्टर
   सुक्रोजः 17.90%

2. राजेंद्र गन्ना–7 (सीओपी 022)
   परिपक्वता समूहः मध्य पछेती
   औसत उपजः 95.00 टन प्रति हैक्टर
   सुक्रोजः 17.62%

3. राजेन्द्र चना–2 (डीसी 17–1111)

पैतृकता	:	(आईसीसी 4958 x आईसीसीवी 93954) x (आईसीसीवी 96970 x आईसीसीवी 97105)
अवधि	:	110–115 दिन
मौसम	:	*रबी* (बुआई समयः 15 अक्तूबर – 30 नवंबर)
औसत उपज	:	2,200–2,500 कि ग्रा. प्रति हैक्टर
प्रोटीन तत्व	:	18.95
रोग अभिक्रिया	:	मुरझान रोग से प्रतिरोधी से लेकर मध्यम प्रतिरोधी
नाशीजीव अभिक्रिया	:	सामान्य संरक्षण स्थिति के तहत फलीबेधक नाशीजीव के आर्थिक थ्रेसहोल्ड स्तर संक्रमण से कम।

4. राजेन्द्र चना–3 (डीएमएचसी 18–1664)

पैतृकता	:	आईसीसी 4958 टीएम x जेजी 130
अवधि	:	130–135 दिन
मौसम	:	*रबी* (बुआई समयः 15 अक्तूबर – 30 नवंबर)
औसत उपज	:	2,300–2,600 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर, पादप ऊंचाईः 80–103.2 सें.मी.
विशिष्टता	:	मशीन कटाई हेतु उपयुक्त
प्रोटीन तत्व	:	18.65
रोग अभिक्रिया	:	मुरझान एवं शुष्क जड़ सड़न रोग के विरूद्ध प्रतिरोधी से लेकर मध्यम प्रतिरोधी
नाशीजीव अभिक्रिया	:	सामान्य संरक्षण स्थिति के तहत फलीबेधक नाशीजीव के आर्थिक थ्रेसहोल्ड स्तर के संक्रमण से कम।

केवीके, पिपराकोठी को पुरस्कार एवं सम्मान

क्र.सं.	विजेता का नाम	पुरस्कार का नाम	पुरस्कार का स्रोत
1.	केवीके, पिपराकोठी	सर्वश्रेष्ठ केवीके पुरस्कार	डीआरपीसीएयू, पूसा, गणतंत्र दिवस 2023 (26 जनवरी 2023) के अवसर पर कुलपति द्वारा।
2.	केवीके, पिपराकोठी	फंड मोबिलाइजेशन श्रेणी के तहत केवीके पुरस्कार	रांची, झारखंड में 8-10 जुलाई 2023 के दौरान जोन–4 के कृषि विज्ञान केंद्रों की 6वीं वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला।

रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरएलबीसीएयू), झाँसी

रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2014 में राष्ट्रीय महत्व के संस्थान के रूप में की गई थी, जिसका उदेश्य विशेष रूप से बुंदेलखण्ड क्षेत्र और सामान्य रूप से संपूर्ण राष्ट्र के समग्र कृषि विकास पर केंद्रित है। कृषि शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार का समग्र मॉडल युवा मेधावी छात्रों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को पोषित करने एवं निखारने के लिए नए दृष्टिकोण प्रदान करता है। आरएलबीसीएयू का मुख्य परिसर झाँसी में 300 एकड़ भूमि में फैला हुआ है, जिसमें दो महाविद्यालय हैं, यानी कृषि महाविद्यालय और बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय और मत्स्य पालन महाविद्यालय, दतिया, मध्य प्रदेश में 187.5 एकड़ फार्म के साथ दूसरे परिसर में स्थित हैं। बागवानी महाविद्यालय, मध्य प्रदेश के मुरैना में 297 एकड़ भूमि पर विकसित किया जा रहा है।

इतनी कम अवधि में विश्वविद्यालय ने नवोन्नत बुनियादी ढांचे के विकास सहित अकादमिक, अनुसंधान और विस्तार शिक्षा में अपनी अधिदेशित गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। विश्वविद्यालय ने दक्षता, बुनियादी ढांचा, अनुदेश सामग्रियों, प्रयोगशालाओं और मानव संसाधनों में सुधार करके निरंतर विकास और गुणवत्ता परिणामों को बढ़ावा देने के लिए कई पहल की हैं।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

पाठ्यचर्या गतिविधियां

आरएलबीसीएयू को कृषि और संबद्ध विषयों में शिक्षा प्रदान करने, अनुसंधान करने और कार्यान्वयन योग्य प्रौद्योगिकियों का प्रसार करने का अभूतपूर्व गौरव प्राप्त है। विश्वविद्यालय ने वर्तमान शिक्षा की चुनौतियों का सामना करने के लिए स्वयं को सफलतापूर्वक समर्थवान बनाया है–ज्ञान सृजन, प्रसंस्करण और प्रसार की एक संपूर्ण प्रणाली का सृजन किया है। विश्वविद्यालय पूर्व–स्नातक स्तर पर कार्यक्रमों की एक श्रृंखला प्रदान करता है, यथा बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि, बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी, बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी, बी.एससी. (ऑनर्स) प्राकृतिक खेती, बी.वी.एससी एवं ए.एच. और बी.एससी. (ऑनर्स) मात्स्यिकी और स्नातकोत्तर स्तर पर कृषि विज्ञान, कीट विज्ञान, आनुवंशिकी और पादप प्रजनन, पादप रोग विज्ञान, मृदा विज्ञान, फल विज्ञान, सब्जी विज्ञान, और वनवर्धन एवं कृषि वानिकी में एम.एससी. पाठ्यक्रम। इनके अलावा, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन, सस्य विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, फल विज्ञान, वनवर्धन एवं कृषिवानिकी में 2–5 सीटों के लिए तीन नए स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और पांच पीएच.डी. कोर्स 2 सीटों की प्रवेश क्षमता के साथ कृषि विस्तार शिक्षा, पुष्पकृषि एवं भूदृश्य, वन उत्पाद उपयोग में शैक्षणिक सत्र 2022–23 से शुरु किये गए हैं।

सभी यूजी/पीजी कार्यक्रमों में प्रवेश भारत सरकार की आरक्षण नीति के सांविधिक ढांचे के भीतर अत्यधिक प्रतिस्पर्धी अखिल भारतीय प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से यूजी/पीजी छात्रों की न्यूनतम क्षयदर के साथ दिया जाता है।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान, विश्वविद्यालय ने शिक्षण और प्रशिक्षण के लिए एक डीबीटी–समर्थित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.एससी. कृषि जैव प्रौद्योगिकी) को प्रारंभ किया। दो घटक महाविद्यालयों अर्थात कृषि महाविद्यालय और बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय को भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड (एनएईएबी) द्वारा प्रत्यायित किया गया है। स्नातक और स्नातकोत्तर के सभी अंतिम वर्ष के छात्रों ने अपनी डिग्री आवश्यकताओं को निर्धारित समय–सीमा के भीतर पूरा किया है।

छात्र प्रोफाइल

स्नातक पाठ्यक्रम (2022–23)

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (2022–23)

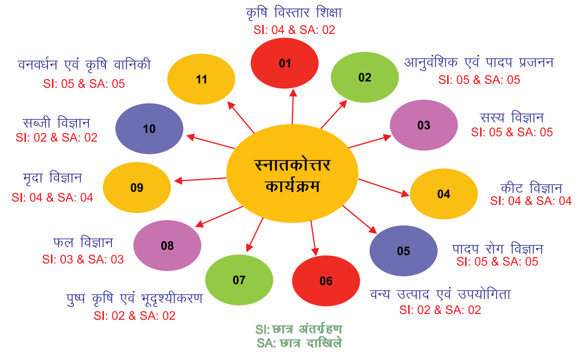

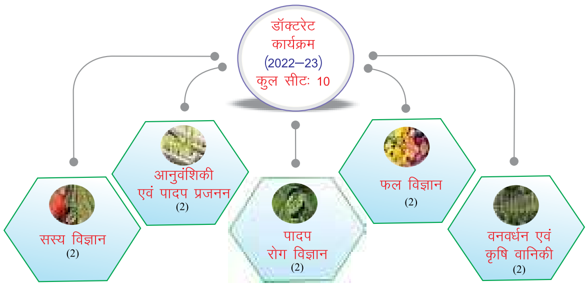

डॉक्टरेट कार्यक्रम (2022–23)

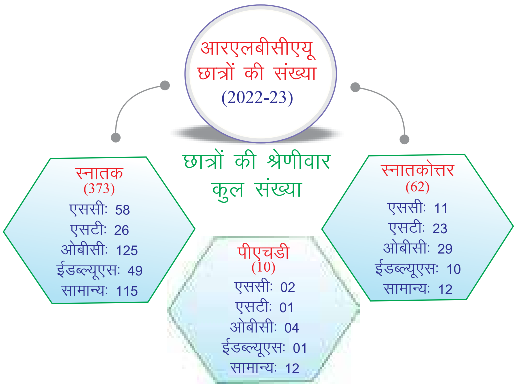

विश्वविद्यालय में छात्रों की श्रेणीवार कुल संख्या

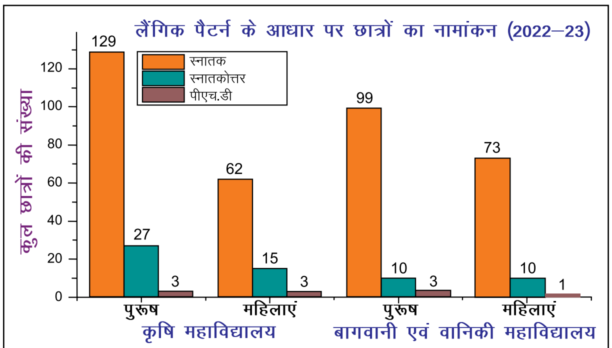

छात्रों का प्लेसमेंट

जेआरएफ/एसआरएफ/नेट(भाकृअनुप/आईसीएमआर/यूजीसी/सीएसआईआर/डीबीटी)/एआरएस के लिए 2022–23 में चयनित छात्रों की संख्या

जेआरएफ	एसआरएफ	नेट	एआरएस	अन्य	टिप्पणियां
10	01	13	–	5	–

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियां

विश्वविद्यालय सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों और छात्रों एवं संकाय सदस्यों के समग्र विकास के लिए एक बहुत ही स्वास्थ्यकारी और सुसंगत वातावरण प्रदान करता है। संकाय सदस्यों और छात्रों ने स्वच्छ भारत अभियान, राष्ट्रीय समाज सेवा, राष्ट्रीय त्यौहार, खेल, हिंदी दिवस (हिंदी पखवाड़ा) और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लिया। विश्वविद्यालय ने लगभग 25 राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाए, जैसे कि गांधी जयंती, विश्व वन्यजीव सप्ताह, विश्व खाद्य दिवस, राष्ट्रीय एकता दिवस, रानी लक्ष्मी बाई जयंती, कृषि शिक्षा दिवस, विश्व मृदा दिवस, किसान दिवस, राष्ट्रीय युवा दिवस (स्वामी विवेकानन्द जन्मदिन), नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती (पराक्रम दिवस), गणतंत्र दिवस, शहीद दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, आरएलबीसीएयू का स्थापना दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, विश्व वानिकी दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, वन महोत्सव, स्वतंत्रता दिवस, राष्ट्रीय खेल दिवस, शिक्षकों के महत्व के स्मरण में शिक्षक दिवस और राष्ट्र नायकों का स्मरण, गर्व एवं गौरवमयी पलों का स्मरण दिवस।

संकाय और छात्रों की टीम को राष्ट्रीय स्तरीय हैकथॉन 3.0 में स्पीड ब्रीडिंग "कृतज्ञ" और स्मार्ट झाँसी राइज

इन्क्यूबेशन सेंटर–कृषि उद्यमिता के विकास के लिए उनके नवाचारों और दृष्टिकोणों के लिए।

शैक्षणिक कार्यक्रमों का प्रत्यायन

प्रोफेसर जे. एस. संधु, पूर्व महानिदेशक (फसल विज्ञान) के नेतृत्व में सहकर्मी समीक्षा (पीआर) टीम के सदस्यों ने 23–25 मई 2023 के दौरान विश्वविद्यालय मुख्यालय, घटक महाविद्यालयों, विभागों, अनुसंधान फार्मों और विभिन्न उपलब्ध सुविधा–केंद्रों एवं इकाइयों का दौरा किया। अपने 3–दिवसीय प्रवास के दौरान, पीआर टीम ने सांविधिक अधिकारियों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, छात्रों के साथ–साथ फार्म के श्रमिकों के साथ बातचीत की तथा उनसे प्रतिक्रिया प्राप्त की। पीआर टीम सदस्य उपलब्ध संसाधनों और संकाय सदस्यों की सक्षमता से काफी संतुष्ट हुए और उन्होंने कृषि महाविद्यालय में पादप रोग विज्ञान, मृदा विज्ञान और कीट विज्ञान ज्ञानानुशासनों के लिए तथा बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय में फल विज्ञान में एम.एससी. कार्यक्रम के लिए प्रत्यायन की संस्तुति की।

अनुसंधान गतिविधियां

कार्यान्वयन हेतु प्रौद्योगिकियां

- *खरीफ* में मक्का एवं ज्वार फसलों को उगाने हेतु मेड़ एवं कूंड़ रोपण प्रणाली व्यावहारिक रूप से लाभप्रद विधि है। यह विधि बेहतर नमी धारणीयता को सुनिश्चित करती है और *स्वस्थाने* वर्षाजल संचय प्रणालियों के तहत तुलनात्मक रूप से ज्यादा मात्रा में जल की बचत करती है।
- मक्का–सरसों–सेस्बानिया फसल प्रणाली, उत्पादकता का अधिकतमीकरण करती है। इस प्रणाली के तहत परती भूमि–चना/गेहूं/सरसों की प्रचलित फसल प्रणाली की तुलना में अधिक शुद्ध लाभ प्राप्त किया गया।
- एजोक्सीस्ट्रोबिन 23 एससी का 0.5 मि.ली. प्रति लीटर की दर से दो बार पर्णिल छिड़कावों से मूंग फसल में रोग प्रकोप को कम करके *कोरिनेस्पोरा* नाशीजीव को प्रभावकारी रूप से नियंत्रित किया गया।

- मूंग फसल में सामान्य जीवाण्विक अंगमारी रोग का प्रबंधः *बेसिलस सुबटिलिस* या *स्यूडोमोनस फ्ल्यूरोसेंस* का 4 ग्राम प्रति लीटर जल की दर से दो छिड़कावों को प्रभावकारी जीवाणुनाशक के रूप में पहचाना गया जिसने स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट 90% w/w + टेट्रासाइक्लिन 10% w/w को प्रतिस्थापित किया।
- मूंगफली फसल में अगेती पत्ती धब्बा और पत्ती झुलसा रोग का प्रबंधनः मूंगफली फसल में अगेती पत्ती धब्बा रोग को कम करने के लिए एजोक्सीस्ट्रोबिन और पत्ती झुलसा रोग को कम करने के लिए हेक्साकोनाजोल के दो छिड़काव किए गए।
- मक्का फसल में फॉल आर्मी वर्म नाशीजीव के प्रभावी प्रबंधन के लिए 15 दिनों के अंतराल पर या जब लार्वा की समष्टि ईटीएल को पार कर जाती है, तब एम्मामेक्टिन बेंजोएट 5% एसजी का 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी के दो छिड़कावों की सिफारिश की जाती है।
- काबुली चना फसल में *हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा* के आपतन एवं प्रकोप को प्रभावकारी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है, अगर काबुली चना को गेंदे के साथ 5:1 पंक्ति अनुपात में अंतर फसल के रूप में बोया जाए।
- सरसों फसल में कवक रोगों, विशेष रूप से अल्टरनेरिया अंगमारी, सफेद रतुआ एवं चूर्णिल फफूंद को टेबुकोनाजोल 50% + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन 25% डब्ल्यूजी/0.1% के टैंक मिश्रित अनुप्रयोग द्वारा प्रभावकारी रूप से कम किया जा सकता है।

- अमरूद फसल में उच्च सघन रोपण के तहत, अधिक उपज और उच्च टीएसएस तत्व के साथ सर्वोत्तम फल गुणवत्ता के लिए किस्म एल–49 में 25% प्ररोह की छंटाई करने की सिफारिश की जाती है।
- अफ्रीकी गेंदा किस्म में पंजाब गेंदा–1 को बुंदेलखण्ड क्षेत्र में सर्वाधिक पुष्प संख्या प्रति पादप और अधिकतम पुष्प उपज के साथ व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त पाया गया है।
- हल्दी किस्म एनडीएच–98 को बुंदेलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत अधिकतम उपज वाली व्यावसायिक खेती के लिए संस्तुत किया जाता है।

विस्तार गतिविधियाँ

प्रौद्योगिकी मूल्यांकन और उन्नयन

- विश्वविद्यालय ने किसानों के लिए मूंगफली, उड़द, वायुयीव धान और टमाटर तथा संकर मक्का फसलों के लिए कृषि विधियों का एक पैकेज विकसित किया जिसे बुंदेलखण्ड क्षेत्र में इन फसलों पर वैधीकृत किया गया।
- जिमीकंद और श्रीअन्न पर प्रौद्योगिकी के उन्नयन व परिष्करण का कार्य शुरु किया गया।
- आशाजनक फलों, सब्जियों और कृषि वानिकी प्रजातियों, पशु स्वास्थ्य प्रबंधन विधियों, मिश्रित मछली पालन, और मधुमक्खी पालन एवं मशरूम की खेती जैसी आय–सृजन वाली गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया।

- विश्वविद्यालय ने प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण और उपयोग हेतु कृषि एडवाइजरी के प्रसार के लिए एफपीओ–इंटरफेस तथा स्थानीय समाचार पत्रों, आईसीटी आदि को अंगीकृत किया।

प्रौद्योगिकी प्रसार-अग्रपंक्ति प्रदर्शन

रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान, 590 हैक्टर क्षेत्र को शामिल करते हुए कुल 1,515 एफएलडी आयोजित किए गए, जिससे बुंदेलखण्ड क्षेत्र के 10,000 से अधिक किसान लाभान्वित हुए। एफएलडी संचालित करने का उद्देश्य धान, गेहूं, मक्का, उड़द, चना, तिल, मूंगफली, सरसों, टमाटर, आलू, भिंडी, बैंगन, ड्रैगन फ्रूट, पपीता, अंजीर, स्ट्रॉबेरी आदि जैसी फसलों के लिए हाल ही में विकसित उत्पादन प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करना था।

इसके अलावा, एस सी एस पी परियोजनाओं के तहत झाँसी और ललितपुर जिलों के 111 किसानों को स्प्रेयर जैसे कृषि उपकरण वितरित किए गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा 17 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये जिससे एक हजार से अधिक प्रशिक्षणार्थी सीधे लाभान्वित हुए। इनमें 352 ग्रामीण महिलाएं और 428 युवा थे। 17 प्रशिक्षण कार्यक्रमों में से, 6 कार्यक्रम खेत में उगाई जाने वाली फसलों के उत्पादन से संबंधित थे, जबकि अन्य औषधीय फसलों की खेती, कृषि वानिकी, बागवानी, मधुमक्खी पालन, खुम्ब की खेती, बकरी पालन आदि से संबंधित थे। खेत में उगाई जाने वाली फसलों में, बुंदेलखण्ड

क्षेत्र में उत्पादन क्षमता को देखते हुए, दलहन एवं तिलहन फसलों पर मुख्य जोर दिया गया। दलहन एवं तिलहनों के वैज्ञानिक उत्पादन पर कुल 150 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया।

कृषि-परामर्श का प्रसार

किसानों के लाभार्थ, विश्वविद्यालय ने स्थानीय प्रिंट मीडिया के माध्यम से किसानों को नियमित रूप से कृषि परामर्श/सलाह उपलब्ध करवाई। एनआरएम (61), फसल विज्ञान (52), पशु विज्ञान (21), बागवानी (22), फल विज्ञान (23), वानिकी (22), सामाजिक विज्ञान (28), सब्जी (31) और फल (18) के क्षेत्र में कुल 278 कृषि सलाह 21 समाचार पत्रों में प्रकाशित किए गए।

कार्यशालाएँ और हितधारकों की सहभागिता

बुंदेलखण्ड क्षेत्र में अनाजों की निर्यात क्षमता को मजबूत करने पर भाकृअनुप–आई आई डब्ल्यू बी आर, करनाल के सहयोग से आरएलबीसीएयू; एसएडब्ल्यूबीए आर, करनाल; और एपीडा, नई दिल्ली में 10 दिसंबर 2022 को कार्यशाला आयोजित की गई। बुंदेलखण्ड क्षेत्र के 100 से अधिक किसानों के बीच 17 अक्टूबर 2022 को किसान सम्मान निधि कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया।

भारतीय एग्रो इकोनॉमिक रिसर्च सेंटर (बीएईआरसी), नई दिल्ली और आरएलबीसीएयू, झाँसी के संयुक्त तत्वावधान में ''भारतीय कृषि–चुनौतियाँ और अवसर'' पर 14 से 15 जनवरी 2023 के दौरान दो–दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जहाँ 50 से अधिक प्रतिभागियों द्वारा भारतीय कृषि से सम्बंधित तथा संभावनाओं पर चर्चा की गई।

सेमिनार, कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम

मानव संसाधन विकास (एचआरडी) के हिस्से के रूप में, पिछले वर्ष में बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के समर्पित संकाय सदस्यों ने देशभर में और विश्वविद्यालय में आयोजित कई सेमिनारों, संगोष्ठियों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिन्हें उनके कौशल और ज्ञान को बढ़ाने के लिए आयोजित किया गया था। यह सामूहिक सहभागिता अकादमिक उत्कृष्टता के प्रति विश्वविद्यालय के अटूट समर्पण को रेखांकित करती है और यह सुनिश्चित करती है कि संकाय सदस्य अपने संबंधित क्षेत्रों के प्रति सजग रहते हैं और अपने शिक्षण एवं अनुसंधान प्रयासों को समृद्ध करते रहते हैं।

सेमिनार/संगोष्ठी	कार्यशालाएं	प्रशिक्षण	पुरस्कार
32	29	28	12

क्षमता निर्माण कार्यक्रम/प्रशिक्षण

प्रतिभागियों को आधुनिक भौतिक–आणविक युक्तियों की महत्ता तथा फसल सुधार कार्यक्रमों में उनकी प्रासंगिकता के बारे में जानकारी प्रदान करने तथा कृषि सहित पादप विज्ञान में उन्हें पीजी/पीएच.डी. डिग्री कार्यक्रम में सहायता

विश्वविद्यालय प्रकाशन

शोध पत्र	लोकप्रिय लेख	पुस्तकें	पुस्तक अध्याय	तकनीकी बुलेटिन	प्रैक्टिकल एवं अध्ययन नियमावलियां/पम्फलेट
60	37	10	52	25	32

प्रदान करने के उद्देश्य से, ''फसल सुधार के लिए कार्यिकी एवं जैव–आणविक तकनीकों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण'' पर 3 से 12 जुलाई 2023 के दौरान एक 10 दिवसीय हाई–एंड कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसे डीएसटी–एसईआरबी, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया था।

प्रमुख कार्यक्रम/आउटरीच कार्यक्रम

अटल जय विज्ञान व्याख्यान श्रृंखला–आरएलबीसीएयू, झाँसी द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए 2018 से ''अटल जय विज्ञान'' व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्रख्यात वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और शिक्षकों ने गुणत्ता मानव संसाधन विकास के एक भाग के रूप में, छात्रों और संकाय के लाभार्थ व्याख्यान दिए हैं। आज तक, 25 व्याख्यान दिए जा चुके हैं और अक्तूबर 2022 से सितंबर 2023 तक तीन प्रतिष्ठित हस्तियों ने इस लोकप्रिय व्याख्यान श्रृंखला के तहत व्याख्यान दिए हैं।

- **किसान मेला 2023**–आरएलबीसीएयू, झाँसी ने ''बुंदेलखण्ड में कृषि निर्यात एवं श्रीअन्न की सम्भावनाएँ'' विषय पर 26–27 फरवरी, 2023 के दौरान अपना पहला ''किसान मेला'' आयोजित किया। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 11 प्रगतिशील किसानों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। विभिन्न शैक्षणिक, अनुसंधान संस्थानों और गैर–सरकारी एजेंसियों द्वारा कुल 80 से अधिक प्रौद्योगिकी स्टॉल लगाए गए थे। इसके अलावा, विश्वविद्यालय ने 10 से अधिक प्रदर्शनियों में भाग लिया जहाँ उसने विश्वविद्यालय की प्रौद्योगिकी में हाल के विकासों को प्रदर्शित किया।

- **बुंदेलखण्ड कृषि–निर्यात संवर्धन सम्मेलन (2023)** इस सम्मेलन का आयोजन "नाबार्ड, एफपीओ और एपीडा के तालमेल से बुंदेलखण्ड कृषि–उत्पाद की मूल्य श्रृंखला और निर्यात क्षमता को मजबूत करना" विषय पर किया गया था। बुंदेलखण्ड क्षेत्र में व्यवसाय के अवसरों के लिए स्थानीय किसानों, युवाओं, स्वयं सहायता समूहों, एफपीओ, खाद्य व्यवसाय संचालकों और उद्यमियों के लिए एक सुग्राहीकरण कार्यक्रम (एपीडा) (27 फरवरी 2023) आयोजित किया गया।
- **दूसरा दीक्षांत समारोह** – रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्याल (आरएलबीसीएयू), झांसी ने अपना दूसरा दीक्षांत समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ 11 मार्च 2023 को मनाया। दीक्षांत समारोह विश्वविद्यालय के लिए एक गौरवमयी पल था क्योंकि विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक उत्कृष्टता के शिखर को छुआ है और

अपने स्नातक छात्रों के जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत की है। दीक्षांत समारोह में कई विशिष्ट अतिथि शामिल थे, जिनमें मुख्य अतिथि श्री नरेंद्र सिंह तोमर, तत्कालीन कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार के अलावा, डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव (डेयर) और महानिदेशक (भाकृअनुप), डॉ. पंजाब सिंह, कुलाधिपति, आरएलबीसीएयू, झाँसी, डॉ. अशोक कुमार सिंह, कुलपति, आरएलबीसीएयू, झाँसी और विश्वविद्यालय के प्रशासन, संकाय, सदस्य कर्मचारी और छात्र भी उपस्थित थे। कुल 213 छात्रों को स्नातक और स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्रदान की गईं, जिनमें से 88 छात्र बी.एससी. (ऑनर्स) कृषि, 36 छात्र बी.एससी. (ऑनर्स) बागवानी और 35 छात्र बी.एससी. (ऑनर्स) वानिकी से तथा विभिन्न विषयों में 59 छात्र एम.एससी. डिग्रियों से संबंधित थे। इसके अलावा, 16 छात्रों को विभिन्न पाठ्यक्रम कार्यक्रमों में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।

- **ग्यारहवाँ कुलपति सम्मेलन**–प्राकृतिक संसाधन क्षरण के मुद्दों और उभरती चुनौतियों तथा अवसरों को देखते

हुए, ''सतत राष्ट्रीय संसाधन प्रबंधन में नवोन्मेष'' पर 11वां विचारोत्तेजक सत्र 7–8 अप्रैल 2023 को रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी में आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित किया गया था, और इसमें कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, भाकृअनुप के उप महानिदेशक, अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थानों के डीन एवं निदेशकों ने भाग लिया।

बुनियादी ढांचे का विकास

महाविद्यालय का एक शैक्षणिक एवं प्रशासनिक भवन निर्मित हो चुका है जिसमें आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई हैं। 150 और 100 सीटों की क्षमता के साथ क्रमशः अध्ययन कक्ष और परीक्षा/सेमिनार हाल के साथ एक पुस्तकालय, कंप्यूटर प्रयोगशाला, आधुनिक सुविधाओं के साथ बेहतरीन अनुसंधान प्रयोगशाला, छात्र एवं छात्राओं प्रत्येक के लिए 250 सीटों की क्षमता का छात्रावास, आवासीय आवास तथा 250 सीटों की क्षमता का एक बहुआयामी सभागार हाल दतिया परिसर में उपलब्ध करवाया गया है।

झाँसी परिसर में, 35 कमरों का नया अतिथि गृह और सामुदायिक केंद्र का निर्माण करवाया गया है जिसमें छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न दुकानें और बैंक स्थित हैं।

केंद्रीय यांत्रिकीकरण (इंस्ट्रुमेंटेशन) सुविधा-(सीआईएफ)

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित विश्वविद्यालय उच्च निष्पादन तरल क्रोमैटोग्राफी (एचपीएलसी), गैस क्रोमैटोग्राफी (जीसी), परमाणु अवशोषण स्पेक्ट्रोमेट्री (एएएस), और माइक्रोस्कोपी इत्यादि जैसे अत्याधुनिक यंत्रों और उपकरणों के साथ अनुसंधान प्रयोगशालाओं, कंप्यूटर प्रयोगशालाओं तथा 150 सीटों की क्षमता की अध्ययन कक्षा एवं परीक्षा/सेमिनार हाल तथा 100 सीटों की क्षमता के एक पुस्तकालय सहित एक विश्वविद्यालय स्तरीय केंद्रीय इंस्ट्रुमेंटेशन सुविधा–'केंद्र (सीआईएफ) निर्मित किया गया है जो कृषि, जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और पर्यावरण

विज्ञान के क्षेत्रों में शोधकर्ताओं की विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इस केंद्र का उद्घाटन डॉ. त्रिलोचन महापात्र, पूर्व सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप) द्वारा 05 मार्च 2023 को किया गया इस अवसर पर प्रोफेसर ए. के. सिंह तथा डॉ. अनिल कुमार, निदेशक शिक्षा एवं अन्य डीन और निदेशक भी उपस्थित थे।

मोबाइल पादप स्वास्थ्य क्लिनिक

किसानों के खेतों पर मोबाइल पादप स्वास्थ्य क्लिनिक के माध्यम से फसल सुरक्षा और मृदा उर्वरता प्रबंधन के लिए ज्ञान, कृषि–विधियों तथा प्रौद्योगिकी का प्रसार किया गया और बुंदेलखण्ड में विज्ञान आधारित प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया गया।

डिजिटल कृषि और कृषि उद्यमिता को बढ़ावा

एग्रीस्केप 2023–युवाओं को सशक्त करने और उन्हें उद्यमिता की ओर सक्षम बनाने के लिए रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने झाँसी स्मार्ट सिटी और मेधा लर्निंग फाउंडेशन के सहयोग से एक कार्यक्रम एग्रीस्केप 2023 आयोजित किया। एग्रीस्केप एक कृषि व्यवसाय विमर्श प्रतियोगिता है, इसके अंतर्गत युवा प्रतिभाओं को पोषित करने तथा अनुभवों और प्रक्रियाओं के माध्यम से एक उद्यमी बनने में उनके सोच–विचारों को एक मूल्यवान व्यवसाय मॉडल बनाने में परिवर्तित करने का प्रयास किया जाता है (23 मार्च 2023)।

''बुंदेली कृषि विपणन'' मोबाइल ऐप

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा वित्तपोषित परियोजना ''कृषि–उद्यमियों के लिए एकीकृत मंचः किसानों–उपभोक्ताओं–उद्यमियों का एक फोर्स मल्टीप्लायर मंच'' के तत्वाधान में ''बुंदेली कृषि विपणन'' मोबाइल ऐप का विकास किया गया है। यह आईसीटी समर्थित एकीकृत प्लेटफॉर्म है और तीन जिलों – झाँसी, ललितपुर और जालौन में किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ), स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और कृषि–उद्यमियों को जोड़ने के लिए एकीकृत मंच के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा प्राथमिक उत्पादकों, एफपीओ, एसएचजी संगठनों एवं कृषि–उद्यमियों द्वारा उत्पादित कृषि उत्पादों की दृश्यता को बढ़ाने पर बल देते हुए विक्रेताओं और खरीदारों के बीच बैकवर्ड एवं फॉरवर्ड लिंकेज में सुविधा प्रदान करता है।

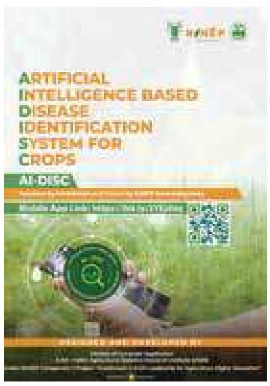

एआई-डिस्क एंड्रॉयड मोबाइल ऐप का विकास

भाकृअनुप–आईएएसआरआई, नई दिल्ली के सहयोग से एनआईबीपीपी मोबाइल ऐप–एनएएचईपी घटक–2 के तहत

एआई–डिस्क एंड्रॉयड मोबाइल ऐप विकसित किया गया जिसे भाकृअनुप द्वारा वित्तपोषित किया गया। इसे 09 फरवरी 2023 को लोकार्पित किया गया। इसमें सरसों, मूंगफली, तिल, अरहर, काबुली चना, मूंग, मटर, मसूर फसलों के विभिन्न रोगों/नाशीकीटों की कुल 20,944 इमेज व छायाचित्र सन्निहित हैं। इनकी व्याख्या सहित इन्हें छायाचित्र आधारित कारण, रोगजनकों एवं रोगों की पहचान करने के लिए एनआईबीपीपी पोर्टल पर अपलोड किया गया।

कृषि-उद्यमिता विकास के लिए विभिन्न सुग्राहीकरण कार्यक्रमों का आयोजन

- नार्म, हैदराबाद के तत्वावधान में 04 मार्च 2023 को कृषि स्नातकों के बीच उद्यमिता के लिए सॉफ्ट स्किल्स का विकास।
- एमएसएमई–डीएफओ कानपुर के तत्वाधान में 15 अक्तूबर 2022 को उद्यमिता जागरूकता कार्यक्रम

विभिन्न संस्थानों/संगठनों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर

सहयोगात्मक समझौतों का उद्देश्य दो या इससे अधिक संस्थानों के बीच ज्ञान, विशेषज्ञता और संसाधनों के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाना तथा शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों के लिए एक सहक्रियात्मक वातावरण को बढ़ावा देना है।

- **आरएलबीसीएयू और टीएफआरआई के बीच समझौता ज्ञापन (08 दिसंबर, 2022)** – रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी ने प्रख्यात उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करके शैक्षणिक और अनुसंधान प्रयासों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण कदम उठाया है।
- **आरएलबीसीएयू और तारा ब्लूम्स प्राइवेट लिमिटेड के बीच समझौता ज्ञापन (27 फरवरी 2023)** – झाँसी में रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय ने एक सामाजिक उद्यम अर्थात तारा ब्लूम्स प्राइवेट लिमिटेड के साथ एक अग्रगामी समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करके एक परिवर्तनकारी यात्रा शुरू की है। यह रणनीतिक गठबंधन प्रौद्योगिकी को उपलब्ध करवाने के माध्यम से आज के कृषि परिदृश्य की चुनौतियों से निपटने में कृषक समुदाय और सूक्ष्म से लेकर बड़े तक सभी स्तरों के उद्यमों को सशक्त बनाने के लिए है।
- **आरएलबीसीएयू और भाकृअनुप–क्रीडा, हैदराबाद के बीच समझौता ज्ञापन (08 अप्रैल 2023)** – रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी ने केंद्रीय शुष्कभूमि कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद (तेलंगाना) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करके शैक्षणिक और अनुसंधान प्रयासों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण कदम उठाया है।
- **आरएलबीसीएयू एवं संस्कृति विश्वविद्यालय, छाता, मथुरा के बीच एमओयू (16 मई 2023)** – रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी ने संस्कृति विश्वविद्यालय, छाता, मथुरा के साथ शैक्षणिक और अनुसंधान प्रयासों के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।
- **आरएलबीसीएयू और राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास फाउंडेशन, नई दिल्ली (एनएचआरडीएफ) के बीच समझौता ज्ञापन (14 जुलाई 2023)**–रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी ने बुंदेलखण्ड में प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण के लिए आवश्यकता आधारित अनुसंधान कार्यक्रमों के निर्माण के लिए बागवानी फसलों विशेषकर प्याज और लहसुन किस्मों, उत्पादन और संरक्षण प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास फाउंडेशन, नई दिल्ली (एनएचआरडीएफ) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (कृवैचमं)

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल ने भाकृअनुप की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार हमेशा सबसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों की पहचान करने और उनकी सिफारिश करने का प्रयास किया है। वर्ष 2023–24 की अवधि के लिए एएसआरबी की उपलब्धियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि इसने 108 अनुसंधान प्रबंधन पदों (आरएमपी) के लिए साक्षात्कार आयोजित करने का ऐतिहासिक कार्य किया है और मंडल के इतिहास में पहली बार 790 आरएमपी एवं गैर–आरएमपी पदों का विज्ञापन किया गया है।

सीधी भर्ती/पार्श्व प्रवेश

इस अवधि के दौरान, एएसआरबी ने 790 आरएमपी और गैर–आरएमपी पदों की सीधी भर्ती के लिए चार विज्ञापन (विज्ञापन संख्या 2/2022 दिनांक 3 अक्तूबर, 2022, विज्ञापन संख्या 1/2023 दिनांक 17 मई 2023, विज्ञापन संख्या 2/2023 दिनांक 10 जुलाई 2023 और विज्ञापन संख्या 3/2023 दिनांक 7 अगस्त, 2023) जारी किए। इन पदों में सहायक महानिदेशक, संस्थानों के निदेशक, राष्ट्रीय संस्थानों के संयुक्त निदेशक, परियोजना समन्वयक, प्रभागाध्यक्ष/ क्षेत्रीय केंद्रों के प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्रों के वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख और वरिष्ठ वैज्ञानिकों के पद शामिल हैं। निम्नलिखित विवरण इस अवधि के दौरान विज्ञापित विभिन्न पदों की स्थितिवार वितरण को दर्शाता है।

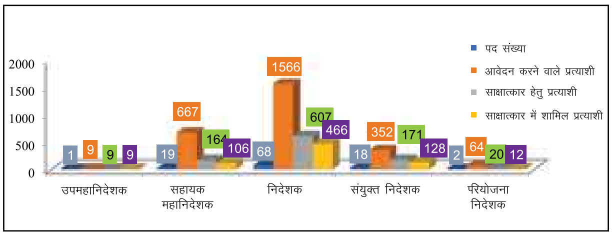

अनुसंधान प्रबंधन पद

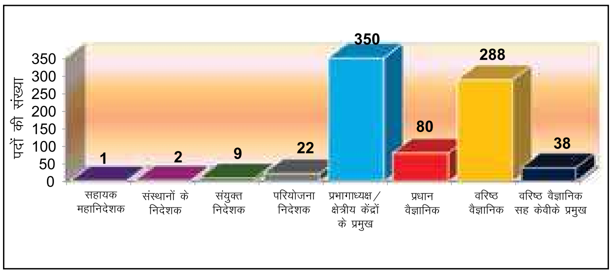

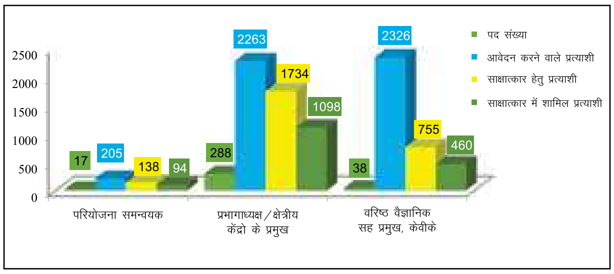

गैर–अनुसंधान प्रबंधन पद

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान पूरी की गई सीधी भर्ती प्रक्रिया का सारांश

श्रेणी	पदों की सं.	आवेदन करने वाले प्रत्याशी	साक्षात्कार में आमंत्रित प्रत्याशी	साक्षात्कार में शामिल प्रत्याशी
अनुसंधान और प्रबंधन पद				
उप महानिदेशक	1	9	9	9
सहायक महानिदेशक	19	667	164	106
निदेशक	68	1566	607	466
संयुक्त निदेशक	18	352	171	128
परियोजना निदेशक	2	64	20	12
कुल (क)	108	2568	971	721
प्रत्याशियों की प्रति पद उपलब्धता (क)		23.78	8.99	6.68
गैर–आरएमपी पद				
परियोजना समन्वयक	17	205	138	94
प्रभागाध्यक्ष / क्षेत्रीय केंद्रों के प्रमुख	288	2263	1734	1098
वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख, केवीके	38	2326	755	460
कुल (ख)	343	4794	2627	1652
प्रत्याशियों की प्रति पद उपलब्धता (ख)		13.98	7.66	4.82
समग्र (आरएमपी + गैर–आरएमपी)				
कुल (क + ख)	451	7362	3598	2373
प्रत्याशियों की प्रति पद उपलब्धता (क + ख)		16.32	7.98	5.26

साक्षात्कार बोर्ड का दृश्य

चयन मंडल ने कुल 451 पदों के लिए साक्षात्कार प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न की। इन पदों में एक उप महानिदेशक, 19 सहायक महानिदेशक, 68 निदेशक, दो परियोजना निदेशक, 18 संयुक्त निदेशक, 17 परियोजना समन्वयक, 288 प्रभागाध्यक्ष/संस्थानों के क्षेत्रीय केंद्रों के प्रमुख तथा 38 वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, केवीके शामिल हैं।

समग्र रूप से, चयन मंडल ने कुल 7,362 आवेदनों की सावधानीपूर्वक समीक्षा एवं संवीक्षा की और साक्षात्कार के लिए 3,598 प्रत्याशियों को लघुचयनित किया। लघुचयनित किए गए प्रत्याशियों में से 2,373 ने व्यक्तिगत साक्षात्कार सत्र में भाग लिया।

मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार, चयन मंडल शीर्ष 10 रैंकिंग वाले प्रत्याशियों को साक्षात्कार के लिए बुलाता है जो प्रत्येक पद के लिए स्कोरकार्ड मूल्यांकन में न्यूनतम अर्हक अंक प्राप्त करते हैं। तथापि, औसतन रूप से, प्रति पद के साक्षात्कार के लिए औसतन लगभग आरएमपी पदों हेतु 6.68 प्रत्याशी और गैर–आरएमपी पदों के लिए 4.82 प्रत्याशी उपलब्ध थे।

परीक्षा के माध्यम से भर्ती

एआरएस परीक्षा - 2021

एआरएस (प्रारंभिक) परीक्षा के परिणाम के आधार पर, कुल 2,792 प्रत्याशी एआरएस मुख्य परीक्षा के लिए उत्तीर्ण हुए, इनमें से केवल 2,437 प्रत्याशी एआरएस मुख्य परीक्षा में वास्तविक रूप से उपस्थित हुए। एएसआरबी

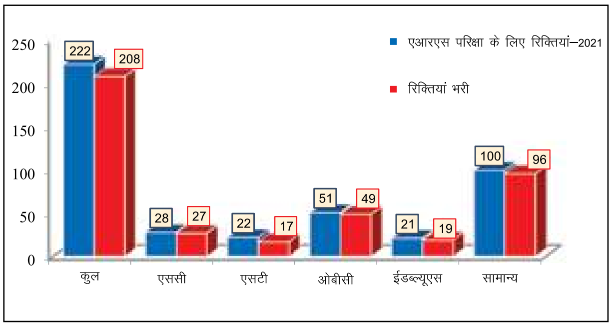

एआरएस परीक्षा के लिए संस्तुत प्रत्याशियों का श्रेणीवार विवरण

एआरएस बोर्ड द्वारा साक्षात्कार

द्वारा 28 नवंबर 2021 को आयोजित कृषि अनुसंधान सेवा (मुख्य) परीक्षा के उपरांत 9 से 20 दिसंबर 2022 के दौरान मौखिक परीक्षा आयोजित की गई। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप, भाकृअनुप के तहत प्रवेश–स्तरीय वैज्ञानिक पदों के लिए कुल 208 प्रत्याशियों को 47 विभिन्न शाखाओं के लिए संस्तुत किया गया।

विज्ञापित 222 रिक्तियों में से, उपयुक्त प्रत्याशियों की अनुपलब्धता के कारण केवल 208 पदों के लिए सिफारिशें की गईं। एआरएस परीक्षा में अनुशंसित प्रत्याशियों का श्रेणीवार विवरण दिए गए रेखा चित्र में दर्शाया गया है।

प्रशासनिक अधिकारी (एओ) और वित्त एवं लेखा अधिकारी (एफ एंड एओ) परीक्षा 2021

प्रशासनिक अधिकारी और वित्त एवं लेखा अधिकारी पदों की रिक्तियों को भरने के लिए टियर I परीक्षा (वस्तुनिष्ठ परीक्षा) क्रमशः 10 मई 2022 और 21 मई 2022 को आयोजित की गई थी। प्रशासनिक अधिकारी के पद के लिए कुल 882 प्रत्याशियों को योग्य पाया गया, जबकि 421 प्रत्याशियों को वित्त एवं लेखा अधिकारी के पद के लिए योग्य पाया गया जिसके फलस्वरूप उन्हें टियर–II परीक्षा में प्रवेश का अवसर दिया गया। टियर–II परीक्षा (विवरणात्मक परीक्षा) पूरे देश में 28 से 30 दिसंबर 2022 के दौरान लिखित रूप में आयोजित की गई। टियर–II परीक्षा के परिणाम के आधार पर, प्रशासनिक अधिकारी पद के लिए कुल 241 और वित्त एवं लेखा अधिकारी पद के लिए कुल 107 प्रत्याशी साक्षात्कार के लिए उत्तीर्ण हुए।

राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट)-2023 के लिए संयुक्त परीक्षा, विषय वस्तु विशेषज्ञ (एसएमएस टी-6) और वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एसटीओ; टी-6) परीक्षा-2023

राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट)–2023, विषय वस्तु विशेषज्ञ (एसएमएस; टी–6) और वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एसटीओ; टी–6) परीक्षा–2023 के लिए एक संयुक्त परीक्षा 27–30 अप्रैल 2023 के दौरान ऑनलाइन मोड में आयोजित की गई ताकि कृषि विज्ञान केंद्रों में विषय–विशेषज्ञ (एसएमएस; टी–6) के 163 पदों और भाकृअनुप संस्थानों में वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एसटीओ; टी–6) के 30 पदों को भरा जा सके।

राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट)-2023

राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा के लिए कुल 62,573 प्रत्याशियों ने पंजीकरण करवाया और 53,633 प्रत्याशी परीक्षा में उपस्थित हुए। परिणाम के आधार पर, 8,264 प्रत्याशी 60 विषयों में नेट प्रमाणन के लिए उत्तीर्ण हुए।

विषय वस्तु विशेषज्ञ (एसएमएस; टी-6) और वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एसटीओ; टी-6)

विषय वस्तु विशेषज्ञ (एसएमएस; टी–6) और वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (एसटीओ; टी–6) परीक्षा के लिए कुल 23,539 प्रत्याशियों ने पंजीकरण करवाया। परीक्षा में कुल 19,481 प्रत्याशी उपस्थित हुए और 871 प्रत्याशी साक्षात्कार के लिए योग्य पाए गए।

एआरएस परीक्षा-2023

51 विषयों में वैज्ञानिकों के 260 पदों पर भर्ती के लिए कृषि अनुसंधान सेवा (एआरएस)–2023 परीक्षा के आयोजन के संबंध में एक अधिसूचना जारी की गई है। परीक्षा भारत में 19 केंद्रों पर पारंपरिक कलम एवं कागज माध्यम में आयोजित की जाएगी।

संशोधित करियर उन्नयन योजना (सीएएस) के तहत वरिष्ठ वैज्ञानिकों का मूल्यांकन/पदोन्नति

वर्ष के दौरान, वरिष्ठ वैज्ञानिक से प्रधान वैज्ञानिकों के ग्रेड में उन्नति/मूल्यांकन के लिए संशोधित करियर उन्नयन योजना (सीएएस) के तहत विभिन्न भाकृअनुप संस्थानों से 26 विषयों में 47 प्रस्ताव प्राप्त किए गए। इन सभी प्रस्तावों का मूल्यांकन कर उनकी अनुशंसाएं परिषद को भेजी गईं। सीएएस प्रस्तावों का प्रमुख विषयवार विवरण इस प्रकार हैः

47 प्रस्तावों के मूल्यांकन से पता चला कि 95.74% प्रत्याशियों को निर्धारित समय पर पदोन्नत किया गया,

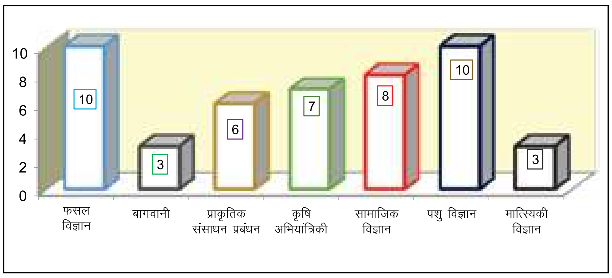

मूल्यांकित प्रस्तावों का प्रमुख विषयवार विवरण

2.13% ने अगले उच्च ग्रेड में स्थगित पदोन्नति प्राप्त की, और शेष मामलों में अगले उच्च ग्रेड में कोई पदोन्नति नहीं की जा सकी।

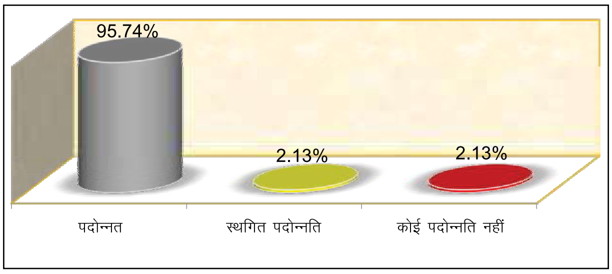

संशोधित करियर उन्नयन योजना (सी ए एस) के तहत वरिष्ठ वैज्ञानिकों का मूल्यांकन/पदोन्नति

एआरएस वैज्ञानिकों (आरजीपी 6000 से 9000) के लिए करियर उन्नयन योजना (सीएएस) और तकनीकी कार्मिकों की पदोन्नति के लिए मूल्यांकन

एआरएस वैज्ञानिकों के लिए करियर उन्नयन योजना (सीएएस) के नियमों के अनुसार, अध्यक्ष, एएसआरबी ने भाकृअनुप संस्थानों में वैज्ञानिकों की पदोन्नति के मामलों पर विचार करने के लिए विभिन्न मूल्यांकन समितियों के लिए अध्यक्षों को नामित किया। इसके अलावा, भाकृअनुप मुख्यालय और भारत में स्थित उसके संस्थानों में कार्यरत तकनीकी संवर्ग के कर्मचारियों के पदोन्नति मामलों पर विचार करने के लिए मूल्यांकन समितियों के गठन हेतु, एएसआरबी के अध्यक्ष द्वारा नामांकन भी किए गए।

तकनीकी कार्मिकों का मूल्यांकन/पदोन्नति

चयन मंडल ने भाकृअनुप मुख्यालय सहित 61 संस्थानों में तकनीकी कर्मचारियों की पदोन्नति के लिए 89 मूल्यांकन समितियों हेतु विशेषज्ञों को नामित किया।

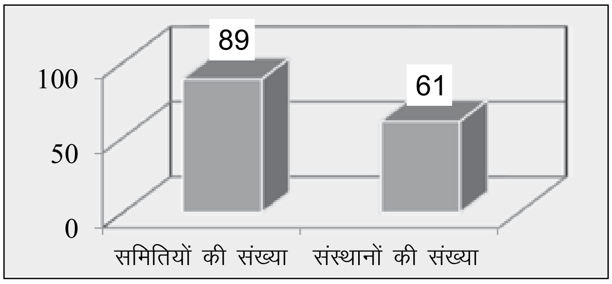

वैज्ञानिकों का मूल्यांकन/पदोन्नति

चयन मंडल ने आरजीपी ₹6,000 से ₹7,000 में, आरजीपी ₹7,000 से ₹8,000 में और आरजीपी ₹8,000 से ₹9,000 में वैज्ञानिकों के मूल्यांकन के लिए 73 विभागीय पदोन्नति समितियों (डीपीसी) के गठन हेतु 50 संस्थानों के लिए विशेषज्ञों के नामांकन को अंतिम रूप दिया और उसे अधिसूचित किया।

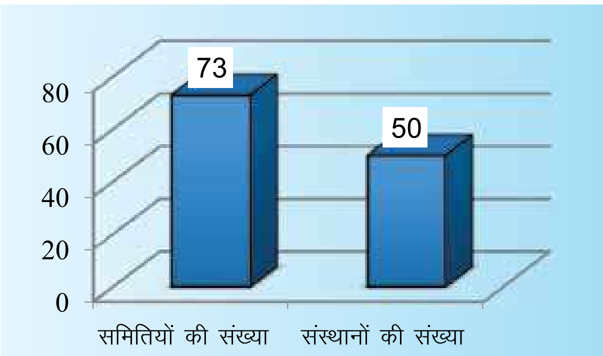

सुधार

स्कोरकार्ड–2022 का संशोधन: वर्ष के दौरान, भाकृअनुप में पार्श्व प्रवेश के माध्यम से गैर आरएमपी पदों पर सीधे चयन के लिए स्कोरकार्ड में व्यापक सुधार किया गया है ताकि उसकी महत्ता को बढ़ाया जा सके।

प्रभागाध्यक्ष (एचओडी)/क्षेत्रीय केंद्र प्रमुख (एचओआरएस)/परियोजना समन्वयक (पीसी), प्रधान वैज्ञानिक और वरिष्ठ वैज्ञानिक के पदों के लिए आवेदन पत्र में संशोधन: गैर–आरएमपी पदों के लिए सीधी भर्ती के लिए ऑनलाइन आवेदन फॉर्म को संशोधित स्कोरकार्ड के अनुरूप संशोधित किया गया है और उसे विज्ञापन सं. 02/2022 से लागू किया गया। ऑनलाइन आवेदन करने और संशोधित स्कोरकार्ड के अनुसार आवेदनों की संवीक्षा के लिए वेब आधारित एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है। एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर को ओएएसआईएस (ऑनलाइन अनुप्रयोग और स्कोरकार्ड सूचना प्रणाली) का नाम दिया गया है और इसे यूआरएल-http://asrbapplication.in पर एक्सेस किया जा सकता है।

हिंदी का प्रगामी प्रयोग: राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार, एएसआरबी वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम 2023–24 में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अपने कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। चयन मंडल अधिनियम एवं नियमों के प्रावधानों का कड़ाई से पालन करने के साथ यह भी सुनिश्चित करता है कि परिपत्र, रिपोर्ट, प्रश्न पत्र और अन्य दस्तावेज द्विभाषी आवश्यकताओं की पूर्ति करें।

हिंदी त्रैमासिक बैठक का दृश्य

हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह

हिन्दी सप्ताह समापन समारोह

हिन्दी सप्ताह समापन समारोह के दौरान पुरस्कार वितरण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी) की त्रैमासिक बैठकें: राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी) की नियमित त्रैमासिक बैठकें आयोजित की गईं। इस क्रम में चार बैठकें आयोजित की गईं अर्थात दिसंबर 2022, और मार्च, जून, अगस्त 2023 में, जिनमें राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई और निर्णय लिए गए। समिति के अध्यक्ष ने कर्मचारियों को शत–प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने के लिए सदैव प्रेरित किया।

राजभाषा कार्यान्वयन पर त्रैमासिक रिपोर्ट: 30 जून 2023 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए एएसआरबी की त्रैमासिक रिपोर्ट निम्न को परिलक्षित करती है:

- धारा 3(3) के तहत राजभाषा कार्यान्वयन का प्रदर्शन 100% रहा है। इसके अतिरिक्त, एएसआरबी द्वारा 'क' और 'ख' क्षेत्रों को भेजे गए पत्रों के उत्तर भी हिंदी में 100% थे।
- क्षेत्र 'क' में हिंदी में पत्राचार 97% था, जबकि क्षेत्र 'ख' और 'ग' में 100% था। क्षेत्र ग के लिए लक्ष्य 65% था।

हिंदी टिप्पण में समग्र प्रदर्शन 95.68% रहा है, जो निर्धारित लक्ष्य 75% से अधिक है।

राजभाषा नीति से संबंधित रिपोर्टें

एएसआरबी में राजभाषा के प्रयोग के संबंध में त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार को भेजी गई।

- एएसआरबी में राजभाषा के प्रयोग के संबंध में वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट और त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग (डेयर) को भेजी गई।
- एएसआरबी में राजभाषा के प्रयोग के संबंध में अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्ट नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (टोलिक), उत्तरी दिल्ली को भेजी गई।

हिंदी सप्ताह समारोहः वर्ष के दौरान, ''राजभाषा–हिंदी सप्ताह'' 19 से 27 सितंबर 2023 के दौरान मनाया गया। हिंदी सप्ताह का उद्घाटन 19 सितंबर 2023 को अध्यक्ष, सदस्यों, सचिव, एएसआरबी और अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी) और एएसआरबी के अन्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में किया गया। एएसआरबी के अध्यक्ष ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने संबोधन में उन्होंने वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम 2023–24 में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया।

हिंदी सप्ताह के दौरान, हिंदी के प्रयोग के विभिन्न पहलुओं पर जोर देते हुए छह प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूपण, कविता गायन, तस्वीरों के आधार पर उपाख्यान लेखन, टंकण परीक्षा और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता शामिल थीं। इन प्रतियोगिताओं में कुल 62 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी) के अध्यक्ष ने हिंदी सप्ताह के दौरान इन प्रतियोगिताओं को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए सभी आवश्यक समर्थन और निरंतर प्रोत्साहन प्रदान किया।

समापन समारोह 27 सितंबर 2023 को आयोजित किया गया। अध्यक्ष, एएसआरबी ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने हिन्दी सप्ताह के सफल आयोजन की सराहना की। अध्यक्ष, सदस्य (एएस) और सचिव, एएसआरबी द्वारा विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र दिए गए।

एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड

कार्य प्रदर्शन पर एक नजर

एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड (AgIn), भारत सरकार का एक उपक्रम है, कृषि में नवोन्मेषों को प्रोत्साहित करने तथा 'इनोवेटिव साझेदारी वाली दुनिया' को सृजित करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है। यह अनुसंधान संस्थानों एवं कृषि–उद्योग के बीच एक महत्वपूर्ण अंतरफलक के रूप में काम करता है तथा घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए लाइसेंसिंग के माध्यम से प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण को बढ़ावा देता है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान कंपनी ने अपने सकल राजस्व में उल्लेखनीय वृद्धि की है। AgIn ने वित्तीय वर्ष 2022–23 के दौरान लगभग 123 प्रौद्योगिकियों को मानकीकृत प्रोटोकॉल सहित हस्तांतरित करके भाकृअनुप के कई संस्थानों, उद्योगों और किसानों की अंतिम हितधारकों के रूप में मदद की है।

भाकृअनुप तथा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) के अंतर्गत शामिल संस्थानों में विकसित प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण के दिशानिर्देशों को AgIn के साथ सुसंगत बनाया गया है, जिससे सभी विषयों/क्षेत्रों में इन प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण का दायरा बढ़ गया है। एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड अब साझेदारी द्वारा नए आविष्कारों एवं क्षमतायुक्त कृषि विकास को बढ़ाने और उत्प्रेरित करने के लिए नए अवसरों का लाभ उठाने की स्थिति में पहुंच गया है।

इस कंपनी ने भाकृअनुप के कई संस्थानों और निजी कंपनियों के साथ कुशलतापूर्वक साझेदारी की है। अनेक प्रकार के कार्यों के संचालन से कंपनी का राजस्व ₹10.01 करोड़ (करों को छोड़कर और ₹43 लाख की रॉयल्टी सहित) तक पहुंच गया। ये प्रौद्योगिकियाँ फसल विज्ञान (12.49%), डेयरी एवं पशु चिकित्सा विज्ञान (64.27%), बागवानी (20.47%) और मात्स्यिकी (2.76%) से प्राप्त हुई हैं।

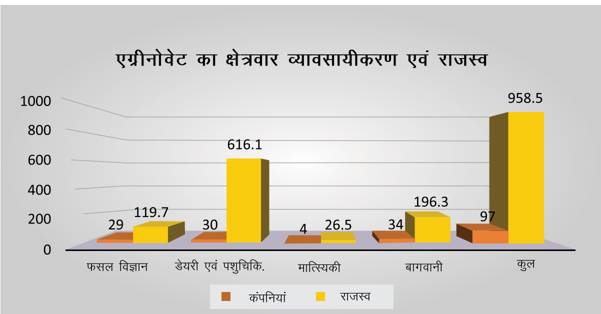

व्यवसाय विकास गतिविधियां

एग्रीनोवेट कंपनी के सीईओ और संपूर्ण टीम के निरंतर एवं सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप कंपनी के व्यापारिक अवसरों का व्यापक रूप से विस्तार हुआ और 59 संस्थानों और 4 विश्वविद्यालयों की लगभग 600 से अधिक प्रौद्योगिकियों को एग्रीनोवेट के माध्यम से व्यावसायीकरण हेतु उपलब्ध प्रौद्योगिकियों की सूची में शामिल किया गया है।

प्रोत्साहन गतिविधियां

AgIn ने विभिन्न हितधारकों तक अपनी सेवाओं के विस्तार के लिए व्यवसाय विकास कार्यक्रम के हिस्से के रूप में अनेक नई पहलों की शुरुआत की तथा कई निकायों ने AgIn को नीतिगत विचार–विमर्श और क्षमता निर्माण से संबंधित क्रियाकलापों हेतु विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया। इनमें से कुछ उल्लेखनीय गतिविधियों को नीचे दिया गया है:

1. भाकृअनुप-उद्योग-हितधारकों की परामर्श बैठकें

अंतिम प्रयोक्ताओं द्वारा प्रौद्योगिकियों को तेजी से अपनाने हेतु उद्योग जगत को तैयार करने की दिशा में अनुसंधान को आगे बढ़ाने में निजी साझेदारी का पता लगाने के लिए कंपनी ने 6 मार्च 2023 को एक दिवसीय भाकृअनुप–उद्योग हितधारक परामर्श बैठक का आयोजन किया। तदनुसार, सार्वजनिक निजी भागीदारी (पीपीपी) को बढ़ाने और उसे औपचारिक रूप देने के लिए भाकृअनुप–उद्योग बैठक की संकल्पना की गई ताकि प्रमुख हितधारकों अर्थात भाकृअनुप संस्थानों के नवप्रवर्तकों को संस्थान के ग्राहकों/प्रौद्योगिकी भागीदारों और अनुसंधानों के सकारात्मक परिणामों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने तथा बाजार से प्राप्त फीडबैक को समझकर अपनी प्रौद्योगिकियों को प्रस्तुत करने के लिए एक साझा मंच प्रदान किया जा सके।

इस कार्यक्रम ने संबंधित उद्योग एवं संस्थानों के बीच अपनी जरूरतों को प्रस्तुत करने, समस्याओं पर चर्चा करने और नवप्रवर्तकों के बीच अंतर्निहित विचारों पर चर्चा करने और उन्हें प्रभावी समाधान प्रदान करने में सक्षम बनाने के लिए एक सहज आचरण के रूप में कार्य किया। यह हमारे खरीदारों (ग्राहकों) और विक्रेताओं (संस्थानों) के लिए पारस्परिक विमर्श, नवप्रवर्तकों को एग्रीनोवेट के माध्यम से उनकी प्रौद्योगिकियों में सहयोग देने, उन्हें विकसित करने

और व्यावसायीकरण के लिए व्यापक स्पेक्ट्रम प्रदान करने का एक मंच बन गया है।

यह कार्यक्रम फसल विज्ञान, बागवानी, पशुपालन, मत्स्य पालन, कृषि अभियांत्रिकी, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन (एनआरएम), कृषि विस्तार, कृषि शिक्षा और बायोफॉर्म्यूलेशन जैसे सभी क्षेत्रों के लिए आयोजित किया गया था।

इस कार्यक्रम में श्री नरेंद्र सिंह तोमर, तत्कालीन माननीय केंद्रीय मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, श्री कैलाश चौधरी, माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव एवं महानिदेशक (डेयर/भाकृअनुप) सहित भाकृअनुप के कई संस्थानों के निदेशकों तथा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले निजी उद्योग के विशेषज्ञों ने सहभागिता की।

यह बैठक काफी सफल रही और इसमें 120 से अधिक उद्योग जगत के प्रतिभागियों, भाकृअनुप के सभी संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों आदि ने भाग लिया।

2. कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम, 2013 पर परिचयात्मक एवं जागरूकता बैठक

कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम, 2013 के तहत एक आंतरिक शिकायत समिति का गठन किया गया है।

24 मार्च, 2023 को आईसी समिति के सदस्यों तथा एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के कर्मचारियों के लिए कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध एवं निवारण) अधिनियम, 2013 पर एक परिचयात्मक और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पीओएसएच एचके एसोसिएट्स से सुश्री हीना खुराना नागपाल को पीओएसएच अधिनियम, 2013 के अनुसार क्या करें और क्या न करें पर प्रस्तुतीकरण के लिए एक बाहरी विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम का लक्ष्य निम्नलिखित विषयों पर ध्यान आकृष्ट करना था:

- पीओएसएच अधिनियम की विस्तृत समझ
- उन कृत्यों के बारे में जागरूकता जो यौन उत्पीड़न का कारण बन सकते हैं
- उन कृत्यों के बारे में जागरूकता जो यौन उत्पीड़न की श्रेणी में नहीं आते
- कार्यस्थल एवं कार्यस्थल से बाहर कर्मचारियों का व्यवहार
- इस अधिनियम के अंतर्गत महिलाओं को प्राप्त अधिकार
- झूठी शिकायतों के परिणाम
- आईसी समिति आदि के बारे में जागरूकता

3. डॉ. सुधा मैसूर ने नई दिल्ली में 'परस्पर जुड़े विश्व में बौद्धिक संपदा (आईपी) का व्यावसायीकरण–भारत और डेनमार्क हेतु सीख एवं नीतिगत अवसरों' पर आयोजित कार्यक्रम में एक पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।
4. एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के सीईओ डॉ. प्रवीण मलिक को 12 नवंबर, 2022 को एपीएचसीए, सिंगापुर में आयोजित 43वीं व्यापार बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया।
5. धान की फसलों में प्रौद्योगिकी सहयोग के लिए सीईओ, एग्रीनोवेट तथा भाकृअनुप के अधिकारियों की उपस्थिति में मेसर्स बायर क्रॉप साइंस लिमिटेड के साथ 29 नवंबर, 2022 को एक बैठक आयोजित की गई।
6. 'जैवआर्थिकी (बायोइकोनॉमी) में तेजी लाने के लिए बायोटेक नवोन्मेषों को बढ़ावा' विषय पर बल देने के साथ राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान के स्थापना दिवस में भाग लेने के लिए 15 नवंबर, 2022 को नई दिल्ली में आमंत्रित किया गया।
7. पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के सहयोग से भाकृअनुप द्वारा आयोजित "साइलेज उद्योग: डेयरी क्षेत्र में एक आदर्श बदलाव" विषय पर 21 जनवरी 2023 को आयोजित सेमिनार में सम्मानित अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।
8. एग्रीनोवेट के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) को 9 फरवरी, 2023 को हरियाणा के जींद जिले के सफीदो में आयोजित जैविक खेती के कार्यान्वयन एवं किसान पाठशाला के उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया।
9. हरियाणा के ग्राम गावद, हिसार में 10 फरवरी, 2023 को किसान फार्म प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया।
10. एग्रीनोवेट के सीईओ को 4 मार्च, 2023 को 'बीज विकास हेतु प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण– एग्रीनोवेट के दृष्टिकोण' पर चर्चा के लिए भारतीय बीज कांग्रेस के अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया।
11. संयुक्त सचिव (विस्तार) एवं जेएस (आरकेवीवाई) की संयुक्त अध्यक्षता में 21 मार्च, 2023 को आयोजित एएजी की 5वीं बैठक में भाग लिया।

भावी रणनीति

सभी कृषि प्रौद्योगिकियों के लिए एकल स्थान (वन स्टॉप शॉप), व्यापारिक व्यवसायों के लिए तैयार बाजार के रूप में खुद को स्थापित करने के बाद, AgIn स्केल अप एवं स्टार्टअप सहित इक्विटी–आधारित साझेदारी के माध्यम से राजस्व सृजन बढ़ाने के लिए एग्रीनोवेट अपनी गतिविधियों में विविधता लाने का प्रयास कर रहा है।

03

डेयर की अंतर्राष्ट्रीय सहयोग गतिविधियां

सीजी-अनुभाग

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) की स्थापना दिसंबर, 1973 में कृषि मंत्रालय में की गई थी। डेयर, भारत में कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए प्रमुख (नोडल) एजेंसी है। यह विभाग कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग के लिए विदेशी सरकारों, संयुक्त राष्ट्र, सीजीआईएआर और अन्य बहुपक्षीय एजेंसियों के साथ संपर्क करता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 77(3) के तहत भारत सरकार के कार्य आवंटन नियम, 1961 में किए गए प्रावधानों में अन्य बातों के साथ–साथ कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) को निम्नलिखित कार्यों को सौंपा गया है।

"कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहायता जिसमें विदेशी तथा अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा संस्थानों और संगठनों के साथ संबंध शामिल हैं।"

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को विभिन्न देशों/अंतर्राष्ट्रीय संगठनों/विदेशी विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन (एमओयू) में उल्लिखित कार्य–योजनाओं के माध्यम से संचालित किया जाता है, जिसका कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) एक नोडल विभाग है।

एमओयू में बनी सहमति के अनुसार सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य–योजनाएं तैयार कर उन्हें कार्यान्वित किया जाता है जिसमें इस सहकारी कार्यक्रम के तहत संचालित की जाने वाली विशिष्ट गतिविधियों का वर्णन होता है और प्रत्येक पक्ष का वांछित योगदान निर्धारित रहता है। ये कार्य योजनाएँ किसी भी पक्ष से प्रारंभ की जा सकती हैं लेकिन कार्यान्वयन के लिए दोनों पक्षों की पूर्ण स्वीकृति की आवश्यकता होती है।

अनुमोदित कार्य योजनाओं के तहत अनेक प्रकार की गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं जिनमें आपसी सहमति के आधार पर अध्ययन दौरे/प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए प्रत्येक देश के वैज्ञानिकों/विशेषज्ञों का आदान–प्रदान भी शामिल हैं।

अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परामर्शी समूह (सीजीआईएआर) एक वैश्विक साझेदारी है, जो भावी खाद्य–सुरक्षा के लिए अनुसंधान में कार्यरत अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को एकजुट रखती है। सीजीआईएआर के तहत संचालित अनुसंधान मुख्य तौर पर ग्रामीण गरीबी को कम करने, खाद्य सुरक्षा बढ़ाने, मानव स्वास्थ्य और पोषण में सुधार लाने तथा प्राकृतिक संसाधनों के स्थायी प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है। इसके 15 केंद्रों में से भाकृअनुप/डेयर का आईआरआरआई, आईएफपीआरआई, सिमिट, इकार्डा, आईसीआरएएफ, आईडब्ल्यूएमआई, आईएलआरआई, इक्रिसेट, डब्ल्यूएफसी, सीपी, बॉयोवर्सिटी तथा सीआईएटी एलाएंस के साथ कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं क्षमता निर्माण के क्षेत्र में मजबूत सहयोग रहा है।

भारत पिछले कई दशकों से सीजीआईएआर का एक डोनर (दाता) सदस्य देश है और सीजीआईएआर सिस्टम काउंसिल का एक वोटिंग सदस्य देश भी है, जो दो वैकल्पिक भागीदार देशों अर्थात बांग्लादेश एवं श्रीलंका के साथ परिषद के दक्षिण एशिया निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। भारत की सीजीआईएआर प्रणाली में स्थायी मतदान वाले सदस्य देश के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका है।

वर्तमान में सीजीआईएआर एक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है और अनुसंधान को अब एक सीजीआईएआर के तहत विभिन्न पहलों में वर्गीकृत किया जा रहा है (सीजीआईएआर अनुसंधान कार्यक्रमों की 31 दिसंबर, 2021 तक समाप्ति के पश्चात जनवरी, 2022 से प्रभावी)। ये नई पहलें चिन्हित क्षेत्रों में काम करेगी जिसमें प्रासंगिक सीजी केंद्रों और वैश्विक मांग, नवोन्मेष एवं स्केलिंग भागीदारों को एक साथ लाया जाएगा।

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) का सीजी अनुभाग, विभिन्न सीजी केंद्रों से संबंधित सभी कार्यों की प्रक्रियाओं को पूर्ण करता है जिसमें एमओयू को तैयार करना, कार्य–योजना और भाकृअनुप/डेयर के वैज्ञानिकों/अधिकारियों की विदेशी यात्राएं, सीजीआईएआर को वार्षिक योगदान का भुगतान तथा भाकृअनुप एवं सीजीआईएआर केंद्रों के बीच सहयोगात्मक परियोजनाएं तैयार करना शामिल हैं।

प्रमुख गतिविधियाँ

- भारत पर केंद्रित सीजीआईएआर की जारी गतिविधियों सहित भावी योजनाओं पर चर्चा के लिए अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्रों (सीजीआईएआर) पर परामर्शी समूह के साथ वार्षिक समीक्षा बैठक वर्चुअल रूप में 3–4 फरवरी, 2021 को आयोजित की गई।
- कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) के सचिव एवं भाकृअनुप के महानिदेशक ने छत्तीसगढ़, झारखंड और ओडिशा में धान–परती फसल प्रणाली के अनुकूलन, विविधीकरण एवं सघनीकरण पर चर्चा करने के लिए इर्री (आईआरआरआई), इकार्डा (आईसीएआरडीए), इक्रिसेट (आईसीआरआईएसएटी), सीआईपी, आईसीआरएएफ, सिमिट (सीआईएमएमवाईटी) तथा एवीआरडीसी के प्रतिनिधियों के साथ 12 मार्च, 2021 को एक वर्चुअल बैठक की अध्यक्षता की।
- भाकृअनुप एवं आईसीआरएएफ के बीच वर्ष 1985 में हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अनुसार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और विश्व

कृषि–वानिकी (आईसीआरएएफ), केन्या ने वर्ष 2021–25 तक की अवधि के लिए एक कार्य योजना पर 31 मई, 2021 को हस्ताक्षर किए।

- मौजूदा भाकृअनुप–इर्री (आईआरआरआई) कार्य–योजना में ''एक्सेलेरेटिंग जेनेटिक गेन इन राइस (एजीजीआरआई) एलायंस नामक एक नई परियोजना शामिल की गई।

सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाएँ

- ''केले में फ्यूजेरियम *विल्ट के ट्रॉपिकल* रेस 4 के फैलाव का प्रबंधन एवं शमन–भारत में केले के टीआर 4 प्रभावित क्षेत्रों की मैपिंग'' नामक परियोजना को फिर से मान्य किया गया।
- आईएफपीआरआई के सहयोग से ''गेहूं के दानों में जिंक के लिए जेनेटिक बायो–फोर्टिफिकेशन'' नामक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना को मंजूरी दी गई।
- ''कीटनाशकों की आनुवंशिकी एवं *हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा* में बीटी विष प्रतिरोधिता'' नामक परियोजना का पुनर्वैधीकरण।
- आईडब्ल्यूएमआई के सहयोग से ''भारत में जलवायु अनुकूल खेती के लिए जलवायु–स्मार्ट कृषि'' नामक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना को मंजूरी दी गई थी।
- बायोवर्सिटी के सहयोग से अफ्रीका के ग्रेट साल्ट लेक क्षेत्र में छोटे जोतधारक किसानों हेतु (केले की फसल में सुधार भारतीय घटक–फ्यूजेरियम विल्ट *फ्यूजेरियम ऑक्सीसोरम* fsp क्यूबेंसे) प्रतिरोधिता के साथ उन्नत केले की फसल हेतु प्रजनन, नामक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना) चरण–II को अनुमोदित किया गया था।
- सिमिट (सीआईएमएमवाईटी) के सहयोग से ''वैश्विक गेहूं प्रजनन में बढ़ते जिंक की मुख्य धारा में वृद्धि : पोषण के लिए 'पानी में फ्लोराइड' एप्रोच (डीएफआईडी डीएफ)'' नामक सहयोगी अनुसंधान परियोजना को मंजूरी दी गई।
- सिमिट (सीआईएमएमवाईटी) के सहयोग से ''बेहतर आजीविका के लिए मक्का और गेहूं में आनुवंशिक लाभ में तेजी लाना (एजीजी)'' नामक सहयोगात्मक परियोजना प्रस्ताव को मंजूरी दी गई।

आई सी- I अनुभाग (नास एवं आईएयूए को सम्मिलित करते हुए)

प्रमुख गतिविधियाँ

- वर्ष 2023–24 में अल्पकालिक और दीर्घकालिक प्रतिनियुक्ति को शामिल करते हुए विदेशी प्रतिनियुक्ति के लगभग 6 मामलों को मंजूरी दी गई।
- वर्ष 2023–24 में कैबिनेट नोट के लगभग 17 मामलों पर कार्यवाही की गई।
- वर्ष 2023–24 के दौरान भारत में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/कार्यशालाओं आदि के आयोजन के लिए विभिन्न संगठनों को अनुमोदन/एनओसी देने के लगभग 24 मामलों को मंजूरी दी गई।
- वर्ष 2023–24 के दौरान भाकृअनुप के विभिन्न संस्थानों में अंतर्राष्ट्रीय परामर्श परियोजना के 3 मामलों को मंजूरी दी गई।
- विभिन्न पोस्ट–डॉक्टरेट और डॉक्टरेट फेलोशिप के तहत शोध कार्य के लिए विदेशी नागरिकों को अनुमति देने से संबंधित लगभग 21 मामलों पर कार्यवाही कर उन्हें मंजूरी दी गई।
- अफ्रीकी छात्रों और अफगानिस्तान फेलोशिप के संबंध में संबंधित एसएयू/भाकृअनुप संस्थान को निधि जारी करने से संबंधित मामलों को भी निपटाया गया।
- भारत–नेपाल निधि योजना के तहत विभिन्न संस्थानों/विश्वविद्यालयो में प्रवेश के लिए विदेश मंत्रालय से 11 नेपाली अभ्यर्थियों के आवेदन प्राप्त हुए, जिन पर भाकृअनुप के कृषि शिक्षा प्रभाग के परामर्श से कार्यवाही की गई।
- राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली को 31 लाख रुपये की अनुदान सहायता जारी की गई।
- भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली को 7 लाख रुपये की अनुदान सहायता जारी की गई।

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एनएएएस)

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एनएएएस) एक राष्ट्रीय थिंक–टैंक के साथ–साथ विज्ञान–नीति के पारस्परिक संबंध (इंटरफेस) के लिए मंच प्रदान करता है जो कृषि क्षेत्र सहित राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए कृषि अनुसंधान (विज्ञान), शिक्षा और विस्तार में उत्कृष्टता और संमिलन को बढ़ाने में अग्रणी है। इस मिशन को पूरा करने के लिए अकादमी पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ, आर्थिक रूप से सक्षम और सामाजिक रूप से समतापूर्ण कृषि को प्रोन्नत करने के लिए संबंधित हितधारकों के लाभार्थ अनुसंधान और विकास से संबंधित महत्वपूर्ण नीतिगत मुद्दों पर कृषि विज्ञान कांग्रेस, सम्मेलन, विचार–मंथन सत्र, परामर्श, गोलमेज चर्चा और संवाद सत्रों का आयोजन करती है। इस अवधि के दौरान, अकादमी ने सरकार के सक्रिय विचार के लिए कई जरूरी नीतिगत मुद्दों पर महत्वपूर्ण और सामयिक जानकारी (इनपुट) प्रदान करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

इस अवधि में अकादमी ने भारतीय कृषि के समसामयिक मुद्दों पर कई व्याख्यान आयोजित करने के अलावा, वर्चुअल अथवा मिलेजुले तौर पर 13 विचार–मंथन सत्रों, नीतिगत

कार्यशालाओं, विशेषज्ञों की बैठक और विशेषज्ञों के साथ परामर्श जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया। नीति निर्माताओं, केंद्र और राज्य सरकारों, उच्च शिक्षा संस्थानों, किसानों और अन्य हितधारकों के लिए कार्यवाही बिंदुओं के साथ इन आयोजनों की सिफारिशों के आधार पर प्रकाशन निकाले गए।

अपने अधिदेश के अनुसरण में, नास (एनएएसएस) ने प्रतिवेदित अवधि के दौरान निम्नलिखित गतिविधियों को संचालित किया:

1. विचार-मंथन सत्र/नीतिगत कार्यशालाएं/परामर्श बैठकें

- समुद्री खरपतवारों की खेती एवं उपयोग पर 16 नवंबर 2022 को एक विचार–मंथन सत्र
- पशुधन क्षेत्र में सेवा प्रदायक तंत्र पर 5 दिसंबर 2022 को एक विचार–मंथन सत्र
- पौधा–आधारित बनाम डेयरी दूध–मिथकों और तथ्यों पर 10 दिसंबर 2022 को एक विचार–मंथन सत्र
- कठोर वातावरण में कृषिः चुनौतियाँ, अवसर और भावी मार्ग पर 24 फरवरी 2023 को विचार–मंथन सत्र का आयोजन
- आत्मनिर्भर भारत/राष्ट्रीय स्वच्छ प्लांट कार्यक्रम पर विशेषज्ञों की बैठक का 3 अप्रैल 2023 को आयोजन
- 17 मई 2023 को भारतीय मत्स्य पालन क्षेत्र के लिए खाद्य सुरक्षा रणनीतियों पर नीतिगत कार्यशाला
- भारत में सार्वजनिक–निजी भागीदारी (पीपीपी) के माध्यम से कृषि के बुनियादी ढांचे एवं कृषि–व्यवसाय विकास को बढ़ाने पर 25 मई 2023 को एक विचार–मंथन सत्र
- बॉयो–स्टिमुलेंट (जैवोत्तेजक) दिशानिर्देशों पर 21 अगस्त 2023 को एक विचार–मंथन सत्र
- नैतिकता और अनुसंधान प्रकाशन की वर्तमान स्थिति पर 31 अगस्त 2023 को विशेषज्ञ परामर्श
- पशुधन और पोल्ट्री क्षेत्रों की ग्रीनिंग (हरियाली) पर एक 01 सितंबर 2023 को विचार–मंथन सत्र
- कृषि परिप्रेक्ष्य से सीओपी (कॉप) 28 की तैयारी पर 25 सितंबर 2023 को विशेषज्ञ परामर्श
- भारतीय कृषि में फसल सुरक्षा के लिए dsRNA आधारित जैव कीटनाशकों की संभावनाओं पर 26 सितंबर 2023 को एक विचार–मंथन सत्र
- मधुमक्खियांः मीठी क्रांति की अग्रदूत पर 29 सितंबर, 2023 को नीतिगत कार्यशाला

2. विशेष कार्यक्रम/अन्य गतिविधियाँ

नास के स्थानीय पदाधिकारियों ने बाल–दिवस के अवसर पर दिल्ली के स्कूली छात्रों के साथ एक विशेष बैठक में भाग लिया। नास (एनएएएस) के पदाधिकारियों में इसके अध्यक्ष डॉ. टी. महापात्र; डॉ. अनिल के. सिंह, उपाध्यक्ष; डॉ. पी. के. जोशी, सचिव, डॉ. मालविका दादलानी, संपादक और डॉ. संजीव सक्सेना, कार्यकारी निदेशक ने 14 नवंबर, 2022 को सर्वोदय कन्या विद्यालय, आईएआरआई परिसर, नई दिल्ली का दौरा किया और स्कूल के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों सहित 500 से अधिक छात्राओं से बातचीत की। यह बातचीत मुख्य रूप से पोषण के प्रति जागरूकता तथा स्वास्थ्य एवं कल्याण में संतुलित और पौष्टिक आहार के महत्व पर केंद्रित थी।

3. शिक्षाविदों-उद्योग जगत के बीच बैठक

नास (एनएएएस) ने कृषि एवं इसके संबद्ध क्षेत्रों में नीति विकसित करने के लिए विभिन्न सामयिक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए नास के अध्यक्ष डॉ. टी. महापात्र की अध्यक्षता में 23 दिसंबर, 2022 को शिक्षाविदों–उद्योग जगत के बीच एक बैठक का आयोजन किया। उपस्थित प्रतिभागियों में उद्योग जगत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधि शामिल थे जिन्होंने कृषि के निरंतर विकास को सुनिश्चित करने और किसानों के लाभ को बढ़ाने के उद्देश्य से बीज, कृषि रसायन एवं फसल सुरक्षा, उर्वरक, मुर्गीपालन तथा पशु आहार एवं चारे के बीजों सहित पशुधन क्षेत्र से संबंधित मुद्दों पर विचार–विमर्श किया।

4. एनएएसएस-डब्ल्यूएफपीओ

अकादमी ने 14 अक्तूबर, 2022 को विश्व खाद्य पुरस्कार फाउंडेशन के सहयोग से संयुक्त रूप से 'वैश्विक खाद्य और पोषण सुरक्षा, तथा लघु दालों द्वारा प्रमुख एवं सतत विकास' नामक एक वर्चुअल कार्यशाला का आयोजन किया।

5. एनएएएसनास (नास) पीएएएस (पास)

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (एनएएएस) ने 26 सितंबर, 2023 को भारत में प्रोफेशनल एसोसिएशन ऑफ एग्रीकल्चरल सोसाइटीज (पीएएएस) के अध्यक्षों/प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के लिए एक बैठक का आयोजन किया। इस बैठक का उद्देश्य विभिन्न वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक गतिविधियों में नास तथा पास के मध्य एक घनिष्ठ साझेदारी विकसित करना है। डॉ. हिमांशु पाठक, अध्यक्ष, एनएएएस और सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप ने इस विचार–विमर्श बैठक की अध्यक्षता की। सत्र के दौरान, अध्यक्ष ने कहा कि मौजूदा कृषि समस्याओं का संज्ञान लेते हुए सभी समितियों को प्रत्येक वर्ष एक सामान्य विषय की पहचान करके एक साथ कार्य करते हुए इस पर चर्चा और वाद–विवाद करना चाहिए और पीडीएफ को साझा करके प्रकाशनों का आदान–प्रदान, वेबसाइटों, सम्मेलनों, एनएएएस के नीतिगत पत्रों, किताबें और अन्य सामग्री के माध्यम से पारस्परिक संपर्क बनाए रखना चाहिए।

6. स्थापना दिवस कार्यक्रम/वार्षिक सामान्य निकाय बैठक

वर्ष 2023–24 के दौरान, 4–5 जून, 2023 को नई दिल्ली में नास का स्थापना दिवस कार्यक्रम/एजीबी बैठक आयोजित की गई। एजीबी के सामान्य कार्य–सत्र के अतिरिक्त, विज्ञान–आधारित निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गया :

अध्यक्षीय सम्बोधनः नास के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक द्वारा 5 जून, 2023 को 30वीं वार्षिक सामान्य बैठक (एजीएम) में अध्यक्षीय भाषण दिया गया। अपने संबोधन में, उन्होंने अकादमी के समक्ष उपस्थित चुनौतियों और मौजूदा विषयों के समाधान के लिए वर्ष 2023 में अध्ययन कार्यक्रमों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि अकादमी को प्रत्येक वर्ष विशेष प्रासंगिकता वाले एक खास विषय की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

स्थापना दिवस व्याख्यानः 5 जून, 2023 को नास के स्थापना दिवस के अवसर पर नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री बी. वी. आर. सुब्रमण्यम, आईएएस ने स्थापना दिवस व्याख्यान दिया और मुख्य अतिथि प्रोफेसर रमेश चंद, माननीय सदस्य, नीति आयोग ने भी अपना संबोधन प्रस्तुत किया। श्री सुब्रमण्यम ने कृषि के क्षेत्र में भारत की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और बताया कि किस प्रकार से यह प्रगति भारत को कृषि में वैश्विक नेतृत्व करने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। उन्होंने विशिष्ट आंकड़ों को प्रस्तुत करते हुए बताया कि भारत, दुनिया की आधी आबादी को आहार उपलब्ध करवाने की क्षमता रखता है, इसके साथ उहोंने देश की समृद्धि में कृषि क्षेत्र के महत्व पर भी प्रकाश डाला। श्री सुब्रमण्यम ने मात्स्यिकी और पशु पालन के महत्व पर जोर देते हुए इस क्षेत्र में आगे आने वाली चुनौतियों पर भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि बेहतर लाभ प्राप्ति के लिए इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने और इनके नवोन्मेषी समाधानों की आवश्यकता है। इसके अलावा, उन्होंने उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए निरंतर नवोन्मेष एवं अनुकूलन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कृषि क्षेत्र में अनुसंधान की एक गतिशील प्रणाली की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके व्याख्यान में भारत की कृषि उपलब्धियों, खाद्य उत्पादन में वैश्विक नेता के रूप में भारत की क्षमता और कृषि क्षेत्र का सतत विकास सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक उपायों के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि के साथ एक समग्र दृष्टिकोण निहित था।

7. नास के क्षेत्रीय केंद्रों की गतिविधियाँ

अकादमी के बारह क्षेत्रीय केंन्द्र बड़ापानी, बेंगलुरु, भोपाल, कोयंबटूर, कटक, हैदराबाद, करनाल, कोलकाता, लखनऊ, लुधियाना, पुणे और वाराणसी में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

अकादमी के क्षेत्रीय केंद्रों ने अपने–अपने क्षेत्रों के महत्वपूर्ण रुझानों, चिंताओं और चुनौतियों को उजागर करने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए। इन आयोजनों का उद्देश्य अकादमी की विविध पहलों के बारे में जागरूकता बढ़ाना था, जैसे इन केन्द्रों के माध्यम से युवा वैज्ञानिकों को मार्गदर्शन देना, शैक्षणिक संस्थानों और विशेष रूप से स्कूलों एवं महाविद्यालयों में एक विषय के रूप में कृषि के अध्ययन को बढ़ावा देना आदि। उन्होंने स्कूलों के दौरे करने तथा छात्राओं के लिए पोषण कार्यक्रमों पर भी विशेष जोर दिया। इसके अतिरिक्त, इन केंद्रों ने व्यापक समझ और प्रसार के लिए नास द्वारा प्रकाशित महत्वपूर्ण नीतिगत पत्रों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने के महत्व पर भी जोर दिया।

8. प्रकाशन

अकादमी द्वारा आयोजित वैज्ञानिकों के पारस्परिक विचार विमर्श (इंटरएक्टिव) के सत्रों में उभरे ठोस विचारों को नीति/स्टेटस/नीतिगत पत्रों और नीति संक्षेपों के रूप में प्रकाशित किया गया, जो नीति निर्माताओं, योजनाकारों, शिक्षाविदों और निर्णय निर्माताओं को उपयोगी सामग्री (इनपुट) प्रदान करते हैं। इस अवधि में निम्नलिखित नीतिगत दस्तावेज़ प्रकाशित किए गएः

क. नीतिपत्र/स्टेटस/शोधपत्र

- नीति पत्र 110: भारत में सतत बाइवोल्टाइन रेशम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियां एवं दृष्टिकोण
- नीति पत्र 111: खाद्य सुदृढ़ीकरण (फूड फोर्टिफिकेशन): मुद्दे और भावी मार्ग
- नीति पत्र 112: कृषि में लैंगिक एवं पोषण आधारित विस्तार
- नीति पत्र 113: भारतीय कृषि के रूपांतरण हेतु अनुबंध खेती
- नीति पत्र 114: श्रीअन्न उत्पादन, मूल्यवर्धन और उपभोग को बढ़ावा देना
- नीति पत्र 115: अपशिष्ट से धन – खाद्य अपशिष्ट का पशु आहार और अन्य रूप में उपयोग
- नीति पत्र 116: भारत में दलहन क्रांति को बनाए रखना: तकनीकी और नीतिगत उपाय
- नीति पत्र 117: भारत में 26 मिलियन हैक्टर (एमएचए) अपक्षरित भूमि के पुनर्वास हेतु रोड मैप
- नीति पत्र 118: गुणवत्तापूर्ण चारा उत्पादन के लिए उद्यमशीलता
- नीति पत्र 119: प्रसंस्करित (माध्यमिक) कृषि – चुनौतियाँ, अवसर एवं भावी मार्ग
- नीति पत्र 120: नवोन्मेषी कृषि विस्तार मॉडलों को प्रोन्नत करना

- नीति पत्र 121: खाद्य तेल उत्पादन में आत्मनिर्भरता

ख. रणनीतिक पत्र

- रणनीतिक पत्र 17: भारत में कुपोषण से निपटने के लिए बायोफोर्टिफिकेशन: वर्तमान स्थिति और भावी मार्ग
- रणनीतिक पत्र 18: उन्नत फार्म मशीनरी द्वारा कृषि में मशक्कत में कमी

ग. नीति संक्षेप

- नीति संक्षेप 12: वैश्विक भूख सूचकांक की बाध्यताएं और भावी राह
- नीति संक्षेप 13: आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) खाद्य पदार्थों का विनियमन एवं अनधिकृत जीएम खाद्य मामलों का पता लगाना

घ. वर्ष के दौरान प्रकाशित पत्रिकाएँ और अन्य प्रकाशन

- नास न्यूज़ (त्रैमासिक), अकादमी में सम्पन्न कार्यक्रमों और विशिष्ट घटनाओं को कवर करने वाला एक दस्तावेज़, जिसमें समसामयिक मुद्दों पर अध्येताओं के विचार और लेख दिए जाते हैं; वॉल्यूम. 22, संख्या 4 और वॉल्यूम. 23, संख्या 1, 2, 3
- नास ईयर बुक एंड ईयर प्लानर (2023)
- कृषि अनुसंधान, अकादमी का आधिकारिक विज्ञान जर्नल। वॉल्यूम 11, संख्या 4 और वॉल्यूम 12, संख्या 1, 2, 3

9. कृषि क्षेत्र में वैज्ञानिकों की व्यक्तिगत उत्कृष्टता की पहचान एवं प्रोत्साहन

क. फेलोशिप/एसोसिएटशिप: अकादमी की फ़ेलोशिप के अंतर्गत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों का एक व्यापक समूह सम्मिलित रहा है। कृषि और इससे संबद्ध विज्ञान में उनकी विशिष्ट उपलब्धियों की मान्यता के अनुसार प्रवासी एवं विदेशी अध्येताओं सहित अकादमी द्वारा प्रतिवर्ष अध्येताओं को निर्वाचित किया जाता है। वर्ष 2023 के दौरान, दो विदेशी अध्येताओं तथा तीन प्रवासी अध्येताओं सहित कुल मिलाकर 34 नए अध्येताओं को निर्वाचित कर उन्हें अकादमी में शामिल किया गया। अकादमी के पास 40 वर्ष से कम आयु के होनहार युवा वैज्ञानिकों को अकादमी की गतिविधियों से सम्बद्धता हेतु प्रोत्साहित करने के लिए नास एसोसिएट्स नामक एक अन्य योजना भी है। इस वर्ष के दौरान, 10 युवा वैज्ञानिकों को उनकी शैक्षणिक उत्कृष्टता और प्रकाशनों, उत्पादों, प्रक्रियाओं एवं विकसित प्रौद्योगिकियों के रूप में परिलक्षित वैज्ञानिक योगदान के आधार पर अकादमी के एसोसिएट के रूप में चुना गया।

ख. अकादमी पुरस्कार: राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी ने कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देने और पर्यावरण एवं पोषण सहित कृषि और इससे संबद्ध विज्ञानों में शोध उत्कृष्टता स्वरूप वैज्ञानिकों की पहचान हेतु वरिष्ठ, मध्यम स्तर और युवा वैज्ञानिकों के महत्वपूर्ण योगदानों को मान्यता देने के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों की स्थापना की है। कृषि विज्ञान कांग्रेस के आयोजन के दौरान द्विवार्षिक रूप में मेमोरियल, एंडोमेंट और मान्यता पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रतिवर्ष दिए जाते हैं और इन्हें अकादमी की वार्षिक आम सभा की बैठक में दिया जाता है।

i मेमोरियल पुरस्कार (7)

ii मान्यता पुरस्कार (6)

iii युवा वैज्ञानिक पुरस्कार (6)

iv एंडोमेंट पुरस्कार (3)

वर्ष 2022 के लिए 06 युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 05 जून, 2023 को प्रदान किए गए।

भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए)

भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) की स्थापना 10 नवंबर 1967 को हुई थी। उस समय इसमें केवल 09 संस्थापक सदस्य कृषि विश्वविद्यालय थे जिनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ (अब लुधियाना); आंध्रप्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद (अब आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, गुंटूर); जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर; उत्तर प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर (अब गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय); कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलुरु; कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी (अब बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, मोहनपुर); ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय; भुबनेश्वर; उदयपुर विश्वविद्यालय, उदयपुर (अब महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय) और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली शामिल थे। वर्तमान में भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) में 73 सदस्य विश्वविद्यालय हैं।

इस संघ का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालयों और राज्यों में कृषि अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार को प्रोत्साहित करके देश में ग्रामीण विकास करना है। यह विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों के बीच संचार, समन्वय और परस्पर परामर्श की सुविधा हेतु सूचना ब्यूरो के रूप में भी कार्य करता है। यह संघ संचार की सुविधा और महत्वपूर्ण मामलों में त्वरित आवश्यक कार्रवाई के लिए सदस्य विश्वविद्यालयों और संबंधित सरकारी विभागों के बीच संपर्क के रूप में भी कार्य करता है। संघ द्वारा वर्ष 2000 से एक त्रैमासिक समाचार पत्र प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें सभी सदस्यों और अन्य हितधारकों की जानकारी के लिए सदस्य विश्वविद्यालयों के महत्वपूर्ण

समाचार, कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों को शामिल किया जाता है। आईएयूए और उस वर्ष के सदस्य विश्वविद्यालयों की प्रमुख गतिविधियों का उल्लेख करते हुए एक वार्षिक रिपोर्ट भी प्रकाशित की जाती है।

भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) द्वारा कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विस्तार से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर वार्षिक कुलपति सम्मेलन, राष्ट्रीय संगोष्ठी, विचार–मंथन सत्र आदि का आयोजन किया जाता है।

इन आयोजनों की कार्यवाही और सिफारिशों को मेजबान विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित किया जाता है और आईएयूए की वेबसाइट (www.iauaindia.org) पर अपलोड किया जाता है और इसे सदस्य विश्वविद्यालयों के सभी कुलपतियों और अन्य हितधारकों के साथ भी साझा किया जाता है।

आईएयूए ने प्रतिवेदित अवधि के दौरान सदस्य विश्वविद्यालयों के साथ कृषि अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार से संबंधित विभिन्न उभरते मुद्दों पर चर्चा के लिए अक्तूबर, 2022 से सितंबर, 2023 के दौरान संयुक्त रूप से चार कार्यक्रमों अर्थात 9वीं क्षेत्रीय बैठक, 46वां वार्षिक कुलपति सम्मेलन, 11वां विचार–मंथन सत्र और 12वां विचार–मंथन सत्र का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नवार है;

आईएयूए की नौवीं क्षेत्रीय बैठकः भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) की 9वीं क्षेत्रीय बैठक 23–25 नवंबर 2022 के दौरान 'एनईपी–2020: कृषि विश्वविद्यालयों में लघु अवधि और प्रमाणित पाठ्यक्रमों का महत्व और व्यवहार्यता' पर नवसारी कृषि विश्वविद्यालय (एनएयू), नवसारी, गुजरात में आयोजित की गई थी।

9वीं क्षेत्रीय बैठक के उदघाटन समारोह में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री माननीय श्री कैलाश चौधरी ने वर्चुअल रूप से मुख्य अतिथि के तौर पर सहभागिता की जबकि डॉ. जेड.पी. पटेल, कुलपति, एनएयू, नवसारी ने अध्यक्ष के रूप में; डॉ. किशोर सिंह चंदा, कुलपति, वीर नर्मद सिंह गुजरात विश्वविद्यालय (वीएनएसजीयू), सूरत और श्री किरणभाई पटेल, संयुक्त प्रबंध निदेशक, एएसपीईई ग्रुप ऑफ कंपनीज ने सम्मानित अतिथि के रूप में; डॉ. रामेश्वर सिंह, कुलपति, बीएएसयू, पटना एवं अध्यक्ष, आईएयूए; और डॉ. दिनेश कुमार, कार्यकारी सचिव, आईएयूए ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

इस बैठक में भारतीय बागवानी एवं पशु विज्ञान/पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों सहित अनेक कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने भाग लेकर अपने अनुभवों और ज्ञान का परस्पर आदान–प्रदान किया। विचार–विमर्श मुख्य रूप से बैठक के केंद्रीय विषय पर आधारित था। निम्नलिखित सत्रों के दौरान, उदघाटन और पूर्ण सत्र के अलावा तीन उप–विषयों के सत्रों को आधारित किया गयाः

सत्र 1: तकनीकी और व्यावसायिक कौशल विकास शिक्षा के लिए कृषि विश्वविद्यालयों में प्रमाणित पाठ्यक्रमों की संकल्पना

सत्र 2: कृषि विश्वविद्यालयों में अल्पकालिक प्रमाणित पाठ्यक्रमों को तैयार करने के लिए एनईपी की चुनौतियाँ और अवसर

सत्र 3: एनईपी–2020–भावी कौशल का विकास

आईएयूए के कुलपतियों का 46वाँ वार्षिक सम्मेलनः भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) के सदस्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों का 46वाँ वार्षिक सम्मेलन पंडित दीन दयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो–अनुसंधान संस्थान (डीयूवीएएसयू), मथुरा, उत्तर प्रदेश द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: कृषि विश्वविद्यालयों में कार्यान्वयन' विषय पर 26–27 दिसंबर, 2022 को डीयूवीएएसयू, मथुरा में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में भारत से लगभग 45 कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, डीन और निदेशकों ने भाग लिया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्रीमती आनंदीबेन पटेल, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश को आमंत्रित किया गया था। माननीय राज्यपाल ने ऑनलाइन माध्यम में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कृषि क्षेत्र में नई शिक्षा प्रणाली के महत्व को समझाया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि किसानों की समस्याओं का व्यापक समाधान उपलब्ध करवाने के लिए भारतीय कृषि विश्वविद्यालयों को अहम भूमिका निभाने की सख्त आवश्यकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, डॉ. आर. सी. अग्रवाल, उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (एनईपी–2020) उच्च शिक्षण संस्थानों, विशेषकर तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संस्थानों को एक अवसर प्रदान करती है जिससे वे एक ऐसी शिक्षा प्रणाली सृजित करें जो देश को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में रुपांतरित करने में अपना प्रत्यक्ष योगदान दें। डुवासु (डीयूवीएएसयू) के कुलपति प्रो. ए. के. श्रीवास्तव ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करते हुए देश की वर्तमान कृषि शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने के लिए इस विषय पर विभिन्न विशेषज्ञों की सलाह की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य वैज्ञानिक सोच एवं रचनात्मक संकल्पना के साथ तार्किक रूप से सोचने और कार्य करने की क्षमता रखने वाले सर्वोत्तम विशेषज्ञों को विकसित करना है।

दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान तीन तकनीकी सत्र आयोजित किये गये जिनमें कृषि एवं संबंधित विषयों में नई शिक्षा प्रणाली लागू करने पर गहन चर्चा हुई। सत्र के दौरान चर्चा के मुख्य विषय थे– कृषि विश्वविद्यालयों में एनईपी 2020 का कार्यान्वयन; स्नातक स्तर पर अध्ययन

हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का कार्यान्वयन; नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रौद्योगिकी–सक्षम हस्तक्षेप एवं रणनीतियाँ; कृषि में कृषि–व्यवसाय के अवसर; कृषि में कौशल विकास हेतु लघु अवधि और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम; पशुपालन क्षेत्र में कौशल विकास एवं लघु पाठ्यक्रम तथा आत्मनिर्भर भारत के लिए कृषि शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ जोड़ना। सम्मेलन का दूसरा दिन अंतर्राष्ट्रीय श्रीअन्न वर्ष–2023 के शुभारंभ के साथ प्रारंभ हुआ जिसमें तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर की कुलपति डॉ. वी. गीतालक्ष्मी ने श्रीअन्न के महत्व तथा उनकी उपलब्धता तथा लाभों को रेखांकित किया। सम्मेलन के दूसरे दिन समापन सह पूर्ण सत्र रखा गया जिसमें श्री सूर्य प्रताप शाही, कैबिनेट मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान, उत्तर प्रदेश सरकार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री शाही ने दैनिक जीवन में श्रीअन्न का महत्व और इनसे बने आहार की उपयोगिता को बताया। इसके साथ ही उन्होंने उच्च कृषि शिक्षा के क्षेत्र में नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन पर जोर दिया। भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) के अध्यक्ष तथा बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना के कुलपति डॉ. रामेश्वर सिंह ने दो दिवसीय रिपोर्ट प्रस्तुत की और उच्च कृषि शिक्षा के क्षेत्र में नई शिक्षा नीति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। यह निष्कर्ष निकाला गया कि देश में उच्च कृषि शिक्षा क्षेत्र में उच्चतम गुणवत्ता, समानता और एकात्मकता प्राप्त करने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच मौजूदा अंतर को मिटाने के लिए नई शिक्षा प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है।

विचार–मंथन ग्यारहवां सत्रः प्राकृतिक संसाधनों के क्षरण और उभरती चुनौतियों के साथ–साथ सुलभ अवसरों को ध्यान में रखते हुए भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए), नई दिल्ली का 11वां विचार–मंथन सत्र 07–08 अप्रैल 2023 के दौरान 'सतत राष्ट्रीय संसाधन प्रबंधन में नवोन्मेष' विषय पर रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरएलबीसीएयू), झांसी में आयोजित किया गया।

प्रारंभिक एवं समापन सत्र के अलावा, इस कार्यक्रम के दौरान निम्नलिखित तकनीकी सत्र आयोजित किए गएः

- मृदा एवं जल संसाधनों का सतत प्रबंधन
- पशु एवं मत्स्य संसाधनों का सतत प्रबंधन
- जैव विविधता सहित पादप संसाधनों का सतत प्रबंधन
- जलवायु अनुकूल प्रणालियों
- एआई, आईओटी, ब्लॉक चेन, एग्री–ड्रोन, मिलाजुला शिक्षण सहित नवोन्मेषों का समावेश।

विभिन्न राज्यों के कृषि, बागवानी एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने विचार–मंथन सत्र में भाग लिया। इसके अलावा, कुलपतियों के प्रतिनिधि, भाकृअनुप के वरिष्ठ अधिकारी और नास के उपाध्यक्ष भी इस विचार मंथन सत्र में शामिल हुए और सक्रिय रूप से भाग लिया।

पद्म भूषण डॉ. आर.एस. परोदा, पूर्व सचिव, डेयर एवं भाकृअनुप के महानिदेशक और अध्यक्ष, टीएएएस, नई दिल्ली इस उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे। डॉ. पंजाब सिंह, पूर्व सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप एवं कुलाधिपति, आरएलबीसीएयू, झाँसी ने अंतिम सत्र की अध्यक्षता की। इसके अलावा, डॉ. पी. एल. गौतम, पूर्व अध्यक्ष, पीपीवी एवं एफआरए, नई दिल्ली एवं एनबीए, चेन्नई तथा पूर्व उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), भाकृअनुप; डॉ. एस. के. चौधरी, उपमहानिदेशक (एनआरएम), भाकृअनुप, नई दिल्ली; डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी), भाकृअनुप, नई दिल्ली; डॉ. पी. दास, पूर्व उपमहानिदेशक (कृषि विस्तार) तथा डॉ. ए.के. सिंह, उपाध्यक्ष, एनएएएस, नई दिल्ली ने भी विभिन्न सत्रों के दौरान प्रतिनिधियों को संबोधित किया। विशेषज्ञों ने अपने अनुभवों को बताया और प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊ प्रबंधन के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किए।

बारहवां विचार–मंथन सत्रः भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ (आईएयूए) का 12वां विचार–मंथन सत्र 24–25 अगस्त 2023 को शेर–ए–कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय–कश्मीर (एसकेयूएएसटी–के), श्रीनगर में 'नेतृत्व, उद्यमिता, रोजगार एवं खोज (एलईईडी) हेतु कृषि शिक्षा को पुनः परिभाषित करने' पर आयोजित किया गया।

विचार–मंथन सत्र में पाठ्यक्रम तैयार करने, शिक्षण पद्धतियों और छात्र मूल्यांकन की नूतन विधियों पर चर्चा करने के लिए विशेषज्ञों को एक मंच पर लाया गया, ताकि कृषि विज्ञान में कुशल और रोजगारपरक योग्य स्नातक तैयार किए जा सकें। विचार–मंथन सत्र में तकनीकी सत्रों में से प्रत्येक में कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान से संबंधित महत्वपूर्ण उप–विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इन सत्रों का नेतृत्व प्रतिष्ठित वक्ताओं ने किया और अपनी विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि को साझा किया। प्रत्येक तकनीकी सत्र में मुख्य व्याख्यान के बाद कुलपति और अन्य विशेषज्ञों की पैनल चर्चा सम्पन्न हुई। उपस्थित प्रतिभागियों को एनईपी–2020 के अनुरूप कृषि शिक्षा के भविष्य के बारे में जानने, कृषि और संबंधित क्षेत्रों में कौशल अंतर (स्किल डिवाइड) को कम करने, इंक्यूबेशन को बढ़ावा देने, नवोन्मेष और स्टार्ट–अप के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ाने और कृषि फार्मों के आधुनिकीकरण के लिए कृषि–4 प्रौद्योगिकियों (एआई, एमएल, आईओटी और ऑटोमेशन) की क्षमता को अधिकतम करने का अवसर मिला। विचार–मंथन सत्र ने प्रतिभागियों को परस्पर नेटवर्क बनाने, विचारों एवं सर्वोत्तम प्रक्रियाओं को साझा करने तथा कृषि शिक्षा के भविष्य में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान किया।

संसाधनों को साझा करने हेतु कई कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा एक बहु–पक्षीय समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर भी हस्ताक्षर किए गए, जो छात्रों और संकाय के आदान–प्रदान

में मदद करेगा। निम्नलिखित तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया :

तकनीकी सत्र– I: संकल्पना से प्रभाव तकः कृषि विश्वविद्यालयों में इन्क्यूबेशन, नवोन्मेष और स्टार्ट–अप के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा देना

तकनीकी सत्र– II: कृषि शिक्षा का भविष्यः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ तालमेल

तकनीकी सत्र– III: अंतर को पाटनाः कृषि और संबंधित क्षेत्रों में अंतर को कम करना

तकनीकी सत्र– IV: कृषि फार्मों के आधुनिकीकरण के लिए कृषि–4 प्रौद्योगिकियों (एआई, एमएल, आईओटी और स्वचालन) की क्षमता को अधिकतम करना।

इसके अलावा, आयोजन के दौरान 'हितधारकों को शामिल करते हुए भारत में कृषि पारितंत्र में सुधार' पर एक विशेष आईएयूए का विशेष सत्र भी आयोजित किया गया।

आईसी–II अनुभाग (डेयर)

(क) विदेशी प्रतिनियुक्ति के मामले

(i) कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में संयुक्त राष्ट्र/अंतर्राष्ट्रीय संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के विज्ञापनों तथा डीबीटी/डीएसटी, भारत सरकार द्वारा घोषित विभिन्न विदेशी सरकारों के तहत विदेशों में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए आवेदनों की प्रक्रिया को पूरा करना।

(ii) विदेशों में उच्च अध्ययन/अनुसंधान/पीएचडी/पोस्ट डॉक्टरेट अनुसंधान के लिए आईसीएआर, एचआरडी, विदेशी सरकारों द्वारा घोषित विभिन्न फेलोशिप/छात्रवृत्तियों के लिए आवेदनों की प्रक्रिया को पूरा करना।

(iii) विदेशी सरकारों एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में विदेशी प्रतिनियुक्ति हेतु वैज्ञानिकों के आवेदनों की प्रक्रिया को पूरा करना।

(iv) सीजीआईएआर संगठनों, अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों/एजेंसियों जैसे एडीबी, विश्व बैंक, राष्ट्रमंडल सचिवालय, संयुक्त राष्ट्र आदि द्वारा अधिसूचित रिक्तियों का परिचालन।

(v) इस विभाग द्वारा विदेशी संगठन/संस्थानों में विभिन्न प्रकार की फेलोशिप/प्रशिक्षणों के लिए कुल 26 भाकृअनुप के वैज्ञानिकों (परिशिष्ट–I) को अनुमति दी गई।

(vi) अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में फेलोशिप/प्रशिक्षण के विस्तार के लिए 5 वैज्ञानिकों (परिशिष्ट–II) को अनुमति दी गई और

(vii) अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में फेलोशिप/प्रशिक्षण के पुनर्निर्धारण के लिए 11 वैज्ञानिकों (परिशिष्ट III) को अनुमति दी गई।

(viii) अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण/फ़ेलोशिप में आवेदन करने के लिए भाकृअनुप के 04 वैज्ञानिकों को एनओसी प्रदान की गई (परिशिष्ट–IV)।

(ix) भाकृअनुप के वैज्ञानिकों (कुल 131 वैज्ञानिक) की सूची, जिन्हें इस विभाग द्वारा विदेशी संगठनों/संस्थानों में तदर्थ दौरे (एडहॉक विजिट) की अनुमति दी गई थी (परिशिष्ट–V)।

(ख) जननद्रव्य का विनियम

1. जैविक विविधता अधिनियम, 2002 और जैविक विविधता नियम, 2004 के प्रावधानों/दिशानिर्देशों के अनुसार जननद्रव्य के निर्यात के मामलों को आईसी–II अनुभाग में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा समय–समय पर जारी दिशानिर्देशों/अधिसूचनाओं के अनुपालन के पश्चात अंतिम निर्णय लिया जाता है।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा जैविक संसाधनों के विभिन्न वर्गों के लिए भाकृअनुप प्रणाली के तहत 06 ब्यूरो/संस्थानों को बीडी अधिनियम, 2002 के तहत रिपॉजिटरी के रूप में कार्य संचालन हेतु नामित किया गया है.

(i) एनबीपीजीआर–पादप जननद्रव्य के आदान–प्रदान के लिए

(ii) एनबीएजीआर–पशु जननद्रव्य के आदान–प्रदान के लिए

(iii) एनबीएफजीआर–मत्स्य जननद्रव्य के आदान–प्रदान के लिए

(iv) एनबीएआईआर–कृषि के लिए महत्वपूर्ण कीटों के जननद्रव्य के आदान–प्रदान के लिए

(v) एनबीएआईएम–कृषि के लिए महत्वपूर्ण सूक्ष्मजीवों के जननद्रव्य के आदान–प्रदान के लिए

(vi) आईएआरआई–शैवाल और कवक के जननद्रव्य के आदान–प्रदान के लिए

2. जननद्रव्य विनिमय के मामलों को ब्यूरो/संस्थान/विषय वस्तु प्रभाग के परामर्श से सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन के लिए डेयर में निपटाया जाता है।

3. आनुवंशिक संसाधनों के आदान–प्रदान के लिए भाकृअनुप को सम्मिलित करते हुए हस्ताक्षरित/सहमत सहयोगी अनुसंधान परियोजनाओं के आधार पर अधिकृत राष्ट्रीय ब्यूरो के माध्यम से भाकृअनुप से संबंधित वैज्ञानिकों के मामलों को जैव विविधता अधिनियम के प्रावधानों और इसमें अधिसूचित दिशानिर्देशों के अनुसार निपटाया किया गया।

4. सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से भाकृअनुप–एनबीपीजीआर, नई दिल्ली को अवगत करवाया गया।

i. सहयोगी अनुसंधान परियोजना संख्या 6 (गेहूं प्रध्वंस अनुसंधान, प्रतिरोधिता, फेनोटाइपिंग और प्रशिक्षण) के तहत गेहूं के प्रध्वंस एवं अन्य रोगों की स्क्रीनिंग के लिए बांग्लादेश और मैक्सिको को पाइपलाइन में शामिल किस्मों और गेहूं की अग्रिम वंशावलियों सहित 350×2 सेट (700 नमूने) जीनोटाइप के बीजों के निर्यात हेतु, सिमिट इंडिया के माध्यम से कार्य योजना वर्ष 2022–27 के तहत अनुमोदन प्रदान किया गया।

ii. भारत–जर्मन सहयोग के तहत डीबीटी द्वारा वित्त पोषित परियोजना " भारत के कॉलोनाइजेशन के दौरान चौलाई दाना (ग्रेन ऐमारैंथ) द्वारा रूपात्मक एवं आइसोनोमिक अनुकूलन का आनुवंशिक नियंत्रण" के तहत कोलोन विश्वविद्यालय, बॉटनिकल संस्थान, बायोज़ेंट्रम, जर्मनी को *ऐमारैंथस* प्रजाति (494 प्रभेदों) का निर्यात।

iii. एसटीओएल परियोजना "उप–सहारा अफ्रीका और भारत में बारानी (प्रभेदों) खेती प्रणालियों में उपयोग के लिए तनाव के प्रति सहिष्णु ऑर्फन फलियों का विकास" के तहत इस परियोजना के भागीदार नामीबिया को फलीदार फसलों (लोबिया के 45 प्रभेदों) का निर्यात।

(ग) वार्षिक सदस्यता अंशदान

i. वर्ष 2020–21 के लिए सेंटर फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चरल मैकेनाइजेशन, सीएसएएम (यूएनईएससीएपी के क्षेत्रीय संस्थान) बीजिंग, चीन को 15,000 अमेरिकी डॉलर का वार्षिक सदस्यता योगदान 16 मार्च 2023 को जारी किया गया।

ii. बीज परीक्षण प्रयोगशाला, आईएआरआई, नई दिल्ली की ओर से अंतर्राष्ट्रीय बीज परीक्षण प्रयोगशाला (आईएसटीए), स्विट्जरलैंड को वार्षिक अंशदान स्वरूप 5214 सीएचएफ (स्विस फ्रैंक) की राशि 8 फरवरी, 2023 को इस वर्ष के लिए जारी की गई।

iii. सीएबीआई, यू.के. को 56,000 जीबीपी का वार्षिक योगदान 8 फरवरी, 2023 को जारी किया गया।

आईसी-III अनुभाग

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग–III अनुभाग, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के सहयोग के लिए विदेशी सरकारों, विदेशी राष्ट्रीय परियोजना के तहत संस्थानों और विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ कृषि अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में समझौता ज्ञापन (एमओयू) के हस्ताक्षर की प्रक्रिया का कार्य संपादित करता है।

- वैज्ञानिकों और प्रौद्योगिकीविदों का आदान–प्रदान
- जननद्रव्य और प्रजनन सामग्री का आदान–प्रदान
- वैज्ञानिक साहित्य, सूचना और कार्यप्रणाली का आदान–प्रदान
- पारस्परिक हित के कार्यक्रमों में उपलब्ध और अपेक्षित वैज्ञानिक उपकरणों के आदान–प्रदान पर सहमति

समझौता ज्ञापन (एमओयू)

संयुक्त रूप से विकसित कार्य योजनाओं के माध्यम से एमओयू को कार्यान्वित किया जाता है जिसमें विशेष रूप से एमओयू के तहत संपादित क्रियाकलापों का वर्णन होता है।

भारत-अफ्रीका फोरम सम्मिट

भारत अफ्रीका फोरम सम्मिट के तहत विभिन्न परियोजनाओं को तैयार करने के लिए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग (डेयर) को नोडल विभाग के रूप में नामित किया गया है। भाकृअनुप– भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान (आईआईएसएस), भोपाल को भारत अफ्रीका फोरम सम्मिट के तहत ट्यूनीशिया में मृदा, जल और ऊतक परीक्षण प्रयोगशाला (एसडब्ल्यूटीटीएल) की स्थापना के लिए नोडल संस्थान के रूप में नामित किया गया है। भारतीय विशेषज्ञता के तहत मृदा, जल ऊतक परीक्षण प्रयोगशाला की स्थापना से मृदा संसाधनों के संरक्षण में सुविधा होगी और ट्यूनीशिया में उगाई जाने वाली फसलों के लिए संतुलित उर्वरकों का अनुप्रयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के परामर्श से इस प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

देश में आयोजित दौरे

सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित दौरे किए गए : –

1) वर्ल्ड रेफरेंस लेबोरेटरी फॉर फुट एंड माउथ डिजीज (एफएमडी), पीरब्राइट इंस्टीट्यूट, युनाइटेड किंग्डम के 5 वैज्ञानिकों ने 6–8 फरवरी 2023 के दौरान भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हेब्बल, बेंगलुरु का दौरा किया।

2) डॉ. संजीव कुमार श्रीवास्तव, एसोसिएट प्रोफेसर, सनशाइन कोस्ट विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया ने 20 फरवरी, 2023 को भाकृअनुप–सीआरआईजेएएफ, बैरकपुर का दौरा किया तथा 21–25 फरवरी, 2023 तक सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में "प्रोटेक्टिंग इकोसिस्टम" और सुंदरवन की आजीविका, एक विश्व धरोहर स्थल नामक बहुराष्ट्रीय परियोजना के तहत वन और जूट आधारित पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर प्राकृतिक खतरों के प्रभाव का आकलन किया।

3) मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी (एमएसयू) के 10 छात्रों ने 11–27 जुलाई, 2023 के दौरान केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि का दौरा किया।

विदेशों में आयोजित दौरे

सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत विदेशों में निम्नलिखित दौरे किए गए :

1. भाकृअनुप–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरू के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. टी.एच. सिंह ने 10–14 अक्तूबर, 2022 तक नीदरलैंड में आयोजित "टमाटर (ग्रीनहाउस) पर डीयूएस परीक्षण से संबंधित अध्ययन यात्रा और परामर्श बैठक" के लिए नीदरलैंड का दौरा (यात्रा के समय को छोड़कर) किया।
2. भाकृअनुप–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी के वैज्ञानिक डॉ. वाई. सुरेश रेड्डी ने 10–14 अक्तूबर 2022 तक नीदरलैंड में आयोजित "टमाटर (ग्रीनहाउस) पर डीयूएस परीक्षण से संबंधित नीदरलैंड की अध्ययन यात्रा और परामर्श बैठक" के लिए दौरा (यात्रा समय को छोड़कर) किया।
3. डॉ. गौरंगा कर, निदेशक, भाकृअनुप–केंद्रीय जूट एवं संबद्ध रेशा अनुसंधान संस्थान (क्राइजेफ), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल ने 17–18 फरवरी, 2023 को युनाइटेड इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी, ढाका में फील्ड विजिट और प्रोजेक्ट वर्कशॉप के लिए दौरा (यात्रा के समय को छोड़कर) किया तथा एशिया पेसिफिक नेटवर्क फॉर ग्लोबल चेंज रिसर्च (एपीएन जीसीआर), जापान (मुख्यालय) और सनशाइन कोस्ट विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया द्वारा वित्त पोषित एक बहुराष्ट्रीय परियोजना ''सुंदरबन एक विश्व धरोहर स्थल के पारितंत्र और आजीविका की रक्षा : वन और जूट–आधारित पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर प्राकृतिक खतरों के प्रभाव'' का आकलन किया।
4. डॉ. सोमनाथ कडप्पा होलकर, वैज्ञानिक (पादप रोगविज्ञान), भाकृअनुप–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केंद्र, पुणे ने 11–16 जून 2023 को संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित "संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वच्छ पादप केंद्रों हेतु एडीबी अध्ययन दौरे" में भाग लिया। (यात्रा समय को छोड़कर)।
5. डॉ. जॉय कृष्णा जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भाकृअनुप, मुख्यालय ने 7–9 अगस्त 2023 (यात्रा के समय को छोड़कर) के दौरान चियांग माई, थाईलैंड में आयोजित "एशिया प्रशांत में एक्वाकल्चर केंद्रों के नेटवर्क की 32वीं गवर्निंग काउंसिल की बैठक (एनएसीए)" नामक तदर्थ कार्यशाला में भाग लिया।
6. डॉ. विश्व बंधु पटेल, एडीजी (फल और रोपण फसलें), बागवानी विज्ञान प्रभाग, भाकृअनुप ने 11–17 जून 2023 तक (यात्रा के समय को छोड़कर) संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस में स्वच्छ पादप केंद्रों के लिए एशियाई विकास बैंक (एडीबी) और वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका के अध्ययन दौरे में भाग लिया।
7. डॉ. धीरज सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–काजरी–केवीके, पाली, राजस्थान ने एशियाई विकास बैंक संस्थान (एडीबीआई), क्वींसलैंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय और ऑस्ट्रेलियाई अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र (एसीआईएआर) द्वारा सह–आयोजित "दक्षिण एशिया के लिए कृषि क्षेत्र में जलवायु अनुकूलन और समावेशी विकास" नामक तदर्थ कार्यशाला में भाग लेने के लिए 12–16 जून 2023 (यात्रा के समय को छोड़कर) के दौरान काठमांडू, नेपाल का दौरा किया।
8. डॉ. दिलीप कुमार घोष, निदेशक, भाकृअनुप–सीसीआरआई, नागपुर ने 11–17 जून 2023 तक (यात्रा के समय को छोड़कर) एशियाई विकास बैंक (एडीबी) द्वारा प्रायोजित संयुक्त राज्य अमेरिका में सम्पन्न ''कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस और वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वच्छ पादप केंद्रों'' के अध्ययन दौरे में भाग लिया।
9. डॉ. सुशील कुमार शर्मा, वैज्ञानिक, आईसीएआर–आईएआरआई, नई दिल्ली ने 11–17 जून 2023 तक (यात्रा के समय को छोड़कर) एशियाई विकास बैंक (एडीबी) द्वारा प्रायोजित संयुक्त राज्य अमेरिका में सम्पन्न ''संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वच्छ पादप केंद्रों'' के अध्ययन दौरे में भाग लिया।
10. डॉ. गौरंगा कर, निदेशक, भाकृअनुप–केंद्रीय जूट एवं संबद्ध रेशा अनुसंधान संस्थान (क्राइजेफ), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल ने 10 से 14 जुलाई 2023 तक (यात्रा समय को छोड़कर) सनशाइन कोस्ट विश्वविद्यालय, मोरेटन बे कैम्पस, क्वींसलैंड, ऑस्ट्रेलिया में आयोजित एक कार्यशाला में भाग लिया।
11. डॉ. राकेश भारद्वाज, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, पूसा, नई दिल्ली ने 2–8 जुलाई 2023 के दौरान मृदा विज्ञान एवं पादप संवर्द्धन संस्थान– राज्य अनुसंधान संस्थान, पुलावी, पोलैंड में (यात्रा समय को छोड़कर) में आयोजित "बकव्हीट पर 15वीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" नामक तदर्थ संगोष्ठी में भाग लिया।
12. डॉ. बी. दयाकर राव, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय श्रीअन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 18–20 जुलाई, 2023 (यात्रा समय को छोड़कर) के दौरान ढाका, बांग्लादेश में ''संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के क्षेत्रीय लॉन्च कार्यक्रम : एक देश एक उत्पाद तथा एशिया और प्रशांत क्षेत्र में ओसीओपी देशों की परियोजनाओं के कार्यान्वयन ''नामक तदर्थ कार्यशाला में भाग लिया।

13. डॉ. प्रमोद कुमार साहू, निदेशक, भाकृअनुप–मीठा जल जीव–पालन अनुसंधान संस्थान, भुबनेश्वर ने 7–9 अगस्त, 2023 (यात्रा समय को छोड़कर) के दौरान चियांग माई, थाईलैंड में "एशिया–प्रशांत में एक्वाकल्चर केंद्रों के नेटवर्क की 32वीं गवर्निंग काउंसिल की बैठक" नामक तदर्थ कार्यशाला में भाग लिया।
14. डॉ. अमरेश कुमार नायक, निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान, कटक, ओडिशा ने "धान पारितंत्र में जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन तथा उत्तरी इटली के धान उगाने वाले जिलों के खेतों का दौरा" नामक कार्यशाला में भाग लेने और रेजिलिएंस परियोजना की समीक्षा बैठक में भाग लेने के लिए 4–8 सितंबर, 2023 तक (यात्रा समय को छोड़कर) दौरा किया।
15. डॉ. राघवेंद्र भट्ट, निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशुपोषण एवं शरीरक्रिया विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु ने 7–16 सितंबर 2023 तक (यात्रा समय को छोड़कर) सहयोगात्मक अनुसंधान कार्य "सस्टेनेबल रूर्बनिटी – रिसोर्सेज सोसाइटी, एंड रेगुलेटरी सिस्टम्स पर एक बहु–केंद्रीय सहयोगात्मक अनुसंधान प्रस्ताव टीआरआर 373" जिसे गोटिंगेन विश्वविद्यालय, जर्मनी द्वारा तैयार तथा जर्मन रिसर्च फाउंडेशन (डीएफजी) द्वारा वित्त पोषित किया था, में भाग लेने के लिए जर्मनी का दौरा किया।
16. डॉ. अरविंद कुमार राय, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने 10–16 सितंबर 2023 (यात्रा समय को छोड़कर) के दौरान ''भाकृअनुप–सीएसएसआरआई–जेआईआरसीएएस की सहयोगी परियोजना–भारत के जल संकटग्रस्त क्षेत्रों में टिकाऊ संसाधन प्रबंधन प्रणालियों का विकास'' के तहत बारानी भूमि में सतत भूमि प्रबंधन पर विचार–विमर्श के लिए जापान का दौरा किया।
17. डॉ. सत्येन्द्र कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने 10–16 सितंबर 2023 (यात्रा समय को छोड़कर) के दौरान ''भाकृअनुप–सीएसएसआरआई–जेआईआरसीएएस की सहयोगी परियोजना–भारत के जल संकटग्रस्त क्षेत्रों में टिकाऊ संसाधन प्रबंधन प्रणालियों का विकास'' के तहत बारानी भूमि में सतत भूमि प्रबंधन पर विचार–विमर्श के लिए जापान का दौरा किया।
18. डॉ. राजेंद्र कुमार यादव, निदेशक, भाकृअनुप–केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने 10–16 सितंबर 2023 (यात्रा समय को छोड़कर) के दौरान ''भाकृअनुप– सीएसएसआरआई–जेआईआरसीएएस की सहयोगी परियोजना–भारत के जल संकटग्रस्त क्षेत्रों में टिकाऊ संसाधन प्रबंधन प्रणालियों का विकास'' के तहत बारानी भूमि में सतत भूमि प्रबंधन पर विचार–विमर्श के लिए जापान का दौरा किया।
19. डॉ. टी. एच. सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु ने 25–29 सितंबर, 2023 (यात्रा के समय को छोड़कर) के दौरान ''नीदरलैंड में नेक्टुइनबौ (द नीदरलैंड इंस्पेक्शन सर्विस इन हॉर्टिकल्चर रोलोफारेन्ड्सवीन (नीदरलैंड्स) के विशेषज्ञों के साथ ग्रीनहाउस में टमाटर पर डीयूएस परीक्षण से संबंधित अनुभवों के आदान–प्रदान के लिए यूपीओवी सिस्टम बनाम पीपीवी एवं एफआरए द्वारा भारतीय डीयूएस परीक्षण के अनुसार टमाटर की प्रजातियों के संबंध में डीयूएस परीक्षण के सिद्धान्तों और प्रक्रियाविधि को समझने में सहायक'' अध्ययन दौरे के लिए नीदरलैंड की यात्रा की।
20. डॉ. येरासु सुरेश रेड्डी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी ने 25–29 सितंबर, 2023 (यात्रा के समय को छोड़कर) के दौरान ''नीदरलैंड में नेक्टुइनबौ (द नीदरलैंड इंस्पेक्शन सर्विस इन हॉर्टिकल्चर रोलोफारेन्ड्सवीन (नीदरलैंड्स) के विशेषज्ञों के साथ ग्रीनहाउस में टमाटर पर डीयूएस परीक्षण से संबंधित अनुभवों के आदान–प्रदान के लिए यूपीओवी सिस्टम बनाम पीपीवी एवं एफआरए द्वारा भारतीय डीयूएस परीक्षण के अनुसार टमाटर की प्रजातियों के संबंध में डीयूएस परीक्षण के सिद्धान्तों और प्रक्रियाविधि को समझने में सहायक'' अध्ययन दौरे के लिए नीदरलैंड की यात्रा की।
21. डॉ. विनोद कुमार सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने 2–3 नवंबर, 2023 के दौरान (यात्रा समय को छोड़कर) भूटान में "एशिया में कृषि–पशुधन–वानिकी नेक्सस : किसानों की आजीविका, मृदा स्वास्थ्य में सुधार हेतु योगदान और संभावनाएं तथा जलवायु परिवर्तन का अनुकूलन और शमन" नामक तदर्थ सम्मेलन में भाग लिया।

परियोजना कार्य

1) 'ग्रेन ऐमारैंथ द्वारा भारत के कॉलोनाइजेशन के दौरान रूपात्मक और आर्थिक अनुकूलन का आनुवंशिक नियंत्रण' नामक विदेशी सहयोगी परियोजना को जर्मन रिसर्च फाउंडेशन के साथ इंडो–जर्मन सहयोग के तहत डीएसटी द्वारा वित्त प्रदान किया जाएगा।
2) ऑस्ट्रेलिया–भारत अनुदान द्वारा वित्त पोषित कार्यक्रम में सहभाग हेतु डॉ. ज्ञानेंद्र सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–आईवीआरआई, इज्जतनगर का परियोजना प्रस्ताव–डीएफएटी ऑस्ट्रेलिया अनुदान कार्यक्रम वर्ष 2020–21, रुचि की अभिव्यक्ति–मेलबर्न विश्वविद्यालय

के तहत परियोजना शीर्षक–"स्थायी पशुधन उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए ऑस्ट्रेलिया भारत सहयोग"

3) मेसर्स एमएसडी एनिमल हेल्थ–इंटरवेट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड से संविदात्मक अनुसंधान प्रस्ताव, "भारत के कुक्कुट समूह में मारेक रोग की वर्तमान स्थिति"

4) अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) द्वारा वित्त पोषित "जीएचजी उत्सर्जन को कम करने, नाइट्रोजन उपयोग दक्षता और पशुधन उत्पादकता में सुधार के लिए कृषि–औद्योगिक/समुद्री शैवाल कचरे का पशु आहार के रूप में उपयोग"

5) "भारत की विविध देसी भैंस नस्लों में जीनोमिक विविधता, रुमष्टि संरचना और जनसांख्यिकीय गतिशीलता का चित्रण" नामक शीर्षक से भाकृअनुप–एनबीएजीआर, करनाल की आईएईए परियोजना

6) परियोजना प्रस्ताव "विकासशील देशों में परमाणु संबंधी जीनोमिक सूचना–व्यावहारिक अनुप्रयोगों के उपयोग द्वारा पशु प्रजनन कार्यक्रमों की दक्षता में सुधार," आईएईए, ऑस्ट्रिया

7) सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना जिसका शीर्षक है "भारतीय भैंस में बेहतर स्थानिक लक्षणों के लिए जीनोम एडिटिंग", जिसे बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन को प्रस्तुत किया जाना है

8) सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना जिसका शीर्षक है "कोलैबोरेटर, यूएसए के *ओराइजा कोरक्टाटा* इकोटाइप्स की आनुवंशिक विविधता और समष्टि संरचना का अध्ययन'', जिसे किंग अब्दुलाह यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (केएयूएसटी), थुवाल, सऊदी अरब को प्रस्तुत किया जाना है

9) विदेशी वित्त पोषित कांट्रेक्ट अनुसंधान परियोजना जिसका शीर्षक है "सिंधु–गंगा के मैदानी इलाकों के तहत मक्का–गेहूं प्रणाली की उत्पादकता एवं लाभप्रदता तथा पोषक तत्व उपयोग दक्षता पर यूरिया के विकल्प के रूप में एल्डोर का तुलनात्मक मूल्यांकन"

10) भारत में *बैसिलस एन्थ्रेसीस* (ओएचएआई) के लिए आणविक महामारी विज्ञान और जोखिम मूल्यांकन हेतु एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण के तहत "आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रणाली का उपयोग करके एंथ्रेक्स का जोखिम अनुमान एवं पूर्वानुमान तथा रिस्क मैपिंग और संचार" नामक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना को पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी के माध्यम से डिफेंस थ्रेट रिडक्शन एजेंसी, (डीटीआरए), यूएसए द्वारा वित्त पोषित किया जाएगा

11) फ़ॉल आर्मीवर्म के प्रबंधन हेतु माइक्रोबियल जैविक कीटनाशकों का किसानों हेतु प्रशिक्षण और प्रदर्शन आयोजित करने के लिए एक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना को एक सहमति पत्र द्वारा एफएओ वित्त प्रदान करेगा

12) यूके सेंटर फॉर इकोलॉजी एंड हाइड्रोलॉजी (यूकेसीईएच) के माध्यम से चिकित्सा अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना "इंडोज़ूरिस्कः भारत में वन समुदायों को प्रभावित करने वाले पशुजनित (जूनोटिक) रोगों को समझने और हस्तक्षेपों को सहविकसित करने के लिए एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण का उपयोग करना"

13) परियोजना का विस्तार "उप–सहारा अफ्रीका और भारत में बारानी कृषि प्रणालियों के लिए तनाव सहिष्णु ऑर्फन फलियों का मूल्यांकन"–नीतिगत सहयोग के लिए भारत–अफ्रीका फ्रेमवर्क को बढ़ावा देना

14) फ़ॉल आर्मीवॉर्म प्रबंधन के लिए बीज उपचार–आधारित फ़ील्ड परीक्षणों और कृषि–पारिस्थितिकी विकल्पों हेतु एक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना

15) "खाद्य सुरक्षा बढ़ाने के लिए बायोएक्टिव पेप्टाइड्स के स्रोत के रूप में मांस एवं पोल्ट्री उद्योग के उपोत्पाद : रूस और भारत के लिए टिकाऊ एवं सर्कुलर रिकवरी मॉडल'' पर प्रस्ताव

16) "जलवायु परिवर्तन के तहत तोरिया और सरसों की टिकाऊ खेती के लिए ताप–तनाव में शरीर क्रियात्मक एवं आणविक तंत्र की पारस्परिक क्रिया तथा तेल अंश पर इसके प्रभाव को स्पष्ट करना" पर प्रस्ताव।

17) भारत की उत्तर–पूर्वी पहाड़ियों में एएमएफ की प्रचुरता और विविधता पर विदेशी वित्त पोषित परियोजना प्रस्ताव के अनुमोदन'' पर प्रस्ताव

18) "मास्टर प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम" पर प्रस्ताव

19) बीज सेक्टर के विकास (उत्तरी, पूर्वी और दक्षिणी क्षेत्र) पर भारत जर्मन द्विपक्षीय सहयोग के तहत "मास्टर प्रशिक्षकों के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम" पर प्रस्ताव

आईसी. IV अनुभाग

अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परामर्शी समूह (सीजीआईएआर) एक वैश्विक साझेदारी है जो भावी खाद्य सुरक्षा हेतु अनुसंधान में लगे अंतरराष्ट्रीय संगठनों को एकसाथ लाती है। सीजीआईएआर द्वारा संचालित अनुसंधान, ग्रामीण गरीबी को कम करने, खाद्य सुरक्षा बढ़ाने, मानव स्वास्थ्य और पोषण में सुधार तथा प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊ प्रबंधन को सुनिश्चित करने की दिशा में समर्पित है। सीजी अनुसंधान के 15 केंद्रों में से, अर्ध–शुष्क उष्णकटिबंध हेतु अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रिसेट) का मुख्यालय भारत में है, जबकि कुछ अन्य अनुसंधान केंद्र जिनके साथ भारत का संबंध है, उनके संपर्क/शाखा कार्यालय में निम्नवार हैं:

- अंतर्राष्ट्रीय अर्ध शुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रिसेट), भारत
- अंतर्राष्ट्रीय मक्का और गेहूं सुधार केंद्र (सिमिट), मैक्सिको;
- अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान (इर्री), मनीला, फिलीपींस;
- अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र (सीआईपी), लीमा, पेरू;
- अंतर्राष्ट्रीय शुष्क क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र (इकार्डा), बेरूत, लेबनान;
- अंतर्राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केंद्र (आईसीआरएएफ), नैरोबी, केन्या;
- बायोवर्सिटी इंटरनेशनल (बीआईओ.आईएनटी), रोम, इटली;
- अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई), यूएसए;
- इंटरनेशनल लाइव रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईएलआरआई), नैरोबी, केन्या; और
- अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (आईडब्ल्यूएमआई), श्रीलंका

अनुसंधान गतिविधियाँ

उपरोक्त अनुसंधान केंद्र अपने विषय क्षेत्र के अनुसार विभिन्न प्रकार की कृषि और इससे सम्बद्ध अनुसंधान गतिविधियों में लगे हुए हैं। इनकी केंद्र–वार गतिविधियां और अनुसंधान के क्षेत्र को संक्षेप में निम्नवार है:

(1) अंतर्राष्ट्रीय अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान (इक्रिसेट)

ज्वार, श्रीअन्न, अरहर और चना के सुधार के लिए इक्रिसेट एक विश्व स्तरीय केंद्र है और इसकी मुख्य गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

- ज्वार, श्रीअन्न, चना व अरहर के उत्पादन से संबंधित पौधों का प्रजनन तथा वे फसल एवं कृषि प्रणालियां जिसमें ये फसलें प्रमुख घटक के तौर पर उगाई जाती हैं के व्यावहारिक और सैद्धांतिक समस्याओं पर अनुसंधान;
- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रजनन, सुधार और उत्पादन कार्यक्रमों में उपयोग के लिए बुनियादी जननद्रब्य और उन्नत पादप सामग्रियों का संग्रह, मूल्यांकन, रखरखाव, हेरफेर और वितरण;

(2) अंतर्राष्ट्रीय मक्का और गेहूं सुधार केंद्र (सिमिट)

सिमिट (सीआईएमएमवाईटी) एक अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र है, जो मक्का और गेहूं आधारित कृषि प्रणालियों की उत्पादकता को लगातार बढ़ाकर गरीबी और भुखमरी को कम करने के लिए काम करता है। कृषि अनुसंधान में भाकृअनुप–सिमिट की साझेदारी लगभग छह दशकों के इतिहास सहित दुनिया की सबसे लंबी और सर्वाधिक उत्पादक साझेदारियों में से एक है। इसकी मुख्य गतिविधियाँ और उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं:

- वर्ष 2022 में, सिमिट की 10 गेहूं वंशावलियों (पंक्तियां) को जारी करने हेतु पहचान की गई, जबकि 13 अन्य में इसके जनकों/पैतृक के रूप में सिमिट वंशावलियों में से एक को पाया गया था। इन किस्मों में उच्च उपज क्षमता, गेहूं प्रध्वंस सहित सभी प्रमुख बीमारियों के प्रति रोधक क्षमता सहित ताप एवं सूखे के प्रति सहनशीलता भी पाई गई है।
- उच्च उपजशील एवं जैविक तथा अजैविक तनावों के प्रति सहिष्णु मक्का की पैतृक वंशावली और संकर किस्मों को विकसित किया गया और सीधे राष्ट्रीय प्रणाली और अंतर्राष्ट्रीय मक्का सुधार कंसोर्शियम के माध्यम से साझा किया गया। एशिया की पहली अत्याधुनिक सार्वजनिक मक्का डीएच सुविधा को कुनिगल, कर्नाटक, में स्थापित किया गया।
- सामाजिक–आर्थिक अध्ययनों से पता चलता है कि पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गांवों में पिछले दो दशकों में न्यूनतम एक बार किए गए गांव के अध्ययनों में पानी की महत्वपूर्ण बचत के कारण 80 प्रतिशत किसानों द्वारा लेजर भूमि समतलन को अपनाया गया है। घटती लाभप्रदता, मृदा स्वास्थ्य और जल स्तर में कमी के कारण कार्बन खेती परियोजनाओं के प्रति आकर्षण बढ़ रहा हैं।
- उत्तर–पश्चिम और पूर्वी भारत की मक्का प्रणालियों में संभावित उपज क्षमता की प्राप्ति हेतु 180 सहभागी नवोन्मेषी मंच स्थापित किए गए।
- ट्रांसफॉर्म एग्रीफूड सिस्टम्स साउथ एशिया (टीएएफएसएसए) द्वारा की गई पहल को टिकाऊ स्वस्थ आहार तक न्यायपूर्ण पहुंच का समर्थन, किसानों की आजीविका व लचीलेपन में सुधार लाने तथा भूमि, वायु और भूजल संसाधनों के संरक्षण के लिए खाद्य उत्पादन से लेकर उपभोग निरंतरता में वृद्धि लाने के लिए क्रियान्वित किया गया है।
- लगभग 100 राष्ट्रीय वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित किया गया: 4 (गेहूं प्रजनन और रोगविज्ञान पर दीर्घकालिक प्रशिक्षण; गेहूं प्रध्वंस); 35 (गेहूं सुधार में डिजिटल युक्तियों पर); 6 (डीएच वंशावलियों का विकास); लगभग 60 (जलवायु अनुकूल कृषि, खेती प्रणाली, मशीनीकरण, बीज प्रणाली)
- राष्ट्रीय साझेदारों के साथ सहकर्मी–समीक्षित (पियर–रिव्यूड) पत्रिकाओं में 27 शोध पत्र प्रकाशित किए गए।

(3) अंतर्राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान (इर्री)

आईआरआरआई (इर्री) गरीबी और भूख को कम करने तथा धान किसानों एवं उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य में सुधार के

मिशन सहित धान पर अनुसंधान में वैज्ञानिक व तकनीकी सहयोग के लिए एक गैर–लाभकारी स्वायत्त अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण संगठन है। इर्री और भारत पिछले चार दशकों से भी अधिक समय से आपस में सफलतापूर्वक सहयोग कर रहे हैं। भारत में इर्री के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन हेतु प्रमुख निकाय के रूप में भाकृअनुप ने GRiSP का समर्थन किया है और GRiSP कार्यक्रम के निम्नलिखित विषयगत क्षेत्रों के तहत सहयोग जारी रखने और उसे और अधिक सुदृढ़ करने के लिए पारस्परिक रूप से सहमति व्यक्त की है :

- नई उत्पादकता, गुणवत्ता और स्वास्थ्य प्रतिमानों की प्राप्ति हेतु आनुवंशिक विविधता का उपयोग करना;
- धान की उन्नत किस्मों के विकास, वितरण और अंगीकरण में तेजी लाना;
- धान आधारित उत्पादन प्रणालियों का पारितंत्रीय एवं टिकाऊ प्रबंधन;
- बेहतर गुणवत्ता, प्रसंस्करण, बाजार प्रणाली व नए उत्पादों के माध्यम से धान की फसल से अधिक मूल्य प्राप्त करना;
- प्रभाव में वृद्धि हेतु प्रौद्योगिकी मूल्यांकन, लक्ष्यीकरण और नीतिगत विकल्पों को अपनाना;
- वैश्विक धान क्षेत्र के विकास में सहायता करना

(4) अंतर्राष्ट्रीय आलू केंद्र (सीआईपी)

आलू, शकरकंद और अन्य उष्णकटिबंधीय जड़ों एवं कंदीय फसलों के अनुसंधान में वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग के लिए सीआईपी, एक अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान और प्रशिक्षण संगठन है। सीआईपी के मुख्य उद्देश्य हैं:

- जैविक/अजैविक तनाव सहनशीलता के लिए फसल सुधार, प्रजनन और चयन;
- भारत में परियोजना स्थलों पर आलू उत्पादन में वेक्टर और रोगाणुओं के दबाव का सर्वेक्षण;
- प्रसंस्करण वाले आलू की किस्मों को विकसित करके खाद्य सुरक्षा बढ़ाना और आलू किसानों की आजीविका में सुधार लाना;
- बीज प्रणालियों को बढ़ाना: उत्पादकता व लाभप्रदता बढ़ाने के लिए पठारी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में किसान आधारित बीज प्रणालियों में सुधार लाना;
- फसल प्रणाली एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन: सिंधु–गंगा के मैदानी भूभागों में अनाज आधारित फसल प्रणाली में आलू के समावेश पर अध्ययन;

(5) अंतर्राष्ट्रीय शुष्क क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र (इकार्डा)

आईसीएआरडीए, (इकार्डा) एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जिसके प्रमुख उद्देश्यों में सामान्य रूप से बारानी (वर्षाश्रित) कृषि प्रणालियों पर अनुसंधान शामिल है; जौ, मसूर और फाबाबीन के सुधार पर अंतर्राष्ट्रीय फोकस; तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय केंद्रों के सहयोग से गेहूं ट्रिटिकल और चने पर अनुसंधान करना शामिल है। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं:

- भारतीय राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (एनएआरएस) और इकार्डा के बीच फसल सुधार कार्यक्रमों में उपयोग के लिए आनुवंशिक संसाधनों का आदान–प्रदान;
- राजस्थान के इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में पानी एवं फसल उत्पादकता में सुधार पर अनुसंधान;
- फसल सघनता बढ़ाने के लिए विभिन्न फसलों के उत्पादन हेतु भू–सूचना विज्ञान उपकरणों का उपयोग करके उन क्षेत्रों की पहचान के लिए धान–परती भूमि का मानचित्रण;
- काबुली चना, मसूर, ग्रास पी, फाबाबीन, चारा और चारा प्रजातियों, गेहूं, जौ के इकार्डा जननद्रव्यों का मूल्यांकन और स्थान विशिष्ट प्रजातियों/जीनोटाइप का चयन।

(6) विश्व कृषि वानिकी (आईसीआरएएफ)

विश्व कृषि वानिकी, (आईसीआरएएफ), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के समग्र उद्देश्य एवं लक्ष्यों को पूरा करने तथा किसानों की आजीविका बढ़ाने के लिए कृषि वानिकी और संबद्ध पहलुओं के क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन (एनआरएम), फसल विज्ञान और बागवानी विज्ञान प्रभागों के भाकृअनुप संस्थानों के साथ मिलकर काम कर रहा है। भाकृअनुप–आईसीआरएफ कार्य योजना वर्ष 2021–2025 के एक हिस्से के रूप में और भाकृअनुप–सीजी की पिछली बैठक के दौरान वर्ष 2022–23 के लिए तय किए गए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के आधार पर, वर्ष 2022–23 की मुख्य उपलब्धियों को नीचे रेखांकित किया गया है।

- भाकृअनुप–एनबीपीजीआर के इस्सापुर फार्म में कृषि वानिकी में ड्रोन के अनुप्रयोग पर एक अग्रणी अध्ययन शुरू किया गया था।
- चालू वर्ष में यूएचएस, बेंगलुरु और भाकृअनुप–सीएएफआरआई, झांसी के फार्मों से मल्टीस्पेक्ट्रल ड्रोन डेटा का संग्रह किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण और व्याख्या जारी है।
- मृदा के नमूनों का विश्लेषण करने के लिए एक प्रोटोटाइप हैंड–हेल्ड पोर्टेबल स्कैनर (नियो स्पेक्ट्रा स्कैनर) विकसित किया गया है।
- भाकृअनुप– भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान (आईआईएसएस), भोपाल और विश्व कृषि वानिकी (आईसीआरएएफ) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित "मृदा स्पेक्ट्रोस्कोपी–मृदा स्वास्थ्य के त्वरित मूल्यांकन हेतु एक उभरती तकनीक" पर एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में मिड–इंफ्रारेड (एमआईआर) तकनीक की सिफारिश की

ड्रोन डेटा संग्रह के दौरान क्षमता निर्माण अभ्यास, छात्रों एवं संकायों को कृषि वानिकी में ड्रोन अनुप्रयोग में हुई हालिया प्रगति के बारे में समझाना।

भाकृअनुप–सीएएफआरआई परिसर, झाँसी में यूएवी डेटा संग्रह ए) यूएवी उड़ान योजना, बी) भाकृअनुप–सीएएफआरआई अनुसंधान फार्म का नक्शा, और सी) सीएएफआरआई में नीम ब्लॉक के यूएवी–आरजीबी डेटा का नमूना

गई। मृदा स्वास्थ्य के मूल्यांकन हेतु इन मृदा मापदंडों के आकलन के लिए भारत के अल्फिसोल्स, इंसेप्टिसोल और वर्टिसोल में मृदा जैविक कार्बन (एसओसी), पीएच, मिट्टी, गाद और रेत के आकलन के लिए मिड–इंफ्रारेड प्रौद्योगिकी का उपयोग किया गया।

(7) सीआईएटी बॉयोवर्सिटी अंतर्राष्ट्रीय एलायंस

बायोवर्सिटी इंटरनेशनल एक स्वायत्तशासी अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थान है, जिसका दायित्व वर्तमान एवं भविष्य की पीढ़ियों के लाभ हेतु पौधों के आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण और उपयोग को प्रोत्साहित करना है और इसके मुख्य उद्देश्य हैं:

- शोध कार्य हेतु सहयोगात्मक अनुसंधान का संचालन और बेहतर पोषण, छोटे किसानों की आजीविका में सुधार तथा कृषि स्थिरता को बढ़ाने के लिए कृषि जैव विविधता के उपयोग और संरक्षण को बढ़ावा देना।
- स्थानीय कृषि जैव–विविधता का खेतों पर संरक्षण करके खाद्य असुरक्षा, गरीबी और जलवायु परिवर्तन का सामना करने में गरीब ग्रामीण समुदायों की अनुकूलता लचीलेपन को सुदृढ़ करना।

(8) अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई)

अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई), सीजीआईएआर द्वारा समर्थित एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र है। इसका अधिदेश कम आय वाले देशों और इनके गरीब समूहों पर विशेष जोर देते हुए वैश्विक खाद्य जरूरतों को पूरा करने के लिए वैकल्पिक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रणनीतियों और नीतियों की पहचान और उनका विश्लेषण करना है।

भाकृअनुप और आईएफपीआरआई 1988 से सहयोगात्मक अनुसंधान पर साथ–साथ काम कर रहे हैं। इन कार्यक्रमों का मुख्य ध्यान व्यापक रूप से टिकाऊ कृषि विकास, कृषि विविधीकरण और मानव संसाधन विकास को प्राप्त करने पर केंद्रित रहा है। शोध से कई उपयोगी नीतिगत विकल्प सामने आए हैं।

आईएफपीआरआई ने 26–27 सितंबर, 2023 के दौरान भाकृअनुप के लेक्चर हॉल, दूसरी मंजिल, एनएएससी परिसर, पूसा, नई दिल्ली में भारतीय बीज क्षेत्र में विनियम और प्रशासन के मुद्दों पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

(9) अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान (आईएलआरआई)

अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान (आईएलआरआई) एकमात्र सीजीआईएआर केंद्र है जो विकासशील विश्व के पशुओं पर कृषि अनुसंधान के लिए पूरी तौर पर समर्पित है। दो अफ्रीकी देशों, केन्या और इथियोपिया द्वारा अंतर्राष्ट्रीय पशुधन अनुसंधान संस्थान (आईएलआरआई) की सह–मेज़बानी की जाती है, जिसका मुख्यालय नैरोबी, केन्या में और मुख्य परिसर अदीस अबाबा, इथियोपिया में है। यह पूर्व, दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया, मध्य–पूर्व, दक्षिणी और पश्चिम अफ्रीका में क्षेत्रीय और देश कार्यालयों और परियोजनाओं के नेटवर्क द्वारा कार्य संचालन करता है। पशुधन के कुशल, सुरक्षित और टिकाऊ उपयोग के लिए अनुसंधान करके खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में सुधार तथा विकासशील देशों में गरीबी को कम करने के व्यापक उद्देश्य के साथ कार्य करके पशुधन के माध्यम से यह संस्था बेहतर जीवन सुनिश्चित करती है। इन अनुसंधान साझेदारियों के परिणाम, विकासशील देशों में लोगों को अपने फार्म पशुओं को सक्रिय एवं उत्पादक बनाए रखने, स्थायी तरीकों से अपने पशुधन एवं कृषि उत्पादकता को बढ़ाने, पशु उत्पादों के लिए लाभदायक बाजार ढूंढने तथा पशुओं से संबंधित मानव रोगों के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं। आईएलआरआई वर्ष 2004 से दक्षिण एशिया में काम कर रहा है, इसका क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली में है जो दक्षिण एशिया में संचालित अनुसंधान गतिविधियों का समन्वय करता है।

आईएलआरआई के भारत में दो परियोजना कार्यालय हैदराबाद और गुवाहाटी में स्थित हैं। आईएलआरआई ने इस क्षेत्र में पशुधन–आधारित आजीविका, नए चारे की

खोज, पशुजन्य रोग (जूनोसिस) एवं खाद्य सुरक्षा, सहभागी महामारी विज्ञान, रोगों की आर्थिकी, अनौपचारिक दूध बाजार में सुधार, मूल्य श्रृंखला का मूल्यांकन, अनुसंधान और विशेष रूप से भारत में एनएआरएस के बीच, मजबूत तकनीकी अनुसंधान क्षमताओं को पूरा करने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप और सहयोग की पहचान करने पर बहु–विषयी अनुसंधान करके अपने ज्ञान एवं कौशल क्षमता का प्रदर्शन किया है। आईएलआरआई द्वारा संचालित अनुसंधान, पशुधन प्रौद्योगिकियों के विकास से आगे बढ़कर इसकी मौजूदा शक्तियों और अनुभव के आधार पर खाद्य सुरक्षा एवं पशुजन्य रोग, लिंग, जलवायु परिवर्तन, आहार और चारे की खोज, जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन प्रणालियों के आर्थिक मूल्यांकन, महामारी विज्ञान अध्ययन, आनुवंशिक अध्ययन और नीतिगत सुविधा के क्षेत्र में अनुसंधान करके एनएआरएस की विशेषज्ञता को पूरा करने का कार्य करता है।

(10) अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (आईडब्ल्यूएमआई)

प्रतिवेदित अवधि के दौरान आईडब्ल्यूएमआई, भाकृअनुप एवं अन्य सहभागियों के साथ संचालित गतिविधियों को यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

- कोलंबो, श्रीलंका स्थित आईडब्ल्यूएमआई मुख्यालय में 21 अप्रैल, 2022 को भाकृअनुप एवं आईडब्ल्यूएमआई के बीच कार्ययोजना वर्ष 2022–2026 पर सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक (भाकृअनुप) डॉ. हिमांशु पाठक तथा आईडब्ल्यूएमआई के महानिदेशक डॉ. मार्क स्मिथ ने डॉ. एस.के. चौधरी, उपमहानिदेशक (एनआरएम), डॉ. आलोक सिक्का, आईडब्ल्यूएमआई के भारतीय प्रतिनिधि की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। भाकृअनुप की अनुसंधान उपलब्धियों और अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (आईडब्ल्यूएमआई) की संपर्क (आउटरीच) गतिविधियों के साथ आईडब्ल्यूएमआई का सहयोग मुख्यतः तीन रणनीतिक कार्यक्रमों – जल, आहार और पारितंत्र; जल, जलवायु परिवर्तन और अनुकूलनशीलता; तथा जल, विकास और समावेशन पर केंद्रित है जिसमें से प्रत्येक उच्च गुणवत्ता वाले विज्ञान एवं डिजिटल नवोन्मेषों द्वारा समर्थित है।

- 'खाद्य एवं पोषण सुरक्षा (अनुकूलन) को सुदृढ़ करने के लिए निरंतर सघनीकरण और कृषि–पारितंत्रीय खेती प्रणालियों के माध्यम से भारतीय छोटे जोतधारकों में जलवायु के प्रति अनुकूलन का सृजन' के तहत, आईडब्ल्यूएमआई ने खेत में पानी की उपयोग–दक्षता बढ़ाने और हस्तक्षेपों को उच्च स्तर पर अपनाने के लिए नवीन तकनीकों और संमिलन उपायों का समावेश किया है। कृषि एवं किसान सशक्तिकरण विभाग, ओडिशा के सहयोग से आईडब्ल्यूएमआई एवं आईएफपीआरआई द्वारा 20 अक्तूबर, 2022 को आयोजित "ओडिशा की कृषि–खाद्य प्रणालियों के रूपांतरण पर उच्च स्तरीय नीतिगत गोलमेज सम्मेलन" में इस परियोजना की नीतिगत सिफारिशें ''कृषि–खाद्य प्रणालियों को बदलने के लिए जल और ऊर्जा नीतियां" नामक सत्र में प्रस्तुत की गईं।
- नहर सिंचाई प्रणालियों के कार्य में सुधार के लिए इन प्रणालियों का आधुनिकीकरण एक महत्वपूर्ण विकासात्मक दृष्टिकोण है। महाराष्ट्र में कुकाडी लेफ्ट बैंक नहर (I<LBC) सिंचाई प्रणालियों के कार्य–निष्पादन के मूल्यांकन के लिए विश्लेषणात्मक रूपरेखा पर आईडब्ल्यूएमआई के अध्ययन में लोगों की सहयोगी आजीविका सुनिश्चित करने तथा सिंचाई प्रणालियों की आर्थिक जल उत्पादकता (ईडब्ल्यूपी) अर्थात् जल उपयोग की प्रति इकाई उत्पादन के मूल्य में वृद्धि हेतु वैकल्पिक प्रणाली के आधुनिकीकरण दृष्टिकोण की पहचान करने का प्रयास किया।
- आईडब्ल्यूएमआई, भारतीय जिलों और उप–नदी घाटियों के लिए जल उत्पादकता (डब्ल्यूपी) एटलस पर भाकृअनुप के साथ काम कर रहा है। इस एटलस में भौतिक और आर्थिक जल उत्पादकता (पीडब्ल्यूपी एवं ईडब्ल्यूपी), पोषणीय जल उत्पादकता (कैलोरी, प्रोटीन एवं वसा), तथा प्रमुख फसलों और फसल प्रणालियों के लिए जल पदचिह्न शामिल हैं। यह एटलस अलग–अलग समयावधि में 596 जिलों, राज्यों, उप–नदी घाटियों और 19 नदी घाटियों के वर्ष 1999 से वर्ष 2021 तक के डब्ल्यूपी रुझान दिखा सकता है।

- आईडब्ल्यूएमआई, एलुवियम की साझेदारी में, पश्चिम बंगाल के लैटेरिटिक मृदा वाली पट्टी में ऑस्ट्रेलियाई जल भागीदारी (एडब्ल्यूपी) द्वारा वित्त पोषित एक मार्गदर्शी अध्ययन कर रहा है, ताकि जल उपयोग पैटर्न, जल उत्पादकता और सामाजिक–आर्थिक पहलुओं को देखते हुए सिंचाई परियोजना में निवेशों की निगरानी और मूल्यांकन द्वारा उनके जल प्रबंधन में सुधार किया जा सके।
- आईडब्ल्यूएमआई–भाकृअनुप–बीआईएसए का सोलर इरिगेशन पम्प साइजिंग टूल (सौर सिंचाई पंप साइज़िंग टूल), को वर्ष 2022–23 में मृदा एवं जल उत्पादकता के क्षेत्र में भाकृअनुप की उपलब्धियों में से एक के रूप में चित्रित किया गया है। एमएनआरई ने पीएम–केयूएसयुएम के लिए एसआईपी साइजिंग टूल को अपनाया है, जो मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है। सीजीआईएआर की एनईक्सयूएस (नेक्सस) गेन्स पर की गई पहल ने स्केलिंग हेतु एक इनोवेशन के रूप में इस टूल की पहचान की है। भाकृअनुप तथा जीआईजेड के सहयोग से नेपाल के लिए भी एक इसी प्रकार का उपकरण विकसित किया जा रहा है। इस गतिविधि को ग्रामीण आजीविका हेतु सौर ऊर्जा (एसईआरएल) पर आईडब्ल्यूएमआई परियोजना और एनईक्सयूएस (नेक्सस) गेन्स पर सीजीआईएआर की पहल के एक भाग के रूप में शुरू किया गया है।

(II) यह अनुभाग सीजी केंद्रों से संबंधित सभी कार्यों की प्रक्रियाविधि को पूरा करता है जिसमें एमओयू तैयार करना, कार्य योजना व भाकृअनुप/डेयर के वैज्ञानिकों/अधिकारियों की विदेशी यात्राएं, सीजीआईएआर को वार्षिक अंशदान का भुगतान, भाकृअनुप एवं सीजीआईएआर केंद्रों के बीच सहयोगात्मक परियोजनाएं और आसियान, बिम्सटेक तथा सार्क से संबंधित मामले शामिल हैं।

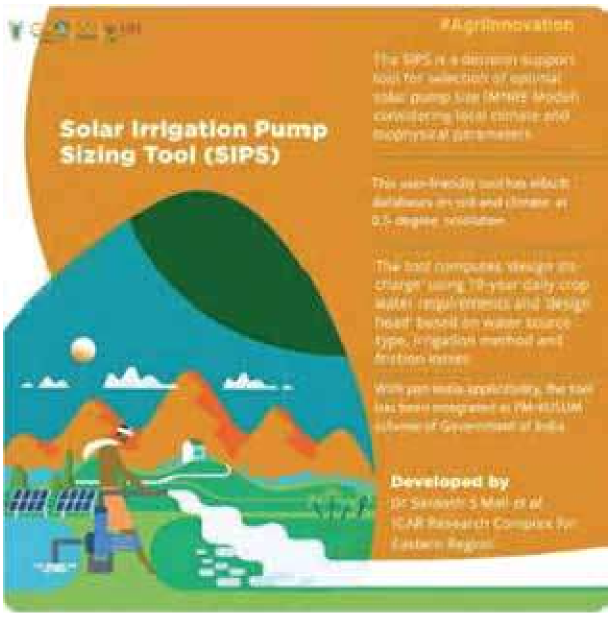

प्रमुख गतिविधियाँ

- कृषि एवं वानिकी पर सातवीं आसियान–भारत मंत्रिस्तरीय बैठक 25–26 अक्तूबर 2022 को आयोजित की गई। भारत की ओर से तत्कालीन कृषि मंत्री श्री नरेंद्र तोमर ने बैठक की अध्यक्षता की।
- बिम्सटेक के कृषि मंत्रियों की दूसरी बैठक 10 नवंबर, 2022 को आयोजित की गई। भारत की ओर से तत्कालीन कृषि मंत्री श्री नरेंद्र तोमर ने बैठक की अध्यक्षता की।
- पांच वर्षों की अवधि के लिए भाकृअनुप के साथ सीआईपी, आईएलआरआई, आईसीएआरडीए और आईडब्ल्यूएमआई की चार कार्य योजनाओं पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
- अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्रों के सलाहकार समूह (सीजीआईएआरसी) के साथ वार्षिक समीक्षा बैठक 27 फरवरी, 2023 को आयोजित की गई, जिसमें भारत पर केंद्रित उनकी जारी गतिविधियों सहित भविष्य की योजनाओं पर भी चर्चा की गई।
- इक्रिसेट मुख्यालय, हैदराबाद, तेलंगाना में 21–23 फरवरी, 2023 के दौरान "बारानी भूमि के रूपांतरण हेतु नवोन्मेष" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन को मंजूरी।
- एलायंस ऑफ बायोवर्सिटी इंटरनेशनल–सीआईएटी के सहयोग से 7–11 मार्च, 2023 के दौरान "सूखे के प्रति सहिष्णुता के लिए फेनोटाइपिंग पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला" आयोजित करने की अनुमति।
- एनएएससी कॉम्प्लेक्स, मार्ग, नई दिल्ली में 9–12 अक्तूबर 2023 के दौरान सीजीआईएआर जेंडर इम्पैक्ट प्लेटफॉर्म के द्विवार्षिक सम्मेलन में ''अनुसंधान से प्रभाव तकः न्यायसंगत व लचीली कृषि–खाद्य प्रणालियों की ओर" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की मंजूरी।
- कृषि एवं वानिकी पर सातवीं आसियान–भारत मंत्रिस्तरीय बैठक (द प्रेपएसओएम–7वीं एआईएमएमएएफ) की तैयारी के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक 25 अक्तूबर, 2022 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से भारत में आयोजित की गई।
- बिम्सटेक के वरिष्ठ अधिकारियों की कृषि से संबंधित दूसरी बैठक 09 नवंबर, 2022 को नई दिल्ली, भारत में वर्चुअल मोड में आयोजित की गई।

परियोजनाएं

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के सहयोग से निम्नलिखित सहयोगत्मक अनुसंधान परियोजनाओं को अनुमोदन के लिए संसाधित किया गया :

- "दक्षिण एशिया कृषि अनुकूलन एटलसः जलवायु जोखिमों, प्रथाओं, प्रौद्योगिकियों और नीतियों के बीच अंतरसंबंध" नामक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना का तीन वर्ष की अवधि के लिए प्रस्ताव।
- भाकृअनुप–आईएआरआई, नई दिल्ली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं सुधार केंद्र (सिमिट), मैक्सिको के सहयोग से तीन वर्षों की अवधि के लिए "गेहूं में नाइट्रोजन प्रबंधन के माध्यम से गर्मी के प्रति तनाव में सुधार का शरीर क्रियात्मक आधार" नामक सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना प्रस्तुत की गई।
- भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान (भाकृअनुप–आईआईएमआर), लुधियाना द्वारा सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजना के तहत "मक्का में फॉल आर्मीवर्म संक्रमण से निपटने के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम) मॉड्यूल के विकास एवं सत्यापन" नामक परियोजना को अंतर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूं सुधार केंद्र (सिमिट), नैरोबी, केन्या से निधि प्रदान करने के लिए प्रस्तुत किया।

विदेश यात्राएं

विदेश में भाकृअनुप के वैज्ञानिकों के दौरे सीजी केंद्रों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भागीदारी के लिए भाकृअनुप के वैज्ञानिकों के संबंध में एफवीएमएस पोर्टल पर 122 प्रस्ताव प्राप्त हुए जिन पर कार्यवाही की गई। इसके अलावा, डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भाकृअनुप द्वारा की जाने वाली निम्नलिखित विदेशी यात्राओं को भी मंजूरी दी गई है।

- बांग्लादेशः 38वें सार्क चार्टर दिवस में 8 दिसंबर, 2022 को भाग लेने के लिए
- श्रीलंकाः भाकृअनुप–आईडब्ल्यूएमआई संचालन समिति की बैठक में 21–23 अप्रैल, 2023 तक
- यूएसए : सीजीआईएआर सिस्टम काउंसिल की बैठक में सहभागिता के लिए 10–12 मई, 2023 तक
- इंडोनेशियाः आईसीआरएएफ–सीआईएफओआर मुख्यालय का दौरा करने के लिए 10–12 जुलाई 2023 तक
- फिलीपींसः 6वीं अंतर्राष्ट्रीय धान कांग्रेस में 16–19 अक्तूबर 2023 के दौरान भाग लेने के लिए।

04

हिंदी का प्रगामी प्रयोग

हिंदी का प्रगामी प्रयोग

वर्ष के दौरान, डेयर ने राजभाषा अधिनियम, 1963 के प्रावधानों, राजभाषा नियम, संकल्प, और केंद्र सरकार अथवा किसी मंत्रालय, विभाग अथवा उसके कार्यालय अथवा केंद्र सरकार के स्वामित्व अथवा प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन कंपनी अथवा उक्त कार्यालय के किसी निगम और राजभाषा विभाग द्वारा डेयर के तत्वावधान के तहत विभाग एवं स्वायत्तशासी निकायों में कार्यालयी प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रगामी प्रयोग के बारे में समय–समय पर जारी किए गए सामान्य आदेशों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक अथवा अन्य रिपोर्टों अथवा प्रेस विज्ञप्तियों का अनुपालन सुनिश्चित किया है। डेयर और उसके संबद्ध कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए प्रयास किए जा रहे हैं

राजभाषा और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति के बारे में डेयर के हिंदी अनुभाग के लक्ष्यों और प्राप्त उपलब्धियों का सारांश नीचे दिया गया है :

नीति कार्यान्वयनः विभाग के राजभाषा प्रभाग, जिसमें सहायक निदेशक (राजभाषा) स्तर के एक अधिकारी और एक सहायक कार्मिक (वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी) शामिल हैं, ने इस विभाग और इसके दायरे में आने वाले स्वायत्त निकायों में राजभाषा विभाग द्वारा जारी निर्देशों के कार्यान्वयन की दिशा में निरंतर प्रयास किए हैं। इस संबंध में, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के अनुपालन के लिए प्रभावकारी जांच बिंदु तैयार किए गए हैं जिन्हें सभी अधिकारियों को परिचालित किया गया है ताकि वे अपना कार्यालयी कार्य निष्पादित करते हुए हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को सुनिश्चित करें। इस बात पर भी बल दिया गया है कि ''क'', ''ख'' और ''ग'' क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के साथ हिंदी में पत्राचार करने के लक्ष्यों को हासिल किया जाए।

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के तहत संस्थानों/कार्यालयों की अधिसूचनाः भाकृअनुप के संस्थान/कार्यालय जहां 80 प्रतिषत कर्मचारियों ने हिंदी में कामकाजी ज्ञान/प्रवीणता प्राप्त कर ली है, उन्हें राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के तहत अधिसूचित किया गया है। कुल मिलाकर, अब तक भाकृअनुप के क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ 149 कार्यालय और संबद्ध स्टेशन अधिसूचित किए जा चुके हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी) की बैठकें: डेयर और भाकृअनुप की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ओएलआईसी) की तिमाही बैठकें अपर सचिव (डेयर) और सचिव (भाकृअनुप), जो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए नोडल अधिकारी हैं, की अध्यक्षता में आयोजित की गई हैं। दिनांक 30 सितंबर 2023 तक चार बैठकें आयोजित की गई हैं और इन बैठकों में लिए गए निर्णयों के अनुपालन में अनुवर्ती कार्रवाई की गई है।

राजभाषा नीति से संबंधित रिपोर्टें: विभाग में राजभाषा के प्रयोग के बारे में वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट और तिमाही प्रगति रिपोर्टें राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को भेजी गईं।

राजभाषा नीति के संदर्भ में निरीक्षणः वर्ष के दौरान, हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा के लिए डेयर के चार अनुभागों का निरीक्षण किया गया और इन अनुभागों के कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के दौरान आने वाली व्यावहारिक समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव दिए गए। हिंदी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल और रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय (आरएलबीसीएयू), झाँसी का निरीक्षण भी क्रमशः अप्रैल, 2023 और जून, 2023 माह में आयोजित किया गया था।

अनुवाद कार्यः इस विभाग के राजभाषा अनुभाग द्वारा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों का अनुवाद किया गया। कैबिनेट नोट्स, संकल्प, अधिसूचना, कृषि के क्षेत्र में अन्य संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापनों/करारों/कार्य योजनाओं जैसे दस्तावेजों का उनकी प्राथमिकता के आधार पर निर्धारित समय–सीमा के भीतर हिंदी में अनुवाद किया गया।

हिंदी पखवाड़ाः भाकृअनुप के सहयोग से विभाग में 14 सितंबर, 2023 से 29 सितंबर, 2023 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया है। ''हिन्दी दिवस'' के अवसर पर हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में अपर सचिव (डेयर) और सचिव (भाकृअनुप) का संदेश परिचालित किया गया। इसके अतिरिक्त, हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। हिन्दी प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन करने वाले कार्मिकों को कुल 38 पुरस्कार प्रदान किये गये।

इस विभाग के पांच अधिकारियों ने 14 से 15 सितंबर 2023 के दौरान पुणे में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित ''हिंदी दिवस और तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन'' में भाग लिया।

05

विभागीय लेखांकन संगठन

कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग का लेखांकन संगठन

कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग में सचिव, मुख्य लेखांकन प्राधिकारी हैं। सचिव अपने कर्तव्यों का निर्वहन अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (एएस एंड एफए) तथा मुख्य लेखा नियंत्रक की सहायता से करते हैं।

1. सिविल लेखा मैनुअल के पैरा 1.2.2 के अनुसार, मुख्य लेखांकन प्राधिकारी के लिए और उसकी ओर से मुख्य लेखा नियंत्रक निम्न के लिए उत्तरदायी है :

(क) वेतन और लेखा कार्यालयों/प्रधान लेखा कार्यालय के माध्यम से सभी भुगतानों की व्यवस्था करना, सिवाय इस बात के कि जहाँ आहरण एवं वितरण अधिकारी कुछ प्रकार के भुगतान करने के लिए प्राधिकृत हैं।

(ख) मंत्रालय/विभाग के लेखाओं का संकलन एवं समेकन करना और महालेखा नियंत्रक को विनिर्दिष्ट प्रपत्र में उनका प्रस्तुतीकरण करना; अपने मंत्रालय/विभाग की अनुदान मागों के लिए वार्षिक विनियोजन लेखाओं को तैयार करना, उनकी लेखापरीक्षा करवाना तथा मुख्य लेखा प्राधिकारी के हस्ताक्षर के साथ उन्हें सीजीए को प्रस्तुत करना।

(ग) विभाग के विभिन्न अधीनस्थ अनुभागों तथा वेतन और लेखा कार्यालयों द्वारा कायम किए गए वेतन एवं लेखा अभिलेखों के आंतरिक निरीक्षण के लिए और सार्वजनिक क्षेत्र बैंकों में अनुरक्षित सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लेन–देन से संबंधित अभिलेखों के निरीक्षण की व्यवस्था करना।

2. मुख्य लेखा नियंत्रक, कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग अपने कर्तव्यों का निर्वहन मुख्यालय के 2 लेखा नियंत्रकों, 1 सहायक लेखा नियंत्रक और 8 प्रधान लेखा अधिकारियों (प्रशासन/स्थापना, लेखा, ट्रेजरी भुगतान, आईएडब्ल्यू और आईएपी) और कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग के 11 (ग्यारह) वेतन और लेखा अधिकारियों की सहायता से करता है। वरिष्ठ लेखा अधिकारियों की अध्यक्षता में क्षेत्रीय आंतरिक लेखापरीक्षा दल भी कोच्चि में तैनात हैं जो आईएडब्ल्यू (मुख्यालय) के नियंत्रण में कार्य करते हैं। कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग में लेखा प्रमुख अधिकारी के कार्य के वितरण के संबंध में लेखा संगठन संरचना का ऑर्गनोग्राम एक्जीबिट 'ए' में दिया गया है।

कृषि, अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग में पीएओ (Sectt-I) के साथ 02 एनसीडीडीओ सम्बद्ध हैं। लेखांकन सूचना प्रवाह चार्ट एक्जीबिट 'बी' में दिया गया है।

3. मंत्रालय/विभाग में लेखांकन संगठन के अध्यक्ष के रूप में मुख्य लेखा नियंत्रक की भूमिका और उत्तरदायित्व

सीजीए कार्यालय के कार्यालय ज्ञापन संख्या टीए–2–01001/2/2020–टीए–II (कॉम्प 21)/596 दिनांक 23 जुलाई 2021 के अनुसार, संबंधित मंत्रालयों/विभागों के प्रधान सीसीए/सीसीए/सीएएस (आईसी) संबंधित मंत्रालयों/विभागों में लेखा संगठन के प्रमुख होते हैं। उनके समग्र कार्य निम्नानुसार निर्धारित हैं –

क. प्राप्तियां, भुगतान और लेखा

(i) केंद्र सरकार के संबंधित मंत्रालय/विभाग में सभी प्राप्तियों और भुगतानों के लेखांकन के लिए आवश्यक आंतरिक नियंत्रण के साथ प्रभावी और कुशल प्रणालियों का प्रबंधन करना।

(ii) निर्धारित नियमों और विनियमों के अनुरूप विभिन्न केंद्रीय नागरिक मंत्रालयों/विभागों के वेतन एवं लेखा अधिकारियों और चेक आहरण एवं संवितरण अधिकारियों (सीडीडीओ) के माध्यम से भुगतान और प्राप्तियों का पर्यवेक्षण करना।

(iii) संहिता प्रावधानों के अनुसार दावेदारों (सरकारी कर्मचारियों, विक्रेता अनुदान प्राप्तकर्ता और ऋण लेने वाली संस्था आदि, जिसमें जेम (GeM) के माध्यम से खरीद के संबंध में आपूर्तिकर्ताओं को भुगतान भी शामिल है) को समय पर भुगतान का पर्यवेक्षण करना।

(iv) सीजीए के कार्यालय में मासिक और वार्षिक लेखाओं की दक्षता, सटीकता के साथ और समय पर प्रस्तुति सुनिश्चित करना।

(v) दक्षता, सटीकता, व्यापकता, प्रासंगिक एवं उपयोगी वित्तीय रिपोर्टिंग सुनिश्चित करना।

(vi) सीजीए कार्यालय को मासिक रिपोर्ट समय पर, सटीक और समय पर प्रस्तुति सुनिश्चित करना।

(vii) मान्यता प्राप्त/प्राधिकृत बैंकों द्वारा मंत्रालय/विभाग को कुशल सेवा आपूर्ति की निगरानी करना और सरकारी खातों में प्राप्तियों की समय पर वसूली के लिए उनकी प्रणाली की निगरानी करना।

(viii) निर्धारित लेखांकन मानकों, नियमों और सिद्धांतों के पालन की निगरानी करना।

(ix) मंत्रालय/विभाग के मुख्य लेखा प्राधिकारी द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित लेखा परीक्षित वार्षिक विनियोग खातों को सीजीए कार्यालय में समय पर प्रस्तुति सुनिश्चित करना।

(x) अपने मंत्रालय/विभाग के संबंध में वार्षिक 'खाते एक नजर में' की तैयारी सुनिश्चित करना।

(xi) भारत के सार्वजनिक खाते में नव निर्मित निधि के संबंध में व्यक्तिगत जमा खाता खोलने या इसे चालू करने के लिए लेखांकन प्रक्रिया तैयार करने के लिए मंत्रालयों/विभागों के प्रस्ताव की जांच करना।

(xii) सीजीए कार्यालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित मौद्रिक सीमा के अनुसार प्रधान सीए/सीसीए/सीए द्वारा भुगतान मंजूरी (जीएसटी रिफंड मंजूरी सहित) की समीक्षा।

(xiii) ऋण, जमा, सस्पेंस और प्रेषण (डीडीएसआर) शीर्षों के तहत शेष राशि की निकासी की निगरानी करना और शीर्षों के तहत प्रतिकूल शेष राशि के लिए समय पर सुधारात्मक कार्रवाई करना।

(xiv) बजट परिपत्र और एलएमएमएचए के अनुसार नई योजनाओं के लिए उपयुक्त लेखा शीर्ष प्रारम्भ करने की निगरानी करना।

(xv) सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों को समय पर एवं सटीक पेंशन और अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के अनुमोदन की निगरानी करना।

(xvi) खरीद और संबंधित भुगतान से संबंधित मामलों पर जेम स्थायी समिति के साथ समन्वयन करना।

उपरोक्त दायित्वों के संबंध में प्रधान सीसीए/सीसीए/सीएएस (आईसी), लेखा महानियंत्रक के निर्देशन, अधीक्षण और नियंत्रण के तहत कार्य करेंगे।

ख. आउटकम बजट सहित बजट तैयार करना

(i) प्रधान सीसीए/सीसीए/सीए (आईसी) बजटीय प्रस्तावों की तैयारी की निगरानी और प्रत्येक कार्यक्रम/उप–कार्यक्रम के व्यय विश्लेषण के आधार पर बजटीय सीमा के भीतर बेहतर पारस्परिक कार्यक्रम हेतु प्राथमिकता/आवंटन में प्रशासनिक मंत्रालय/विभाग की सहायता करेगा।

(ii) वित्त मंत्रालय द्वारा समय–समय पर निर्धारित समय–सारणी/दिशानिर्देशों के अनुसार आउटकम बजट/आउटपुट–आउटकम मॉनिटरिंग फ्रेमवर्क (ओओएमएफ) की तैयारी में प्रशासनिक मंत्रालयों/विभागों को आवश्यक सहायता प्रदान करना।

(iii) बजट प्रभाग को सार्वजनिक खाते के लेनदेन और बजट प्रभाग द्वारा नियंत्रित समग्र मांगों के संबंध में बजट अनुमान प्रस्तुत करना ताकि उन्हें बजट में शामिल किया जा सके।

(iv) कर्मचारियों के भविष्य निधि में जमा राशि और आरक्षित निधि सहित सार्वजनिक खातों में विभिन्न जमा राशि पर ब्याज के लिए अनुमानित बजट प्रस्तुत करना।

(v) बजट दस्तावेजों से संबंधित सभी रिपोर्टों और विवरणों की निगरानी करना।

ग. गैर कर राजस्व प्राप्तियों का अनुमान

(i) प्रशासनिक प्रभाग के साथ मंत्रालयों/विभागों की विभिन्न गैर–कर राजस्व प्राप्तियों की आवधिक समीक्षा में एफए की सहायता करना और बजट प्रभाग, डीईए को गैर–कर राजस्व प्राप्तियों का अनुमान प्रस्तुत करना।

(ii) सीसीए, वित्त केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए समूह बीमा योजना से संबंधित गैर–कर राजस्व प्राप्तियों के अनुमान को बजट में शामिल करने के लिए बजट प्रभाग को प्रस्तुत करने के लिए जिम्मेदार होगा [सीसीए (वित्त) के लिए विशिष्ट,]

घ. आंतरिक लेखापरीक्षा/जोखिम आधारित लेखापरीक्षा

i) पीएसी, सीएंडएजी और आंतरिक लेखापरीक्षा के लेखा परीक्षा पैरा की समीक्षा करना और सहवर्ती अनुपालन/कार्यप्रणाली सुधार के लिए प्रशासनिक सचिव की अध्यक्षता वाली आंतरिक लेखापरीक्षा समिति के सदस्य सचिव के कर्तव्यों का निर्वहन करना।

ii) वे मुख्य लेखा प्राधिकारी या सीजीए के निर्देशानुसार मंत्रालयों/विभाग में विशेष ऑडिट करने के लिए जिम्मेदार हैं। प्रधान सीसीए/सीसीए/सीएएस के नियंत्रण और पर्यवेक्षण के तहत कार्यरत आंतरिक लेखापरीक्षा विंग अनुपालन/नियामक लेखापरीक्षा की मौजूदा प्रणाली से आगे बढ़ेंगे और इन पर ध्यान केंद्रित करेंगे :

क) सामान्य रूप से आंतरिक नियंत्रण की पर्याप्तता और प्रभावशीलता और विशेष रूप से वित्तीय प्रणाली की सुदृढ़ता और वित्तीय एवं लेखांकन रिपोर्टों की विश्वसनीयता का आकलन।

ख) जोखिम कारकों की पहचान और निगरानी (आउटकम बजट/ओओएमएफ फ्रेमवर्क में शामिल कारकों सहित);

ग) पैसों का मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सेवा आपूर्ति तंत्र की अर्थव्यवस्था, दक्षता और प्रभावशीलता का महत्वपूर्ण मूल्यांकन; और

घ) कार्यप्रणाली के मध्य सुधारों के लिए एक प्रभावी निगरानी प्रणाली प्रदान करना।

iii) योजनाओं का वित्तीय मूल्यांकन प्रस्तुत करना और नियमित आंतरिक लेखापरीक्षा के माध्यम से परियोजनाओं और योजनाओं की निगरानी करना।

iv) जहां आवश्यक हो उस संगठन में सरकारी लेनदेन के संबंध में ई–एफपीबीएस सहित मान्यता प्राप्त बैंकों, अधिकृत/अन्य बैंक/सीपीपीसी और फोकल प्वाइंट बैंक शाखाओं का ऑडिट करना।

v) राष्ट्रीय लघु बचत योजना (वित्त मंत्रालय के लिए विशिष्ट) के संग्रह की आंतरिक लेखापरीक्षा आयोजित करना।

vi) वार्षिक लेखापरीक्षा योजना और वार्षिक आंतरिक लेखापरीक्षा समीक्षा की तैयारी सुनिश्चित करना।

उपरोक्त कार्य सीजीए द्वारा समय–समय पर जारी दिशानिर्देशों के अनुसार किए जाएंगे।

ङ सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली एवं सूचना प्रौद्योगिकी परियोजनाएं

(i) अंतिम स्तर की कार्यान्वयन एजेंसी/लाभार्थी तक धन के प्रवाह और भारत सरकार की केंद्रीय सेक्टर/केन्द्रित रूप से प्रायोजित/प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजनाओं के तहत उसके उपयोग पर नजर रखने के उद्देश्य से समय पर, सटीक और उपयोगी वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए मंत्रालय और सीजीए कार्यालय के पीएफएमएस प्रभाग के साथ समन्वयन सहित पीएफएमएस और इसके विभिन्न मॉड्यूल के उपयोग की निगरानी करना।

(ii) सरकारी एकीकृत वित्तीय प्रबंधन सूचना प्रणाली (जीआईएफएमआईएस) की स्थापना के लिए डेटा बेस और प्रक्रियाओं के एकीकरण का समन्वय करना।

(iii) वित्तीय प्रबंधन प्रणाली के कामकाज में पेशेवर विशेषज्ञता प्रदान करना, सिस्टम दृष्टिकोण तैयार करना और इसे अधिक प्रभावी बनाना।

(iv) पीएफएमएस के पहुंच नियंत्रण और अन्य संबंधित सुरक्षा पहलू के लिए जारी सुरक्षा दिशानिर्देशों के कार्यान्वयन की निगरानी और सिस्टम की नियमित निगरानी द्वारा डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करना।

(v) सटीक व्यय रिपोर्टिंग के लिए केंद्रीय सेक्टर और केंद्रित रूप से प्रायोजित योजनाओं की एकाउंटिंग बास्केट की सही मैपिंग सुनिश्चित करना।

(vi) पीएफएमएस में रिपोर्ट और सूचना की नियमित समीक्षा करना और निर्णय लेने के लिए इसे कार्यकारी को प्रस्तुत करना।

(vii) अपने संबंधित मंत्रालयों में योजना के निष्पादन से संबंधित रिपोर्टों की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए नियमित आधार पर सभी रिपोर्टों और डैशबोर्ड की निगरानी करना।

(viii) एजेंसियों आदि के निष्क्रिय पंजीकरण हेतु समय पर वीडिंग सुनिश्चित करना।

च. *व्यय एवं नकदी प्रबंधन*

बजट प्रभाग, एमओएफ [मासिक व्यय योजना (एमईपी)/त्रैमासिक व्यय योजना (क्यूईपी),] सीमाओं द्वारा जारी नकदी प्रबंधन प्रणाली दिशानिर्देशों के अनुपालन के लिए मंत्रालयों/विभागों के साथ समन्वयन, 'जस्ट–इन–समय' में स्वायत्त निकायों को धन जारी करने के लिए टीएसए प्रणाली का कार्यान्वयन।

छ. एफआरबीएम अधिनियम के तहत प्रकटीकरण और रिपोर्टिंग आवश्यकताएँ

संपूर्ण रूप से सरकार के लिए वित्त मंत्रालय द्वारा संकलित समेकित विवरण में शामिल करने के लिए अपने मंत्रालय/विभाग के संबंध में एफआरबीएम अधिनियम के तहत आवश्यक प्रकटीकरण विवरण तैयार करने में सहायता करना।

ज. परिसंपत्तियों और देनदारियों की निगरानी

संपत्तियों और देनदारियों का व्यापक रिकॉर्ड बनाए रखने और सरकारी गारंटियों की निगरानी के लिए मंत्रालयों/विभागों की सहायता करना।

झ. वित्त मंत्रालय और एफए के बीच पारस्परिक चर्चा

वित्तीय सलाहकार का सचिव (व्यय) के साथ त्रैमासिक बैठक के लिए आवश्यक सामग्री प्रधान सीसीए/सीसीए/सीएएस (आईएस) उपलब्ध कराएंगे और समय–समय पर वित्तीय सलाहकार को आवश्यक अन्य वित्तीय जानकारी प्रदान करेंगे।

ञ. सामान्य प्रशासन एवं समन्वयन

i) लेखांकन संगठन के लिए विभाग प्रमुख की शक्तियों का प्रयोग करना और प्रशासन एवं स्थापना से संबंधित कार्यों के लिए जिम्मेदार होना।

ii) नियुक्ति प्राधिकारी/अनुशासनात्मक प्राधिकरण के रूप में प्रयोग की जाने वाली वैधानिक शक्तियों के संदर्भ में जिम्मेदारियों का निर्वहन

नोट

क) मंत्रालयों/विभागों में जिनका प्रमुख प्रधान सीसीए होता है, कार्य के इन मदों को कोडल प्रावधान के अधीन, उनकी प्रशासनिक सुविधा के अनुसार सीसीए/सीसीए/सीएएस को सौंपा जा सकता है।

ख) उपरोक्त के अतिरिक्त, प्रधान सीसीए/सीसीए/सीएएस मुख्य लेखांकन प्राधिकारी/महालेखा नियंत्रक द्वारा सौंपे गए किसी अन्य कार्य के लिए भी जिम्मेदार होंगे।

ग) इसके अलावा, मंत्रालय का बजट अनुभाग आमतौर पर सीसीए के नियंत्रण में कार्य करना चाहिए और सीसीए से वित्तीय सलाहकार के लिए एफएस एवं सचिव (व्यय) अर्ध शासकीय पत्र सं. 23(3)/ई/कोऑर्ड/2018, दिनांक 13/06/2023 द्वारा जारी किया गया चार्टर के पैरा 43 और पैरा 44 के संदर्भ में इसके सुचारू

कामकाज और कुशल संचालन से संबंधित मुद्दों को हल करने में अन्य बातों के साथ–साथ पीएफएमएस के लिए नोडल अधिकारी के रूप में कार्य करने की अपेक्षा की जाती है।

4. बैंकिंग व्यवस्था

कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग में भारतीय स्टेट बैंक पीएओ और उसके क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए मान्यता प्राप्त बैंक है। पीएओ/सीडीडीओ द्वारा संसाधित ई–भुगतान का निपटान विक्रेताओं/लाभार्थियों के बैंक खाते के पक्ष में सीएमपी, एसबीआई, हैदराबाद के माध्यम से किया जाता है। कुछ मामलों में, पीएओ/सीडीडीओ द्वारा जारी किए गए चेक भुगतान के लिए मान्यता प्राप्त बैंक की नामित शाखा में प्रस्तुत किए जाते हैं। रसीदें गैर–कर–प्राप्ति पोर्टल (एनटीआरपी) के अलावा संबंधित पीएओ/सीडीडीओ द्वारा मान्यता प्राप्त बैंकों को भी भेजी जाती हैं। मान्यता प्राप्त बैंक में किसी भी बदलाव के लिए लेखा महानियंत्रक, व्यय विभाग, वित्त मंत्रालय की विशिष्ट मंजूरी की आवश्यकता होती है।

प्रधान लेखा कार्यालय में 11 (ग्यारह) वेतन एवं लेखा कार्यालय हैं। 05 पीएओ दिल्ली/एनसीआर में, एक–एक चेन्नई, कोच्चि, कोलकाता, नागपुर में और दो मुंबई में स्थित हैं। विभाग/मंत्रालय से संबंधित सभी भुगतान संबंधित पीएओ से जुड़े पीएओ/सीडीडीओ के माध्यम से किए जाते हैं। आहरण और संवितरण अधिकारी अपने दावे/बिल नामित पीएओ/सीडीडीओ को प्रस्तुत करते हैं, जो सिविल लेखा मैनुअल, रसीद और भुगतान नियमों और समय–समय पर सरकार द्वारा जारी किए गए अन्य आदेशों में निहित प्रावधानों के अनुसार आवश्यक जांच करने के बाद ई–भुगतान जारी करते हैं। .

5. आंतरिक लेखापरीक्षा विंग

आंतरिक ऑडिटिंग एक स्वतंत्र, वस्तुनिष्ठ आश्वासन और परामर्श गतिविधि है जिसे किसी संगठन के संचालन में मूल्य बढ़ाने और सुधार करने के लिए डिजाइन किया गया है। इसका मूल उद्देश्य जोखिम प्रबंधन, नियंत्रण और शासन प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन और सुधार करने के लिए एक व्यवस्थित, अनुशासित दृष्टिकोण लाकर संगठन को अपने उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करना है। यह वस्तुनिष्ठ आश्वासन और सलाह प्रदान करने के लिए एक प्रभावी साधन भी है जो मूल्यों को जोड़ता है, परिवर्तन को प्रभावित करता है जो शासन को बढ़ाता है, जोखिम प्रबंधन और नियंत्रण प्रक्रियाओं में सहायता करता है और परिणामों के लिए जवाबदेही में सुधार करता है। डेयर में सचिव (डेयर) की अध्यक्षता में आंतरिक लेखापरीक्षा समिति का गठन किया गया है। डेयर में स्वायत्त निकायों और अन्य अनुदान प्राप्त संस्थानों सहित 02 ऑडिटी इकाइयां/डीडीओ हैं।

6. सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस)

सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) प्रारम्भ में 2008–09 में तत्कालीन योजना आयोग की सीपीएसएमएस नामक एक योजना के रूप में शुरू की गई थी।

(I) **कर्मचारी सूचना प्रणाली (ईआईएस) मॉड्यूल** : यह मॉड्यूल कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग के सभी आहरण एवं संवितरण कार्यालयों में लागू किया गया है।

(II) **पीएफएमएस के ईएटी मॉड्यूल** : कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग के सभी स्वायत्त निकायों को पीएफएमएस के टीएसए मॉड्यूल में शामिल किया गया है।

(III) **गैर–कर राजस्व के संग्रह के लिए ऑनलाइन पोर्टल (भारतकोष)** : कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग का एनटीआरपी पोर्टल अप्रैल 2017 से चालू है। एनटीआरपी पर अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न वेबसाइट लिंक hptt://cga.nic.in//Page/ FAQ.aspx पर उपलब्ध हैं।

7. वित्त मंत्रालय और लेखा महानियंत्रक कार्यालय द्वारा नई पहल

अ. 'ई-बिल प्रणाली'

क) केंद्रीय वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 46वें नागरिक लेखा दिवस पर केंद्र सरकार के मंत्रालयों के लिए ई–बिल प्रणाली शुरू की। कागजरहित प्रस्तुतीकरण और बिलों की शुरू से अंत तक डिजिटल प्रोसेसिंग को सक्षम करने के लिए नई ई–बिल प्रणालीउपयुक्त है।

ख) चरणबद्ध तरीके से, नई प्रणाली बिल जमा करने और बैकएंड प्रोसेसिंग की पूरी प्रक्रिया को पूरी तरह से कागजरहित और पारदर्शी बना देगी। इस प्रकार, यह "डिजिटल इंडिया" के दृष्टिकोण को साकार करने और व्यापार में सरलता को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

ब. प्रणाली का उद्देश्य

i) सरकार के सभी विक्रेताओं/आपूर्तिकर्ताओं को किसी भी समय, कहीं से भी अपने बिल/दावे जमा करने की सुविधा प्रदान करना।

ii) आपूर्तिकर्ताओं और सरकारी अधिकारियों के बीच भौतिक इंटरफेस को समाप्त करना।

iii) बिलों/दावों के निपटान में दक्षता बढ़ाना।

iv) ''फर्स्ट–इन–फर्स्ट–आउट'' (फीफो) पद्धति के माध्यम से बिलों के प्रसंस्करण में विवेकाधिकार को कम करना।

स) वर्तमान में, सरकार को विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के आपूर्तिकर्ताओं को अपने बिलों की भौतिक, स्याही से हस्ताक्षरित प्रतियां भारत सरकार के संबंधित मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों में जमा करनी होती हैं। इसी तरह, सरकारी कर्मचारियों को भी अपने दावों की हार्ड कॉपी जमा करनी होती है। बैकएंड पर भी, बिलों का प्रसंस्करण भौतिक और डिजिटल मोड की मिश्रित प्रणाली के माध्यम से किया जाता है। इसलिए, आपूर्तिकर्ताओं/विक्रेताओं या उनके प्रतिनिधियों को बिल देने के लिए कार्यालयों का दौरा करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, वे अपने बिलों के प्रसंस्करण की स्थिति को ट्रैक करने में सक्षम हैं।

ड) नई लॉन्च की गई ई–बिल प्रणाली के तहत, विक्रेता आपूर्तिकर्ता डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से किसी भी समय अपने घरों/कार्यालयों की सुविधा से सहायक दस्तावेजों के साथ अपने बिल ऑनलाइन अपलोड कर सकते हैं। जिनके पास डिजिटल हस्ताक्षर नहीं है, उनके लिए आधार का उपयोग करके ई–साइन की सुविधा भी प्रदान की गई है। इसलिए, आपूर्तिकर्ताओं को अब इस उद्देश्य के लिए संबंधित कार्यालयों का दौरा करने की आवश्यकता नहीं होगी।

च) बैकएंड पर भी, प्राप्त इलेक्ट्रॉनिक बिल को अधिकारियों द्वारा हर चरण में डिजिटल रूप से संसाधित किया जाएगा और अंत में, भुगतान विक्रेता के बैंक खाते में डिजिटल रूप से जमा किया जाएगा। विक्रेता/आपूर्तिकर्ता अपने बिलों के प्रसंस्करण की स्थिति को ऑनलाइन ट्रैक करने में सक्षम होंगे। इस प्रकार, नई प्रणाली में अत्यधिक दक्षता और पारदर्शिता लाएगी और यह भारत सरकार का एक बड़ा नागरिक–केंद्रित निर्णय है।

छ) ई–बिल प्रणाली वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग में लेखा महानियंत्रक के कार्यालय में सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (पीएफएमएस) प्रभाग द्वारा विकसित की गई है। बिलों का प्रसंस्करण फर्स्ट–इन–फर्स्ट–आउट (फीफो) पद्धति से किया जाएगा।

ज) व्यवसाय करने में आसानी को बढ़ावा देने और लाखों विक्रेताओं/आपूर्तिकर्ताओं को सुविधा प्रदान करने के अलावा, ई–बिल प्रणाली पर्यावरण के अनुकूल होगी, जिससे सालाना करोड़ों कागज बिल जमा करने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी और इस प्रकार हर साल कागज के बड़े परिमाण की बचत होगी। ई–बिल प्रणाली में दस्तावेजों की पुनर्प्राप्ति के लिए एक विस्तृत डिजिटल भंडारण सुविधा और एक मजबूत ऑडिट ट्रेल है।

केन्द्रिक रूप से प्रायोजित योजनाओं के तहत धनराशि जारी करने की संशोधित प्रक्रिया

केन्द्रिक रूप से प्रायोजित योजनाओं (सीएसएस) के तहत राज्यों को जारी किए गए धन की उपलब्धता और उपयोग की बेहतर निगरानी के लिए और फ्लोट को कम करने के लिए व्यय विभाग ने सीएसएस के तहत धन जारी करने की प्रक्रिया को संशोधित किया है। राज्य सरकार प्रत्येक केन्द्रिक रूप से प्रायोजित योजनाओं को लागू करने के लिए एक एकल नोडल एजेंसी (एसएनए) नामित करेगी। एसएनए मॉडल के लिए प्रक्रिया प्रवाह पर संक्षिप्त जानकारीः

क) प्रत्येक राज्य सरकार प्रत्येक सीएसएस को लागू करने के लिए एक एकल नोडल एजेंसी (एसएनए) नामित करेगी। एसएनए राज्य स्तर पर प्रत्येक सीएसएस के लिए एक अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक में एक एकल नोडल खाता खोलेगा।

ख) योजना का एकल नोडल खाता खोलने के बाद और आईए का शून्य शेष सहायक खाता खोलने या उन्हें एसएनए के खाते से आहरण अधिकार सौंपने से पहले, सभी स्तरों पर आईए अपने खातों में पड़ी सभी अव्ययित राशि को एसएनए के एकल नोडल खाते में वापस कर देंगे।

ग) एसएनए यह सुनिश्चित करेंगे कि जारी किए गए फंड से अर्जित ब्याज अनिवार्य रूप से जीएफआर, 2017 के नियम 230 (8) के संदर्भ में आनुपातिक आधार पर संबंधित समेकित निधि में भेजा जाए।

घ) एसएनए के बैंक खाते में उपलब्ध धनराशि 2022–23 के लिए किसी राज्य को सीएसएस के तहत जारी होने वाली संभावित राशि (राज्य के हिस्से सहित) के 25% से अधिक नहीं होनी चाहिए।

ङ) एसएनए और आईए अनिवार्य रूप से पीएफएमएस के ईएटी मॉड्यूल का उपयोग करेंगे या अपने सिस्टम को पीएफएमएस के साथ एकीकृत करेंगे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पीएफएमएस पर जानकारी प्रत्येक आईए द्वारा हर दिन कम से कम एक बार अपडेट हो।

च) सीएसएस के मामले में जिसमें कोई राज्य की हिस्सेदारी नहीं है और जहां योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार, केंद्रीय मंत्रालय/विभाग द्वारा सीधे जिलों/प्रखण्डों/ग्राम पंचायतों/कार्यान्वयन एजेंसियों को धन जारी किया जाता है, राज्य स्तर पर एक एकल नोडल एजेंसी को अधिसूचित करने और एकल नोडल खाते को खोलने की आवश्यकता को वित्तीय सलाहकार के परामर्श से संबंधित केंद्रीय मंत्रालय/विभाग के सचिव द्वारा माफ किया जा सकता है।

स. केन्द्रीय सेक्टर योजनाओं के तहत धन जारी करने की संशोधित प्रक्रिया

पिछले सभी जारी आदेशों का अधिक्रमण करते हुए, वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग ने एक कार्यालय ज्ञापन सं. एफ.नंबर 1(18)/पीएफएमएस/एफसीडी/2021 दिनांक 09 मार्च 2022 को जारी किया है जिसमें केंद्रीय सेक्टर योजनाओं के तहत धन जारी करने के संबंध में केंद्रीय नोडल एजेंसी (सीएनए) को नामित करके केंद्रीय सेक्टर योजनाओं के तहत धन के प्रवाह के लिए दिशानिर्देश/प्रक्रिया का उल्लेख किया गया है। केंद्रीय सेक्टर योजनाओं के तहत धन के प्रवाह के लिए भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों द्वारा 1 अप्रैल 2022 से प्रभावी प्रक्रिया को दो मॉडलों में विभाजित किया गया है :

I) **ट्रेजरी सिंगल अकाउंट (टीएसए) मॉडल I के माध्यम से कार्यान्वयन**– यह मॉडल 500 करोड़ रुपये से अधिक के वार्षिक परिव्यय वाली केंद्रीय सेक्टर योजनाओं के मामले में लागू होगा और राज्य एजेंसियों की भागीदारी के बिना लागू किया जाएगा। ऐसी योजनाओं को ट्रेजरी सिंगल अकाउंट (टीएसए) मॉडल के माध्यम से लागू करना अनिवार्य होगा।

II) **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) मॉडल II के माध्यम से कार्यान्वयन**– यह मॉडल उन केंद्रीय सेक्टर योजनाओं के मामले में लागू होगा जिनका (ए) वार्षिक परिव्यय 500 करोड़ से कम है या (बी) योजनाएं जो केवल राज्य सरकार की एजेंसियों द्वारा कार्यान्वित की जा रही या केंद्रीय एजेंसियों के अतिरिक्त या (सी) अन्य योजनाएं जो मॉडल–1 में शामिल नहीं हैं।

केंद्रीय सेक्टर योजनाओं के लिए प्रक्रिया प्रवाह पर संक्षिप्त जानकारी

क) मॉडल I या मॉडल–II के माध्यम से कार्यान्वयन के लिए केंद्रीय सेक्टर योजनाओं की पहचान।

ख) केंद्रीय नोडल एजेंसियों (सीएनए) के रूप में एबी/सीपीएसई/कार्यान्वयन एजेंसियों की अधिसूचना।

ग) मॉडल–I के तहत प्रत्येक योजना के लिए आरबीआई (ई–कुबेर) के साथ असाइनमेंट खाता खोलना।

घ) मॉडल II के तहत प्रत्येक योजना के लिए अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) में एक खाता खोलना।

ङ) सीएनए और एसए के मौजूदा बैंक खातों को सूचीबद्ध करना और बंद करना।

च) मॉडल I के तहत खाते में शेष राशि को भारत की समेकित निधि (सीएफआई) में स्थानांतरित किया जाना चाहिए और मॉडल II के तहत योजना की अव्ययित राशि सभी उप एजेंसियों (एसए) द्वारा सीएनए खाते में वापस कर दी जानी चाहिए।

छ) मॉडल II के तहत निधि से अर्जित ब्याज भारत की समेकित निधि (सीएफआई) में भेज दिया जाता है।

ज) पीएफएमएस के ईएटी मॉड्यूल का अनिवार्य रूप से उपयोग या पीएफएमएस के साथ उनके सिस्टम का एकीकरण।

पीएफएमएस का उपयोग करते समय सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर समेकित निर्देश

वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग, लेखा महानियंत्रक कार्यालय ने ओ.एम. क्रमांक 1–17016/1/2022–आईटीडी–सीजीए/10985/229 दिनांक 30 सितंबर 2022 के तहत पीएफएमएस का उपयोग करते समय सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं पर समेकित निर्देश जारी किए हैं:

ए) उपयोग प्रबंधन

i) पीएफएमएस के पीएओ और डीडीओ मॉड्यूल से जुड़े अधिकारियों के नए उपयोगकर्ता पंजीकरण के लिए, केवल एनआईसी/जीओवी डोमेन ईमेल आईडी की अनुमति होगी। एक ही ईमेल–आईडी और मोबाइल नंबर का उपयोग एक ही पीएओ कोड के भीतर अधिकतम चार उपयोगकर्ता आईडी के लिए किया जा सकता है और विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में उपयोगकर्ताओं द्वारा संभाले जाने वाले कई कार्यों को ध्यान में रखते हुए सभी पीएओ कोड के लिए अतिरिक्त तीन उपयोगकर्ता आईडी का उपयोग किया जा सकता है।

ii) उपयोगकर्ता के सृजन के लिए दो स्तरों की मंजूरी की एक प्रणाली और अनुमोदनकर्ताओं के लिए उपयोगकर्ताओं के सृजन पर ई–मेल/एसएमएस अलर्ट सिस्टम में बनाया गया है।

iii) निष्क्रिय उपयोगकर्ता आईडी को 45 दिन से अधिक होने पर निर्योग्य के रूप में चिह्नित करना प्रणाली पीएफएमएस में लागू की जा रही है।

iv) किसी भी ग्रुप ए और ग्रुप बी अधिकारी की कार्यमुक्ति के समय, जो पीएफएमएस में उपयोगकर्ता है जैसे सीसीए स्तर के उपयोगकर्ता, पीएओ प्रकार के उपयोगकर्ता, उनके डिजिटल हस्ताक्षर और उपयोगकर्ता आईडी को निष्क्रिय कर दिया जाना चाहिए।

v) यदि उपयोगकर्ता द्वारा आमतौर पर उपयोग किए जा रहे सिस्टम के अलावा किसी अन्य सिस्टम में लॉग इन करता है तो बदलाव के लिए उपयोगकर्ता को सचेत करने हेतु एक अधिसूचना दी जाती है।

बी. पीएफएमएस में पासवर्ड नीति

क) पासवर्ड कम से कम 8 अक्षरों का होना चाहिए।

ख) पासवर्ड में अनिवार्य रूप से विशेष और अल्फा न्यूमेरिक दोनों अक्षर शामिल होने चाहिए।

ग) पासवर्ड का उपयोगकर्ता नाम या उपयोगकर्ता नाम के किसी भाग से समानता नहीं होनी चाहिए।

सी. भुगतान प्रक्रिया

क) प्रधान लेखा अधिकारी की आई कुंजी/डीएससी को हमेशा सीसीए स्तर के उपयोगकर्ता द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए, जबकि पीएओ की आई कुंजी/डीएससी को प्रधान लेखा अधिकारी द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए। सीडीडीओ की आई कुंजी/डीएससी को पीएओ स्तर के उपयोगकर्ता द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए। पीएफएमएस में प्रत्येक सत्र के लिए आई कुंजी/डीएससी डालने की टाइमआउट प्रक्रिया बनाई गई है।

ख) पीएओ को सख्ती से सलाह दी जाती है कि वे पीएओ/डीडीओ मॉड्यूल तक न पहुंचें और अपने कार्यालय स्थानों के बाहर मौजूद कंप्यूटर से भुगतान करने के लिए डिजिटल हस्ताक्षर का उपयोग न करें।

ग) भुगतान करने के लिए निर्धारित सभी दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए और भौतिक दस्तावेजों से भुगतान का सत्यापन सभी स्तरों पर किया जाना चाहिए जब तक कि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के उपयोगकर्ता के लिए स्पष्ट निर्देशों द्वारा निर्धारित न किया गया हो।

घ) भुगतान करने के लिए अधिकृत सभी वेतन और लेखा अधिकारी डिजिटल हस्ताक्षर करने से पहले बैच की प्रत्येक भुगतान फाइल को संबंधित भौतिक बिल/ई–बिल के साथ सत्यापित करेंगे।

डी. नेटवर्क सुरक्षा

क) उपयोगकर्ता हमेशा असली सॉफ्टवेयर का उपयोग करें, ऑपरेटिंग सिस्टम, एंटीवायरस और एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर के लिए नवीनतम अपडेट/पैच इंस्टॉल करें।

ख) फायरवॉल सक्रिय करें, कंप्यूटर पर उपयोगकर्ता विशेषाधिकार सीमित करें, संलग्न फाइल खोलने से पहले ईमेल प्रेषक आईडी और वेब लिंक जांचें और सत्यापित करें।

ग) मजबूत पासवर्ड का प्रयोग करें, साइबर हमलों से बचाव करें।

घ) केवल आधिकारिक आपूर्ति किए गए यूएसबी स्टोरेज मीडिया का ही उपयोग करें।

ङ) उपयोगकर्ताओं को समय–समय पर साइबर सुरक्षा उपायों के बारे में जानकारी दी जानी चाहिए।

च) पायरेटेड सॉफ्टवेयर डाउनलोड और इंस्टॉल करने से बचें।

छ) संवेदनशील आधिकारिक दस्तावेजों/पत्राचारों का प्रारूप तैयार करने/भंडारण करने के लिए इंटरनेट से जुड़े कंप्यूटर का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

ई. कुछ अन्य नई पहलें

- टीएसए/एसएनए/सीएनए पर व्यय विभाग के दिशानिर्देशों का अक्षरशः कार्यान्वयन।
- योजनावार व्यय, अव्ययित शेष राशि, बकाया यूसी, कोषागार से एसएनए में एक्सेस/डेफिसिट के हस्तांतरण की योजनावार और राज्य–वार एमआईएस, एसएनए खाते में उपलब्ध निधि, सीएफआई को प्रेषित ब्याज, निधि प्रवाह की निगरानी और उन्हें समय पर (जेआईटी) जारी करने में मदद करने के लिए साप्ताहिक आधार पर कार्यक्रम प्रभाग के साथ विरासत आंकड़ों की स्थिति का विवरण साझा किया जा रहा है।
- प्रधान लेखा कार्यालय द्वारा प्रभागीय प्रमुखों सहित सभी हितधारकों के लिए पीएफएमएस के ई–बिल और टीएसए मॉड्यूल पर प्रशिक्षण की एक श्रृंखला आयोजित की गई है।
- बकाया एमईए डेबिट दावों के निपटान के लिए एक विशेष अभियान शुरू किया गया था।
- सरकारी ई–मार्केट प्लेस (जीईएम) में विक्रेता/आपूर्तिकर्ता को भुगतान में देरी और पीएफएमएस के अनुसार ब्लॉक बजट के संदर्भ में लंबित बिल की स्थिति संबंधित विभाग प्रमुख को सूचित की जा रही है, जिसकी एक प्रति सचिव और एएस और एफए के प्रधान निजी सचिव को दी जा रही है ताकि व्यय विभाग द्वारा निर्धारित समय सीमा के भीतर भुगतान किया जा सके।
- सीजीए कार्यालय के ओएम के संदर्भ में मुख्य लेखांकन प्राधिकारी, यानी सचिव (डीए एंड एफडब्ल्यू) की अध्यक्षता में आंतरिक लेखापरीक्षा समिति की स्थापना की गई है। 2022–23 में बकाया आंतरिक ऑडिट पैरा के परिसमापन के लिए एक विशेष अभियान शुरू किया गया है और साप्ताहिक आधार पर सचिव की अध्यक्षता में वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में बकाया पैरा की आवधिक समीक्षा की गई है।
- एनपीएस निरीक्षण व्यवस्था के लिए समिति का गठन और वित्तीय सलाहकार की टिप्पणियों के साथ एनपीएस डैशबोर्ड में त्रैमासिक रिपोर्ट अपलोड करना।
- प्रधान सह वेतन एवं लेखा कार्यालय के सभी अधिकारियों के लिए पदनाम आधारित ई–मेल खोला गया है।
- आरटीआई, पीजी एवं वीआईपी संदर्भ सहित सभी लंबित मामलों के निस्तारण हेतु विशेष अभियान 2.0।

- 2022–23 में पीएफएमएस की इलेक्ट्रॉनिक बिल प्रणाली (ई–बिल) के लिए अखिल भारतीय प्रशिक्षण सह रोल–आउट योजना।
- डीओई अधिसूचना दिनांक 12.12.2022 और सीजीए के कार्यालय के ओएम दिनांक 15.12.2022 द्वारा जारी डीएफपीआर के नियम (8) के तहत खातों के संशोधित/नए वस्तु शीर्षकों का संचालन और इस संबंध में प्रिंसिपल सह वेतन एवं लेखा कार्यालय द्वारा एक कार्यशाला भी आयोजित की गई थी।
- आंतरिक नियंत्रण में सुधार और कौशल के उन्नयन के लिए, प्रिंसिपल सह वेतन एवं लेखा कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को सीवीसी, डीओपीटी दिशानिर्देशों और सीजीए कार्यालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार स्थानांतरित किया गया है।
- पीएफएमएस तक पहुंचने के लिए FIDO डिवाइस के माध्यम से द्वितीय कारक बायोमीट्रिक प्रमाणीकरण का कार्यान्वयन।
- कार्यान्वयन एजेंसियों को 100% केंद्रीय वित्तीय सहायता और टीएसए/एसएनए/सीएनए मार्ग के अलावा एबी को जीआईए (वेतन, सामान्य और पूंजीगत संपत्ति का निर्माण) जारी करने के लिए योजनावार बैंक खाता खोलना।
- 01.03.2023 से 07.03.2023 तक सिविल लेखा सप्ताह उत्सव का आयोजन।
- साप्ताहिक और मासिक आधार पर पीएफएमएस की टीएम–02 रिपोर्ट (भुगतान टैब में सीएएम रिपोर्ट के तहत) की निगरानी के माध्यम से भुगतान प्रक्रिया की दक्षता बढ़ाना।
- वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग, पीएफएमएस प्रभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. एफ नम्बर 8/(01)/पीएफएमएस/2023, दिनांक 17.04.2023 के अनुसरण में पीएफएमएस से संबंधित किसी भी मुद्दे के लिए PD और IFD के लिए कॉल के पहले पोर्ट के रूप में DCA की अध्यक्षता में प्रिंसिपल सह वेतन एवं लेखा कार्यालय में पीएफएमएस सेल का गठन।
- सीजीए कार्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसार डेयर योजनाओं का जोखिम आधारित ऑडिट।
- पीएफएमएस के मंजूरी मॉड्यूल में मौजूदा जावा आधारित उपयोगिता के स्थान पर नई विंडो आधारित डिजिटल हस्ताक्षर उपयोगिता का कार्यान्वयन।
- केंद्रीय सिविल पेंशन नियम, 2021 के नियम 32 के संदर्भ में समय पर पीएओ के परामर्श से सरकारी कर्मचारी को कार्यालय प्रमुख द्वारा अर्हक सेवा प्रमाणपत्र जारी करने के लिए विशेष अभियान।
- मासिक आधार पर पीएओ और डीडीओ के बीच व्यय का मिलान।
- पेंशन मामलों को संवेदनशीलता से और समय पर निपटाना।
- सीजीए और सीएंडएजी ऑडिट पैरा के परिसमापन के लिए विशेष अभियान।
- पीएफएमएस में इलेक्ट्रॉनिक अंतर–सरकारी समायोजन एडवाइस (ई–आईजीएए) के प्रोसेसिंग का रोल–आउट।
- सीजीए कार्यालय के कार्यालय ज्ञापन दिनांक 19.07.2023 के संदर्भ में किसी भी वित्तीय अनियमितता से बचने के लिए विभिन्न स्तर पर रोकथाम उपाय।

8. बजट आकलन 2023-24 के संदर्भ में 31.10.2023 को व्यय एक्जीबिट 'सी' में दिया गया है।

एक्जीबिट 'ए'

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय में लेखांकन संगठन की व्यवस्था

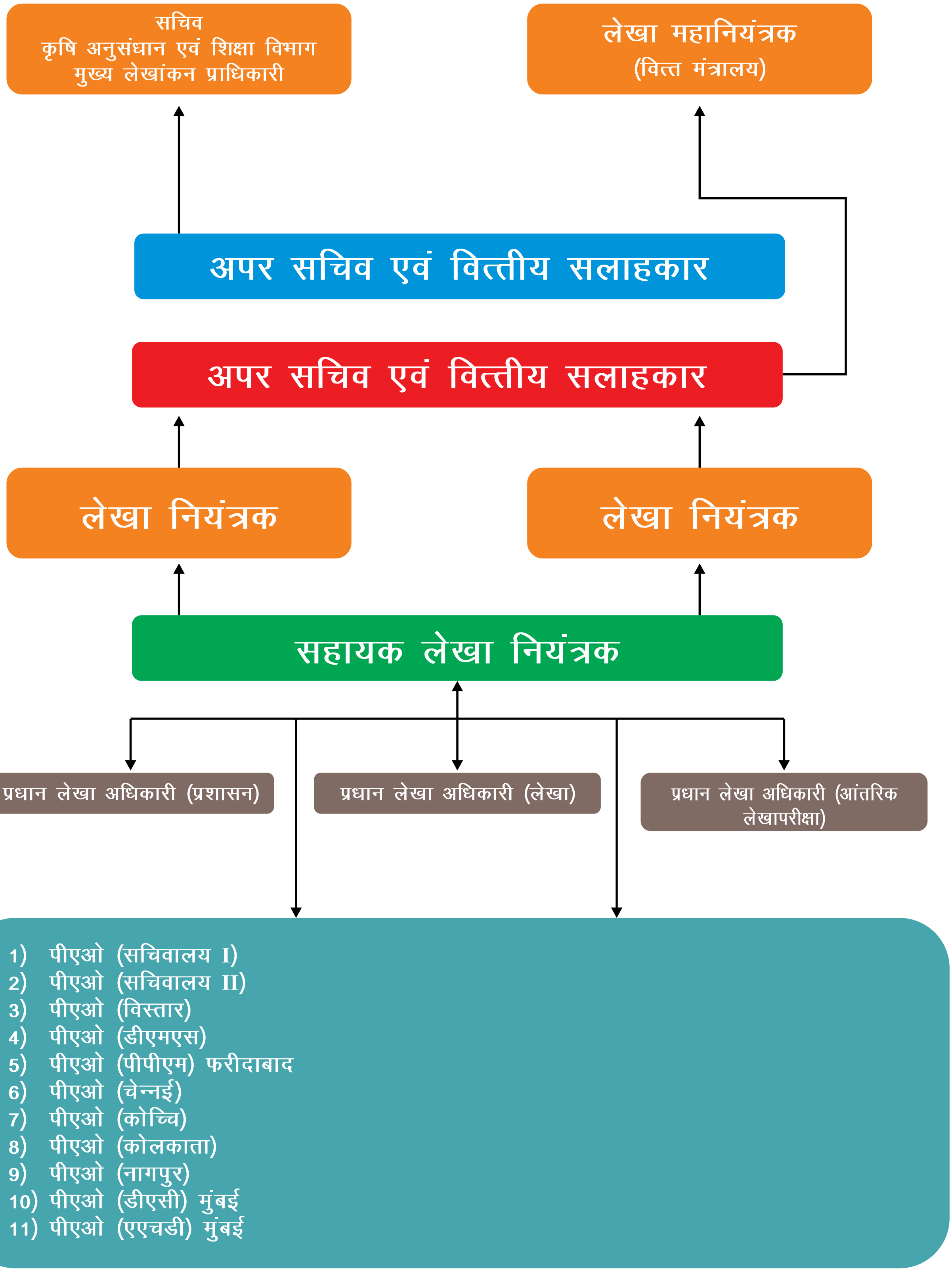

एक्जीबिट 'बी'

लेखांकन सूचना प्रवाह

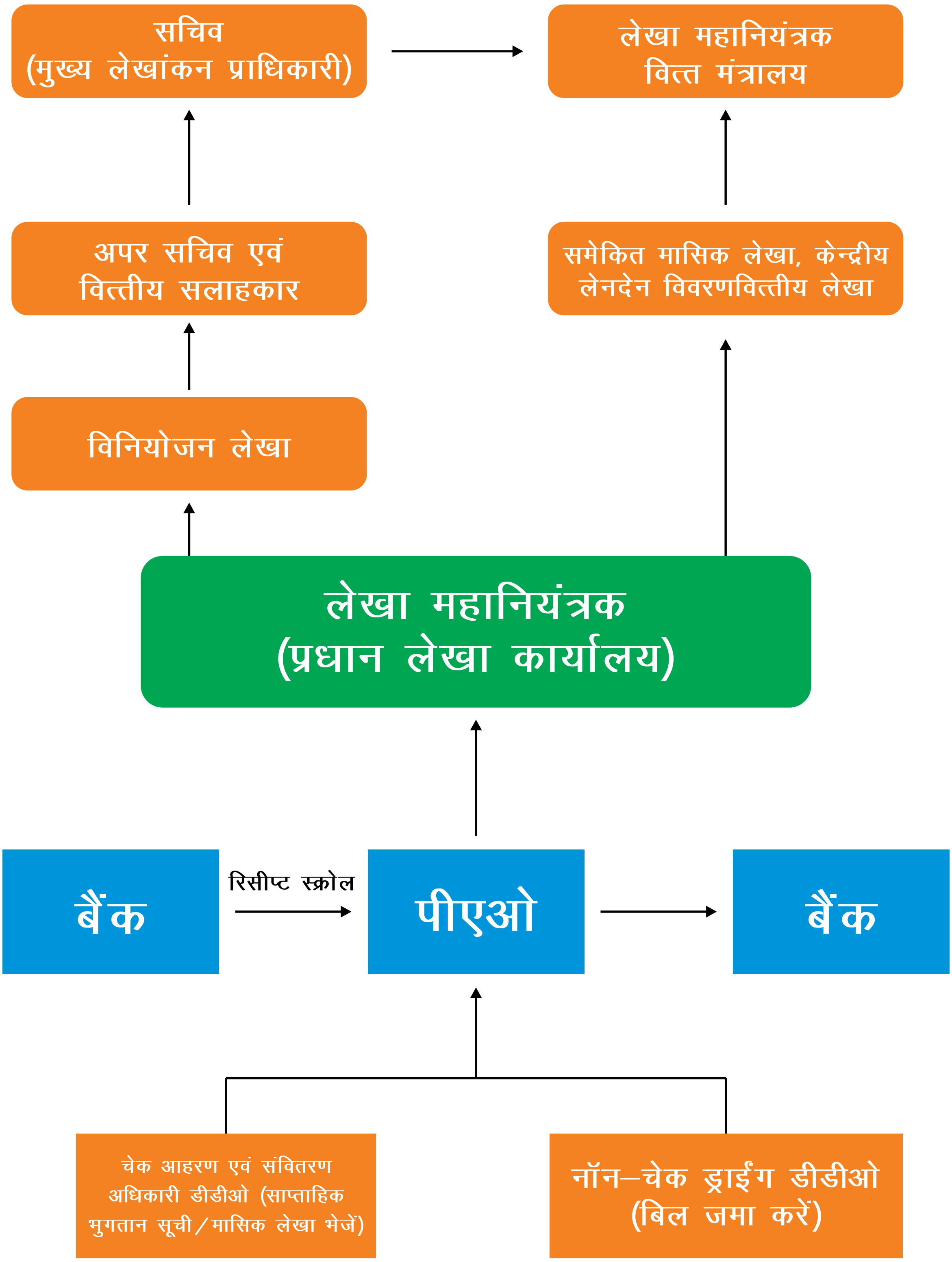

एक्जीबिट 'सी'

अनुदान संख्या 02
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
बजट आकलन एवं व्यय की निगरानी
लेनदेन की अवधि: 01.04.2023 से 31.10.2023

(रु. करोड़ में)

क्र. सं.	योजना का नाम/विवरण	बजट आकलन 2023–24	31.10.2023 तक प्रगामी व्यय	बजट आकलन के संदर्भ में व्यय का प्रतिशत
	1	2	3	4
1	**केन्द्र का स्थापना व्यय**			
1.1	सचिवालय	8.30	4.47	53.86%
1.2	कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल (एएसआरबी)	27.98	8.32	29.74%
1.3	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग – अन्य कार्यक्रम	7.43	0.08	1.08%
	कुल–केन्द्र का स्थापना व्यय	43.71	12.87	29.44%
2	**केन्द्रीय सेक्टर योजनाएं/परियोजनाएं**			
2.1	कृषि विस्तार	327.00	245.25	75.00%
2.2	कृषि अभियांत्रिकी	65.00	48.75	75.00%
2.3	कृषि वानिकी अनुसंधान सहित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संस्थान	240.00	180.00	75.00%
2.4	फसल विज्ञान	714.41	535.81	75.00%
2.5	बागवानी विज्ञान	212.00	159.00	75.00%
2.6	पशु विज्ञान	300.00	225.00	75.00%
2.7	मत्स्य विज्ञान	150.00	112.50	75.00%
2.8	कृषि विश्वविद्यालय एवं संस्थाएं	322.74	242.06	75.00%
2.9	राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)	92.26	54.60	59.18%
	कुल–केन्द्रीय सेक्टर योजनाएं/परियोजनाएं	2423.41	1802.97	74.40%
3	**अन्य केन्द्रीय सेक्टर व्यय**			
3.1	स्वायत्त निकाय			
(i)	भाकृअनुप मुख्यालय	6384.59	4803.04	75.23%
(ii)	केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय			
	केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय–इम्फाल	283.42	212.57	75.00%
	रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय – झांसी (बुन्देलखण्ड)	120.00	90.00	75.00%
	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय – पूसा, समस्तीपुर (बिहार)	248.11	186.08	75.00%
	कुल – केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय	651.53	488.65	75.00%
(iii)	राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी	0.76	0.38	50.00%
	कुल–(स्वायत्त निकाय)	7036.88	5292.07	75.20%
	कुल–अन्य केन्द्रीय सेक्टर व्यय	7036.88	5292.07	75.20%
	कुल (अनुदान संख्या 2)	9504.00	7107.91	74.79%

अनुसंलग्नक

परिशिष्ट -I

सारणी 1. विदेशी फेलोशिप/प्रशिक्षण के लिए अनुमति प्राप्त आईसीएआर वैज्ञानिकों की सूची

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	फेलोशिप	स्थान	समय अवधि	वित्त पोषण	जारी करने की तारीख
1	सुश्री विनीता रामटेके, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–आईआईएसएस, मऊ	पीएचडी के लिए नेताजी सुभाष, आईसीएआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2021–22 की प्राप्ति	पादप प्रजनन विभाग, फसल विज्ञान एवं संसाधन संरक्षण संस्थान, बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी	25.10.2022 से 24.10.2025	नेताजी सुभाष, भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप के तहत	14.10.2022
2	श्री चोभे कपिल आत्माराम, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–आईएआरआई, नई दिल्ली	भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप	टेक्सास ए एण्ड एम विश्वविद्यालय, कॉलेज स्टेशन, संयुक्त राज्य अमेरिका	17/01/2023 से 16/01/2023	नेताजी सुभाष, भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप के तहत	15.10.2022
3	डॉ. जी. के. सिवारमण, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–सीआईएफटी, कोच्चि	वर्ष 2022–23 के लिए भाकृअनुप–डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप	साउथैम्पटन विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग और भौतिक विज्ञान विभाग, युनाइटेड किंग्डम	15.12.2022 से 15.03.2023	वर्ष 2022–23 के लिए भाकृअनुप – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप	18.11.2022
4	श्री राहुल चंदोरा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	आईसीएआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप	क्वींसलैंड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया	10/01/2023 से 09/01/2026	नेताजी सुभाष–भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप के तहत	22.12.2022
5	डॉ. श्याम कुमार, टी. एस., वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान	स्टेम सेल जीव विज्ञान और ऑर्गेनॉइड मॉडल्स विकास के हेतु अंतर–विषयवस्तु क्षेत्र में पीएच.डी	पशु चिकित्सा और जैव चिकित्सा विज्ञान विभाग, दक्षिण डकोटा स्टेट यूनिवर्सिटी, ब्रूकिंग्स, साउथ डकोटा, संयुक्त राज्य अमेरिका	02/01/2023 से 31/12/2025	दौरे का खर्च मेजबान संस्थान/स्वयं आवेदक द्वारा वहन किया जाएगा।	27.12.2022
6	श्री बिश्वरंजन बेहेरा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय जल प्रबंधन संस्थान, भुबनेश्वर	नेताजी सुभाष–भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2021–22	क्वींसलैंड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया	01/04/2023 से 31/03/2026	नेताजी सुभाष–भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2021–22 के तहत	09.01.2023
7	डॉ. अंशुल वत्स, वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय पादप जैवप्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली	अध्ययन शीर्षक पादप परजीवी ब्रूमरेप (फेलिपेंचे रामोसा) का अंकुरण परख पर प्रशिक्षण	प्रयोगशाला यूएस2बी यूएमआर सीएनआरएस 6286 श्री बर्नार्ड ऑफमैन, नैनटेस विश्वविद्यालय, फ्रांस के नेतृत्व में	28/01/2023 से 08/02/2023	भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप जैवप्रौद्योगिकी संस्थान,	13.01.2023
8	अरादवाद प्रमोद पांडुरंग, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	नेताजी सुभाष –भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2021–22	लेबनिज इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड बायो–इकोनॉमी (एटीबी), पॉट्सडैम बर्लिन तकनीकी विश्वविद्यालय में पंजीकरण के साथ, जर्मनी	13/02/2023 से 13/02/2026	नेताजी सुभाष–भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2021–22 के तहत	01.02.2023
9	डॉ. राज मुखोपाध्याय, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल	फुलब्राइट–नेहरू पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च फेलोशिप 2022–23	कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका	01/04/2023 से 31/03/2025	यूनाइटेड स्टेट्स – इंडिया एजुकेशनल फाउंडेशन	03.02.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	फेलोशिप	स्थान	समय अवधि	वित्त पोषण	जारी करने की तारीख
10	डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	भाकृअनुप – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप	पर्यावरण विज्ञान का खाद्य कृषि महाविद्यालय, ओहियो कृषि अनुसंधान और विकास केंद्र (खाद्य पशु स्वास्थ्य केंद्र, वूस्टर ओहियो), ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका	24/03/2023 से 23/03/2024	भाकृअनुप – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2022–23	03.02.2023
11	डॉ. सुदर्शन कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	फुलब्राइट – नेहरू फेलोशिप	ओरेगॉन स्टेट यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ पब्लिक हेल्थ एंड ह्यूमन साइंसेज, स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल एण्ड पॉपुलेशन हेल्थ साईंसेस	25/03/2023 से 24/12/2023	नेहरू – फुलब्राइट फेलोशिप (2022–23)	13.02.2023
12	डॉ. विशाल चन्दर, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – आईवीआरआई, मुक्तेश्वर कैम्पस	युवा जैव–चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए दीर्घकालिक आईसीएमआर – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2022–23	मिस्सुरी विश्वविद्यालय कोलंबिया, संयुक्त राज्य अमेरिका	20.03.2023 से 20.03.2023	युवा जैव–चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए आईसीएमआर – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2022–23	06.03.2023
13	डॉ. सलाउद्दीन कुरेशी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप – आईवीआरआई, इज्जतनगर	युवा जैव–चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए अल्पकालिक आईसीएमआर – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फैलोशिप 2022–23	टोलेडो विश्वविद्यालय, टोलेडो, ओहियो, संयुक्त राज्य अमेरिका	18.03.2023 से 17.06.2023	युवा जैव–चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए आईसीएमआर – डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय फेलोशिप 2022–23	06.03.2023
14	डॉ. राजन्ना जी. ए, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, आरआरएस, अनन्तपुर	पोस्ट–डॉक्टरेट फेलोशिप का अनुसरण	फसल उत्पादन प्रणाली अनुसंधान इकाई, यूएसडीए (यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर)	03/04/2023 से 02/04/2024	फसल उत्पादन प्रणाली अनुसंधान इकाई, यूएसडीए	09.03.2023
15	डॉ. संगीता मोहन्ती/लेंका, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल	इण्डो–यूएस विजिटिंग फेलोशिप	डॉ.रामेश्वर कंवर, अमेस में आयोवा स्टेट यूनिवर्सिटी, आयोवा संयुक्त राज्य अमेरिका	01/05/2023 से 31/07/2023	यूएसडीए फॉरेन एग्रीकल्चरल सर्विस, यूएसडीए एफएएस	25.04.2023
16	डॉ. द्विजेश चन्द्र मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पोस्ट–डॉक्टरेट फेलोशिप	सिनसिनाटी विश्वविद्यालय, सिनसिनाटी, ओहियो राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका	01/05/2023 से 30/04/2024	मेजबान संस्थान	01.05.2023
17	डॉ. अशीम दत्ता, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – सीएसएसआरआई, करनाल	इण्डो–यूएस विजिटिंग फेलोशिप	मिशीगन स्टेट यूनिवर्सिटी, ईस्ट लानसिंग, संयुक्त राज्य अमेरिका	01.06.2023 से 31.05.2025	मेजबान संस्थान	03.05.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	फेलोशिप	स्थान	समय अवधि	वित्त पोषण	जारी करने की तारीख
18	डॉ. दंडापानी आर., वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पोस्ट–डॉक्टरेट फेलोशिप	मिसौरी विश्वविद्यालय कोलंबिया, एमओ 652117140, संयुक्त राज्य अमेरिका	01 / 07 / 2023 से 30 / 06 / 2024	मिसौरी विश्वविद्यालय (एमयू) ने एक समेकित फेलोशिप की पेशकश की है आजीविका, आवास, वीजा, हवाई यात्रा और चिकित्सा बीमा आदि के लिए +40,000 डॉलर प्रतिवर्ष। मिसौरी विश्वविद्यालय, कोलंबिया, एमयू, यूएसए में	09.05.2023
19	श्री उदय चन्द्र झा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर	पोस्ट–डॉक्टरेट फेलोशिप	कैनसास स्टेट यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका	01 / 07 / 2023 से 30 / 06 / 2024	मेजबान संस्थान	31.05.2023
20	श्री सेल्वाकुमार आर., वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	"सतत फसल उत्पादन के लिए सिंचाई और उर्वरता प्रौद्योगिकी" शीर्षक पर प्रशिक्षण	मैशराव इजराइल की अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी, विदेश मंत्रालय, यरूशलम, इजराइल	05 / 06 / 2023 से 22 / 06 / 2023	मैशहाव इजराइल की अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी, विदेश मंत्रालय, येरूशलम, इजराइल	02.06.2023
21	श्री गुरूमूर्ति एस., वैज्ञानिक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय अजैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान, बारामती	पोस्ट–डॉक्टरेट फेलोशिप	कैनसास स्टेट युनिवर्सिटी, कैनसास, संयुक्त राज्य अमेरिका	01 / 07 / 2023 से 30 / 09 / 2023	आवास और आहार का खर्च मेजबान संस्थान द्वारा वहन किया जाएगा और अन्य यात्रा, वीजा शुल्क और स्वास्थ्य बीमा आवेदक द्वारा वहन किया जाएगा।	22.06.2023
22	डॉ. द्विजेश चन्द्र मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पोस्ट–डॉक्टरेट फेलोशिप	सिनसिनाटी विश्वविद्यालय, सिनसिनाटी, ओहियो राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका	26 / 06 / 2023 से 25 / 06 / 2024 तक के स्थान पर 04 / 09 / 2023 से 3 / 09 / 2024	सिनसिनाटी विश्वविद्यालय, सिनसिनाटी, ओहियो राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका	14.08.2023
23	श्री पोतदार राहुल राजाराम, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल	कृषि मशीनरी के परीक्षण के लिए एशियाई और प्रशांत नेटवर्क (एएनटीएएम) के प्रशिक्षकों का छठा प्रशिक्षण	कासेट्सर्ट विश्वविद्यालय और जापान कृषि मशीनरी संस्थान, राष्ट्रीय कृषि और खाद्य अनुसंधान संगठन, थाईलैंड	04 / 09 / 2023 से 08 / 09 / 2023	एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग का सतत कृषि मशीनीकरण केंद्र	18.08.2023
24	श्री दिलीप जाट, वैज्ञानिक, भाकृअनुप –केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल	कृषि मशीनरी के परीक्षण के लिए एशियाई और प्रशांत नेटवर्क (ANTAM) के प्रशिक्षकों का छठा प्रशिक्षण	कासेट्सर्ट विश्वविद्यालय और जापान कृषि मशीनरी संस्थान, राष्ट्रीय कृषि और खाद्य अनुसंधान संगठन, (आईएएम नारो), कम्फाइंग, थाईलैंड	04 / 09 / 2023 से 08 / 09 / 2023	एशिया और प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग ईएससीएपीसीएसएएम	18.08.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	फेलोशिप	स्थान	समय अवधि	वित्त पोषण	जारी करने की तारीख
25	डॉ. राजकुमार, धाकड़, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	फुलब्राइट – नेहरू फेलोशिप	जैविक प्रणाली इंजीनियरिंग, वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका	20/09/2023 से 19/09/2024	संयुक्त राज्य अमेरिका–इंडिया एजुकेशनल फाउंडेशन और जे.विलियम फुलब्राइट फॉरेन स्कॉलरशिप बोर्ड (एफएफएसबी), वाशिंगटन डी.सी.	11.09.2023
26	श्री तुषार कान्ति दत्ता, वैज्ञानिक, भाकृअनुप – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	फुलब्राइट – नेहरू फेलोशिप	कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, डेविस, संयुक्त राज्य अमेरिका	29/03/2024 से 27/12/2024	नेहरू– फुलब्राइट फेलोशिप (2023–24) के तहत संयुक्त राज्य अमेरिका– इंडिया एजुकेशन फाउंडेशन (यूएसआईईएफ)	14.09.2023

परिशिष्ट-II

सारणी 2. अध्येतावृत्ति/प्रशिक्षण के विस्तार की अनुमति प्राप्त करने वाले भाकृअनुप वैज्ञानिकों की सूची

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	अध्येतावृत्ति	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
1	श्री मुकेश कुमार चौधरी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना	पीएच.डी. कार्यक्रम पूरा करने के लिए विदेश यात्रा का विस्तार	कृषि एवं पर्यावरण विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय, पर्थ, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया	30.10.2022 से 29.04.2023		01.12.2022
2	डॉ. विशाल सिंह, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना	पीएच.डी. कार्यक्रम पूरा करने के लिए विस्तार	उटाह राज्य विश्वविद्यालय, लोगान, उटाह, यूएसए	20.12.2019 से 19.12.2023 तक 3 वर्ष की निर्धारित अवधि से आगे 20.12.2022 से 30.06.2023		31.01.2023
3	श्री मनीष कुमार, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल	नेताजी सुभाष–भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति के अंतर्गत पीएच.डी. कार्यक्रम पूरा करने के लिए विस्तार	वुर्जबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी	निर्धारित 14.10.2019 से 13.10.2022 के आगे 14.10.2022 से 31.03.2023		14.03.2023
4	श्री पुष्पेन्द्र कोली, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी	नेताजी सुभाष–भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति के अंतर्गत पीएच.डी. कार्यक्रम पूरा करने के लिए विस्तार	मर्डोक विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया	निर्धारित 16.03.2020 से 15.03.2023 के आगे 15.03.2023 से 15.09.2023		12.06.2023
5	श्री मुकेश कुमार चौधरी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना	पीएच.डी. कार्यक्रम पूरा करने के लिए विस्तार	कृषि एवं पर्यावरण विद्यालय, ऑस्ट्रेलिया विश्वविद्यालय, पर्थ, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया	29.04.2023 से आगे 30.04.2023 से 20.10.2023		27.07.2023

अनुसंलग्नक–III

सारणी 3. अध्येतावृत्ति/प्रशिक्षण के पुनर्निर्धारण की अनुमति प्राप्त करने वाले भाकृअनुप वैज्ञानिकों की सूची

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	अध्येतावृत्ति	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
1	डॉ. बिन्सिला बी. कृष्णन, वैज्ञानिक, भाकृअनुप– राष्ट्रीय पशु पोषण और शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु	एसईआरबी अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान अनुभव 2022–23 के अंतर्गत एसईआरबी अध्येतावृत्ति के लिए पुनर्निर्धारण	रोज़लिन संस्थान, आरडीएसवीएस, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय, युनाइटेड किंग्डम	पूर्ववर्ती 02/08/2022 से 01/10/2022 के बजाय 24–10–2022 से 22–12–2022	अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान अनुभव (एसआईआरई) के अंतर्गत एसईआरबी, डीएसटी, भारत सरकार	10.10.2022
2	श्री राजकुमार उत्तमराव जुंजारे, वैज्ञानिक, भाकृअनुप –भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	एसईआरबी अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान अनुभव 2022–23 के अंतर्गत एसईआरबी अध्येतावृत्ति के लिए पुनर्निर्धारण	सस्य विज्ञान विभाग, आयोवा राज्य विश्वविद्यालय, यूएसए	पूर्ववर्ती 01/08/2022 से 31/01/2023 के बजाय 01–11–2022 से 30–04–2023	अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान अनुभव (एसआईआरई) के अंतर्गत एसईआरबी, डीएसटी, भारत सरकार	10.10.2022
3	सुश्री विनीता रामटेकी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय बीज विज्ञान संस्थान, मऊ	पीएच.डी. कार्यक्रम हेतु नेताजी सुभाष, भाकृअनुप अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति 2021–22 प्राप्त करने के लिए पुनर्निर्धारण	पादप प्रजनन विभाग, फसल विज्ञान एंव संसाधन संरक्षण संस्थान, बॉन विश्वविद्यालय, जर्मनी	पूर्ववर्ती 25–10–2022 से 24–10–2025 के बजाय 15–12–2022 से 14–12–2025	नेताजी सुभाष भाकृअनुप– अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति के अंतर्गत भाकृअनुप	03.11.2022
4	डॉ. जी.के. शिवरमण, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि	वर्ष 2022–23 के लिए आईसीएमआर–डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति प्राप्त करने के लिए पुनर्निर्धारण	साउथैम्पटन विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी और भौतिक विज्ञान विभाग, युनाइटेड किंग्डम	पूर्ववर्ती 15–12–2022 से 15–03–2023 के बजाय 01–01–2023 से 31–03–2023	वर्ष 2022–23 के लिए आईसीएमआर–डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति	22.11.2022
5	डॉ. द्विजेश चंद्र मिश्रा, वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पोस्ट डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति के लिए पुनर्निर्धारण	पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य विज्ञान विभाग, सिनसिनाटी विश्वविद्यालय, ओहियो राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका	पूर्ववर्ती 10–10–2022 से 09–10–2023 के बजाय 23–01–2023 से 22–01–2024	मेजबान संस्थान	02.12.2022
6	डॉ. जी.के. शिवरमण, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान, कोच्चि	वर्ष 2022–23 के लिए आईसीएमआर–डीएचआर अंतर्राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति प्राप्त करने के लिए पुनर्निर्धारण	साउथैम्पटन विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी और भौतिक विज्ञान विभाग, युनाइटेड किंग्डम	पूर्ववर्ती 01–01–2023 से 31–03–2023 के बजाय 10–02–2023 से 10–05–2023	आईसीएमआर	07.02.2023
7	डॉ. संगीता मोहंती/लेंका, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल	इंडो यूएस यात्रा छात्रवृत्तियों के लिए पुनर्निर्धारण	डॉ.रामेश्वर कंवर, आयोवा राज्य विश्वविद्यालय, एम्स, आयोवा, संयुक्त राज्य अमेरिका	पूर्ववर्ती 01–05–2023 से 31–07–2023 के बजाय 08–05–2023 से 07–08–2023	यूएसडीए विदेश कृषि सेवा, यूएसडीए एफएएस	08.05.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	अध्येतावृत्ति	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
8	डॉ. राजन्ना जी. ए., वैज्ञानिक, भाकृअनुप–मूंगफली अनुसंधान निदेशालय, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, अनन्तपुर	पोस्ट–डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति के लिए पुनर्निर्धारण	फसल उत्पादन प्रणाली अनुसंधान इकाई, यूएसडीए (यूएस कृषि विभाग)	पूर्ववर्ती 03/04/2023 से 02/04/2024 के बजाय 20/06/2023 से 19/06/2024 (यात्रा समय को छोड़कर)		12.06.2023
9	डॉ. द्विजेश चंद्र मिश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पोस्ट–डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति	सिनसिनाटी विश्वविद्यालय, सिनसिनाटी, ओहियो राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका	पूर्ववर्ती 01/05/2023 से 30/04/2024 के बजाय 26/06/2023 से 25/06/2024	सिनसिनाटी विश्वविद्यालय, सिनसिनाटी, ओहियो राज्य, संयुक्त राज्य अमेरिका	22.06.2023
10	डॉ. ढंडापाणी आर., वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पोस्ट डॉक्टरेट अध्येतावृत्ति के लिए पुनर्निर्धारण	मिसौरी विश्वविद्यालय (यूओएम), कोलंबिया, यूएसए	पूर्ववर्ती 01/07/2023 से 30/06/2024 के बजाय 01/10/2023 से 30/09/2024		22.08.2023
11	डॉ. शुभादीप घोष, सहायक महानिदेशक (एमएफ), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	समुद्री कृषि अनुसंधान के दायरे और आवश्यकता का आकलन करने का पुनर्निर्धारण	श्रीलंका	पूर्ववर्ती 15/09/2023 से 26/09/2023 के बजाय 22/09/2023 से 03/10/2023		11.09.2023

अनुसंलग्नक-IV

सारणी 4. अध्येतावृत्ति/प्रशिक्षण के लिए एनओसी की अनुमति प्राप्त करने वाले भाकृअनुप वैज्ञानिकों की सूची

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	अध्येतावृत्ति	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
1.	डॉ. ऋतुपर्णा बनर्जी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप– राष्ट्रीय मांस अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	फुलब्राइट नेहरू अध्येतावृत्ति	पशु एवं खाद्य विज्ञान विभाग, ओक्लाहोमा राज्य विश्वविद्यालय, स्टिलवॉटर, ओक्लाहोमा, यूएसए	01/02/2025 से 30/09/2025		15.05.2023
2	डॉ. शोभा जो किझाकुडन, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, चेन्नई	आईयूसीएन और सीआईटीईएस द्वारा आयोजित समुद्री और जलीय प्रजातियों के लिए गैर–हानिकारक निष्कर्षों पर सीआईटीईएस–एनडीएफ कार्य समूह पर एनओसी की वर्चुअल बैठक		अप्रैल–अगस्त, 2023		03.05.2023
3	डॉ. आई. रामकृष्ण गांधीजी, वरिष्ठ. वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर	प्रशिक्षण हेतु आवेदन करने के लिए एनओसी	अंतर्राष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति (आईसीएसी), वाशिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका	18/09/2023 27/09/2023		01.08.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	अध्येतावृत्ति	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
4	डॉ. ऋषि कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर	प्रशिक्षण हेतु आवेदन करने के लिए एनओसी	अंतर्राष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति (आईसीएसी), वाशिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका	18/09/2023 27/09/2023		01.08.2023

अनुसंलग्नक-V

सारणी 5. तदर्थ यात्रा के लिए अनुमति प्राप्त करने वाले भाकृअनुप वैज्ञानिकों की सूची

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
1	डॉ. जी. सुजा, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप, केन्द्रीय कंदीय फसल अनुसंधान संस्थान, तिरुवनंतपुरम	5वीं ऑर्गेनिक एशिया कांग्रेस में स्पीकर के रूप में प्रतिभागिता हेतु	गोएसन कंट्री, दक्षिण कोरिया	13–15 अक्तूबर, 2022	इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ऑर्गेनिक एग्रीकल्चर मूवमेंट्स (आईएफओएएम) ऑर्गेनिक एशिया	04.10.2022
2	डॉ. देवेन्द्र कुमार यादव, सहायक महानिदेशक (बीज), भाकृअनुप, नई दिल्ली	सुरक्षा डुप्लिकेट के रूप में गेहूं और चने के जननद्रवय को स्वालबार्ड ग्लोबल सीड वॉल्ट (एसजीएसवी) में जमा करने के लिए	नॉर्डजेन, नॉर्वे	10/10/2022 से 12/10/2022	भाकृअनुप का अंतर्राष्ट्रीय शीर्ष	04.10.2022
3	डॉ. ए.एस. बिप्लब सरकार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय कृषि जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, रांची	द्विपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पूर्ण व्याख्यान हेतु स्पीकर के रूप में प्रतिभागिता हेतु	खुलना विश्वविद्यालय, बांग्लादेश	19–20 अक्तूबर, 2022	मेजबान संस्थान	07.10.2022
4	डॉ. राजेश एम.के., प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, केरल	50वां अंतर्राष्ट्रीय कोकोटेक सम्मेलन और प्रदर्शनी	क्वाला लंपुर, मलेशिया	07/11/2022 से 11/11/2022	अंतर्राष्ट्रीय नारियल समुदाय	07.10.2022
5	डॉ. के. बनर्जी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे	21वीं अंतर्राष्ट्रीय खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी यूनियन, विश्व खाद्य कांग्रेस	मरीना बे सैंड्स एक्सपो और कन्वेंशन सेंटर, सिंगापुर	31/10/2022 से 03/11/2022	आयोजक, विश्व खाद्य कांग्रेस	14.10.2022
6	डॉ. वीना गुप्ता, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	ट्रोप एजी सम्मेलन	ब्रिस्बेन कन्वेंशन और प्रदर्शनी केंद्र, ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया	31/10/2022 से 02/11/2022	आवेदक	14.10.2022

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
7	डॉ. विनोद कुमार सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र रुपरेखा सम्मेलन (यूएनएफसीसीसी) के पक्षों (सीओपी27) के सम्मेलन का 27वां सत्र, क्योटो प्रोटोकॉल (सीएमपी17) के पक्षों के बैठकों की सहायता करने वाले पक्षों के सम्मेलन के 17वें सत्र तथा पेरिस समझौता (सीएमए4) के पक्षों की सदस्य के रूप में सहायता करने वाले पक्षों के सम्मेलन का चौथा सत्र	शर्म अल शेख, मिस्र	06/11/2022 से 18/11/2022	भाकृअनुप–केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	20.10.2022
8	डॉ. के.एन. भीलेगांवलियार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	खाद्य पदार्थों के लिए सूक्ष्म जीव विज्ञान संबंधी विशिष्टताओं पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग (आईसीएम. एसएफ) की कार्यशाला और वार्षिक बैठक तथा दुबई अंतर्राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा सम्मेलन (डीआईएफएससी)	दुबई, संयुक्त अरब अमीरात	31/10/2022 से 11/11/2022	मेज़बान– खाद्य पदार्थों के लिए सूक्ष्म जीव विज्ञान संबंधी विशिष्टताओं पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग	20.10.2022
9	डॉ. ए.के. श्रीवास्तव पीआर. वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान, नागपुर	XIV अंतर्राष्ट्रीय सिट्रस कांग्रेस, 2022	कुकुरोवा विश्वविद्यालय, मेर्सिन, तुर्की	05/11/2022 से 11/11/2022	मेज़बान–IXV अंतर्राष्ट्रीय सिट्रस कांग्रेस–2022, मेर्सिन, तुर्की के आयोजन सचिव	20.10.2022
10	डॉ. कुलदीप त्रिपाठी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप आुनवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	ट्रोप एजी सम्मेलन	ब्रिस्बेन सम्मेलन और प्रदर्शनी केंद्र, ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया	31/10/2022 से 02/11/2022	आवेदक/विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) डीएसटी–एसईआरबी किफायती श्रेणी का हवाई किराया, हवाई अड्डा कर, वीजा शुल्क और पंजीकरण शुल्क प्रदान करेगा	21.10.2022
11	श्री गुरुमूर्ति एस., वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय अजैविक तनाव संस्थान प्रबंधन, पुणे	अंतरसूखा– 2022, जल सीमित पर्यावरण में पादप उत्पादन पर 7वीं कांग्रेस	किंग फहद होटल, डकार, सेनेगल, अफ्रीका	28/11/2022 से 02/12/2022	एम/एस अश्वथी ग्रीन एंटरप्राइज प्रा. लिमिटेड, चेन्नई, तमिलनाडु	31.10.2022
12	डॉ. यू.आर. बड़ेगांवकर, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल	संरक्षण कृषि सतत गहनता कंसोर्टियम (सीएएसआईसी) की तीसरी क्षेत्रीय कार्यशाला	सिएम रीप और बट्टामबांग प्रांत, कंबोडिया	02/11/2022 से 04/11/2022	सीएसएएम–यूनेस्केप	31.10.2022

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
13	डॉ. विनायक हेगड़े, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड	50वां अंतर्राष्ट्रीय कोकोटेक सम्मेलन और प्रदर्शनी	क्वाला लम्पुर, मलेशिया	07/11/2022 से 11/11/2022	अंतर्राष्ट्रीय नारियल समुदाय	04.11.2022
14	डॉ. एस.के. मलिक, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप – राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	अंतर्राष्ट्रीय सिट्रस कांग्रेस– 2022	मेर्सिन, तुर्की	06/11/2022 से 11/11/2022	जैव प्रौद्योगिकी विभाग/स्वयं	04.11.2022
15	डॉ. आर.जी. ग्रेसी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि के लिए उपयोगी कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु	तदर्थ संगोष्ठी	वैंकूवर, ब्रिटिश कोलंबिया, कनाडा	13/11/2022 से 16/11/2022	भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि के लिए उपयोगी कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु/डीएसटी–एसईआरबी अंतर्राष्ट्रीय यात्रा सहायता	09.11.2022
16	डॉ. कृष्ण मूर्ति एस. एल., वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल	युवा कृषि शोधकर्ताओं के लिए जापान अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (जापान पुरस्कार)	हितोत्सुबाशी विश्वविद्यालय, टोक्यो जापान	22/11/2022 से 23/11/2022	कृषि विज्ञान के लिए जापान अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र	14.11.2022
17	डॉ. प्रवीण मलिक, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप, नई दिल्ली	गांठदार त्वचा रोग विषाणु पर तदर्थ सम्मेलन	दुबई, यूएई	16/11/2022 से 18/11/2022	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन	14.11.2022
18	डॉ. नरेंद्र कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर	8वीं अंतर्राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान कांग्रेस	मैरियट, मार्क्विस क्वीन पार्क, बैंकॉक, थाईलैंड	04/12/2022 से 09/12/2022	डीएसटी/आवेदक	14.11.2022
19	डॉ. विजयकुमार एस., वैज्ञानिक, भाकृअनुप –भारतीय धान अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	प्रत्यारोपित धान में उद्भव के समय और फसल ज्यामिति की अनुक्रिया में सनवा (*इकाइनोक्लोआ क्रस–गैलाई*) के बीज उत्पादन और बिखराव शीर्षक पर तदर्थ सम्मेलन	थाईलैंड की खरपतवार विज्ञान सोसायटी (डब्ल्यूएसएसटी) और बैंकॉक, थाईलैंड में अंतर्राष्ट्रीय खरपतवार विज्ञान सोसायटी (आईडब्ल्यूएसएस)	04/12/2022 से 09/12/2022	टिकट का किराया भारतीय खरपतवार विज्ञान सोसायटी, जबलपुर द्वारा वहन किया जाएगा। अधिकतम सीमा रु. 35000. वीजा, रजिस्ट्रेशन एसईआरबी, डीएसटी यात्रा अनुदान द्वारा वहन किया जाएगा– पंजीकरण के लिए अधिकतम सीमा रु. 50000/– है। आवास एवं व्यवस्था के खर्च बाहय वित्त पोषित परियोजना द्वारा वहन किए जाएंगे। (सिंचित धान पारिस्थितिक प्रणाली की उपज एवं पोषक तत्व उपयोग दक्षता पर यूरिया के विकल्प के रूप में एल्डोर का तुलनात्मक मूल्यांकन)	18.11.2022
20	डॉ. आनन्द कुमार सिंह, उप महानिदेशक (बागवानी), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	विश्व बैंक द्वारा आयोजित 'सीड विदाउट बॉर्डर्स' कार्यशाला	वर्ल्ड बैंक, थिम्पू, भूटान	21/11/2022 से 24/11/2022	विश्व बैंक	18.11.2022

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
21	डॉ. सुनील अर्चक, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	सीबीडी बैठक में सीओपी–15.2 के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल	मॉन्ट्रियल, कनाडा	03 / 12 / 2022 से 19 / 12 / 2022	सीबीडी के लिए नोडल एजेंसी के रूप में एमओईएफसीसी	02.12.2022
22	डॉ. रमेश एस.वी. वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड	कोको अनुसंधान पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	मोंटपेलियर, फ्रांस	05 / 12 / 2022 से 07 / 12 / 2022	डीएसटी–एसईआरबी / आयोजक	
23	डॉ. अनुपमा सिंह, संयुक्त निदेशक (शिक्षा), भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	सीएबीआई पर क्षेत्रीय कार्यशाला	नेपाल	23.12.2023	सीएबीआई	22.12.2023
24	डॉ. पी. रेवती, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय धान अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	अंतर्राष्ट्रीय पादप एवं पशु जीनोम सम्मेलन	सैनडिएगो, कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका	12–01–2023 से 18–01–2023	आयोजक एवं आवेदक	10.01.2023
25	डॉ. जय प्रकाश मिश्रा, सहायक महानिदेशक (आईआर), भाकृअनुप, नई दिल्ली	15वां खाद्य एवं कृषि के लिए वैश्विक मंच (जीएफएफए) और 15वां बर्लिन कृषि मंत्रालय सम्मेलन	संघीय खाद्य एवं कृषि मंत्रालय, जर्मनी	19–01–2023 से 21–01–2023	भाकृअनुप मुख्यालय	13.01.2023
26	डॉ. महेश चंदर, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	इस क्षेत्र में विस्तार और सलाहकार सेवाओं को सुदृढ़ बनाने पर एशिया व्यापी क्षेत्रीय शिक्षण कार्यशाला	एशिया प्रशांत द्वीप समूह ग्रामीण सलाहकार सेवा नेटवर्क, बैंकॉक, थाईलैंड	24–01–2023 से 26–01–2023	खाद्य एवं कृषि के लिए वैश्विक मंच (जीएफएफए), स्विट्जरलैंड	19.01.2023
27	डॉ. धर्मराजन एस., वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप– राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण और भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो, नागपुर	डिजिटल मृदा मानचित्रण और वैश्विक मृदा मानचित्र के लिए दूसरी संयुक्त अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला	ले स्टुडियम, ऑरलियन्स, फ्रांस	07–02–2023 से 09–02–2023	ले स्टुडियम, उन्नत अध्ययन संस्थान ऑरलियन्स, फ्रांस	20.01.2023
28	डॉ. विनोद कुमार सिंह, निदेशक, भाकृअनुप– केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और उपशमन के लिए कृषि विज्ञान अनुसंधान एवं विकास प्राथमिकताओं पर कार्यशाला	सीजीआईएआर और बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, नैरोबी, केन्या	01–02–2023 से 02–02–2023	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन,	27.01.2023
29	डॉ. विक्रम सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप, नई दिल्ली	तदर्थ सम्मेलन	बिजनेस लॉ डिवीजन, नानयांग बिजनेस स्कूल, नानयांग प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय, सिंगापुर	01–03–2023 से 03–03–2023	भाकृअनुप मुख्यालय	06.02.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
30	डॉ. नवीन कुमार, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग संस्थान, भोपाल	जैविक जोखिम एवं जैव सुरक्षा अंत मूल्यांकन कार्यशाला	रेनेसांस बाल्टीमोर हार्बोप्लेस होटल, बाल्टीमोर, मैरीलैंड, यूएसए	09–02–2023 से 10–02–2023		07.02.2023
31	डॉ. सालिनी एस., वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु	ब्राउन मार्मोरेटेड स्टिंक बग के वर्गीकरण हेतु स्टिंक बग वर्गीकरण–वैज्ञानिकों का अंतर्राष्ट्रीय दल	राष्ट्रीय चेकिया संग्रहालय (एनएमसी), प्राग, चेक गणराज्य और प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (एनएचएम), लंदन, युनाइटेड किंग्डम	04/04/2023 से 31/05/2023	ऑस्ट्रेलियाई सरकार का कृषि, जल एवं पर्यावरण विभाग, जिसे न्यू साउथ वेल्स विश्वविद्यालय द्वारा प्रशासित किया जाएगा,	07.02.2023
32	डॉ. अजय कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर	पश्मीना डीहेयरिंग संयत्र के सत्यापन के लिए क़िंगदाओ, शेडोंग, चीन जाने के लिए तकनीकी सत्यापन टीम का हिस्सा बनने हेतु	क़िंगदाओ युआनक्वान मशीनरी कंपनी लिमिटेड, वांगताई उद्योग पार्क, क़िंगदाओ शहर, शेनडांग प्रात, चीन	02/02/2023 से 18/02/2023	पशु/भेड़ पालन एवं मत्स्य पालन निदेशालय, केंद्र शासित प्रदेश, लद्दाख, भारत	07.02.2023
33	डॉ. पी. दंडापत, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप –भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, ईआरएस, कोलकाता	"गोजातीय तपेदिक अनुसंधान और नवोन्मेषणों के लिए वर्तमान और भविष्य की जरूरतों और प्राथमिकताओं को समझना", गोजातीय तपेदिक रोडमैप बैठक में भाग लेने के लिए	एसटीएआर–आईडीएजेड आईआरसी (एसआईआरसीएएच) पशु स्वास्थ्य पर अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान कंसोर्शियम, यूके	28.02.2023	मेजबान संस्थान	13.02.2023
34	डॉ. देबाशिष डे, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केंद्रीय खारा जल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई	जलवायु समुत्थानशील तटीय समुदाय के लिए स्वस्थ मैंग्रोव और टिकाऊ मात्स्यिकी पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	दक्षिण एशिया खुलना विश्वविद्यालय और बांग्लादेश पर्यावरण और विकास सोसायटी, खुलना, बांग्लादेश	01–03–2023 से 06–03–2023	प्रकृति पर्यावरण और वन्यजीव सोसायटी, बकुल बागान रो, भवानीपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल	20.02.2023
35	संदीप भाटिया, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशु रोग संस्थान, भोपाल	दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्रीय जीओएआरएन पार्टनर्स, विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठक में भाग लेने के लिए	काठमांडू, नेपाल	15–03–2023 से 16–03–2023	संगठन की नीति के अनुसार, विश्व स्वास्थ्य संगठन	28.02.2023
36	डॉ. ओंकार नाथ तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	"*ऑसिलेटोरिया* प्रजाति बीटीए 170 में विशेष जोर देते हुए साइनोबैक्टीरियल फ़ाइकोबिलिन के नए विभेद, जैवसंश्लेषण, शुद्धीकरण और संरचना गुण संबंधों की खोज" पर तदर्थ सम्मेलन में भाग लेना"	रोम, इटली	13/03/2023 से 15/03/2023	आवेदक	28.02.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
37	डॉ. भूपेंद्र नाथ त्रिपाठी, उप महानिदेशक (एएस), भाकृअनुप, नई दिल्ली	दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्रीय जीओएआरएन पार्टनर्स, विश्व स्वास्थ्य संगठन की बैठक में भाग लेना	काठमांडू, नेपाल	15–03–2023 से 16–03–2023 तक	संगठन की नीति के अनुसार विश्व स्वास्थ्य संगठन	02.03.2023
38	डॉ. अनुपमा सिंह, संयुक्त निदेशक, भाकृअनुप– भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	खाद्य सुरक्षा आत्मनिर्भरता, अधिशेष और आपूर्ति पर तदर्थ कार्यशाला में भाग लेना	दोहा, क़तर	07/03/2023 से 09/03/2023	यूपीएल लि. वापी, गुजरात, भारत	07.03.2023
39	डॉ. के. विनोद, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कालीकट क्षेत्रीय केन्द्र, कोझिकोड	एक क्षेत्रीय बैठक में भाग लेने के लिए	ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, वैंकूवर बीसी कनाडा। कार्यशाला मैक्टन, सेबू, फिलीपींस में आयोजित की जाएगी	14/03/2023 से 17/03/2023	मेजबान संस्थान	06.03.2023
40	डॉ. रबी नारायण साहू, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	डलहौजी विश्वविद्यालय, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान एवं भाकृअनुप के अन्य भागीदार संस्थानों के बीच, विशेष रूप से परिशुद्ध कृषि के क्षेत्र में सहयोग विकसित करने के लिए डलहौजी विश्वविद्यालय, कनाडा में भाकृअनुप प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए	डलहौजी विश्वविद्यालय, कनाडा	10/04/2023 से 19/04/2023	डलहौजी विश्वविद्यालय	09.03.2023
41	डॉ. अखिलेश के.वी., वैज्ञानिक, भाकृअनुप –केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, कालीकट	फिशमॉ–मात्स्यिकी, व्यापार और प्रबंधन पर ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने के लिए	हांगकांग विश्वविद्यालय, हांगकांग द्वारा ट्रैफिक साउथ अफ्रीका के साथ ऑनलाइन आयोजित; राष्ट्रीय मात्स्यिकी महाविद्यालय, पीएनजी; फिश मैटर, ऑस्ट्रेलिया	21/03/2023 से 23/03/2023	चूंकि यह कार्यक्रम वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ऑनलाइन था, इसलिए किसी प्रकार के निधियन की आवश्यकता नहीं थी और न ही इसका उपयोग किया गया है	09.03.2023
42	श्री सुबल कुमार राउल, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, दीघा क्षेत्रीय केन्द्र	फिशमॉ–मात्स्यिकी, व्यापार और प्रबंधन पर ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लेने के लिए	हांगकांग विश्वविद्यालय, हांगकांग द्वारा ट्रैफिक साउथ अफ्रीका के साथ ऑनलाइन आयोजित; राष्ट्रीय मात्स्यिकी महाविद्यालय, पीएनजी; फिश मैटर, ऑस्ट्रेलिया	21/03/2023 से 23/03/2023	चूंकि यह कार्यक्रम वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ऑनलाइन था, इसलिए किसी प्रकार के निधियन की आवश्यकता नहीं थी और न ही इसका उपयोग किया गया है	09.03.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
43	डॉ. अखिलेश के.वी., वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कालीकट	शार्क, रे और चिमेरा की वैश्विक स्थिति पर आईयूसीएन एसएससी शॉर्क विशेषज्ञ समूह कार्यशाला में भाग लेने के लिए	क्वाला लंपुर, मलेशिया	18–03–2023 से 20–03–2023 तक	मेजबान संस्थान	10.03.2023
44	डॉ. एम. मधु, निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून	कृषि पर भारत–इथियोपिया कार्यशाला में भाग लेने के लिए	अदीस अबाबा, इथियोपिया	21–03–2023	विकासशील देशों के लिए अनुसंधान एवं एएमपी; सूचना प्रणाली (आरआईएस) जो विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, से संबद्ध है।	16.03.2023
45	डॉ. निवेता जैन, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	जलवायु परिवर्तन पर अंतर–सरकारी पैनल (आईपीसीसी) के उत्सर्जन कारक डेटाबेस के लिए 21वीं संपादकीय बोर्ड बैठक और डेटा बैठक में भाग लेने के लिए	न्यूज़ीलैंड	16/05/2023 से 19/05/2023	आईपीसीसी ट्रस्ट फंड, जिनेवा	11.03.2023
46	डॉ. के. माधवी रेड्डी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु	शिमला मिर्च और बैंगन की आनुवंशिकी और प्रजनन पर 18वीं ईयूसीएआरपीआईए अंतर्राष्ट्रीय बैठक	प्लोवदिव, बुल्गारिया	18–09–2023 से 21–09–2023	आयोजक	18.04.2023
47	डॉ. एस. उषा रानी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, करनाल	"कृषि, खाद्य और पर्यावरण में प्रौद्योगिकी, बहुलवाद और समग्रता" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कृषि एवं विस्तार शिक्षा संगठन (एआईएईई) के 39वें वार्षिक सम्मेलन में प्रतिभागिता और शोध पत्रों के प्रस्तुतीकरण हेतु	अंतर्राष्ट्रीय कृषि और विस्तार शिक्षा संगठन (एआईएईई) और पर्यावरणीय डिजाइन एवं ग्रामीण विकास विद्यालय (एसईडीआरडी), गुएल्फ विश्वविद्यालय, कनाडा	26/04/2023 से 29/04/2023	व्यक्तिगत बचत	21.04.2023
48	डॉ. अर्चना सुमन, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	'फसल पोषण के लिए अंतःपादप सूक्ष्मजीवः वास्तविकता या मिथक?' विषय पर कार्यशाला में भाग लेने के लिए	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूएसए	16/05/2023 से 17/05/2023	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूएसए	27.04.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
49	डॉ. अनुदय कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	'फसल पोषण के लिए अंतःपादप सूक्ष्मजीवः वास्तविकता या मिथक?' विषय पर कार्यशाला में भाग लेने के लिए	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूएसए	16/05/2023 से 17/05/2023	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूएसए	27.04.2023
50	डॉ. बी. रामकृष्णन, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	'फसल पोषण के लिए अंतःपादप सूक्ष्मजीवः वास्तविकता या मिथक?' विषय पर कार्यशाला में भाग लेने के लिए	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूएसए	16/05/2023 से 17/05/2023	बिल एवं मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, यूएसए	27.04.2023
51	डॉ. विक्रम सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप मुख्यालय (आईपीटीएम इकाई), नई दिल्ली	बौद्धिक संपदा और टिकाऊ विकास लक्ष्यों (एसडीजी) पर तदर्थ सम्मेलन	हाइफ़ा विश्वविद्यालय, विधि संकाय, माउंट कार्मेल, हाइफ़ा, इज़राइल	28/05/2023 से 29/05/2023	भाकृअनुप–बजट मुख्य, यात्रा भत्ता– विदेश यात्रा भत्ता	08.05.2023
52	डॉ. अशोक कुमार मोहंती, संयुक्त निदेशक, भाकृअनुप –भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान	11वां एशिया ओशिनिया ह्यूमन प्रोटियोम ऑर्गनाइजेशन (एओएचयूपीओ) और 7वीं एशिया ओशिनिया कृषि प्रोटिओमिक्स संगठन (एओएपीओ) कांग्रेस	मैक्स एट्रिया, सिंगापुर	08/05/2023 से 10/05/2023	11वां एशिया ओशिनिया ह्यूमन प्रोटियोम ऑर्गनाइजेशन (एओएचयूपीओ) और 7वीं एशिया ओशिनिया कृषि प्रोटिओमिक्स संगठन (एओएपीओ) कांग्रेस	03.05.2023
53	श्री हनमंत एम. हल्ली, वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय अजैविक तनाव प्रबंधन संस्थान, बारामती	XXV अंतर्राष्ट्रीय चरागाह कांग्रेसः मृदा, पशु और मानव स्वास्थ्य के लिए चरागाह	कोविंग्टन, केंटकी, संयुक्त राज्य अमेरिका	14/05/2023 से 19/05/2023	आयोजकों (यूएसए) से पंजीकरण शुल्क और आवास सहायता। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), एसईआरबी से यात्रा सहायता भी मिली है	04.05.2023
54	डॉ. (श्रीमती) ज्योति कुमारी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	सहयोगात्मक अनुसंधान कार्य एक्सपोजर दौरा और परामर्श बैठकें	लेबनिज पादप आनुवंशिकी एवं फसल पादप अनुसंधान संस्थान (आईपीके), गैटर्सलेबेन, जर्मनी	04/06/2023 से 17/06/2023	द्विपक्षीय परियोजना की ओर से जर्मनी में आवास, आहार और रसद की लागत जर्मन समकक्ष द्वारा वहन की जाएगी। भारत की ओर से यात्रा की लागत डीए एंड एफडब्ल्यू, भारत सरकार/स्वयं द्वारा वहन की जाएगी	12.05.2023
55	डॉ. चित्रा देवी पांडे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	सहयोगात्मक अनुसंधान कार्य एक्सपोजर दौरा और परामर्श बैठकें	लेबनिज पादप आनुवंशिकी एवं फसल पादप अनुसंधान संस्थान (आईपीके), गैटर्सलेबेन, जर्मनी	04/06/2023 से 17/06/2023	द्विपक्षीय परियोजना की ओर से जर्मनी में आवास, आहार और रसद की लागत जर्मन समकक्ष द्वारा वहन की जाएगी। भारत की ओर से यात्रा की लागत डीए एंड एफडब्ल्यू, भारत सरकार/स्वयं द्वारा वहन की जाएगी	12.05.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
56	सुश्री टिंसी वर्गीज़, वैज्ञानिक, भाकृअनुप –केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई	समुद्री आहार उद्योग, ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी में विश्व जलजीव पालन सोसाइटी द्वारा आयोजित डार्विन, उत्तरी क्षेत्र, ऑस्ट्रेलिया में और व्यापार प्रदर्शनी तथा विश्व जलजीव पालन सम्मेलन के अंतःस्थलीय लवणीय जल जीवपालन सत्र में भाग लेने के लिए	डार्विन सम्मेलन सेंटर डार्विन, उत्तरी क्षेत्र, ऑस्ट्रेलिया	29/05/2023 से 01/06/2023	मेजबान संस्थान	18.05.2023
57	डॉ. अनुभूति शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप– तोरिया एवं सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर	आईएसओ/टीसी 34/एससी 2 और एससी 11 की बैठकों में भाग लेने के लिए। 22 से 25 मई 2023 के दौरान फ्रांस में कई आईएसओ बैठकों की योजना बनाई गई है। वह आईएसओ/टीसी 34/एससी 2 और आईएसओ/टीसी 34/ एससी 11 के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा होंगी	एसोसिएशन फ्रेंकोइस डी नॉर्मलाइज़ेशन, सेंट डेनिस ला प्लेन सेडेक्स फ्रांस	22–05–2023 से 25–05–2023	भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), भारत	18.05.2023
58	डॉ. स्वर्ण रोनांकी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप –भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	2023 वैश्विक ज्वार सम्मेलन– "21वीं सदी में ज्वारः जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में समुत्थानशीलता और टिकाऊपन" में प्रतिभागिता हेतु	अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए फ्रांसीसी कृषि अनुसंधान केंद्र (सीआईआरएडी), मोंटपेलियर, फ्रांस	05/06/2023 से 09/06/2023	विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड (एसईआरबी), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के तहत एक वैधानिक निकाय, द्वारा वित्त पोषित अंतर्राष्ट्रीय यात्रा सहायता (आईटीएस) योजना	18.05.2023
59	डॉ. अमरेश चंद्रा, निदेशक, भाकृअनुप –भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी	"अनेक लाभों के लिए रेंजलैंड के प्रबंधन" पर क्षेत्रीय कार्यशाला	एकीकृत पर्वतीय विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (आईसीएमओडी) जीपीओ बॉक्स 3226, काठमांडू, नेपाल	29/05/2023 से 30/05/2023	मेजबान संस्थान	29.05.2023
60	डॉ. महेश चंदर, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	छठी ऑर्गेनिक एशिया कांग्रेस	फिलीपींस में जैविक कृषि नगर पालिकाओं, शहरों और प्रांतों की लीग, काशागन, लानाओ डेल नॉर्टे, फिलीपींस	06/06/2023 से 09/06/2023	मेजबान संस्थान, आईएफओएएम	31.05.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
61	डॉ. ए. गोपालकृष्ण, निदेशक, भाकृअनुप– केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन	"मत्स्य भंडार, पहचान और क्षेत्रीय मात्स्यिकी प्रबंधन" और बीओबीपी– सीएमएफआरआई के बीच सहयोगात्मक गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए	श्रीलंका	30/05/2023 से 01/06/2023	बीओबीपी–आईजीओ यात्रा, आवास और वीजा सुविधा सहित कार्यक्रम में भागीदारी से संबंधित सभी लॉजिस्टिक्स की व्यवस्था करेगा	31.05.2023
62	श्री एम. सुमन कुमार, वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	तदर्थ कार्यशाला	दक्षिण–पूर्व एशिया वन हेल्थ यूनिवर्सिटी नेटवर्क के साथ साझेदारी में थाईलैंड के खोन केन विश्वविद्यालय (केकेयू) में उष्णकटिबंधीय रोग अनुसंधान केंद्र (टीडीआरसी)। यह यात्रा थाईलैंड में पुलमैन राजा ऑर्किड होटल एवं बान लावा कम्यूनिटी में आयोजित की जाएगी	31/05/2023 से 02/06/2023	मेजबान संस्थान	31.05.2023
63	डॉ. हरे कृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी	"टिकाऊ फसल उत्पादन के लिए सिंचाई और सिंचाई–सह–उर्वरण प्रौद्योगिकियों पर अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम" शीर्षक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	एमएटीसी– एमएएसएसएवी कृषि प्रशिक्षण केंद्र, किबुत्ज़ शेफायिम, इज़राइल	06/06/2023 से 21/06/2023	हवाई यात्रा पर होने वाला खर्च (केवल 60,000) भाकृअनुप– भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी द्वारा वहन किया जाएगा और शेष राशि मेजबान संस्थान द्वारा वहन की जाएगी	02.06.2023
64	डॉ. एम. प्रथीपा, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप –राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, कर्नाटक	बागवानी संबंधी आपूर्ति श्रृंखला– मॉडल–आईटी 2023 में एक नवोन्मेषी प्रौद्योगिकी के रूप में मॉडलिंग के अनुप्रयोगों पर VII अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	लेबनिज इंस्टीट्यूट फॉर एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड बायोइकोनॉमी, मैक्स– आइथ–एली 100, 14469 पॉट्सडैम, डीई, पॉट्सडैम, जर्मनी	11/06/2023 से 14/06/2023	आईटीएस (अंतर्राष्ट्रीय यात्रा सहायता) योजना के तहत एसईआरबी, डीएसटी, नई दिल्ली। आहार आदि पर होने वाले अन्य व्यय आवेदक द्वारा स्वयं वहन किए जाएंगे।	08.06.2023
65	डॉ. अनिल कुमार पूनिया, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	'गेटवे टू ग्लोबल एंटरिक मीथेन रिडक्शन' पर सैटेलाइट कार्यशाला	पी एंड जे लाइव, रोवेट इंस्टीट्यूट, एबरडीन विश्वविद्यालय, एबरडीन, स्कॉटलैंड, युनाइटेड किंग्डम	13/06/2023 से 15/06/2023	मेजबान संस्थान	09.06.2023
66	डॉ. एस. नरेश कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	कृषि मॉडल अंतर–तुलना और सुधार वैश्विक परियोजना की 9वीं वैश्विक कार्यशाला	कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क, यूएसए	26/06/2023 से 30/06/2023	कृषि मॉडल अंतर–तुलना और सुधार परियोजना (एजीएमआईपी), कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क	09.06.2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
67	डॉ. कुलदीप कुमार लाल, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय खारा जल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, चेन्नई	एशियाई मात्स्यिकी सोसायटी की 64वीं परिषद बैठक	बॉटनी स्क्वॉयर, बोगोर, इंडोनेशिया में आईपीबी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र। मेजबान संस्थानः मात्स्यिकी संसाधन उपयोग विभाग, समुद्री विज्ञान और मात्स्यिकी संकाय, आईपीबी विश्वविद्यालय, इंडोनेशिया	25/06/2023 से 29/06/2023	उनकी प्रतिनियुक्ति की अवधि के दौरान इंडोनेशिया के बोगोर में रहने के लिए यात्रा (अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू) और रहने का खर्च एशियन फिशरीज सोसाइटी भारतीय शाखा (एएफएसआईबी), मैंगलोर, भारत द्वारा वहन किया जाएगा	09.06.2023
68	डॉ. सेल्वाराजन निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, तमिलनाडु	"भारत में उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए गुणवत्तापूर्ण केला–पादपों को सुनिश्चित करने हेतु संवेदनशील और नई नैदानिकी किटों का विकास" विषय पर तदर्थ सम्मेलन	रीगा स्ट्रैडिन्स यूनिवर्सिटी, लातविया	15/06/2023 से 17/06/2023 तक	इंडियन वायरोलोजिकल सोसायटी, नई दिल्ली	09–06–2023
69	डॉ. ए.के. सिंह निदेशक–भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	प्रतिनिधि मंडल के रूप में दौरा	फ्रैंक फर्ट, जर्मनी से आरम्भ और म्यूनिख, जर्मनी में समाप्त	11/06/2023 से 17/06/2023 तक	आईजीएसपी इन–सोलर परियोजना	09–06–2023
70	डॉ. एन. विजया कुमारी, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय नीबूवर्गीय अनुसंधान संस्थान, नागपुर	प्रमाणित फल वृक्षों के उत्पादन के लिए पौध प्रसार, नर्सरी संगठन और प्रबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद	दि सेंटर ऑफ रिसर्च एक्सपेरिमेंटेशन एंड फार्मेशन इन एग्रीकल्चर बेसिल क्रेमिया (सीआरएसएफए), बारी, इटली	03/07/2023 से 05/07/2023 तक	आवेदक	16–06–2023
71	डॉ. कविता गुप्ता, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	नाशीजीव जोखिम मूल्यांकन (पीआरए) पर कार्यशाला	नेशनल प्लांट प्रोटेक्शन ऑर्गेनाइजेशन, ढाका, बांग्लादेश	17/06/2023 से 20/06/2023 तक	सीएबीआई, दक्षिण एशिया	16–06–2023
72	डॉ. ज्ञानेश के. सत्पुते, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर	वैश्विक सोयाबीन अनुसंधान सम्मेलन 11	यूनिवर्सिटी ऑफ नेचुरल रिर्सोसेस एंड लाइफ साइंसेस, वियना, ऑस्ट्रिया	18/06/2023 से 23/06/2023 तक	इस दौरे में भाग लेने के लिए एसईआरबी, डीएसटी भारत सरकार का यात्रा सहायता अनुदान। यदि उन्हें एसईआरबी, डीएसटी से अनुदान मिलता है तो पंजीकरण शुल्क, हवाई यात्रा और वीजा किराया एसईआरबी, डीएसटी द्वारा वहन किया जाएगा, अन्यथा यह दौरा उनके द्वारा स्व–प्रायोजित होगा।	16–06–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
73	डॉ. एम.बी. रत्नापारखे, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप– भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर, को वैश्विक सोयाबीन अनुसंधान सम्मेलन में भाग लेने हेतु	वैश्विक सोयाबीन अनुसंधान सम्मेलन 11	यूनिवर्सिटी ऑफ नेचुरल रिसोर्सेज, एंड लाइफ साइंसेस वियना, ऑस्ट्रिया	18/06/2023 से 23/06/2023 तक	आवेदक	16–06–2023
74	डॉ. के. अम्बाशंकर, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय खारा जल जीव पालन संस्थान, चेन्नई	जल आहार संरचना डेटाबेस कार्यशाला	ढ़ाका, बांग्लादेश	13/07/2023 से 14/07/2023 तक	यूएस सोयाबीन एक्सपोर्ट काऊंसिल दक्षिण एशिया, चेन्नई, भारत	22–06–2023
75	डॉ. एस. सुब्रमण्यम, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	तकनीकी प्रषिक्षण कार्यशाला	एग्रीकल्चर एंड फूड सिस्टम इंस्टिट्यूट (एएफएसआई), यूएसए	26/06/2023 से 30/06/2023 तक	मेजबान संस्थान	22–06–2023
76	डॉ. श्याम नारायण झा, उप महानिदेशक (कृषि अभियांत्रिकी) भाकृअनुप, मुख्यालय, नई दिल्ली	तदर्थ सम्मेलन	ओमाहा नेब्रास्का, यूएसए, पड्र्य यूनिवर्सिटी, इंडियाना यूएसए और यूनिवर्सिटी ऑफ विसकोनसिन, मैडिसन, यूएसए	04/07/2023 से 12/07/2023 तक	भाकृअनुप मुख्यालय	26–06–2023
77	डॉ. लक्ष्मी सौजन्या पामिदी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना	कृषि एवं समवर्गी विज्ञानों की नवोन्मेषी एवं वर्तमान प्रगति पर 5वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	होटल हॉवर्ड जानसन, विन्धम बर, दुबई, खालिद बिन अल वालीद रोड–अल राफ्फा–दुबई, संयुक्त अरब अमीरात द्वारा	10/07/2023 से 16/07/2023 तक	आवेदक	27–06–2023
78	डॉ. कुंवर हरेन्द्र सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर	कृषि जैव–प्रौद्योगिकी, जैव संरक्षण, फसल सुधार एवं प्रौद्योगिकी अंतरण कार्यक्रम में सहभागिता	मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, ईस्ट लांसिग, यूएसए	05/08/2023 से 18/08/2023 तक	मेजबान संस्थान (दि वर्ल्ड टैक्नोलॉजी एक्सेस प्रोग्राम (वर्ल्ड टैप))	27–06–2023
79	डॉ. श्याम नारायण झा, उप महानिदेशक (कृषि अभियांत्रिकी), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	तदर्थ सम्मेलन	ओमाहा नेब्रास्का, यूएसए, पड्यू यूनिवर्सिटी, इंडियाना यूएसए और यूनिवर्सिटी ऑफ विसकोनसिन, मैडिसन, यूएसए	04/07/2023 से 12/07/2023 तक	भाकृअनुप (यात्रा भत्ता–विदेशी–यात्रा भत्ता– भाकृअनुप मुख्यालय से रु. 10,00,000/–)	26–06–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
80	डॉ. गौतम कोल्लुरी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	कुक्कुट विज्ञान संघ की वार्षिक बैठक–2023	पोल्ट्री साइंस एसोसिएशन, फील्डस्टॉन रोड, शैपेन, यूएसए	09/07/2023 से 15/07/2023 तक	कुक्कुट विज्ञान प्रोत्साहन फाउंडेशन द्वारा यात्रा व्यय ($1000) वहन किया जाएगा और वीजा शुल्क, पंजीकरण शुल्क और स्थानीय यात्रा के व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे, इसके अलावा यात्रा अनुदान के ऊपर के व्यय स्वयं आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	28–06–2023
81	डॉ. शोभा जो किझाकुदन, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मत्स्य पालन अनुसंधान संस्थान, केरल	तदर्थ कार्यशाला	डायरेक्ट्रेट जनरल ऑफ फिशरीज रिसर्च मिनिस्ट्री ऑफ एग्रीकल्चर, फिशरीज वेल्थ एंड वॉटर रिसोर्सेज सल्तनत ऑफ ओमान प्लेस–मस्कट ओमान	03/07/2023 से 17/07/2023 तक	मेजबान संस्थान	30–06–2023
82	डॉ. नवीन कुमार (वर्जित), वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय उच्च सुरक्षा पशुरोग संस्थान, भोपाल	जैव सूचना तंत्र और जैव चिकित्सा अभियांत्रिकी पर 10वां अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	मेलोनेरस, स्पेन में दि होटल लोपसन विला डेल कोन्डे	12/07/2023 से 14/07/2023 तक	डीएसटी इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए सबसे छोटे मार्ग से आने–जाने का इकोनॉमी श्रेणी का वायुयान किराया और वीजा शुल्क प्रदान करेगा	04–07–2023
83	सुश्री प्रीति सिंह, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, झारखंड	पुनःस्थापित मृदा में विभिन्न पादप प्रजातियों से संबंधित मृदा जैविक पदार्थ स्थायित्व और माइक्रोबियल समुदाय पर प्रशिक्षण	बायलॉजी सेंटर सीएएस–आईएसबीबी, चेक गणराज्य	15/07/2023 से 15/10/2023 तक	दि इंटरनेशनल ह्युमिक सबस्टांस सोसायटी (आईएचएसएस) ट्रेनिंग अवार्ड	04–07–2023
84	डॉ. चेल्लापल्ली तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	करटेन रेजर कार्यक्रम में भाग लेना	नैरोबी, केन्या	06/07/2023 से 07/07/2023 तक	भाकृअनुप, यात्रा भत्ता–विदेशी यात्रा भत्ता भाकृअनुप मुख्यालय से	05–07–2023
85	डॉ. के.के. प्रमाणिक, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, शिमला	''शीतोष्ण फल वाली फसलों में सुधार लाने के लिए जैवविनियामक की भूमिका'' पर अग्रणी पत्र प्रस्तुतीकरण	विन्धम बर दुबई, संयुक्त अरब अमीरात द्वारा होटल हॉवर्ड जॉन्सन	10/07/2023 से 16/07/2023 तक	एसएसडीएटी, मेरठ, उ.प्र., भारत, वायुयान किराया (आने जाने का) – 32000 पंजीकरण शुल्क, आहार एवं ठहरने का प्रभार– 50,000 वीजा शुल्क– 7000	07–07–2023
86	डॉ. प्रदीप कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आभ्यंतरिक (मेडिटेरिनियन) क्षेत्र में टिकाऊ फसल उत्पादन के लिए नवप्रवर्तन (आईएसपीएएमईडी) 2023	पेलेर्मो, इटली	11/07/2023 से 15/07/2023 तक	अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आईएसपीएएमईडी 2023 के आयोजक, यूनिवर्सिटी ऑफ पालेर्मो, इटली (मेजबान संस्थान)	07–07–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
87	डॉ. आशीष कुमार सामंत, प्रमुख–एएन प्रभाग, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल	सार्क कृषि केन्द्र (एसएसी) और वेल्थुंगरहिल्फे द्वारा आयोजित तदर्थ कार्यशाला तत्पश्चात परोह रॉटाहाट, नेपाल हेतु पोषण स्मार्ट समुदाय का ज्ञानवर्धक दौरा	सार्क कृषि केन्द्र (एसएसी) नेपाल	11/07/2023 से 13/07/2023 तक	आवास, आहार, और संभार–तंत्र सहायता सहित वायुयान किराया स्थानीय आतिथ्य–सत्कार व्यय वेल्थुंगरहिल्फे द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा	07–07–2023
88	डॉ. दीपिका अग्रहार मुरूगकर, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी विभाग, भोपाल	सार्क कृषि केन्द्र (एसएसी) और वेल्थुंगरहिल्फे द्वारा आयोजित तदर्थ कार्यशाला तत्पश्चात परोह रॉटाहाट, नेपाल हेतु पोषण स्मार्ट समुदाय का ज्ञानवर्धक दौरा	सार्क कृषि केन्द्र (एसएसी) नेपाल	11/07/2023 से 13/07/2023 तक	आवास, आहार, और संभार–तंत्र सहायता सहित वायुयान किराया स्थानीय आतिथ्य–सत्कार व्यय वेल्थुंगरहिल्फे द्वारा उपलब्ध करवाया जाएगा	07–07–2023
89	डॉ. डेविड के.जे., वैज्ञानिक, भाकृअनुप राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरू	डिप्टरोलॉजी की 10वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस	मेजबान, नोर्थ अमेरिकन डिप्टेरिस्टस सोसायटी यूनाइटेड स्टेट्स द्वारा सिल्वर इरगेसी रिजॉट रेनो, नेवाडा, यूएसए में	16/07/2023 से 22/07/2023 तक	निकटतम मार्ग का इकोनॉमी श्रेणी का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर और वीजा शुल्क निधियन एजेंसी, विज्ञान एजेंसी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), एसईआरबी, नई दिल्ली द्वारा दिया जाएगा। ठहरने एवं खाने, पंजीकरण शुल्क और अन्य कोई व्यय आवेदक द्वारा वहन किया जाएगा।	10–07–2023
90	डॉ. अंकिता गुप्ता, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरू	हाइमनोप्टेरिस्ट की अंतर्राष्ट्रीय सोसायटी की 10वीं कांग्रेस	अलेक्जेंड्र इओन क्यूजा यूनिवर्सिटी, इयासी, रोमानिया	24/07/2023 से 29/07/2023 तक	निकटम मार्ग का इकोनॉमी श्रेणी का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर और वीजा शुल्क निधियन एजेंसी, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), आईटीएस स्कीम एसईआरबी–डीएसटी, नई दिल्ली द्वारा दिया जाएगा। ठहरने एवं खाने, पंजीकरण शुल्क और अन्य कोई व्यय आवेदक द्वारा वहन किया जाएगा।	10–07–2023
91	डॉ. कौशिक बनर्जी, निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे	एओएसी साऊथ ईस्ट एशिया सेक्शन का दूसरा वार्षिक सम्मेलन	वियतनाम का हो ची मिन्ह सिटी	01/08/2023 से 02/08/2023 तक	एओएसी साऊथ ईस्ट एशिया सेक्शन	13–07–2023
92	डॉ. कुतुबुद्दीन अली मोला, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय धान अनुसंधान संस्थान, कटक	प्लांट बायोलॉजी सम्मेलन 2023 के संयोजन में प्लांट सेल एडीटोरियल बोर्ड की बैठक	स्वाना जॉर्जिया, यूएसए	05/08/2023 से 09/08/2023 तक	अमेरिकन सोसायटी ऑफ प्लांट बायोलोजिस्ट (एएसपीबी), एमडी, यूएसएए, एएसपीबी	21–07–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
93	डॉ. कौशिक बनर्जी, निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे	137वीं एओएसी वार्षिक बैठक	न्यू ऑरियन्स, ला, यूनाइटेड स्टेट्स	25/08/2023 से 30/08/2023 तक	एओएसी अंतर्राष्ट्रीय	21–07–2023
94	डॉ. मलखान सिंह गुजर, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	पादप रोगविज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस	फ्रेंच फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी एवं दि इंटरनेशनल सोसायटी फॉर प्लांट पैथोलॉजी लीयोन कनवेंशन सेंटर, फ्रांस	20/08/2023 से 25/08/2023 तक	निकटम मार्ग का इकॉनोमिक श्रेणी का आने–जाने का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर और वीजा शुल्क एसईआरबी–डीएसटी द्वारा वहन किया जाएगा और आवास प्रभार आदि आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	28–07–2023
95	डॉ. वाई.एस. शिवाय, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	जैविक धान की खेती एवं उत्पादन प्रणालियां विषय पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	टोहोकु यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस, सेंडाई, जापान	04/09/2023 से 07/09/2023 तक	स्वयं आवेदक	07–08–2023
96	सुश्री रीमा रानी, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–तोरिया एवं सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर	दि अमेरिकन फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी (एपीएस) द्वारा आयोजित सम्मेलन	शेरेटन डाऊनटाऊन होटल, डेनवेर, कोलोराडो, यूएसए	12/08/2023 से 16/08/2023 तक	विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड–विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार (एसईआरबी–डीएसटी (आईटीएस) निकटतम मार्ग से आने–जाने का इकनोमी श्रेणी का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर एवं वीजा शुल्क प्रदान करेगा। अन्य सभी व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	09–08–2023
97	डॉ. राम नारायण सिंह, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक दबाव प्रबंधन संस्थान, बारामती	पादप रोग विज्ञान की 12वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस	लीयोन, फ्रांस	20/08/2023 से 25/08/2023 तक	इस दौरे का निधियन डीएसटी–एसईआरबी द्वारा किया गया है। यात्रा और वीजा शुल्क आईटीएस योजना के अनुसार कार्यक्रम के पूरा होने पर एसईआरबी द्वारा लौटाया जाएगा। पंजीकरण शुल्क सम्मेलन के आयोजकों द्वारा माफ किया गया है। आहार, ठहरने, प्रिगेम, टैक्सी प्रभार और अन्य व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	10–08–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
98	डॉ. दिनेश कुमार यादव, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान, भोपाल	पादप रोग विज्ञान की 12वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस	लीयोन, फ्रांस	20/08/2023 से 25/08/2023 तक	इस दौरे का निधियन डीएसटी–एसईआरबी द्वारा किया गया है। यात्रा और वीजा शुल्क आईटीएस योजना के अनुसार कार्यक्रम के पूरा होने पर एसईआरबी द्वारा लौटाया जाएगा। पंजीकरण शुल्क सम्मेलन के आयोजकों द्वारा माफ किया गया है। आहार, ठहरने, प्रिगेम, टैक्सी प्रभार और अन्य व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	11–08–2023
99	डॉ. सेलिया चलम वी., प्रभाग–प्रमुख भाकृअनुप–राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली	पादप रोग विज्ञान की 12वीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस	लीयोन, फ्रांस	20/08/2023 से 25/08/2023 तक	आयोजकों ने पंजीकरण शुल्क की छूट दी है और अन्य व्यय वैज्ञानिक अपनी व्यक्तिगत बचत से वहन करेंगे।	14–08–2023
100	डॉ. युद्धवीर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	जैविक धान की खेती एवं उत्पादन प्रणालियां विषय पर चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	टोहोकु यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंस, सेंडाई, जापान	04/09/2023 से 07/09/2023 तक	मेजबान संस्थान	14–08–2023
101	डॉ. रमन मीनाक्षी, सुंदरम, निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय धान अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	सतत कृषि और मानव स्वास्थ्य के लिए हरे और पोषक धान पर अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद	हुआ झोंग एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी वुहान, चीन	05/09/2023 से 07/09/2023 तक	अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा के आयोजक/आयोजकों की सहायता से ऊपर के व्यय आवेदक द्वारा पूरे किए जाएंगे।	18–08–2023
102	डॉ. सत्यानंद सुशील, निदेशक, आईसीएआर–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु	वैश्विक जैव–नाशीजीवनाशी शिखर सम्मेलन 2023 विशेषज्ञ पैनलिस्ट के रूप में	बिशकेक सम्मेलन सेंटर, बिशकेक किर्गिस्तान	27/08/2023	एग्रीकल्चर माइक्रोओर्गेनिज्म मैन्युफेक्चर्रस एंड फारमर्स एसोसिएशन (एएमएमए)	17–08–2023
103	श्री मनोज कुमार, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई	अंतर्राष्ट्रीय कपास सलाहकार समिति (आईसीएसी)– अनुसंधान एसोसिएट कार्यक्रम (आरएपी) 2023	वाशिंगटन डीसी यूएसए	10/09/2023 से 21/09/2023 तक	आईसीएसी, और वहन किया गया यात्रा व्यय और वीजा लागत आईटीएस कार्यक्रम द्वारा कवर किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त किए गए अन्य व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	17–08–2023
104	डॉ. मोहनराज के., वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर	छठा रेनकनट्रेस डे क्यु न्होनः अंतर्राष्ट्रीय जीवविज्ञान सम्मेलन 2023	दि इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटरडिसिप्लिनरी साइंस एंड एजुकेशन (आईसीआईएसई), क्यु न्होन, वियतनाम	20/09/2023 से 22/09/2023 तक	इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए यात्रा और ठहरने के व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे और पंजीकरण शुल्क आयोजकों द्वारा कवर किया जाएगा।	18–08–2023
105	डॉ. महेश चन्द्र, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर	शिंगचोंग एशियन जैविक नवप्रवर्तन सम्मेलन	ननचुंग सिटी शिंगचोंग कंट्री सिचुआन प्रोविन्स, चीन	04/09/2023 से 13/09/2023 तक	शिंगचोंग एशियन जैविक नवप्रवर्तन सम्मेलन	25–08–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
106	डॉ. स्मिता सिरोही (प्रतिनियुक्ति पर), प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप मुख्यालय नई दिल्ली (जी20 सचिवालय में संयुक्त सचिव के अस्थाई पद के विरूद्ध रोअन आधार पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग में पदस्थ)	यूरोपियन एसोसिएशन ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिस्ट (ईएई) की कांग्रेस के तत्वावधान में निर्धारित उनके बोर्ड की बैठक में आईसीएसी 2024 पर चर्चा	रेन्नेस फ्रांस	29/08/2023 से 01/09/2023 तक	इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनॉमिस्ट (आईएएई)	28–08–2023
107	डॉ. शुभदीप घोष, सहायक महानिदेशक (एमएफ), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	सतत महासागरीय पहल (एसओआई) पूर्वी, दक्षिणी एवं दक्षिणी–पूर्वी एशिया के लिए क्षेत्रीय क्षमता निर्माण कार्यशाला	दि सीओल ओलंपिक पार्कलेट सीओल, कोरिया गणराज्य	05/09/2023 से 08/09/2023 तक	दि सेक्रेटेरिएट ऑफ दि कंवेंशन ऑफ बायोलोजिकल डायवर्सिटी (सीबीडी), यूएनईपी, कनाडा	31–08–2023
108	श्री राजेश एम. वैज्ञानिक, भाकृअनुप–शीत जल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, नैनीताल	पुनर्चक्रण जलजीव पालन प्रणालियों में डॉक्टरेट पश्चात दो वर्षीय अध्येतावृत्ति के लिए दूसरे चरण के व्यक्तिगत साक्षात्कार	यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर, यूके	05/09/2023 से 08/09/2023 तक	दि यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर, यूके	01–09–2023
109	डॉ. ग्रिनसन जॉर्ज, प्रभाग प्रमुख, भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोच्चि	सतत महासागरीय पहल (एसओआई) पूर्वी, दक्षिणी एवं दक्षिणी–पूर्वी एशिया के लिए क्षेत्रीय क्षमता निर्माण कार्यशाला	दि सीओल ओलंपिक पार्कलेट सीओल, कोरिया गणराज्य	05/09/2023 से 08/09/2023 तक	दि सेक्रेटेरिएट ऑफ दि कंवेंशन ऑफ बायोलोजिकल डायवर्सिटी (सीबीडी), कनाडा	01–09–2023
110	डॉ. कौशिक बेनर्जी, निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय अंगूर अनुसंधान केन्द्र, पुणे	तदर्थ कार्यशाला	इंडस्ट्रियल टैक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट (आईटीआई), कोलम्बो	18/09/2023 से 27/09/2023 तक	मेजबान संस्थान	06–09–2023
111	डॉ. ओम प्रकाश यादव, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	''राजस्थान, भारत के दबावपूर्ण पर्यावरण में बाजरे की उत्पादकता और अनुकूलता को बढ़ाने के लिए कार्यनीतियां'' नामक स्वीकृत लेख का प्रस्तुतीकरण	लेबनिज सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल लैंडस्केप रिसर्च (जेडएएलएफ) ऐबर्सवालडर स्ट्रॅाब मुन्चेबर्ग जर्मनी	18/09/2023 से 22/09/2023 तक	मेजबान संस्थान	06–09–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
112	डॉ. शुभदीप घोष, सहायक महानिदेशक (एमएफ), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	श्रीलंका के जलजीवपालन और मात्स्यिकी क्षेत्र के उत्तरी प्रांत में मात्स्यिकी क्षेत्र में सम्भावित निवेश के लिए मसौदा परियोजना रिपोर्ट तैयार करने और वित्तीय सम्भावनाओं सहित सागरीय कृषि अनुसंधान विकास के क्षेत्र और आवश्यकता का आकलन करना	नेशनल एक्वाटिक रिसोर्सेस रिसर्च एंड डेवलपमेंट एजेंसी मिनिस्ट्री ऑफ फिशरीज, श्रीलंका	22/09/2023 से 03/10/2023 तक	भाकृअनुप (रु. 1,50,000) (यात्रा भत्ता–विदेश यात्रा भत्ता भाकृअनुप मुख्यालय से)	12–09–2023
113	डॉ. पंकज कुमार शर्मा, संयुक्त निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय जैविक दबाव प्रबंधन संस्थान, रायपुर	16वीं अंतर्राष्ट्रीय तोरिया कांग्रेस	सिडनी, ऑस्ट्रेलिया	24/09/2023 से 27/09/2023 तक	आवेदक द्वारा एसईआरबी यात्रा फेलोशिप पुरस्कार प्राप्त किया गया जो वायुयान किराया और वीज़ा शुल्क उपलब्ध करवाता है शेष व्यय आवेदक द्वारा स्वयं वहन किए जाएंगे।	11–09–2023
114	डॉ. आर. मनिमेकलाई, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर	तदर्थ परिसंवाद	बांग्लादेश एकेडमी ऑफ साइंस नेशनल साइंस एंड टैक्नोलॉजी कॉम्पलेक्स अग्रगांव; ढाका	07/10/2023 से 08/10/2023 तक	बांग्लादेश एकेडमी ऑफ साइंस नेशनल साइंस एंड टैक्नोलॉजी कम्पलेक्स अग्रगांव; ढाका	11–09–2023
115	डॉ. के. पाणी प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुम्बई	तदर्थ संगोष्ठी	दि नीदरलैंड फूड एंड कंज्यूमर प्रोडक्ट सेफ्टी ऑथोरिटी मिनिस्टरी ऑफ एग्रीकल्चर, नेचर एंड फूड क्वालिटी, नीदरलैंड में स्थित रेडिसन होटल द्वारा पार्क इन्न, अमेस्टरडम, नीदरलैंड	03/10/2023 से 06/10/2023 तक	आयोजक, अन्य व्ययों के लिए आवेदक ने सहायता हेतु विभिन्न संगठनों/सोसटियों में आवेदन किया है। सभी व्यय जो किसी संगठन/सोसायटी द्वारा पूरे नहीं किए जाते हैं, वे आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	12–09–2023
116	डॉ. प्रवीण मलिक, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप, मुख्यालय, नई दिल्ली।	पीवीएस मूल्यांकन इंडोनेशिया में रेबीज विशिष्ट सामग्री के साथ फोलोअप मिशन डब्ल्यूओएएच (ओआईएएच) प्रशिक्षु विशेषज्ञ के रूप में	डायरेक्टर जनरल ऑफ लाइवस्टॉक एंड एनिमल हेल्थ सर्विसेज, मिनिस्टरी ऑफ एग्रीकल्चर, जकार्ता, इंडोनेशिया	03/10/2023 से 12/10/2023 तक	वर्ल्ड ऑर्गेनाइजेशन ऑफ एनिमल हैल्थ (डब्ल्यूओएएच)	11–09–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
117	डॉ. शशांक पी.आर., वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	सोसायटीज यूरोपीय लेपिडोपटेरोलॉजिका (एसईएल) एंड फोरम हर्बुलोट द्वारा आयोजित ''बदलते विश्व में लेपिडोपटेरा का संरक्षण पारिस्थितिकी और व्यवस्थितता'' पर लेपिडोपटेरोलॉजी की 23वीं यूरोपियन कांग्रेस और 11वीं फोरम हर्बुलोट 2023	ओरियन्स, फ्रांस	25 / 09 / 2023 से 29 / 09 / 2023 तक	डी एसटी अंतर्राष्ट्रीय यात्रा सहायता जो निकटतम मार्ग द्वारा इकोनोमी श्रेणी का आने–जाने का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर एवं वीजा शुल्क उपलब्ध करवाती है। डीएसटी द्वारा किए गए निधियन से ऊपर के अन्य व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	11–09–2023
118	डॉ. संदीप गांगिल प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल	अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला (टीएआरएएसए 23)	सीम रीप, कम्बोडिया	24 / 10 / 2023 से 27 / 10 / 2023 तक	सीएसएएम	12–09–2023
119	डॉ. के. बालाचन्द्रा हैब्बर, निदेशक भाकृअनुप–केन्द्रीय बागवानी फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड	अंतर्राष्ट्रीय नारियल समुदाय द्वारा कार्बन पृथक्करण और कार्बन क्रेडिट पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	यूनिवर्सिटी ऑफ सैम रातुलैंगी, मन्नाडो, इंडोनेशिया	12 / 10 / 2023 से 14 / 10 / 2023 तक	अंतर्राष्ट्रीय नारियल समुदाय (एक यूनेसकैप इंटर गवर्नेमेंट ओर्गेनाइजेशन)	11–09–2023
120	डॉ. जी. बायजु, निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय कंदीय फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड	आईएफए क्रॉसरोड एशिया–पेसिफिक सम्मेलन 2023	इंटरनेशनल फर्टीलाइजर एसोसिएशन (आईएफए) पेरिस, फ्रांस मेजबान संस्थान है, सम्मेलन बैंकॉक, थाईलैंड में आयोजित होता है।	10 / 10 / 2023 से 12 / 10 / 2023 तक	सम्मेलन के आयोजक	11–09–2023
121	डॉ. आशीष खंडेलवाल, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	सार्डिनिया 2023 अपशिष्ट प्रबंधन, संसाधन पुनर्प्राप्ति और सतत लैंडफिलिंग पर 19वां अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद ii''कृषि खाद्य प्रणाली रूपांतरण से जलवायु परिवर्तन में तेजी आती है'' इस विषय के तहत युवा प्रतिनिधि के रूप में डब्ल्यूएफएफ प्रमुख कार्यक्रम में तीसरा वैश्विक खाद्य फोरम	फोर्ट विलेज रिजॉर्ट कैग्लियरी इटली ii वर्ल्ड फूड फोरम रोम, इटली	9–13 अक्तूबर 2023, 16–20 अक्तूबर 2023	डीबीटी और सीआईसीएस और एसईआरबी–डीएसटी, आईएनएसए, सीएसआईआर और अन्य संस्थानों में आवेदन करेंगे। यदि निधि प्राप्त नहीं होती है तो, ये आवेदक द्वारा स्वयं वहन किए जाएंगे।	11–09–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
122	डॉ. शोभा जो किझाकुडन, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मुंबई	शार्क और रे अनुसंधान गतिविधियों की समीक्षा करना और ओमान समुद्री विज्ञान और मात्स्यिकी केन्द्र द्वारा कार्यान्वित रेज विविधता और मत्स्य पालन परियोजना का विकास करना	डायरेक्टरेट जनरल, ऑफ फिशरीज रिसर्च, मिनिस्टरी ऑफ एग्रीकल्चर, मस्कट, ओमान	17/09/2023 से 28/09/2023 तक	ओमान सरकार	15–09–2023
123	डॉ. खाप्टे प्रताप सिंह सुरेश, वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय अजैविक दबाव संस्थान, बारामती	अंतर्राष्ट्रीय पादप लक्षणप्ररूपण परिसंवाद–फिनोवेज 2023	शानहुआ ताइनान, ताइवान में वर्ल्ड वेजिटेबल सेंटर का मुख्यालय	26/09/2023 से 27/09/2023 तक	डीएसटी–एसईआरबी–एक अंतर्राष्ट्रीय यात्रा सहायता योजना के माध्यम से।	15–09–2023
124	डॉ. रितेश रंजन, वरि. वैज्ञानिक, भाकृअनुप–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई	श्रीलंका के जलजीवपालन और मात्स्यिकी क्षेत्र के उत्तरी प्रांत में मात्स्यिकी क्षेत्र में सम्भावित निवेश के लिए मसौदा परियोजना रिपोर्ट तैयार करने और वित्तीय सम्भावनाओं सहित सागरीय कृषि अनुसंधान विकास के क्षेत्र और आवश्यकता का आकलन करना	नेशनल एक्वाटिक रिसोर्सेस रिसर्च एंड डेवलपमेंट एजेंसी, मिनिस्ट्री ऑफ फिशरीज, श्रीलंका	22/09/2023 से 03/10/2023 तक	भाकृअनुप (रु 1,50,000) (यात्रा भत्ता–विदेश यात्रा भत्ता आईसीएआर मुख्यालय से)	15–09–2023
125	डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल, उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	यूनाइटेड स्टेट के कृषि विश्वविद्यालयों में बाहरी अनुसंधान का अध्ययन करने के लिए प्रशिक्षण/ज्ञानवर्धक दौरा	एनएएचईपी (भाकृअनुप द्वारा वित्तपोषित राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना) के तहत वर्ल्ड बैंक वाशिंगटन डीसी, यूएसए	20/09/2023 से 29/09/2023 तक	एनएएचईपी (वित्तीय वर्ष 2023–24 के लिए यात्रा व्यय–एनएएचईपी)	15–09–2023
126	डॉ. एन.सी. गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर–राष्ट्रीय पादप जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली	तोरिया सरसों और कनोला के नवप्रवर्तन के लिए वैश्विक परिषद द्वारा आयोजित 16वीं अंतर्राष्ट्रीय तोरिया सरसों कांग्रेस	ऑस्ट्रेलियन ऑयलसीड फेडरेशन इंक ऑस्ट्रेलिया स्क्वेयर, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया	24/09/2023 से 27/09/2023 तक	एसईआरबी (विज्ञान एवं अभियांत्रिकी अनुसंधान बोर्ड)/डीएसटी निकटतम मार्ग का इकोनॉमी श्रेणी का आने–जाने का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर एवं वीजा शुल्क प्रदान करेगा। रु. 39,750/– का पंजीकरण शुल्क भाकृअनुप–एनआईपीबी द्वारा वहन किया जाएगा और स्थानीय यात्रा, ठहरने एवं आहार प्रभार, चिकित्सा बीमा तथा अन्य सभी व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	19–09–2023

क्र. सं.	नाम एवं संस्थान	यात्रा का उद्देश्य	स्थान	समयावधि	वित्त पोषण	जारी करने की तिथि
127	डॉ. चेलापल्ली तारा सत्यवती, निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद	''श्रीअन्न''–पौषणिक, कृषि और जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए उनकी क्षमताओं को कैसे उजागर किया जाए विषय पर संगोष्ठी	जापान इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल साइंसिस (जेआईआरसीएएस) त्सुकुबा, इबाराकी, जापान	24/10/2023 से 27/10/2023 तक	जापान इंटरनेशनल सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल साइंसेस (जेआईआरसीएस) बैठक में भाग लेने के व्यय वहन करेगा जिसमें अंतर्राष्ट्रीय फ्लाइट और ठहरने के दौरान आवास व्यय शामिल है।	19–09–2023
128	डॉ. बॉबी इग्नेशियस, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर–केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई	श्रीलंका के जलजीवपालन और मात्स्यिकी क्षेत्र के उत्तरी प्रांत में मात्स्यिकी क्षेत्र में सम्भावित निवेश के लिए मसौदा परियोजना रिपोर्ट तैयार करने और वित्तीय सम्भावनाओं सहित सागरीय कृषि अनुसंधान विकास के क्षेत्र और आवश्यकता का आकलन करना	नेशनल एक्वाटिक रिसोर्सेस रिसर्च एंड डेवलपमेंट एजेंसी, मिनिस्ट्री ऑफ फिशरीज, श्रीलंका	22/09/2023 से 03/10/2023 तक	भाकृअनुप (रु 1,50,000) (यात्रा भत्ता–विदेश यात्रा भत्ता भाकृअनुप मुख्यालय से)	20–09–2023
129	डॉ. आर. अशोकन, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर–भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बेंगलुरु	एंटोमोलिजिकल सोसायटी ऑफ अमेरिका मीटिंग ईएसए 2023 विषय पर तदर्थ सम्मेलन	नेशनल हारबोर, मेरीलैंड, यूएसए	05/11/2023 से 08/11/2023 तक	डीएसटी–एसईआरबी–आईटीएफ यदि स्वीकृत नहीं करते हैं तो सम्मेलन में भाग लेने से संबंधित सभी व्यय आवेदक द्वारा पूरे किए जाएंगे।	22–09–2023
130	डॉ. अमाला यू., वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरू	परागण पर 12वां अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद (आइएसपीXII)	कर्स्टनबोश बॉटेनिक गार्डन, कैप टाऊन, दक्षिण अफ्रीका	16/10/2023 से 20/10/2023 तक	डीएसटी निकटतम मार्ग का इकोनोमी श्रेणी का आने–जाने का वायुयान किराया, एयरपोर्ट कर एवं वीजा शुल्क प्रदान करेगी। डीएसटी निधियन से ऊपर के अन्य व्यय आवेदक द्वारा वहन किए जाएंगे।	22–09–2023
131	डॉ. जॉयकृष्णा जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भाकृअनुप मुख्यालय, नई दिल्ली	डॉ. एल मुरूगन, माननीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेरी राज्य मंत्री, भारत सरकार के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में।	मॉस्को और सेंट पीटर्सबर्ग, रशिया	25/09/2023 से 28/10/2023 तक	विदेशी दौरे से संबंधित रु. 4,90,000/– की राशि के व्यय भाकृअनुप मुख्यालय (विदेशी या.भ.) द्वारा वहन किए जाएंगे।	22–09–2023

परिशिष्ट

परिशिष्ट -I

डेयर को आवंटित विषय

भाग-I

निम्नलिखित कार्य जो भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची 1 के भीतर आते हैं:

1. विदेशी एवं अंतर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान और शैक्षणिक संस्थाओं एवं संगठनों के साथ संबंधों सहित कृषि अनुसंधान और शिक्षा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सहायता प्रदान करना।
2. मौलिक, अनुप्रयुक्त एवं परिचालनीय अनुसंधान और इस अनुसंधान में कृषि, कृषि वानिकी, पशुपालन, डेयरी, मात्स्यिकी, कृषि अभियांत्रिकी और बागवानी तथा कृषि सांख्यिकी, आर्थिकी और विपणन सहित उच्च शिक्षा में समन्वय करना।
3. पशुपालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी सहित खाद्य और कृषि अनुसंधान/विस्तार एवं शिक्षा में मानव संसाधनों के विकास से संबंधित अनुसंधान, वैज्ञानिक और तकनीकी संस्थानों या उच्च शिक्षा वाले संस्थानों में मानकों का निर्धारण करना और समन्वय करना।
4. चाय, कॉफी और रबड़ से संबंधित अनुसंधान को छोड़कर, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और कमोडिटी अनुसंधान कार्यक्रमों के वित्तपोषण के लिए प्रकोष्ठ स्थापित करना।

भाग-II

5. संघ शासित क्षेत्रों के लिए, उपरोक्त भाग 1 में उल्लेखित विषय/कार्य, यदि वे इन संघ शासित क्षेत्रों के संदर्भ में विद्यमान हैं, और निम्नलिखित विषय को छोड़कर जो भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II के भीतर आता है।
6. कृषि शिक्षा और अनुसंधान।

भाग-III

सामान्य और अनुक्रमिक:

7. पादप, पशु और मछली प्रवेशन तथा अन्वेषण करना।
8. अनुसंधान प्रशिक्षण, सहसंबंध, वर्गीकरण, मृदा मैपिंग एवं व्याख्या के संबंध में अखिल भारतीय मृदा और भूमि उपयोग सर्वेक्षण करना।
9. कृषि अनुसंधान और शिक्षा योजनाओं तथा कार्यक्रमों के संबंध में राज्य सरकारों एवं कृषि विश्वविद्यालयों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
10. राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन आयोजित करना।
11. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और इसके संघटक संस्थान, राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र, परियोजना निदेशक, ब्यूरो तथा अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएं।
12. उत्पादन और जैव–ईंधन पादपों पर अनुसंधान और विकास करना।

संगठन चार्ट (कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग)

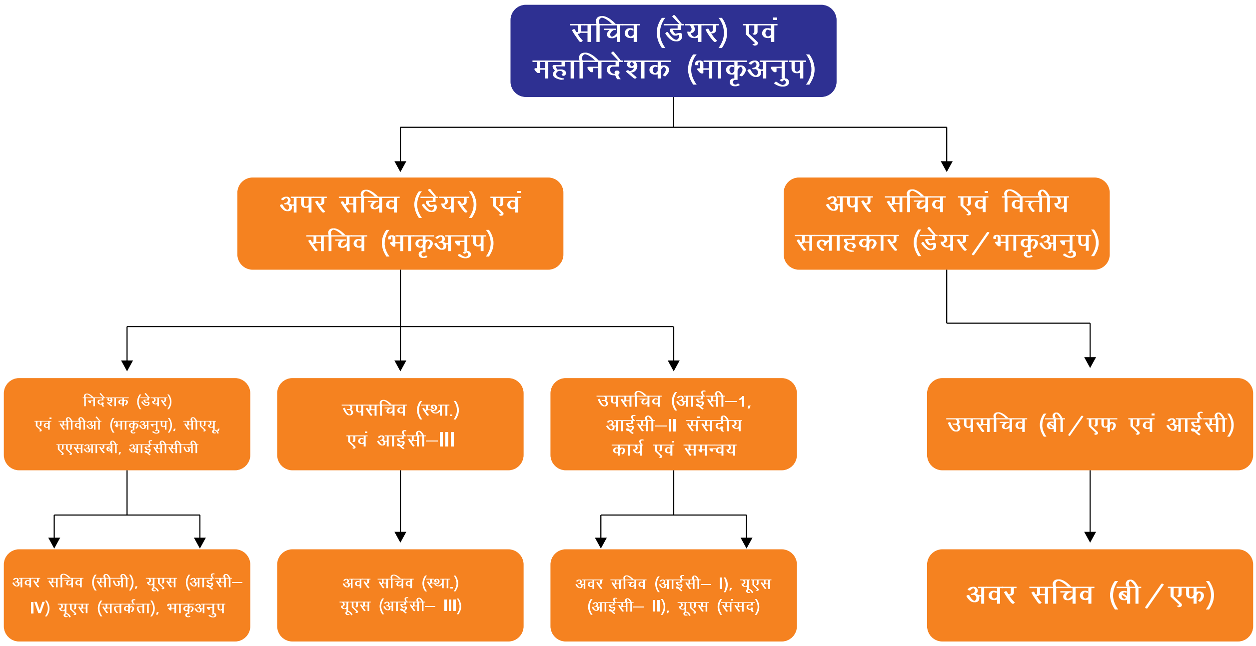

परिशिष्ट-III

डेयर में स्वीकृत पद संख्या तथा नियुक्त कर्मी (01-09-2023 तक)

वर्ग	पदनाम	स्वीकृत पद	भरे पद	रिक्त पद
ए	सचिव	1	1	0
ए	अपर सचिव	1	1	0
ए	अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार	1	1	0
ए	निदेशक	1	3	-2
ए	उपसचिव	2	0	2
ए	वरिष्ठ प्रधान निजी सचिव/प्रधान स्टाफ अधिकारी	1	0	1
ए	संयुक्त निदेशक	1	0	1
ए	अवर सचिव	7	7	0
ए	प्रधान निजी सचिव	3	0	3
ए	सहायक निदेशक (राजभाषा)	1	1	0
बी	निजी सचिव	2	1	1
बी	अनुभाग अधिकारी	8	3	5
बी	सहायक अनुभाग अधिकारी	5	1	4
बी	निजी सहायक	4	2	2
बी	वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	1	1	0
सी	उच्च श्रेणी लिपिक–कैशियर	1	0	1
सी	वरिष्ठ सचिवालय सहायक (यूडीसी)	1	0	1
सी	आशु लिपिक ग्रेड डी	3	3	0
सी	उच्च श्रेणी लिपिक–हिंदी टंकक	1	0	1
सी	स्टाफ कार चालक	1	1	0
सी	कनिष्ठ सचिवालय सहायक (एलडीसी)	1	0	1
सी	दफ्तरी	1	0	1
सी	एमटीएस	5	0	5
	कुल	53	26	27

प्रमुख कार्यकारी अधिकारियों के नाम

क्रम सं	नाम	पदनाम
1	डा. हिमांशु पाठक	सचिव (डेयर)
2	श्री संजय गर्ग	अपर सचिव (डेयर)
3	श्रीमती अलका नांगिया अरोड़ा	अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार (डेयर)
4	श्री शालीन अग्रवाल	निदेशक
5	श्री खामखां पाउवा गुईट	निदेशक
6	श्री राजेश गुप्ता	निदेशक
7	श्री प्रेम प्रकाश मौर्य	अवर सचिव
8	श्री राजेश कुमार	अवर सचिव
9	श्री बलराज	अवर सचिव
10	श्री ए जी सुब्रमणियम	अवर सचिव
11	श्री शैलेन्द्र कुमार उपाध्याय	अवर सचिव
12	श्री सुरजीत साहा	अवर सचिव
13	श्री अनिल सिंह	अवर सचिव

बजट आवंटन : डेयर/भाकृअनुप

(रु. करोड़ में)

क्रम सं	योजना का नाम	अनुमानित बजट	संशोधित बजट	अनुमानित बजट
		2022–23	2022–23	2023–24
1	फसल विज्ञान	526.08	526.04	714.41
2	बागवानी विज्ञान	157.53	157.53	212.00
3	भाकृअनुप मुख्यालय प्रशासन, आई पी आर प्रबंधन तथा डीकेएमए सहित	5877.06	6006.28	6384.59
4	कृषि विस्तार	243.72	243.72	327.00
5	कृषि शिक्षा	263.77	263.77	322.74
6	आर्थिक सांख्यिकी तथा प्रबंधन	24.51	24.51	0.00
7	कृषि अभियांत्रिकी	48.30	48.30	65.00
8	कृषि में मौलिक, नीतिगत और अग्रणी अनुप्रयोग अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय कोष	35.67	35.67	0.00
9	राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा प्रायोजना	167.18	167.00	92.26
10	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन संस्थान, कृषि वानिकी संस्थान सहित	144.90	144.90	240.00
11	जलवायु अनुकूलनशील कृषि पहल	40.87	40.87	0.00
12	पशु पालन	224.41	224.41	300.00
13	मात्स्यिकी	118.89	118.89	150.00
	कुल भाकृअनुप (ए)	7872.89	8001.89	8808.00
14	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग– अन्य कार्यक्रम	7.03	7.43	7.43
15	केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल	268.00	270.00	283.42
16	केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बुंदेलखण्ड	126.45	126.45	120.00
17	केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बिहार	205.00	214.57	248.11
18	राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी तथा भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ	1.60	1.1820	0.76
19	कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल	24.75	29.720	27.98
20	सचिवालय	7.90	7.6480	8.30
	कुल डेयर (बी)	640.73	657.00	696.00
	कुल योग (ए + बी)	8513.62	8658.89	9504.00

डेयर का बजट अनुमान एवं संशोधित अनुमान

(रु लाख में)

क्र.सं	बजट शीर्ष	लेखांकन शीर्ष	बीई–2022–23	आरई–2022–23	बीई–2023–24
I	**डेयर–सचिवालय**				
	वेतन	345100090090001	625.00	645.00	349.00
	पुरस्कार	345100090090005			1.00
	चिकित्सीय उपचार	345100090090006	15.00	15.00	15.00
	भत्ता	345100090090007			320.00
	यात्रा रियायती छूट	345100090090008			10.00
	प्रशिक्षण व्यय	345100090090009			3.00
	डीटीई	345100090090011	25.00	30.00	35.00
	एफटीई	345100090090012	25.00	25.00	25.00
	कार्यालय व्यय	345100090090013	75.00	40.00	38.00
	मुद्रण एव प्रकाशन	345100090090016			8.00
	अन्य के लिए किराया	345100090090018			1.00
	डिजिटल उपकरण	345100090090019			4.00
	ओएई	345100090090020	25.00	9.80	0.00
	सामग्री एवं पूर्ति	345100090090021			1.00
	ईंधन एवं ल्यूब्रिकेंट	345100090090024			1.00
	व्यावसायिक सेवाएं	345100090090028			1.60
	मरम्मत एवं रखरखाव	345100090090029			4.00
	अन्य राजस्व व्यय	345100090090049			1.00
		कुल सचिवालय	790.00	764.80	817.60
II	**एएसआरबी**				
	सचिवालय–आर्थिक सेवाएं (मुख्य शीर्ष)	3451			
	सचिवालय–एएसआरबी (लघु शीर्ष)	0.091			
	(उप शीर्ष)	20			
	(मद शीर्ष)				
	वेतन	1	675.00	559.00	406.00
	मजदूरियां	2	0.00		
	ओवरटाइम भत्ता	3	0.00		
	पुरस्कार	5			1.50
	चिकित्सीय उपचार	6	10.00	8.00	10.00
	भत्ता	7			265.00
	यात्रा रियायती छूट	8			30.00
	प्रशिक्षण व्यय	9			1.00
	घरेलू यात्रा व्यय	11	25.00	115.00	175.00
	विदेश यात्रा व्यय	12	2.00	2.00	7.00
	कार्यालय व्यय	13	215.00	350.00	350.50
	किराया दर और भूमि एवं भवन कर	14			2.00
	मुद्रण एवं प्रकाशन	16	10.00	10.00	5.00
	अन्य किराए	18			60.00
	डिजिटल उपकरण	19			5.00

क्र.सं	बजट शीर्ष	लेखांकन शीर्ष	बीई–2022–23	आरई–2022–23	बीई–2023–24
	अन्य प्रशासनिक व्यय	20	100.00	35.00	0.00
	सामग्री एवं पूर्ति	21			5.00
	ईंधन एवं ल्यूब्रिकेंटस	24			1.00
	विज्ञापन एवं प्रचार	26	10.00	10.00	7.00
	गौण सिविल एवं विद्युत कार्य	27			5.00
	व्यावसायिक सेवाएं	28	10.00	80.00	400.00
	मरम्मत एवं रखरखाव	29			8.00
	अन्य राजस्व व्यय	49			25.00
	अन्य प्रभार	50	463.00	303.00	0.00
	मुख्य निर्माण कार्य, भूमि एवं भवन	53	955.00	1500.00	0.00
	कुल		2475.00	2972.00	1769.0.0
III	**सदस्यता अंशदान**				
	सीएबीआई	241580798010032	60.00	60.00	60.00
	सीसीजीआईएआर	241582798020032	580.00	620.00	620.00
	एपीपीएआरआई	241582798040032	10.00	10.00	10.00
	एनएसीए	241580798050032	48.00	48.00	48.00
	आईएसटीए	241580798070032	5.00	5.00	5.00
		कुलः अंशदान	703.00	743.00	743.00
IV	**केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय**				
1	**केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल को जीआईए**				
01.00.31	सहायता अनुदान–सामान्य		2500.00	2700.00	2900.00
01.00.35	पूंजीगत परिसंपत्तिओं के सृजन के लिए अनुदान		5500.00	5500.00	6442.00
01.00.36	सहायता अनुदान वेतन		18800.00	18800.00	19000.00
	योग–केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, इम्फाल को जीआईए सामान्य		26800.00	27000.00	28342.00
2	**आरएलबी केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, बुंदेलखण्ड (झांसी) को जीआईए**				
02.00.31	सहायता अनुदान–सामान्य		550.00	850.00	1300.00
02.00.35	पूंजीगत परिसंपत्तिओं के सृजन के लिए अनुदान		10495.00	10195.00	9000.00
02.00.36	सहायता अनुदान वेतन		1600.00	1600.00	1700.00
	योग सीएयू, बुंदेलखण्ड, झांसी को जीआईए सामान्य		12645.00	12645.00	12000.00
3	**आरपी केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार को जीआईए**				
03.00.31	सहायता अनुदान–सामान्य		1500.00	1567.00	1700.00
	पूंजीगत परिसंपत्तिओं के सृजन के लिए अनुदान		4500.00	4790.00	5367.00
	सहायता अनुदान वेतन		14500.00	15100.00	17744.00
	योग– केंद्रीय विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार को जीआईए		20500.00	21457.00	24811.00
	योग बजट : सभी तीन केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय		59945.00	61102.00	65153.00
V	**एनएएएस एवं आईएयूए**				
05.00.31	अनुदान सहायता–सामान्य		160.00	118.20	76.40

क्र.सं	बजट शीर्ष	लेखांकन शीर्ष	बीई–2022–23	आरई–2022–23	बीई–2023–24
	योग–एनएएसए एवं आईएयूए को जीआईए		160.00	118.20	76.40
VI	**एएसआरबी**				
06.00.31	सहायता अनुदान–सामान्य		NA	NA	NA
06.00.35	पूंजीगत परिसंपत्तिओं के सृजन के लिए अनुदान		NA	NA	NA
06.00.36	सहायता अनुदान वेतन		NA	NA	NA
	योग–एएसआरबी को जीआईए				
5475	अन्य सामान्य आर्थिक सेवाओं हेतु कैपिटल धनराशि	**5475**			
00.001	प्रत्यक्ष एवं प्रशासन (गौण शीर्ष)	00.001			
01	सचिवालय	01			
06	डेयर	06			
6.52	मशीन एवं उपकरण	06.52			4.00
06.71	सूचना कम्प्यूटर दूरसंचार उपकरण	06.71			5.00
06.74	फर्नीचर एवं फिक्सचर	06.74			3.00
02	एएसआरबी (विस्तृत शीर्ष)	02			12.00
02.51	मोटर वाहन	02.51			-
02.52	मशीनरी एवं उपकरण	02.52			20.00
02.71	सूचना कम्प्यूटर दूरसंचार उपकरण	02.71			80.00
02.72	बिल्डिंग एवं स्ट्रक्चर	02.72			800.00
02.74	फर्नीचर एवं फिक्सचर	02.74			119.00
02.77	अन्य स्थायी परिसंपत्तियां	02.77			10.00
	कुल योग		64073.00	65700.00	69600.00

सत्यमेव जयते

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार